सूचीपत्र।

पृष्ठ

हिन्दू मत की परीक्षा।

प्रथम खण्ड।

जिस में चार अध्याय हैं।

द्वितीय खण्ड ।

जिस में सात अध्याय हैं ।

ईसाई मत की परीक्षा ।

प्रथम खण्ड ।

जिस में चार अध्याय हैं ।

पृष्ठ

दूसरा खण्ड।

जिस में दो अध्याय हैं।

दीन महम्मदी की परीक्षा।

जिस में चार पर्ब्ब हैं।

पितृपुत्रपवित्रात्मनेनमः ।

सतमतनिरूपण ।

दोहा ।

अलख अगोचर अलखगति • अजर अमर अविकार ।
अटल अकाम अनादि अज • जगपालक करतार ॥
रसना एक अनेक गुण • कहं लगि कहों बखान ।
मोहि अति दीन मलीन पर • द्रवहु सु कृपा निधान ॥

अथ आरंभ ।

धन्य है वह अनादि अनन्त अद्वितीय परमेश्वर जो सृष्टिकर्त्ता और पालनकर्त्ता है और वही पवित्र अरु धर्माध्यक्ष अपनी सब बातों में सच्चा है जिस को कभी किसी ने न देखा न कोई देख सकता है वह अगम ज्योति में बास करता है जहां किसी की मति बुद्धि नहीं पहुंच सकती। स्तुत है वह परमेश्वर कि जिस समय सारे जगत् पर अन्धकार छा रहा था कहा कि उंजियाला हो और हो गया। तेजोमय है वह परमेश्वर कि जब लोग पाप के अन्धकार में चलते फिरते और मृत्यु की छाया में बैठे थे उस काल पुनःकथन किया कि उंजियाला हो जा और तत्क्षण ऊपर से प्रातःकाल का उंजियाला चमकने लगा और उद्धार का सूर्य्य उदय हुआ कि मनुष्य को जीवन का मार्ग दिखलावे और कुशल के पथ पर पहुंचावे। परन्तु बड़े शोक की बात है कि यद्यपि उस अनादि अनन्त परमेश्वर ने अपनी ज्योति जगत् पर फैलाई कि जिस के साम्ने सूर्य्य एक जुगनू भी नहीं तिस पर भी बहुतेरे ऐसी अचेत [illegible] में पड़े हैं कि उस ज्योति

पर ओट करके एक झिलमिलाते दीपक को जो उन के अथवा उन के पुरखे लोगों का बारा है सूर्य्य समझते हैं और अंधियारे में भटकते फिरते हैं हाय उन की अज्ञानता पर क्या लाखों दीपक कहीं सूर्य्य की बराबरी कर सकते हैं अथवा चिनगारी कहीं मशाल के साम्ने चमक सकती है फिर उस पराक्रमी सूर्य्य के साम्ने कि जिस की एक किरण से हम प्रकाशित हो सकते हैं उन के बारे हुए दीपक कब उंजियाले हो सकते हैं। इस लिये हर एक मनुष्य को अपनी मुक्ति के कारण सत्य उंजियाले की खोज करनी चाहिये अर्थात् सत्य मत की खोज करनी सब को अति आवश्यक है और जिस भांति हर एक मनुष्य सूर्य्य की ज्योति को दीपक की चमक से बिभेद कर सकता उसी रीति से जिसे कुछ भी बुद्धि ज्ञान है वह प्रामाणिक लक्षणों से सच्चे मत को झूठे मतों से अलग कर सकता है। सो अब हम परमेश्वर से सहायता चाहके अति दीनताई से सत्य की खोज करते हैं जिसतें उस की प्रसन्नता और हम सभों का कुशल मंगल होवे।

सतमत के लक्षण ।

यह बात [illegible]क मानते हैं कि परमेश्वर ने मनुष्य के कारण मत को ठहराया और यह भी कि उस मत में पहिले परमेश्वर के गुण और स्वभाव का वर्णन होना अवश्य है।

दूसरे उस में सृष्टि की और मनुष्य की उत्पत्ति और उस की उत्पत्ति के कारण का वर्णन जो कुछ कि हो सो परमेश्वर के गुण और स्वभाव और माहात्म्य के योग्य हो।

तीसरे इस का भी वर्णन हो कि परमेश्वर और मनुष्य से क्या सम्बन्ध है।

चौथे उस मत के ऊपर परमेश्वर की ऐसी छाप हो कि वैसी कोई न कर सके।

सतमत का पहिला लक्षण।

सत्य मत में परमेश्वर के गुण और स्वभाव का वर्णन अवश्य है इस में जगत् के मताचारी सब बातों को एक ही प्रकार से वर्णन नहीं करते तौभी परमेश्वर के कितने गुण ऐसे हैं कि जिन्हें नास्तिकों को छोड़ सब मान लेते हैं और यह भी मान लेते हैं कि जिस मत में उन गुणों के लक्षण नहीं वह मत परमेश्वर की ओर से नहीं। वे गुण ये हैं—

१ परमेश्वर पवित्र है और उस की पवित्रता उस के सब गुणों की मणि है।

२ परमेश्वर न्यायी है अरु निष्पक्ष होके वह हर एक मनुष्य को उस की अन्तर्गति और चालचलन के समान यथायोग्य बदला देता है।

३ परमेश्वर दयालु है क्योंकि यद्यपि मनुष्य पापी और अपराधी हो तथापि वह उस की सर्वथा भलाई चाहता है परन्तु इस रीति से कि उस की दया से उस के न्याय और पवित्रता में बट्टा न लगे।

४ परमेश्वर अन्तर्ज्ञानी और सर्वज्ञानी है और भूत भविष्य वर्त्तमान की सब बातों का जाननेहार है। और वह मनुष्य के सर्वकाल की अवस्था को जानता है उस के समस्त बिचार ज्ञान से भरपूर हैं और नित्य उन के पूरे करने का यत्न अच्छे से अच्छा करता है। इस से जाना जाता है कि जब पहिले ही से मनुष्य की आत्मिक आवश्यकता एक है तो मुक्ति का मार्ग भी जो परमेश्वर ने उस के लिये ठहराया एक ही होगा और मनुष्य को तो कुछ आगे की सुध नहीं है इस कारण उन की बातें घड़ी घड़ी बदल जातीं और बिरुद्ध पड़ती हैं परन्तु परमेश्वर ऐसा सर्वज्ञानी है कि उस ने जगत् की उत्पत्ति से पहिले ही हर एक समय के लोगों

की अवस्था और आवश्यकता को बिचारके उन के लिये उपाय रचा जो बदलने का नहीं ।

५ परमेश्वर सत्य है और जो जो कहता सब सत्य होता है उस की एक बात उस की दूसरी बात को कभी खण्डन नहीं करती सो परमेश्वर की पुस्तक एक हो अथवा अनेक उस में बिरुद्धता अनहोनी है और जब कि वह सारी सृष्टि का सृजनहार ठहरा तो उस का बचन भी सृष्टि के यथार्थ बृत्तान्त के बिरुद्ध नहीं हो सकता ।

६ परमेश्वर सर्बशक्तिमान अर्थात् जो चाहता सो कर सकता है परन्तु इस रीति पर नहीं कि दो बिरुद्ध एकत्र हैं ।

७ परमेश्वर एक है ।

८ परमेश्वर समभाव है अर्थात् उस के गुण स्वभाव और बिचार कभी नहीं बदलते ।

ये आठ सत्य लक्षण और लक्षणों से परे परमेश्वर के हैं जिन में किसी को सन्देह नहीं और इस बात को भी सब मान लेते हैं कि जिस मत अथवा पुस्तक में इन गुणों का प्रमाण नहीं वह कभी परमेश्वर की ओर से नहीं हो सकता यदि कोई ऐसा कहे भी तो वह झूठा है ।

सतमत का दूसरा लक्षण ।

सत्य मत में मनुष्य की और जगत् की उत्पत्ति और उस की उत्पत्ति के कारण का जो कुछ कि बृत्तान्त हो उस्से परमेश्वर के गुण और माहात्म्य प्रगट होयें विशेष करके ये दो बातें—

१ मनुष्य की और जगत् की उत्पत्ति का बर्णन ।

२ इस बात का बर्णन कि मनुष्य के उत्पन्न होने का क्या अभिप्राय है ।

सतमत का तीसरा लक्षण।

सत्य मत में इस का बर्णन चाहिये कि परमेश्वर और मनुष्य के बीच क्या सम्बन्ध है इस मे दो बातें हैं—

पहिली यह कि परमेश्वर को मनुष्य से क्या सम्बन्ध है क्या वह उस का सृजनहार और पालनहार और उस पर और समस्त संसार पर प्रभुता रखता है अथवा नहीं और यदि वह सब का सृजनहार और स्वामी है तो उस ने कुछ आज्ञा भी दिई होगी कि मनुष्य को क्या क्या किया चाहिये और क्या क्या नहीं और धर्म्म अधर्म्म में क्या भेद है।

दूसरी यह कि मनुष्य को परमेश्वर से क्या सम्बन्ध है क्या वह उस का सिरजा है और उस को अपनी सब बातों का लेखा देना है कि नहीं यदि लेखा देना है और वह पापी है तो उसे क्षमा किये जाने की आशा है कि नहीं और यदि आशा है तो कैसी है।

सत्य मत में इन बातों का सन्देश अति आवश्यक है जिसतें मनुष्य अपने को और परमेश्वर को पहिचाने और अपनी सर्वदा की भलाई लहे फिर चाहिये कि उस मत में ऐसी समता और उत्तमता हो कि उस से हर एक का मन जो निष्पक्षी और ईश्वरखोजी हो बोधित होवे।

सतमत का चौथा लक्षण।

सत्य मत पर परमेश्वर की ऐसी छाप होवे कि कोई मनुष्य वैसी न कर सके जिसते उस का होना परमेश्वर की ओर से निःसन्देह ठहरे और जब कि परमेश्वर असीम है इस लिये उस की कितनी बातें भी मनुष्य की समझ से दूर हैं सो यदि उस की पुस्तक में ऐसी बातों का कुछ बर्णन हो तो अचरज नहीं और यद्यपि हम यहां लों समझें कि वे बाते परमेश्वर के योग्य और मनुष्य के बिषय में अच्छी हैं

तौभी जो उन का भेद अच्छी रीति से न जान सकें तो कुछ अचरज नहीं सो इन दो कारणों से सर्वदा योग्य है कि परमेश्वर अपने बचन में एक ऐसा लक्षण और छाप रक्खे कि ईश्वर के खोजनहार उसे पहिचान लें और जब परमेश्वर के बचन का मान्ना सारे संसार को आवश्यक है तो चाहिये कि उस के बचन के लक्षण भी प्रगट और प्रत्यक्ष होवें फिर आश्चर्य्य और भविष्यद्वाणी से पक्का और प्रत्यक्ष लक्षण कौन हो सकता है ।

पहिले आश्चर्य्य । वह यह बात है कि परमेश्वर की बान और सृष्टि की रीति और बस्तुन के तत्त्व से बाहर होवे और जिसे परमेश्वर आप अथवा किसी के द्वारा से प्रगट करे और उस में कई चिन्ह हैं उन में से—

१ यह कि वह मत ही के ठहराने के लिये हो ।

२ यह कि वह प्रत्यक्षदर्शी साक्षियों के साम्ने जो सच झूठ में बिभेद कर सकते हों दिखाया जावे ।

३ यह कि उस से परमेश्वर की महिमा प्रगट होवे ।

४ यह कि देखनेहार उस को विद्या के प्रमाण बिना जान जायें ।

५ यद्यपि उस समय के लोग उस आश्चर्य्य कर्म के झुठाने को बहुत चाहे हों पर झुठा न सके हों ।

इन के अधिक आश्चर्य्य के और भी चिन्ह हैं जिन का वर्णन करना यहां कुछ प्रयोजन नहीं और सम्भव है कि और भी आश्चर्य्य सचमुच हों जिन में ये चिन्ह न होवें पर जिन आश्चर्य्यों से कि भविष्यद्वक्ता अथवा मत अथवा स्वर्गीय पुस्तक प्रामाणिक होवें उन में इन चिन्हों का होना अवश्य है ।

दूसरे भविष्यवाणी । वह आश्चर्य्य की रीति पर आगे का सन्देश देना है और उस से परमेश्वर की सर्वज्ञता और

सच्चानता और सत्यता और संसार पर उस की प्रभुता प्रगट होती है और ईश्वरीय पुस्तक के लिये बड़ा भारी प्रमाण है क्योंकि वह भविष्यवाणी जब कि पीढ़ी से पीढ़ी लों पूरी होती चली जाती है तो हर एक समय के लिये एक प्रत्यक्ष आश्चर्य्य है बरन उस से वह आश्चर्य्य जो मत के प्रगट करने के समय दिखाये गये और भी दृढ़ता पाते हैं ।

सतमत का निरूपण ।

निदान इन लक्षणों से मत का निरूपण अच्छी रीति से हो सकता है और जिस में ये लक्षण न होवें वह मत परमेश्वर की ओर से नहीं इस लिये हम पक्ष और हठ को छोड़के और सच्चाई का अभिलाष रखके उन्हीं लक्षणों से अपने आस पास के मतों का निर्णय करें बिशेष करके हिन्दू मुसलमान और ईसाइयों के मत का और उन्हीं लक्षणों से अच्छे प्रकार से उन का मिलान करें फिर वह लक्षण कि जिन से इन मतों का निरूपण कर सकते यदि चाहें तो सारे जगत् के मत का इन से निरूपण हो सकता है और यह समझा चाहिये कि यहां तात्पर्य मत के बिचार का है न मतावलंबी का क्योंकि मत का प्रमाणिक और अप्रमाणिक होने का उसी पर स्थल है न उस के आश्रितों पर। सो हमारा यह प्रश्न है कि क्या ये तीनों मत सत्य हैं अथवा इन में से एक और यदि एक है तो कौन सा है अब ये तीनों मत ईश्वरीय मत होने का बाद करते हैं इस लिये हम पक्ष को त्याग करके बड़े यत्न से उन का निरूपण करते हैं और पहिले धर्ममय कृपानिधान पालक कृपालु से यह बिन्ती करते हैं कि अपने दास की बुद्धि का ऐसा प्रकाश करे कि इन में से सत्य मार्ग को निकालके ऐसे ढब पर दिखावे कि इस पुस्तक के पढ़ने-हारे समझके उसे अंगीकार और स्वीकार कर लें । सो अब

क्या हिन्दू क्या और कोई हम सब से बिन्ती करते हैं कि वे यह न समझें कि हम इस पुस्तक को बाद बिवाद की रीति पर लिखते हैं कभी नहीं परन्तु केवल प्रेम और हितार्थ से और इस में यदि कोई ऐसी बात हो कि किसी के मन में खेद उपजे तो हमारे शुभ अभिप्राय और शुभचिन्तन को समझके उसे क्षमा करे और केवल दो चार शब्द अथवा पद अथवा पृष्ठ अथवा पत्रे को देखकर झगड़ा न करने लगे परन्तु पुस्तक के आदि से अन्त लों बनाने के अभिप्राय को परमेश्वर के डर संयुक्त अच्छी रीति से सोचे और परमेश्वर सब पर अपना ऐसा अनुग्रह करे कि जितने मत जो उस की ओर से न हों उन्हें सब छोड़ देवें और यह न समझें कि अपने पुरखे लोगों के मत हम न छोड़ेंगे क्योंकि मत परमेश्वर का है न कि पुरखे लोगों का और कोई किसी के संग न आया न किसी के संग जायगा और न वहां कोई किसी के काम आवेगा परन्तु अपना धर्म्म ही अपने संग जावेगा और सच्चा मत ही काम आवेगा क्योंकि यह बात प्रत्यक्ष है कि जो मार्ग परमेश्वर की ओर से है वही परमेश्वर लों पहुंचावेगा नित्यता लों उस के माहात्म्य और उस के अनुग्रह से सब का उद्धार होवे ।

आश्चर्य

प्रामाणिक होवे उन ५ इन

दूसरे भविष्यवाणी । वह

का सन्देश देना है और उस

ऊपर के लक्षणों से हिन्दू धर्म्मकी परीक्षा।

प्रथम खण्ड ।

पहिला अध्याय ।

हिन्दू धर्म की पुस्तक चार वेद और चार उपवेद और छः वेदांग और छः उपांग हैं पर उन में चार वेद और छः शास्त्र और अठारह पुराण प्रसिद्ध हैं सो अब उन पुस्तकों की बातें ऊपर के लक्षणों से परखी जाती हैं। पहिले यह समझना चाहिये कि उन पुस्तकों से परमेश्वर दो प्रकार का जाना जाता है एक निर्गुण दूसरा सगुण निर्गुण शब्द का अर्थ यह है कि जिस मे गुण नहीं है और परमेश्वर निर्गुण तब रहता जब कि सृष्टि नहीं रहती उस दशा का कुछ बर्णन नहीं है वह तो मानो निद्रा की ऐसी दशा है उस में उसे कुछ कहा नहीं जाता कि पवित्र है अथवा अपवित्र सच्चा है अथवा झूठा सामर्थी है अथवा असामर्थी सज्ञान है अथवा अज्ञान क्योंकि सर्वथा निर्गुण है और इसी कारण से वह ब्रह्म कहलाता है अर्थात् न पुरुषलिंग न स्त्रीलिंग परन्तु नपुंसक लिंग है।

सो इन पुस्तकों की रीति से परमेश्वर सगुण तब होता है जब कि उस को सृष्टि रचने की इच्छा होती है और उस में माया उपजती और अहंकार समा जाता तब तीन गुण अर्थात् सत्व रज तम उपजते और उन करके सृष्टि उत्पन्न होती और वह सब बस्तुन में व्यापक हो जाता है अर्थात् दूध पानी की नाईं सब मे मिल जाता है जैसे वेद मे लिखा है कि सृष्टि होने के समय परमेश्वर कहता है एकोहंबहुस्याम् अर्थात एक मैं हूं बहुत हो जाऊंगा। फिर वेद में लिखा है*

*साम वेद के अरण्य गान मे ।

कि वही किसान होके भूमि को जोतता बोता और जल बनकर उसे सींचता है और अन्न होकर सब का उदर भर है सत्य और असत्य उसी से है।

सत असत्य दोउ जासे हैं। फिर इन के निर्णय कासे हैं।

अथर्ब्बण वेद के मंडूक उपनिषद् में यह वर्णन है कि अग्नि उस का शिर और सूर्य्य चंद्रमा उस के नेत्र और दसों दिशा उस के श्रवण और वेद उस की वाणी और वायु उस का श्वास और संसार उस की बुद्धि पृथिवी उस के चरण और सारी सृष्टि का जीव वही है कि वही आप सब कुछ है भलाई बुराई का प्रतिफल देनेहारा और भुगतनेहारा भी वही है। वह मनुष्यों और देवताओं और होम बलिदानों में बास करता है वह गगनपंथ में गमन करता और जल में मीन बनके उत्पन्न होता है भूमि पर तृण होके उपजता पर्वतों से सोते होके बहता है होम और बलिदान का अंग वही है तथापि वह महा पवित्र और अति महान् है* जैसे इन ऋचाओं अरु और बहुत ठौरों में लिखा है

अग्निर्मूर्द्धा चक्षुषी चंद्रसूर्य्यौ।
विदिशःश्रोत्रे वाङ्विवृत्ताश्च वेदाः।
वायुः प्राणो हृदयं विश्वमस्य पद्भ्यां
पृथिवी ह्येषः सर्वभूतांतरात्मा॥

फिर यह ऋचा है पुरुष एवेदं विश्वं कर्म तपोब्रह्म परामृतं।

भी फिर यह ऋचा है प्राणो ह्येषः सर्वभूतैर्विभाति विजानन्
आश्चर्य भवते नातिवादी।
प्रामाणिक होव ...ोपनिषद् में यह लिखा है हंसःशुचिषद्
दूसरे भविष्य... ता बेदिषदतिथिर्दुरोणसत्
का सन्देश देना है

* यजुर्वेद के काठक उपनिषद् में।

नृषद्वर सद्दृत सद्व्योम सदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतंबृहत्।

और बशिष्ठ ने भी कहा है एकस्मात्सर्बगाद्देवात्सर्बशक्तेर्महात्मनः विभागकल्पनाशक्तिर्लहरीवोत्थिताम्भसः ।

अर्थात् ईश्वर से जो सर्बब्यापी सर्बशक्तिमान परमात्मा है एक शक्ति निकलती है जो विभाग होने के योग्य है जैसे समुद्र से तरंग ।

फिर वेद में भी लिखा है एकोदेवःसर्ब्बभूतान्तरात्मा ।

सो इस विषय में उन पुस्तकों से और बातों के संग्रह करने का कुछ प्रयोजन नहीं है क्योंकि वेद शास्त्र पुराण का सारार्थ यही है कि

एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म नेह नानास्ति किंचन ।

अर्थात् एक अद्वैत ब्रह्म है उस के परे और कुछ नहीं । निदान उन पुस्तकों के समान ईश्वर जो निर्गुण है उस का कुछ वर्णन ही नहीं ।

जाको नहिं कुछ बर्णन चिन्हा ।
ऐसो ईश्वर इन सब किन्हा ॥

और सगुण होके सब जीव वही है सो उस के गुण के बिचार करने के समय यह सोचा चाहिये कि जब वह सगुण होता है तो उस में कैसे कैसे गुण पाये जाते हैं ।

पहिले परमेश्वर पवित्र है*

उन पुस्तकों के बहुत ठौरों में लिखा है कि परमेश्वर पवित्र है ।

अति पवित्र है वह करतारा ।
या में नहिं कुछ सोच बिचारा ॥

जैसे उपनिषद् में भी लिखा है जिस का बर्णन ऊपर हुआ और जब कि वह केवल सगुण होने की दशा में जाना जाता

---

*देखो ३ पृष्ठ मे ।

है तो बिचार किया चाहिये कि वह उस दशा में पवित्र ठहरता है अथवा नहीं। पर जब कि वह सगुण हुआ और सर्वव्यापक होके सर्व वस्तुन का कर्त्ता ठहरा तो उस को पवित्रता का ठहराना कठिन समझ पड़ता है। भला अब इस बात में यह समझा चाहिये कि उन पुस्तकों से वह सगुण होके पहिले त्रिदेव बना तो त्रिदेव में होके वह पवित्र ठहरता है अथवा नहीं क्योंकि जो उन में होके जो सब के स्वामी कहलाते हैं पवित्र न ठहरे तो किस में होके पवित्र ठहरेगा।

त्रिदेव के विषय में कि इन में कौन श्रेष्ठ है हिन्दू शास्त्र में बड़ा बाद बिवाद है परन्तु बहुतेरे पहिले ब्रह्मा को ठहराते हैं फिर विष्णु को तब महेश को।

१ ब्रह्मा। कहो वह पवित्र है अथवा नहीं। चण्डीपाठ के लिखे हुए के समान उस की मूर्त्ति रक्त बर्ण बनाते हैं इस कारण कि उस में रजोगुण भरा है। पुराणों में लिखा है कि वह सदा मद पान करता था। एक दिन मतवाला होके अपनी कन्या को कुदृष्टि से देखा और मत्स्यपुराण में लिखा है कि उस को अपनी पत्नी बनाके देवताओं के सहस्र बर्ष लों उस से भोग किया फिर उस को अपने पुत्र स्वायंभुव से बिवाह कर दिया। इन बातों के प्रमाण लिंगपुराण और वायुपुराण और मत्स्यपुराण और कुल्लूकभट्ट की मनुस्मृति की टीका में और विष्णुपुराण के पहिले अंश के ७ अध्याय में देख लो। लिखा है कि उसी अपराध से उस का शिर भी कटा। फिर शिव और पार्वती के बिवाह मे वह सब के साम्ने निर्लज्ज और कामातुर हुआ। दूसरे पुराण में लिखा है कि वह अपने कुकर्मों से श्रापित हुआ और उस की पूजा सर्वत्र से उठ गई। फिर उसे पवित्र कौन कह सकता है। और सांख्यसार में लिखा है कि ब्रह्मलोक अपवित्र है और उस के

सारे बासी भी अपवित्र हैं क्योंकि वे मृत्यु और तीनों गुण के अधीन हैं ।

२ विष्णु । पद्मपुराण में लिखा है कि वह जलंधर दैत्य का रूप धरके उस की स्त्री के पास गया और छल करके उस से प्रसंग किया । फिर वह एक और पतिव्रता स्त्री को भ्रष्ट करने के लिये एक वृक्ष बना । और एक समय असुरों को धोखा देने के लिये एक सुन्दर स्त्री का रूप धारण किया और मोहिनी बनके शिव को ठगा ।

विश्वविमोहनि रूप बनाई ।
ठग्यो शिवहि अति मन चित लाई ॥

३ महादेव । वह अपने विवाह में नग्न होके बैल पर चढ़ा और पार्वती को संग लेके कामरूप एक ग्राम में गया । शिवपुर ग्राम में एक वेश्या रहती थी महादेव भीख मांगते मांगते उस के घर गया और उसे फुसला पिघलाके उस के संग कुकर्म किया इस लिये पार्वती ने अनखाके उसे बहुत सा दुर्वचन और कटुबचन कहा । फिर उस ने मायारूपी मोहिनी से कहा कि यदि मैं तुझ से एक बार प्रसंग करूं तो अपनी सारी तपस्या का फल तुझे दूं । और वह एक समय अत्रि मुनि की तपस्या भंग करने के लिये उस के सामने जाके नग्न हो नाचने लगा । लिखा है कि उसी मुनि के स्राप से उस का लिङ्ग कटके गिर पड़ा ।

त्रिदेव की यह बात हिन्दुओं में विदित है कि अत्रि मुनि की स्त्री अनसूया सब स्त्रियों मे बड़ी पतिव्रता थी सो उस के भ्रष्ट करने के लिये ब्रह्मा विष्णु महेश ने भिखारी का रूप धारण करके उस के द्वार पर जा भिक्षा मांगी जब वह भिक्षा लेके द्वार पर आ उन्हें देने लगी तो वे बोले कि हम यह भिक्षा न लेंगे हम भूखे हैं यदि तुम हमें घर में ले चलके

नग्न होके भोजन कराओ तो हम ठहरें नहीं तो चले जाते हैं तब अनसूया ने अपने पति के पास जा सारा वृत्तान्त कह सुनाया और वह उस से आज्ञा पाके उन्हें भोजन कराने को अपने गृह के भीतर ले गई जब वे जेवने को बैठे तो अनसूया ने क्या किया कि जल लेके उन तीनों पर छिड़क दिया और जल के पड़ते ही वे छोटे छोटे बालक बन गये तब वे लज्जित हो शिर नीचे कर भोजन करने लगे जब खा पी चुके तो अनसूया ने उन्हें ले जाके पालने में सुलाया यह समाचार जब नारद ने पाया तो उन की स्त्रियों से जाके कहा वे सुनके हड़बड़ा उठीं और झटपट अनसूया पास दौड़ी आईं और अपने अपने पतियों के लिये उस से गिड़गिड़ाने और बिन्ती करने लगीं उस ने उन से कहा कि अपने अपने पतियों को पहिचानके ले जाओ जब वे लेने गईं तो देखा कि तीनों बालक एक ही रूप हैं तो अत्यन्त चकित और अचंभित हुईं इत्यादि ।

ऐसी ऐसी बातों के बिचार करने से ठीक समझ पड़ता है कि परमेश्वर हिन्दू धर्म की पुस्तकों के अनुसार से ब्रह्मा विष्णु महेश होके पवित्र नहीं ठहरता और हम इतने ही पर समाप्त कर सकते हैं क्योंकि जब ये ही पवित्र न ठहरे जो सब से उत्तम और श्रेष्ठ और सब के सृजनहार कहलाते हैं तो फिर कौन पवित्र ठहर सकेगा जब राजा में ऐसा तो प्रजा में कैसा पर सब के बोध के लिये उन के दो एक श्रेष्ठ अवतारों का भी कुछ बर्णन करते हैं ।

४ राम जो दशरथ का पुत्र था और बड़े अवतारों में गिना जाता है उस के विषय में बाल्मीकीय रामायण में लिखा है कि नारद मुनि के श्राप से उसे जन्म लेना पड़ा वह लड़ने और हत्या करने और ब्राह्मणों के मारने और अपनी स्त्री को रावण के हर ले जाने के पीछे फिर स्वीकार करने से ऐसा

अशुद्ध और अपवित्र ठहरा कि अयोध्या के लोगों के संग खाने पीने से रहित हुआ इस लिये उसे प्रायश्चित्त करना पड़ा।

५ कृष्ण के विषय में जो कितने शास्त्रों से पूर्ण ब्रह्म का अवतार है और विष्णु भी कहलाता है लिखा है कि उस ने गोकुल गांव की स्त्रियों से उन के पति अच्छत ही प्रसंग किया।

गोपीनामधरसुधारसस्यपानैरुत्तुङ्गस्तनकलशोपगूहनैश्च
आश्चर्य्यैरपिरतिविभ्रमैर्मुरारेःसंसारेमतिरभवत्प्रहर्षिणीह ।

अर्थात् गोपियों के अधरामृतरस के पान करने और उत्तुंग स्तनकलशों के आलिंगन और रति केलि के अद्भुत विलास से इस संसार में मुरारि का मन अत्यन्त हर्षित हुआ। फिर जब सब व्रजबाला मिलकर यमुना नहाने गईं तो वह उन के चीरों की पोटली उठा ले जाके कदम पर चढ़ गया और उन्हें जल के बाहर नंगी अपने सामने खड़ी किया यह बात हिन्दुओं में प्रसिद्ध है वर्णन करने का कुछ प्रयोजन नहीं वहां के लोग आज लों उस वृक्ष की बड़ाई कर करके यात्री लोगों को उस का दर्शन कराते हैं। फिर उस ने भीमसेन से लड़ाई किई जिसतें डंडा राजा की घोड़ी को लेवे जो रात्रि समय सुन्दर स्त्री बन जाती थी पर न ले सका और अयनघोष वैश्य की स्त्री राधा को जिस भांति से निकाल लाया सब जानते हैं और ब्रह्मवैवर्तपुराण के कृष्णजन्मखण्ड में लिखा है कि उस के अवतार लेने का अभिप्राय राधा ही के स्नेह से था। सो इन बातों के सामने शास्त्रों से और बातों का संग्रह करना कुछ आवश्यक नहीं क्योंकि उन्हीं से जान पड़ता है कि हिन्दुओं के मत से परमेश्वर पवित्र नहीं और वे जो कहते हैं कि सामर्थी को कुछ दोष नहीं उन का उत्तर हम आगे देंगे।

दूसरे परमेश्वर न्यायी है*

अब हम परमेश्वर के इस गुण से हिन्दुओं के मत को परखते हैं।

१ ब्रह्मा के विषय में लिखा है कि जब कृष्ण बन में गाय चराता था तो वह आके गाय बछड़ों को चुरा ले गया †

बछड़ा गाय चोरावनहारा ।
सोऊ ठहरा जगकरतारा ॥
ऐसा बचन सुने को भाई ।
छुटत हंसी मोहि रहो न जाई ॥

२ विष्णु के बिषय में लिखा है कि उस ने समुद्र मथने के समय असुरों को अमृत देने की प्रतिज्ञा किई परन्तु जब एक असुर को अमृत पीते देखा तो चक्र से उस का शिर काट डाला और अमृत की सन्ती उसे मृत्यु का रस घोल पिलाया। मत्स्यपुराण में लिखा है कि भृगु मुनि की स्त्री की तपस्या भंग करने के लिये उस का भी शिर काट डाला उस समय भृगु ने उसे श्राप दिया कि जा तुझे पृथिवी पर सात बार जन्म लेना पड़े।

भृगु ने श्राप दियो रिसियाई ।
सात बार जन्मसि जग जाई ॥
मनुज शाप जेहि ऊपर लागे ।
ताकहं ईश्वर कहहिं अभागे ॥

३ महादेव के बिषय में। वह अपने लड़के बालों को भूखों छोड़कर वेश्या के संग रहता था। फिर जब शनैश्चर ने बिन अपराध उस के पुत्र गणेश का शिर जलाकर भस्म किया तो उस ने उस की कुछ सहायता न किई और उस के बदला लेने में अपना कुछ न्याय न दिखलाया। महाभारत

---

*देखो ३ पृष्ठ मे। † भागवत के दशमस्कन्ध में देखो।

के सैाप्तिक पर्व्व में लिखा है कि कुरुक्षेत्र की लड़ाई के पश्चात् जब युधिष्ठिर ग्रैार उस के संगी जो रण में से बच निकले थे अपने डेरे को ग्राये तो महादेव ने रात भर उन की रखवारी करने की प्रतिज्ञा बांधी पर जब अश्वत्थामा ने जो दुर्योधन की सेना में का था महादेव को जाके फुसलाया पिघलाया तो उस ने उस को उन्हें मारने दिया बरन उस कर्तव्य के लिये अपना खड्ग भी उसे दिया।

४ राम के विषय में लिखा है कि उस ने बालि को बिन अपराध मार डाला ग्रैार उस का राज्य लेके उस के भाई सुग्रीव को दिया।

धर्म हेतु अवतरेउ गोसाईं।
मारेहु मोहि व्याधा की नाईं॥

एक समय की यह बात है कि वह अपने मन्दिर में कालपुरुष से वार्त्ता करता था ग्रैार लक्ष्मण द्वार पर था इतने में ऋषि दुर्वासा ग्राया तो लक्ष्मण ने उसे भीतर जाने दिया इस लिये राम ने क्रोधित होके अपने भाई को त्याग दिया तब लक्ष्मण शोक के मारे जाके सरयू नदी में डूब मरा। इस के पीछे राम ने भी उसी प्रकार से अपने प्राण को घात किया।

५ न्याय का गुण यदि कृष्ण में ढूंढ़िये तो उस का पाना ग्रैार भी कठिन है उस ने तो बारबार गोपियों का दूध दही माखन चुरा चुराके खाया माना दूध ही पीता रहा। फिर जब वह कंस के मारने के लिये मथुरा को जाता था तो मार्ग में कंस का धोबी उसे मिला उस ने उस से राजा के कपड़े मांगे उस ने न दिये तो कृष्ण ने उस बपुरे को वहीं मार डाला। फिर उन वस्त्रों को पहिन किसी से फूलों की माला ग्रैार किसी से चन्दन लेके अपने को ग्रैार अपने

भाई को भली भांति से संवारा सिंगारा। फिर लिखा है कि यद्यपि कोई सुकर्मी भी हो जो वह जाड़े के कृष्णपक्ष में मरे तो फिरके उसे जन्म लेना पड़ेगा पर जो गरमी के शुक्लपक्ष में मरे तो वह मोक्ष पद पावेगा ऐसे न्याय पर हाय है।

यह नहिं न्याय कहावे बन्धो।
यह तो अति अन्धेर के धन्धो॥
तम प्रकाश एक सम नहिं होई।
सुधा गरल कहं कहे न कोई॥

सो हिन्दू के मत की रीति से परमेश्वर का न्यायी होना नहीं ठहर सकता।

तीसरे परमेश्वर दयालु है*

कितने शास्त्रों में ब्रह्मा सृष्टिकर्त्ता कहलाता है सो जो वह सृष्टिकर्त्ता है तो उसे चाहता था कि संसार पर अपनी दया प्रगट करता पर शास्त्र और पुराण में इस का पता नहीं लगता परन्तु इस के बिरुद्ध वह तो सर्वथा अपने ऐसे वैसे काम काजों में लिप्त रहा।

किये न कछू जगत हित लागी।
निज स्वारथहि रहे रस पागी॥
सो ठहरो कस सिरजनहारा।
यह तो बड़ अजगुत ब्यवहारा॥

सचमुच रजोगुण ऐसा ही है। विष्णु जगत का पालनकर्त्ता कहलाता है पर बिचार करने से जाना जाता है कि वह केवल देवताओं और गौ ब्राह्मणों की रक्षा करनेहारा था। उस ने मलीनों के बचने के लिये उपाय न किया परन्तु यह कहा कि जो जैसा करेगा सो तैसा पावेगा और उन्हें ऐसी ही दुर्गति और दुर्दशा में छोड़ दिया।

---

* देखो ३ पृष्ठ मे।

छोड़ेउ दुर्गति महं सब लोगू ।
यह नहि अहै दया के योगू ॥

महादेव जगत का संहारकर्त्ता कहलाता है उस में दया किस प्रकार से ठहरे और यह तो उस की सारी बातों से प्रगट है देखो उस ने अपने लड़केबालों को भूखों मारा और उन को सुधि न लिई। फिर अपने पुत्र गणेश की कुछ सहायता न किई और उस के शिर को शनैश्चर की दृष्टि से भस्म हो जाने दिया* पद्मपुराण में लिखा है कि उस ने आप अपने पुत्र का मस्तक काट डाला सो कहो उस में दया कहां।

निज सुत शिर काटे जो कोई ।
कहो सो दयावन्त किमि होई ॥
यह तो कर्म वधिक कर अहई ।
तम को दिवस कहो को कहई ॥

लिखा है कि राम कृष्ण पापियों पर अनुग्रह करने को नहीं आये परन्तु उन्हें बधन करने के लिये। राम ने जब बिन अपराध बालि को मार डाला और अपने भाई लक्ष्मण को निर्मोही होके त्याग दिया तो उस में दया कहां रही।

तजे बन्धु जो बिन अपराधू ।
दयावन्त तेहि गनहिं न साधू ॥
बधिकहु कहूं दयायुत होही ।
सुनि अति अचरज लागत मोही ॥

कृष्ण के विषय में लिखा है कि उस ने कंस के धोबी को बिन अपराध मार डाला और बड़ी लड़ाइयां जो महाभारत

*इस की कथा पुराणों मे लिखी है कि शनैश्चर अपने ध्यान तपस्या में ऐसा लवलीन था कि अपनी स्त्री से कुछ प्रयोजन न रखता था वह एक दिन उस पास गई और चाहा कि उस से रमे पर शनैश्चर ने उस की ओर ताका भी नहीं तब उस ने क्रोधित होके उसे शाप दिया कि जा जिसे तू देखे उस का शिर भस्म हो, आपे विपत का मारा गणेश कहीं साम्हने आन पड़ा उस के देखते ही गणेश का शिर भस्मंत हो गया।

में लिखी हैं उसी ने करवाईं और लाखों मनुष्यों को कटवाया और कितने देशों को सत्यानाश करवा डाला सो जिस की मति अन्धी होगी वह उसे इस अन्धेर करने पर दयालु समझेगा। फिर कुरुक्षेत्र की लड़ाई में जब कर्ण के रथ का पहिया रेती में धस गया तो अर्जुन ने उस के मारने का विचार मन में किया इतने में कर्ण पुकार उठा कि हे अर्जुन ऐसे आरत समय में मारना क्षत्री का धर्म नहीं यह सुनकर अर्जुन थंभ रहा पर कृष्ण ने उसे उभाड़के कर्ण को मरवाया और अपने सारे कुटुंब का बिन मोक्ष किये नाश होने का कारण हुआ और इसी से उस का नाम अन्धकारी हुआ। सो हिन्दू मत से परमेश्वर का दयालु होना भी नहीं ठहरता।

चौथे परमेश्वर अन्तर्ज्ञानी और सर्वज्ञ है*

जाना जाता है कि यह गुण भी उन के त्रिदेव और बड़े बड़े अवतारों में नहीं है इस लिये उस के वर्णन का कुछ प्रयोजन नहीं पर हिन्दुओं के समझने के लिये कुछ थोड़ा सा वर्णन किया जाता है। वेद शास्त्र और पुराण ब्रह्मा विष्णु महेश अथवा उन के भक्तों के बनाये हुए हैं हां बहुतेरे कहते हैं कि चार वेद ब्रह्मा ने अपने चार मुख से प्रचारे हैं। उन पुस्तकों में स्वर्ग और पृथिवी की अस्र और वस्तुन के विषय [illegible] की बातें ऐसी विरुद्ध हैं कि उन से निश्चय समझ कहलाता है [illegible]उन पुस्तकों का कारक सर्वज्ञ परमेश्वर नहीं केवल देवताओं [illegible] आगे होगा। फिर उन देवताओं का उस ने मलोनों के [illegible] होना क्योंकर ठहरता है कि उन [illegible] कहा कि जो जैसा [illegible]ब की स्त्री और कोई औरों की स्त्रियें हो दुर्गति और दुर्दशा [illegible] करके काम क्रोध लोभ मोह [illegible]

---

*देखो ३ पृष्ठ मे।

फंसके अज्ञानी बने। जैसा ऊपर की बातों से निश्चित हुआ। स्कंदपुराण में लिखा है कि जब मुनि के स्राप से शिव का लिङ्ग गिर पड़ा तो वह इतना बढ़ा कि सारी पृथिवी और आकाश में छा रहा ब्रह्मा विष्णु कोई उस के सिरे को न जान सके कि कहां तक है निदान एक पाताल को गया दूसरा आकाश को तिस पर भी किसी ने उस का अन्त न पाया। उसी पुराण के दूसरे ठौर में लिखा है कि समुद्र के मथने के समय जब कि असुर अमृत पी रहे थे तो जब लों सूर्य्य और चंद्रमा ने विष्णु को उस का सन्देश न दिया तब लों उस ने न जाना। फिर लिखा है कि महा प्रलय के समय वेद जल में डूब गया और वेद के बिन देखे ईश्वर सृष्टि को सिरजने न सकता था इस लिये मत्स्य का अवतार लिया और सहस्रों बरस में ढूंढ़ ढांढ़कर उसे पाया और अपना काम चलाया। सो ऐसी ऐसी बातों से ठीक समझा जाता है कि वे अन्तर्ज्ञानी और सर्वज्ञानी कभी नहीं ठहर सकते।

राम में भी यह गुण नहीं ठहर सकता क्योंकि जब वह दण्डक बन में गया तो नहीं जानता था कि अगस्त्य मुनि का स्थान कहां है इस लिये सुतीक्ष्ण से पूछा*। जब रावण सीता को हर ले गया तो उस ने न जाना कि उसे कौन कहां ले गया और जब हनुमान ने उसे सीता का सन्देश ला दिया तौभी उस ने अपनी स्त्री का मर्म न जाना कि उस का धर्म्म बचा है कि नहीं। जब रावण से संग्राम हो रहा था तो हनुमान और अंगदादि सब बानरों से उसे सारा समाचार मिला करता था। फिर जब रावण मर गया और उस की रानी मंदोदरी रोदन करती हुई राम के पास आई तो उस

*देखो बाल्मीकि के आरण्य काण्ड में।

ने उस का बृत्तान्त न जाना परन्तु उसे बर दिया कि जा तेरा अहिबात अचल रहे। यह सब बात रामायण में लिखी है।

कृष्ण का भी अन्तर्यामी होना नहीं ठहरता क्योंकि एक समय राजा शाल्व ने उसे धोखा देके कहा कि मैं ने तेरे पिता बसुदेव को बन्दीगृह में डाल रक्खा है।

अन्तर्यामी वह फिर कैसे।
धोखा खाय जो मूरख ऐसे॥

यह बात सुनते ही वह बिलख बिलख रोने लगा और बड़ा ही खेद किया। बिचार किया चाहिये कि यदि वह अन्तर्यामी होता तो ऐसा धोखा क्यों खाता और बिलख बिलखके क्यों रोता। फेर महाभारत में लिखा है कि कृष्ण आप अंगद के बाण से बिसभोरी मे मारा गया।

पांचवें परमेश्वर सत्य है*

परमेश्वर जो कुछ कहता है सब सत्य है सो बिचार करने से सत्यता का गुण भी त्रिदेव और दोनों श्रेष्ठ अवतारों में न ठहरेगा।

ब्रह्मा विष्णु महेश और राम कृष्ण की सत्यता के वर्णन में।

१ जब ब्रह्मा विष्णु के साथ शिव के लिङ्ग के अन्त का ठिकाना लगाने गया और न लगा तो ब्रह्मा ने लज्जित होके कामधेनु गौ और केतकी से एक मत किया जिसतें वे उस के लिये झूठी साक्षी देवें। फिर वह आप तीन बार मिथ्या बोला कि मैं ने शिव के लिङ्ग का ठिकाना लगाया उसी असत्य के कारण देवताओं ने उसे श्राप दिया और बामनपुराण मे लिखा है कि इसी अपराध के लिये उस की पूजा संसार से उठ गई।

---

*देखो 8 पृष्ठ मे।

२ विष्णु ने ऋषि उद्दालक को छलके उस का व्याह अगुवाई से करवाया जिसतें लक्ष्मी को आप लेवे। पद्म-पुराण में लिखा है कि उस ने जलंधर दैत्य का रूप धारण करके उस की स्त्री का सत भंग किया और विष्णुपुराण में लिखा है कि समुद्र मथने के समय दैत्यों से झूठा ठहरा। फिर उस का एक अवतार अर्थात् वामन का छल करने ही के कारण हुआ जिस ने राजा वलि को छला।

वामन होय छला वलि जाई।
तेहि ईश्वर कहें नर बौराई॥
छल की बात छली में होई।
ईश्वर महं छल कहे न कोई॥

३ शिव ने अंजनी से छल किया कि उसे अपने पास बुलाके मंत्र देने के धोखे से अपना वीर्य्य उस के कान में डाल दिया।

४ राम* जब रावण की बहिन शूर्पणखा अपना विवाह उस से करने चाहती थी तो उस ने उसे कहा कि तू मेरे भाई लक्ष्मण पास जा कि वह अकृतदार है अर्थात् न किया उस ने विवाह मेरा तो विवाह हो चुका है यद्यपि लक्ष्मण का भी विवाह हो चुका था और जब वह चली जाती थी तो राम ने लक्ष्मण को सैन किया कि इस की नाक कान काट ले उस ने वैसा ही किया इसी कारण राम रावण से वैर हुआ और उस ने वृक्ष के ओट खड़े होके बालि को बाण से मारा।

५ कृष्ण ने राजा युधिष्ठिर से झूठ बुलवाया इसी कारण उस की एक अंगुली गल गई और उसे नरक बिलोकना पड़ा। फिर महाभारत में कृष्ण के विषय में यह बात है

*वाल्मीकि की रामायण के आरण्य कांड के पचीसवें सर्ग में।

कि जब उस की आंख राधा से लगी तो एक दिन उस की ननंद अयनघोष की बहिन ने उन दोनों को रतिकेलि करते एक ठौर पाया इस लिये राधा बड़ी भयमान हुई और कृष्ण से बोली कि वह मेरे पति से यह सब बात कह देगी और वह आके मुझे मार डालेगा। कृष्ण ने उस से कहा कि तुम मत डरो कदाचित् वह आवेगा तो मैं काली बन जाऊंगा और तुम मेरी पूजा करने लगियो इस यत्न से बच जाओगी। निदान उस की ननंद ने अपने भाई से सारी बातें जा कहीं जब अयनघोष आया तो उन दोनों को वैसा ही पाया कि वह काली बन बैठा है और राधा उस की पूजा कर रही है सो आज लों उन चारों की चार प्रतिमा बनती हैं एक कृष्णकाली दूसरी राधा तीसरी अयनघोष चौथी कोटला कहलाती है। हाय हाय भला ऐसे व्यभिचारी और कपटरूपी में कहीं सच्चाई हो सकती है।

वेद शास्त्र और पुराण की सत्यता के विषय में।

वेद शास्त्र और पुराण कितनी बातों के विषय परस्पर बिरुद्धता रखते हैं और पृथिवी आकाश का भी समाचार ठीक नहीं बतलाते।

उत्पत्ति के विषय में।

पहिले—उत्पत्ति ही के विषय में बड़ी बिरुद्धता ठहरती है।

१ ऋग्वेद के ऐत्तरेय आरण्य में लिखा है कि आदि में यह संसार केवल आत्मा था और उस के परे चल अरु अचल कुछ न था उस ने बिचार किया कि मैं सृष्टि रचूं सो भांति भांति की सृष्टि रची। जल ज्योति जीवधारी इत्यादि। फिर उस ने बिचार किया कि अब मैं इस सृष्टि का रखवाला उत्पन्न करूं सो उस ने एक पुरुष को जल मे से निकाला और उस की ओर ध्यान से देखा तब उस का मुख अण्डा

सा खुल गया और मुख से एक शब्द निकला और शब्द से आग उत्पन्न हुई। फिर उस के नथुने खुल गये और नथुने से श्वास आने जाने लगी और श्वास से आकाश बन गया। फिर नेत्र खुल गये और नेत्रों से ज्योति और ज्योति से सूर्य्य बना। इस के पीछे श्रवण खुले और श्रवण से सुन्ने की शक्ति और उस शक्ति से चारो कोण का बिस्तार हुआ। फिर चर्म बढ़ा और उस चर्म पर बाल जम आये और बाल से घासपात वृक्ष आदि उत्पन्न हुए। तब छाती खुल गई और छाती से बुद्धि और बुद्धि से चंद्रमा बना। फिर नाभि खुली और नाभि से अपान हुआ और उस से मृत्यु उत्पन्न हुई। इस के उपरान्त लिंग खुला और उस से वीर्य्य निकला जिस से जल बना इस के अधिक और भी वर्णन है। फिर वह मन में बिचार करने लगा कि यह पुरुष मुझ बिन कैसे रह सकेगा मैं इस में किधर से प्रवेश करूं इस के उपरान्त वह उस की सीमन अर्थात् खोपड़ी की धारी से समा गया इस लिये वह धारी विद्रुती कहलाती है और वही मुक्ति का मार्ग है। पुरुष जब अपना वीर्य्य स्त्री के उदर रूपी खेत में डालता है तो उस का गर्भ रहता है फिर उत्पन्न होता है यह उस का पहिला जन्म है स्त्री उस का पालन पोषण करती है पर पिता ने उसे पहिले ही अपने तन में पाला था और जन्म लेने के पीछे फिर भी पालता है अर्थात् उसे खाने पीने को देता है और हर भांति से प्रतिपालन करता है सो वह जो लड़के के उत्पन्न होने के पहिले और पीछे पालता है मानो आप को पालता है और लड़के के उत्पन्न होने से पिता मानो दूसरा जन्म पाता है और यह उस का दूसरा जन्म पूजा पाठ के लिये उस की ठौर पर होता है और वह जब अपना समय पूरा कर चुकता है तो मर

कि जब उस की आंख राधा से लगी तो एक दिन उस की ननंद अयनघोष की बहिन ने उन दोनों को रतिकेलि करते एक ठौर पाया इस लिये राधा बड़ी भयमान हुई और कृष्ण से बोली कि वह मेरे पति से यह सब बात कह देगी और वह आके मुझे मार डालेगा। कृष्ण ने उस से कहा कि तुम मत डरो कदाचित् वह आवेगा तो मैं काली बन जाऊंगा और तुम मेरी पूजा करने लगियो इस यत्न से बच जाओगी। निदान उस की ननंद ने अपने भाई से सारी बातें जा कहीं जब अयनघोष आया तो उन दोनों को वैसा ही पाया कि वह काली बन बैठा है और राधा उस की पूजा कर रही है सो आज लों उन चारों की चार प्रतिमा बनती हैं एक कृष्णकाली दूसरी राधा तीसरी अयनघोष चौथी कोटला कहलाती है। हाय हाय भला ऐसे व्यभिचारी और कपटरूपी में कहीं सच्चाई हो सकती है।

वेद शास्त्र और पुराण की सत्यता के विषय में।

वेद शास्त्र और पुराण कितनी बातों के विषय परस्पर बिरुद्धता रखते हैं और पृथिवी आकाश का भी समाचार ठीक नहीं बतलाते।

उत्पत्ति के विषय में।

पहिले—उत्पत्ति ही के विषय मे बड़ी बिरुद्धता ठहरती है।

१ ऋग्वेद के ऐत्तरेय आरण्य में लिखा है कि आदि में यह संसार केवल आत्मा था और उस के परे चल अरु अचल कुछ न था उस ने बिचार किया कि मैं सृष्टि रचूं सो भांति भांति की सृष्टि रची। जल ज्योति जीवधारी इत्यादि। फिर उस ने बिचार किया कि अब मैं इस सृष्टि का रखवाला उत्पन्न करूं सो उस ने एक पुरुष को जल मे से निकाला और उस की ओर ध्यान से देखा तब उस का मुख अण्डा

सा खुल गया और मुख से एक शब्द निकला और शब्द से आग उत्पन्न हुई। फिर उस के नथुने खुल गये और नथुने से श्वास आने जाने लगी और श्वास से आकाश बन गया। फिर नेत्र खुल गये और नेत्रों से ज्योति और ज्योति से सूर्य्य बना। इस के पीछे श्रवण खुले और श्रवण से सुन्ने की शक्ति और उस शक्ति से चारो कोण का बिस्तार हुआ। फिर चर्म बढ़ा और उस चर्म पर बाल जम आये और बाल से घासपात वृक्ष आदि उत्पन्न हुए। तब छाती खुल गई और छाती से बुद्धि और बुद्धि से चंद्रमा बना। फिर नाभि खुली और नाभि से अपान हुआ और उस से मृत्यु उत्पन्न हुई। इस के उपरान्त लिंग खुला और उस से वीर्य्य निकला जिस से जल बना इस के अधिक और भी वर्णन है। फिर वह मन में बिचार करने लगा कि यह पुरुष मुझ बिन कैसे रह सकेगा मैं इस में किधर से प्रवेश करूं इस के उपरान्त वह उस की सीमन अर्थात् खोपड़ी की घारी से समा गया इस लिये वह घारी विद्रृती कहलाती है और वही मुक्ति का मार्ग है। पुरुष जब अपना वीर्य्य स्त्री के उदर रूपी खेत में डालता है तो उस का गर्भ रहता है फिर उत्पन्न होता है यह उस का पहिला जन्म है स्त्री उस का पालन पोषण करती है पर पिता ने उसे पहिले ही अपने तन में पाला था और जन्म लेने के पीछे फिर भी पालता है अर्थात् उसे खाने पीने को देता है और हर भांति से प्रतिपालन करता है सो वह जो लड़के के उत्पन्न होने के पहिले और पीछे पालता है मानो आप को पालता है और लड़के के उत्पन्न होने से पिता मानो दूसरा जन्म पाता है और यह उस का दूसरा जन्म पूजा पाठ के लिये उस की ठौर पर होता है और वह जब अपना समय पूरा कर चुकता है तो मर

जाता है और दूसरी देह पाता है यह उस का तीसरा जन्म होता है ।

२ यजुर्वेद में यह लिखा है कि बिराट् पुरुष से सृष्टि उत्पन्न हुई उस का यह बर्णन है कि जब उस ने दूसरे के होने की इच्छा किई तो तुरन्त स्त्री पुरुष का स्वरूप एक ही में बन गया फिर दोनों अलग २ होके पति पत्नी हुए और मनुष्य की बंशावली चली । फिर स्त्री लजाके गौ बन गई और पुरुष बैल इस प्रकार से उन का भी बंश बढ़ चला । तब वह घोड़ा बन गया और यह घोड़ी और घोड़ी से गदही और घोड़े से गदहा और गदही से बकरी और गदहे से बकरा और बकरी से भेड़ी और बकरे से भेड़ा बन गये । इस प्रकार से हर भांति के जीव जन्तु चूंटे चूंटी कीट पतंग इत्यादि उत्पन्न हुए ।

३ उसी वेद की एक दूसरी ठौर में लिखा है कि पहिले यह संसार जल ही जल था और सृष्टिकर्त्ता पवन होके उस पर फिरता डोलता था फिर उस ने भूमि को देखा और बाराह का रूप धारण करके उस को थाम लिया और बिश्वकर्मा होके उसे सुधारा । सो वह प्रथित अर्थात् पृथिवी हो गई फिर उस ने पृथिवी पर जो ध्यान किया तो देवताओं और बसु और आदित्य को बनाया तब उन देवताओं ने सृष्टिकर्त्ता से कहा कि हम सृष्टि को कैसे बनावें उस ने कहा कि उग्र तपस्या से जैसे मैं ने तुम्हें बनाया निदान उस ने उन्हें आकाशाग्नि दिई और उस से उन्हों ने तपस्या करके बरस दिन में एक गौ बनाई । इस के परे और भी बर्णन है ।

४ मंडूक उपनिषद में लिखा है कि जैसे मकड़ी अपना जाल उगलती और फिर निगलती है और जिस प्रकार घासपात भूमि से निकलते और फिर उसी में मिल जाते हैं

और जिस भांति बाल और रोम मनुष्य की देह पर जमते हैं वैसा ही सारी सृष्टि उसी अविनाशी से उत्पन्न होती है।

५ मनु के शास्त्र के पहिले अध्याय में सृष्टि की उत्पत्ति का यह वर्णन है

आसीदिदं तमोभूतं . अप्रज्ञातमलक्षणम्।
अप्रतर्क्यमविज्ञेयं . प्रसुप्तमिव सर्वतः॥
ततः स्वयंभूर्भगवान् . अव्यक्तोव्यंजयन्निदम्।
महाभूतादिवृत्तौजाः . प्रादुरासीत्तमोनुदः॥
योसावतींद्रियग्राह्यः . सूक्ष्मोऽव्यक्तः सनातनः।
सर्वभूतमयोऽचिंत्यः . स एव स्वयमुद्बभौ॥
सोभिध्यायशरीरात्स्वात् . सिसृक्षुर्विविधाःप्रजाः।
अप एव ससर्ज्जादौ . तासु बीजमवासृजत्॥
तदंडमभवद्धैमं . सहस्रांशुसमप्रभम्।
तस्मिन् जज्ञे स्वयं ब्रह्मा . सर्वलोकपितामहः॥ इत्यादि।

अर्थात् पहिले यह ऐसा अंधियारा था कि जिस का वर्णन नहीं हो सकता और तर्क नहीं किया जाता जैसे निद्रा की अवस्था मे जब स्वयंभू सूक्ष्म भगवान् जगत् प्रगट करने के लिये महत्तत्वादि और भूतादि रूप करके आप प्रत्यक्ष हुआ तब ब्रह्मा ने सृष्टि रचने का विचार करके पहिले जल को सृजा और उस जल मे अपना बीज डाला उस बीज से स्वर्ण के ऐसा एक अंडा हुआ जो सूर्य के समान चमक रहा उस अंडे में सर्वलोक पितामह ब्रह्मा आप उत्पन्न हुआ और उस अंडे में ब्रह्मा अपने बर्ष भर रहा इस के उपरान्त उस ने ध्यान करके उस अंडे को दो भाग कर डाला और उन दो भागों से स्वर्ग और पृथिवी को बनाया और उन दोनों के मध्य में आकाश और अष्ट दिशा और जलस्थान शब्दादिक सूक्ष्म रूप में महाभूतादिकों को संयुक्त करके उत्पन्न किया

और सभों का नाम और कर्म पृथक् २ कर दिया और अग्नि वायु और सूर्य इन तीन से ऋग् यजुर् साम तीनों वेद को यज्ञ के सिद्धार्थ धूआं और काल और काल की बिभक्ति और नक्षत्र ग्रह इत्यादि को बनाया। फिर तप और वाणी और रति और काम क्रोध इत्यादि को बनाया सुख दुःख आदिक द्वंद्व से सृष्टि को संयुक्त किया और अपने मुख और हस्त और जांघ और पद से चारों वर्ण को उत्पन्न किया जिससे मनुष्य का बंश बढ़े। फिर उस ने अपनी देह को आधों आध कर स्त्री पुरुष बनके बिराट् को उत्पन्न किया इस के पीछे दश महा ऋषियों को जो प्रजापति हैं उत्पन्न किया अर्थात् मरीचि अत्रि अंगिरा पुलस्त्य पुलह क्रतु प्रचेता बशिष्ठ भृगु नारद। फिर सात मनु को अरु और सब देवताओं और ऋषियों और यक्ष राक्षस गंधर्ब किन्नर अप्सरा पिशाच असुर नाग सुपर्ण पितर विद्युत वज्र मेघ और नाना प्रकार के पशु पक्षी और कीट पतंग इत्यादि को उत्पन्न किया।

६ कूर्मपुराण में सृष्टि का यह बर्णन है

अहं नारायणो देवः . पूर्वमास न मे पुरम्।
उपास्य बिपुलां निद्रां . भोगिशय्यासमाश्रितः॥
ततो मे सहसोत्पन्नः . प्रसादान्मुनिपुङ्गवाः।
चतुर्मुखस्ततो जातो . ब्रह्मा लोकपितामहः॥
अग्रे ससर्ज वै ब्रह्मा . मानसानात्मनः समान्।
सनकं सनातनं चैव . तथा चैव सनन्दनम्॥
रुद्रं सनत्कुमारं च . पूर्वमेव प्रजापतिः।
ईश्वरासक्तमनसो . न सृष्टौ दधिरे मतिम्॥
तेष्वेवं निरपेक्षेषु . लोकसृष्टौ प्रजापतिः।
मुमोह मायया सद्यो . मायिनः परमेष्ठिनः॥
तं बोधयामास सुतं . जगन्मायो महामुनिः।

बोधितस्तेन विश्वात्मा . ततापं परमं तपः ॥
स तप्यमानो भगवान् . न किंचित् प्रत्यपद्यत ।
ततो दीर्घेण कालेन . दुःखात् क्रोधो व्यजायत ॥
क्रोधाविष्टस्य नेत्राभ्यां . अपतन्नश्रुबिन्दवः ।
भृकुटीकुटिलात्तस्य . ललाटात्परमेष्टिनः ॥
समुत्पन्नो महादेवः . शरण्यो नीललोहितः ।
तमाह भगवान् ब्रह्मा . सृजेमा बिबिधाः प्रजाः ॥

अर्थात मैं नारायण देव जो हूं सो सृष्टि के पहिले था पर मेरे रहने को स्थान न था तब उनींदे होके मैं ने शेष नाग की शय्या बनाके शयन किया इस के पीछे मेरी दया से चतुर्मुख ब्रह्मा अकस्मात उत्पन्न हुआ जो सारे जगत का पितामह है । फिर ब्रह्मा ने अपने मन से अपने सदृश पांच पुरुषों को उत्पन्न किया अर्थात सनक सनातन सनंदन सरु और सनत्कुमार इन्हों ने ईश्वरासक्तमन होके सृष्टि रचने को न चाहा उन की सृष्टि रचने मे अनिच्छा देखके ब्रह्मा माया करके मोह को प्राप्त हुआ तब जगत माया महामुनि विष्णु ने अपने पुत्र ब्रह्मा को बोधित किया इस के पीछे वह उग्र तप करने लगा परन्तु तप कुछ फलित न हुआ और बहुत काल से तप करते २ उस के मन मे जो खेद हुआ तो उस खेद से क्रोध उपजा और क्रोध करके नेत्रों से जल की बूंदें टपकने लगीं और भौंएं टेढ़ी हुई और उन भौंओं से महादेव उत्पन्न हुआ जिस का स्वरूप नीलाहट लिये लाल है ब्रह्मा ने उसे बिबिध भांति की सृष्टि रचने की आज्ञा दिई । फिर उसी ठौर में लिखा है कि महादेव ने सृष्टि रचने के समय बहुत से भूत प्रेत पिशाचों को उत्पन्न किया जो उत्पन्न होते हो संसार को भक्षण करने लगे यह चरित्र देखकर ब्रह्मा बड़ा बिस्मित हुआ और महादेव से बोला

अलं प्रजाभिः सृष्टाभिरीदृशीभिः ।

अर्थात् ऐसी सृष्टि रचने से तुम बस करो ।

दूसरे शास्त्रों से जाना जाता है कि काली भी सृजनहारी है जैसा लिखा है कि उस ने कहा मैं आदि शक्ति होके बीज हूं और बीज की शक्ति होके शिव और शिव की शक्ति होके विष्णु और विष्णु की शक्ति होके सारी सृष्टि मैं ही हूं। किसी में लिखा है कि काली जो आदि शक्ति देवी है उस ने तीन अंडे बनाये और तीनों से ब्रह्मा विष्णु महेश हुए और किसी में लिखा है कि पृथिवी मधु कैटभ की लोथ से बनी है। काशीखण्ड में लिखा है कि प्रकृति सब की सृजनहारी है हां वह सब कुछ आप ही है। और विष्णु-पुराण के प्रथम अंश के पहिले अध्याय में लिखा है कि विष्णु ने प्रधान और पुरुष से मिलके सृष्टि को उत्पन्न किया बरन उसी पुराण में बारंबार लिखता है कि पुरुष और प्रधान दोनों आप ही ईश्वर हैं हां जले विष्णुः स्थले विष्णुः इत्यादि। फिर रामायण के अयोध्याकांड में दो प्रकार का वर्णन है जो ऊपर की बातों से बिरुद्ध है और आरण्यकांड के एक्कीसवें सर्ग में लिखा है कि कश्यप की स्त्री मनु से चार वर्ण उत्पन्न हुए ब्राह्मण उस के मुख से क्षत्री छाती से वैश्य जांघ से शूद्र पांव से। सो अब बिचार किया चाहिये कि सृष्टि की उत्पत्ति के वर्णन तो अनेक प्रकार के हैं पर उन मे सत्य कौन है।

जैसे हिन्दुओं के मत से ठीक नहीं जाना जाता है कि सृष्टि क्योंकर हुई वैसा ही यह भी नहीं खुलता कि उस का सिरजनहार कौन है। कोई ठौर तो ब्रह्मा को और कोई ठौर विष्णु को और कोई ठौर काली को लिखा है और किसी ठौर से जाना जाता है कि देवते और मुनि भी सृष्टि के सिरजने मे साझी हैं। लिंगपुराण से शिव सिरजनहार

ठहरता है जैसे लिखा है कि ब्रह्मांड से शिव निकला और उस की बाईं ओर से विष्णु और लक्ष्मी और दहिनी ओर से ब्रह्मा और सरस्वती उसी में यह श्लोक है

विशुद्धोयस्ततो रुद्रः . पुराणे शिव उच्यते ।
शिवेन दृष्टा प्रकृतिः . शैवी समभवद् द्विजाः ॥
सर्गादौ सा गुणैर्युक्ता . पुरा व्यक्ताप्यजायत ।
महदादिविशेषान्तं . विश्वं तस्याः समुत्थितं ॥

अर्थात जब शिव ने प्रकृति को जो सृष्टि के पहिले गुणसंयुक्त सूक्ष्म थी देखा तो वह शिव सामर्थ्य धारण करके महत्तत्त्वादि को उत्पन्न करती भई और उन मे तीन प्रकार के अहंकार उत्पन्न हुए सात्विक अहंकार से देवता और राजस से दशों इंद्री और तामस से पंचतत्त्व तब सब मिलकर ब्रह्मांड हुआ ।

ब्रह्मवैवर्तपुराण के ब्रह्मखण्ड से जाना जाता है कि कृष्ण सृष्टिकर्त्ता है कि उस की दहिनी ओर से विष्णु और बाईं ओर से शिव और नाभि से ब्रह्मा उत्पन्न हुए और इन तीनों ने उस की पूजा किई* ।

---

*हम जानते हैं कि सृष्टिकर्त्ता और सृष्टि की उत्पत्ति के विषय में जो २ विपरीत वर्णन शास्त्र और पुराणों में लिखे हैं उन्हें पण्डित लोग कहते हैं कि यह और २ कल्पों एक और २ मन्वन्तरों के विषय के हैं तो हम पूछते हैं कि भला इस जगत् का वर्णन कहां है अर्थात् जो यह है कि जिस सृष्टि में हम सब रहते हैं उस का ठीक वृत्तान्त किसी शास्त्र वा पुराण में हुआ नहीं फिर कल्पों और मन्वन्तरों की बातें विचारी पुरुषों के सामने साक्षी के योग्य कब ठहर सकती हैं कि पुराणों में लिखा है कि प्रथम अर्थात् स्वायंभू के मन्वन्तर में प्रियव्रत के वंश पृथिवी के राजा थे और उस के भाई उत्तानपाद के वंश दूसरे अर्थात् स्वारोचिष के मन्वन्तर में थे फिर लिखा है कि दक्ष जो उत्तानपाद के वंश में था उस ने सातवें अर्थात् वैवस्वत के मन्वन्तर में अपनी पुत्री कश्यप से व्याह दिई । जानना चाहिये कि शास्त्र की बातों से चार युग मिलके एक महायुग कहलाता है और सहस्र महायुग का एक कल्प होता है और एक कल्प में चौदह मन्वन्तर होते हैं फिर कब हो सकता है कि दो भाई में से एक के बेटे पहिले मन्वन्तर में और दूसरे भाई के बेटे दूसरे मन्वन्तर में राज्य करें और दक्ष अपनी बेटी सातवें अर्थात् अब के मन्वन्तर में कश्यप से व्याहे फिर समझना चाहिये कि मन्वन्तरों के विषय पुराणों में बड़ी विपरीतता है ।

सृष्टि की कथा और ज्योतिष और भूगोलविद्या इत्यादि के विषय में।

दूसरे—सृष्टि की कथा और ज्योतिष और भूगोल विद्या इत्यादि के विषय वेद शास्त्र और पुराणों मे बड़ी भूल चूक है जैसे उन में लिखा है कि सुमेरु गिरि पृथिवी के मध्य में है और तीन लक्ष क्रोश उस की ऊंचाई और चौंसठ सहस्र क्रोश उस की जड़ की मोटाई और एक सौ अट्ठाईस क्रोश उस के शृङ्ग की चौड़ाई और उस के ऊपर विष्णु शिव इन्द्र ब्रह्म और देवताओं का स्थान है और उस के आसपास और भी कितने पर्वत हैं जिन के ऊपर एक एक वृक्ष चार चार सहस्र चार २ सौ क्रोश के ऊंचे हैं पर बड़े अचंभे की बात है कि सारी पृथिवी का समाचार तो अन्वेषण किया गया पर उस पर्वत और उन वृक्षों का कहीं पताही नहीं लगता।

फिर लिखा है कि उस पर्वत की जड़ चौंसठ सहस्र क्रोश भूमि के नीचे गई है पर भूगोलबिद्या से ठीक जाना जाता है कि पृथिवी का व्यास चार सहस्र क्रोश से भी कुछ कम है और इसी पर्वत का वर्णन शास्त्र और पुराणों में बड़ी बिपरीतता से किया है। फिर जब यह पर्वत ही कहीं नहीं ठहरता तो बैकुण्ठ और ब्रह्मलोकादि कहां।

फिर मार्कण्डेयपुराण और श्रीभागवत में लिखा है

क्षारोदेक्षुरसोदसुरोदघृतोदक्षीरोददधिमंडोदशुद्धोदाः
सप्त सिंधवः परित उपकल्पिताः।

अर्थात् खारे जल और ऊखरस और मदिरा और घृत और दुग्ध और छाछ और मिष्ठ जल के ये सात समुद्र सुमेरु के चारों ओर बहते हैं। सो इन का भी कहीं ठिकाना नहीं केवल भ्रम के समुद्र में डूब मरना है। बालमीकि

रामायण के पहिले काण्ड में लिखा है कि समुद्र जब खोदा गया था तो जब लों गंगा उस मे बह न आई सूखा पड़ा रहा। भूगोल विद्या से निश्चय है कि पृथिवी गोल है और पुराणों में लिखा है कि कमल के पत्ते के समान है। फिर भूगोल विद्या से जाना जाता है कि पृथिवी परमेश्वर की इच्छा से अधर में लटक रही है परन्तु पुराण में लिखा है कि वह कच्छप की पीठ पर है और किसी मे लिखा है कि शेष नाग के सिर पर है। पृथिवी का घेर प्रमाण ठीक बारह सहस्र चार सौ चौंतीस क्रोश है पर पुराण में उस का घेर प्रमाण पचास कोटि योजन लिखा है सो इस में वे निःसन्देह लक्षों क्रोश दूर पड़े हैं। फिर भूगोल विद्या से पृथिवी सूर्य्य से चार करोड़ पचहत्तर लक्ष क्रोश दूर ठहरती है पर पुराण में केवल चार ही लक्ष क्रोश दूर लिखा है। यह भी उन की समझ की भूल है। पृथिवी चंद्रमा से एक लक्ष बीस सहस्र क्रोश दूर है परन्तु पुराण में आठ लक्ष क्रोश लिखा है। सो हिन्दुओं के शास्त्रों की ये बाते भूगोल विद्या और ज्योतिष से साक्षात् भूल ठहरती हैं और भूगोल विद्या ऐसी पूरी और जांची हुई है कि उस से जल स्थल सर्वत्र की यात्रा होती है। यदि यह विद्या ठीक न होती तो इस भांति की यात्रा भी न हो सकती। जैसे कि अंगरेजों का हिन्दुस्तान में आना इस विद्या बिना कठिन था और यही विद्या हिंदुओं के शास्त्रों को झुठलाती है। वेद में लिखा है कि सूर्य्य अग्नि से हुआ और चंद्रमा सूर्य्य से और मेंह चंद्रमा से और बिजली मेंह से होती है पर विद्या से जाना गया कि बिजली दो बादल की रगड़ से होती है और जिस बादल से मेंह आता है सो पृथिवी से तीन क्रोश से अधिक ऊंचा कभी नहीं हो सकता। फिर चंद्रमा तो पृथिवी से एक लक्ष बीस सहस्र क्रोश ऊंचा है॥

वेद और शास्त्र के बीच मत की शिक्षा के विषय में।

तीसरे—वेद और शास्त्र के बीच मत की शिक्षा के बिषय में और भी अधिक बिपरीतता है। सब मानते हैं कि मत की पहिली बात मनुष्य पर यह प्रगट करना है कि उस का परमेश्वर और स्वामी कौन है पर वेद शास्त्र में इस बात का बड़ा गड़बड़ है कभी नहीं जाना जाता कि स्वामी कौन है जिस की आराधना कीजिये। क्या ब्रह्मा है अथवा विष्णु अथवा महेश स्वामी है अथवा ये तीनों मिलकर जिन की उत्पत्ति ही के वर्णन मे बिरुद्धता है। किसी पुराण में लिखा है कि ये तीनों आदिशक्ति देवी से उत्पन्न हुए और वह इन्हें जनकर इन पर मोहित हो गई और इन तीनों से भोग किया। फिर भागवत अरु और पुराण मे यह बात है कि विष्णु की नाभि से एक कमल का फूल निकला और उस से ब्रह्मा उत्पन्न हुआ। दूसरे पुराणों में लिखा है कि आदि-शक्ति देवी से एक बीज उत्पन्न हुआ और उस बीज से विष्णु का पिता शिव निकला उस ने एक और बिरुद्धता का बीज बोया। पर मत्स्यपुराण में लिखा है कि ब्रह्मा से शिव उत्पन्न हुआ जैसे यह श्लोक है

ततोऽसृजद्वामदेवं त्रिशूलबरधारिणम्।

अर्थात् इस के पीछे ब्रह्मा ने बामदेव त्रिशूलधारी को उत्पन्न किया। पर नारदीयपुराण में यों है कि नारायण की दहिनी ओर से ब्रह्मा और बाईं ओर से विष्णु और बीच से शिव निकला। इन सब के बिरुद्ध लिंगपुराण में लिखा है कि शिव ब्रह्मांड से निकला और रूप धारण करके अपनी बाईं ओर से विष्णु और लक्ष्मी को और दहिनी ओर से ब्रह्मा और सरस्वती को उत्पन्न किया। फिर मार्कण्डेय पुराण में लिखा है कि महालक्ष्मी से विष्णु और महाकाली से महादेव

और महासरस्वती से ब्रह्मा उत्पन्न हुए। बाराहपुराण में है कि ब्रह्मा विष्णु महेश से एक शक्ति प्रगट हुई और वह शक्ति तीन भाग होके लक्ष्मी सरस्वती और काली बन गई सो उन तीनों देवों की उत्पत्ति के विविध बर्णन को कैसा ही अज्ञान मनुष्य सुनेगा तो क्या सन्देह न करेगा कि उन दश पांच में एक सत्य बात का कहनेहारा कौन है।

जैसा उन के उत्पन्न होने के बिषय में बिरुद्धता है वैसा ही उन के महत्पद के बर्णन में भी बहुत बिरुद्धता है जैसे एक जगह यह श्लोक है

सर्बव्यापी स भगवांस्तस्मात्सर्वगतः शिवः

वह भगवान् सर्बव्यापी है इस लिये शिव सर्बगत है।
इस के बिरुद्ध भागवत में यह श्लोक है

भवव्रतधरा ये च . ये च तान् समनुव्रताः ।
पाखण्डिनस्ते भवन्तु . सच्छास्त्रपरिपंथिनः ॥
मुमुक्षवो घोररूपान् . हित्वा भूतपतीनथ ।
नारायणकलाः शांताः . भजंति ह्यनसूयवः ॥

अर्थात् जो शिव की सेवा करें और जो उन के मत पर चलें पाखण्डी और सच्चे शास्त्र के शत्रु होयें। जो मुक्ति के अभिलाषी हैं वे भयानक रूपवाले भूतपति को छोड़ शान्त और निर्दोष हो नारायण की कला को भजते हैं। पद्मपुराण के बीच शिव की बड़ाई में यह श्लोक है

विष्णुदर्शनमात्रेण . शिवद्रोहः प्रजायते ।
शिवद्रोहान्न संदेहो . नरकं याति दारुणम् ॥
तस्माच्च विष्णुनामापि . न वक्तव्यं कदाचन ।

अर्थात् जो लोग कि विष्णु का केवल दर्शन करते हैं उन पर शिव का द्रोह होता है और शिव के द्रोह से निस्सन्देह मनुष्य घोर नरक में जाते हैं इस लिये विष्णु का नाम भी

कभी न लिया चाहिये। फिर उसी पुराण में इस श्लोक के विरुद्ध यह है

> यस्तु नारायणं देवं . ब्रह्मरुद्रादिदेवतैः।
> सममन्यैर्निरीक्षेत . स पाखण्डो भवेत्सदा॥
> किमत्र बहुनोक्तेन . ब्राह्मणा ये ह्यवैष्णवाः।
> न स्पृष्टव्या न वक्तव्याः . न द्रष्टव्याः कदाचन॥

अर्थात् जो समझते हैं कि और देवते अर्थात् ब्रह्मा रुद्र इत्यादि नारायण के समान हैं सो पाखण्डी हैं। इस में बहुत क्या कहना क्योंकि जो ब्राह्मण विष्णु को नहीं मानते उन से कभी न प्रश्न करना न बोलना न उन्हें देखना न छूना। वायुपुराण में लिखा है कि शिव ने ब्रह्मा और विष्णु को वर दिया और विष्णु को अपने से लघु ठहराके कहा कि मैं अग्नि तू धूम मैं दिन तू रात्रि तू असत्य मैं सत्य हूं इत्यादि।

वेद में शिव का नाम महादेव है इस के विरुद्ध पद्मपुराण में विष्णु का यह महत्त्व है

> येऽन्यदेवं परत्वेन वदन्त्यज्ञानमोहिताः।
> नारायणाज्जगन्नाथात् तेहि पाखण्डिनः स्मृताः॥

अर्थात् जो किसी दूसरे देवते को नारायण से जो जगत् का स्वामी है बड़ा जानते हैं सो अज्ञानी और पाखण्डा हैं। दूसरे ठौर मे यह श्लोक है

> एष देवो महादेवो विज्ञेयस्तु महेश्वरः।
> न तस्मात्परमं किंचित् पदं समधिगम्यते॥

अर्थात् महादेव को महा ईश्वर जान्ना चाहिये क्योंकि उस से कोई परम पद नहीं। लिंगपुराण मे लिखा है कि शिव के भक्त दधीच ने विष्णु और उस के समस्त उपासकों को जीत लिया और उसी पुराण में लिखा है कि दक्ष के यज्ञ में बीरभद्र ने विष्णु के शिर को काट डाला और पवन ने

उसे अग्नि में डाल दिया। निदान एक अटा दो बयार प्रसिद्ध है यहां एक अटा दश बयार हैं। फिर राम और कृष्ण विष्णु के अवतार कहलाते हैं इस कारण जो बातें ऊपर के श्लोकों में विष्णु के विषय लिखी हैं सो राम और कृष्ण से भी सम्बन्ध रखती हैं। महाभारत के आदि पर्व्व में लिखा है कि कृष्ण और बलदेव विष्णु के एक काले बाल और एक श्वेत बाल के अवतार हैं श्लोक यह है।

स चापि केशौ हरिरुद्ववर्ह शुक्लमेकमपरं चापि कृष्णम्। तौ चापि केशौ निविशेतां यदूनां कुले स्त्रियौ देवकीं रोहिणीञ्च। तयोरेको बलदेवो बभूव योऽसौ श्वेतस्तस्य देवस्य केशः। कृष्णो द्वितीयः केशवः सम्बभूव केशो योऽसौ वर्णतः कृष्ण उक्तः॥

फिर अनेक ठौर में लिखा है कि कृष्ण पूर्ण ब्रह्म का अवतार है। भागवत में यह बचन है कृष्णस्तु भगवान् स्वयम् अर्थात् कृष्ण आपही भगवान् है। विष्णुपुराण के पांचवें पर्व्व के पहिले अध्याय में लिखा है कि कृष्ण विष्णु के अंश का अंश है बचन यह है अंशांशावतारः। दानधर्म्म में लिखा है कि कृष्ण शिव और उमा का भक्त है और उन से बर मांग-कर लड़केबाले और स्त्रियों को पाया। ब्रह्मवैवर्त्तपुराण के कृष्णजन्मखण्ड मे लिखा है कि एक दिन जब विष्णु दंभ कर रहा था कि मैं सब का कर्त्ता हूं तो कृष्ण उसे निगल गया। काशीखण्ड से प्रगट है कि प्रकृति स्वामी है बरन जो कुछ है सो वही है जैसे लिखा है

सर्व्वमंत्रमयी त्वं वै ब्रह्माद्यास्त्वत्समुद्भवाः।
चतुर्वर्गात्मिका त्वं वै चतुर्वर्गफलोदया॥
त्वत्तः सर्व्वमिदं बिश्वं त्वयि सर्व्वं जगन्निधे।
यद् दृश्यं यददृश्यं च स्थूलसूक्ष्मस्वरूपतः॥
यत्तत्त्वं शक्तिरूपेण किंचिन्न त्वदृते क्वचित्।

अर्थात् सर्व मंत्र में तू ही पुकारी जाती है और ब्रह्मादिक सब तुझी से उत्पन्न हुए जीवन के चार पुरुषार्थ तू ही है और उन की प्राप्ति तुझी से है तुझी से सारा विश्व है हे जगदाधार तुझ मे सब कुछ है क्या दृश्य क्या अदृश्य क्या स्थूल क्या सूक्ष्म स्वरूप जो कुछ है सो शक्ति रूप होके तू ही है और तुझ से परे किंचित् बस्तु नहीं।

ब्रह्मा के विषय में इतनी बिरुद्धता नहीं है पर उस का भला कारण यह है कि उस के पाप के कारण से उस की पूजा सर्वत्र से उठाई गई। निदान यह बात कि किस को सृजनहार और स्वामी जानकर पूजिये वेद शास्त्र से कभी नहीं जानी जाती।

इन सब बातों के परे और बहुत सी बिरुद्धता हैं। ऋषि और मुनियों मे भी बड़ी बिपरीतता है जैसे ऋग्वेद मे लिखा है कि कोई तो यह कहता है कि भूर्भुवःस्वः इस मंत्र के बिना पढ़े यज्ञ होम सिद्ध होता है और दूसरे निज करके जाबालि का पुत्र सत्यकामा आज्ञा देता है कि नहीं सब बाते पूरी किई चाहियें।

षट् शास्त्रों में ऋषि मुनियों के बीच बड़ा वाद विवाद है और वे वेद से भी बड़ी बिपरीतता रखते हैं।

मीमांसा का लिखनेहारा जैमिनि कहता है कि वेद अनादि है पर गौतम कहता है कि सब शब्द अनित्य है इस लिये वेद भी अनित्य है। उस के बचन ये हैं

शब्दोऽनित्यः कार्यत्वात् पटवत्।

सांख्य शास्त्र में लिखा है कि सृष्टि प्रधान से हुई है और वैशेषिक शास्त्र मे लिखा है कि वह परमाणु से हुई है। वेदांत में लिखा है कि यह दोनों भूल हैं परमेश्वर सब कुछ आपही है। भगवद्गीता के तेरहवें अध्याय मे लिखा है कि

पुरुष और प्रकृति दोनों अनादि हैं। फिर वेदांत मे लिखा है कि आत्मा एक है और दूसरे शास्त्रों में लिखा है कि अनेक हैं। निदान शास्त्रों में ऐसे २ बखेड़े हैं और पुराण विरुद्ध बातों और कहानियों से भरे हैं* अचम्भे की बात यह है कि हर एक पुराण अपने को एक दूसरे से उत्तम और श्रेष्ठ ठहराता है। ब्रह्मवैवर्त्तपुराण के आदि में लिखा है कि यह पुराण सारे पुराणों में बड़ा बरन वेद के भूल चूक का भी सुधारनेहारा है उस के बचन ये हैं

भगवन् यत् त्वया पृष्टं ज्ञानं सर्वमभीप्सितम् ।
सारभूतं पुराणेषु ब्रह्मवैवर्त्तमुत्तमम् ॥
पुराणोपपुराणानां वेदानां भ्रमभंजनम् ।†

हिन्दू समझते हैं कि चार वेद विशेष करके ब्रह्मा की वाणी हैं पर शिवतंत्र में लिखा है कि तंत्र उन से भला है जैसे यह श्लोक है

मम पञ्चमुखेभ्यश्च पञ्चाम्नाया विनिर्गताः ।
पूर्वश्च पश्चिमश्चैव दक्षिणश्चोत्तरस्तथा ॥
ऊर्द्धाम्नायश्च पञ्चैते मोक्षमार्गाः प्रकीर्तिताः ।
आम्नाया बहवः सन्ति ऊर्द्धाम्नायेन नो समाः ॥

अर्थात् मेरे पञ्च मुख से पांच वेद निकले अर्थात् पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर ऊर्द्ध इन पांचों ने मोक्षमार्ग बतलाया है वेद तो

---

*विष्णुपुराण अरु और पुराणो मे लिखा है कि कपिल मुनि ने राजा सगर के साठ सहस्र पुत्रों को नाश किया परन्तु भागवत में लिखा है कि यह मिथ्या है उस का यह श्लोक है न साधुवादो मुनिकोपभर्ज्जिता नृपेन्द्रपुत्रा इति सत्वधामनि कथं तमो रोषमयं विभाव्यते जगत्पवित्रात्मनि खे रजो भुव इत्यादि ।

†फिर समझा चाहिये कि पुराणों का लिखनेहारा व्यास प्रसिद्ध है और कहते हैं कि उसी ने वेदान्त को भी लिखा और चारो वेद का सग्रह किया इस लिये जो कोई वेद और वेदान्त को मानता है उसे अवश्य है कि पुराणों को भी ईश्वरीय वचन करके माने ॥

बहुत हैं परन्तु ऊर्द्धमुखवाले वेद के समान कोई नहीं। और तंत्र में जिन्हें शिव ने वेद से श्रेष्ठ ठहराया लिखा है कि सब धर्म्मों से बाम धर्म्म उत्तम है जैसे यह श्लोक है

सर्व्वेभ्यश्चोत्तमा वेदा वेदेभ्यो वैष्णवं परम्।
वैष्णवादुत्तमं शैवं शैवाद्दक्षिणमुत्तमम्॥
दक्षिणादुत्तमं बामं बामात्सिद्धान्तमुत्तमम्।
सिद्धान्तादुत्तमं कौलं कौलात्परतरं नहि॥

अर्थात् वेद जो है सब से उत्तम है और वेद से वैष्णव पंथ और वैष्णव पंथ से शिव पंथ और शिव पंथ से दक्षिण पंथ और दक्षिण पंथ से बाम पंथ और बाम पंथ से सिद्धान्त मत और सिद्धान्त मत से कौल पंथ उत्तम है और कौल पंथ से कोई दूसरा बड़ा नहीं।

पूजा अर्चा और बिधि व्यवहारों के विषय में।

चौथे—फिर पूजा अर्चा और बिधि व्यवहारों में बड़ी बिपरीतता है। जब जड़ हो ऐसी तो शाखा कैसी। वेद में सूर्य्य चंद्र इन्द्र बरुण पृथिवी पवन अग्नि जल सरस्वती की पूजा है और पुराणों में अनेक बस्तुन की पूजा है। कृष्ण ने इन्द्र की पूजा छुड़वाके गोबर्द्धन पर्वत की पूजा करवाई।* वेदान्त में वे बातें हैं जिन्हें हिन्दू कहते हैं कि उन से मनुष्य माया मोह से छूटके और सब देव की आराधना तजके ब्रह्म को पहिचाने अर्थात् अपने को ईश्वर करके माने। सो वेद में तो थोड़ी सी बस्तुन की पूजा है और पुराण में अनेक बस्तुन की पर शास्त्र और वेदान्त में तो आपही को ईश्वर जाने। उन की यह भूल परमेश्वर अपने अनुग्रह और दया से दूर करे।

*फ़िरश्तः नाम तिथि ग्रंथ के लेखक ने लिखा है कि खलीफः वलीद के समय में जब कि महम्मद काज़िम ७११ ईसवी में सिन्ध पर चढ़ा उस समय हिन्दू मक्कः और मिसर में तीर्थयात्रा को जाया करते थे॥

कितने पुराणों में मद्य मांस बर्जित है और लिखा है कि जो कोई कलियुग में मद्य मांस खावे पीवे सो ठीक म्लेच्छ है पर भागवत से जाना जाता है कि कृष्ण जो कलियुग के आरंभ में हुआ उस के कुटुम्बी और द्वारिका के सब बासी मद्यपान करते थे बरन जिस दिन उन में बिगाड़ हुआ और परस्पर लड़ मरे सब के सब मतवाले थे। और बलराम का मद्य पीना तो प्रसिद्ध है ।

धर्म्मशास्त्र में लिखा है कि जो जीव खाने में आते हैं और जो लोग कि उन्हें खाते हैं दोनों को ब्रह्मा ही ने उत्पन्न किया इस लिये जिस भांति से कि शास्त्र में लिखा है यदि खावें तो कुछ दोष नहीं जैसे यह श्लोक है

देवान् पितृंश्चार्चयित्वा खादन् मांसं न दुष्यति ।
न भक्षयेदेकशफानज्ञातांश्चमृगद्विजान् ॥

अर्थात् देवताओं और पितरों की अर्चना करके मांस खाना दोष नहीं है परन्तु एक खुरवाले और बिन जाने पशु पंछी को न खाना चाहिये। उसी शास्त्र की दूसरी ठौर में लिखा है कि शास्त्र की रीति से मांस खाना मद्यपान करना स्त्री से भोग करना कुछ दोष नहीं। फिर उसी शास्त्र मे लिखा है कि ब्राह्मण को साही गिरगिट छिपकली मगरमच्छ गोधा गैंडा खरहा इत्यादि का खाना उचित है। और मिताक्षरा में यह श्लोक है

भक्ष्याः पञ्चनखाः सेधागोधाकच्छपशल्लकाः ।
शशश्चमत्स्येष्वपिहि सिंहतुण्डकरोहिताः ॥

अर्थात् पञ्चनखी पशुओं मे से सेधा गोह कछुवा साही शशा और मछलियों में से सिंहतुण्डक रोहू खाने के योग्य हैं। ऋग्वेद की संहिता में गो बलिदान करने की ऋचा है। और उसी में लिखा है कि वह जो पशुन का बलिदान

करता है स्वर्ग की नाईं आनन्द देनेहारा है। ऋगकेतु सत्ययुग में गौ बलिदान करने से प्रसिद्ध हुआ। ब्राह्मण लोग एक बार बिश्वामित्र के यज्ञ में दश सहस्र गौ खा गये*। यदि वे इन दिनों में गौ खाते और मद्यपान करते तो उन की क्या दशा होती वे अपनी जाति पांति और घर द्वार और साथ संगति से निकाले जाते और उन का अपराध क्या ठहरता यही कि वेद और धर्म्मशास्त्र ने जो आज्ञा दिई सो किया। फिर मनु के शास्त्र में लिखा है कि मांस खाना उचित ही नहीं परन्तु सूर्य्य के उत्तरायण और दक्षिणायन के समय बलिदान करना और खाना अति आवश्यक है। सो हिन्दुओं के मत में एक मता नहीं पाई जाती। यदि कोई कहे कि ये नाना प्रकार की बातें और व्यवहार दूसरे युग के लिये थे तो हम कहते हैं कि इस का ठिकाना लगाया चाहिये क्योंकि मनु ने कहां लिखा है कि इस शास्त्र की बाते और व्यवहार निज करके अमुक ही युग के लिये हैं परन्तु जैसे चार बर्ण के व्यवहार हर युग के लिये ठहराये गये वैसा ही इस शास्त्र से ये बातें और व्यवहार हर गुण

---

*मत्स्यपुराण मे यह बात लिखी है कि एक बार ऋषियों ने सूत से पूछा कि कौशिक के पुत्र किस रीति से परमगति को प्राप्त हुए। सूत ने उत्तर दिया कि कौशिक के सात पुत्र थे उस के मरने के पीछे बड़ा काल पड़ा जब उन के पास कुछ खाने को न रहा तब वे गर्ग मुनि के पास चले गये उस ने अपनी गौ चराने के लिये उन्हें बन मे भेज दिया वे बन मे जा भूख के मारे गौ को मार अपने देवो पितरो को चढ़ाके खा गये सांझ समय जब स्थान को आये तो गर्ग ऋषि से कहा कि आप की गौ को सिंह मारके खा गया सो इस पुण्य से वे परमगति को प्राप्त हुए। और वेद मे लिखा है कि इन्द्र के लिये सांड़ चढ़ाते थे। और रामायण में लिखा है कि बशिष्ठ ने हर प्रकार के भोजन और मास और मदिरा बिश्वामित्र को उस की सेना समेत खिलाया पिलाया। इसी प्रकार भरद्वाज ने भी भरत और उस की सेना को खिलाया पिलाया और राम ने भी मांस खाया। इन बातों के प्रामाणिक होने के लिये देखो रामायण के बालकाण्ड के ४१ सर्ग और अयोध्याकाण्ड के ६० सर्ग से ७० सर्ग तक

के लिये हैं* । फिर यदि कोई कहे कि मांस खाना और मद्यपान करना कलियुग में बर्जित है तो हम उत्तर देते हैं कि उस का प्रमाण चार वेद से लाया चाहिये और यदि कोई कहे कि पुराण मे तो है तो हम यह कहते हैं कि क्या पुराण वेद को खण्डन कर सकते हैं । फिर यदि पुराण में है तो सोचा चाहिये कि वेद और पुराण में परस्पर कैसी बिरुद्धता है वेद में तो लिखा है कि खाओ और पुराण में लिखा कि न खाओ तो भला उन का क्या ठिकाना । और वे जो कहते हैं कि कलियुग में बर्जित है तो हम पूछते हैं कि कृष्ण और उस के संगी साथी जो कलियुग के आरंभ में थे वे क्योंकर मद्य मांस खाते पीते थे† । यदि कोई कहे कि ये बातें तो उन के बर्णधर्म के योग्य थीं तो हां हम मान लेते हैं और आगे चार बर्ण की बात को खण्डन करके यह निश्चय करेंगे कि सब मनुष्य एकही जाति हैं ।

जो कोई वेद शास्त्र पुराण की ऐसी बिरुद्धता को सोचेगा

---

*हम जानते हैं कि पण्डित लोग बहुधा कहते है कि मनु की बहुत सी बातें कलियुग के लिये नहीं और इस पर वृहस्पति और पराशर और नारदादि के बचन को प्रमाण लाते हैं पर इस की कुछ प्रतीति नहीं क्योंकि कुल्लूक भट्ट ने जो उस शास्त्र के भाष्य का लिखनेहारा है वृहस्पति को छोड़ और किसी की चर्चा नहीं किई और वृहस्पति ने केवल यह कहा है कि मनु की वह बात कलियुग मे बर्जित है जो लिखी है कि यदि कोई अपनी स्त्री निर्बंश छोड़के मर जाय तो उस का भाई उस की स्त्री को रक्खे और कुल्लूक ने इस के परे और किसी बात के उठ जाने को नहीं लिखा इस्से ठीक २ जाना जाता है कि उस की समझ में केवल इस एक बात को छोड़ मनु की सब बातें सर्बकाल के लिये हैं ।

†कृष्ण कलियुग के आरंभ के साढ़े छः सौ बरस पीछे था जैसे कि इस श्लोक से निश्चित है

शतेषु षट्सु सार्द्धेषु त्र्यधिकेषु च भूतले ।
कलेर्गतेषु बर्षाणामभवन् कुरुपाण्डवाः ॥

अर्थात् जब कलिकाल के साढ़े छः सौ बरस से कुछ अधिक बीत गये तब कौरव और पाण्डव हुए ॥

तो वह जान जायगा उसे कुछ दुबधा न रहेगी कि हिन्दू कैसे दुबधे में पड़े हैं। और इसी लिये यह कहावत उन में प्रसिद्ध है कि जै मुनि तै मत और यह भी कि अट्टासी सहस्र ऋषियों ने अट्टासी सहस्र मत को रोपा। और कुल्लूक भट्ट ने भी कहा है कि वेद बिरुद्ध और स्मृति बिरुद्ध। फिर उन में एक इतिहास यह है कि छः जन बड़े ज्ञानी और वेद शास्त्र के बड़े ज्ञाता और बड़े धनमान और ऐश्वर्य्यमान थे वे कैकय राजा के पुत्र अश्वपति के पास जाके कहने लगे कि तुझे ब्रह्मज्ञान है वह ज्ञान हमें बतला। फिर जब वे दूसरे दिन उस के पास गये तो उस ने हर एक से भिन्न २ करके पूछा कि तुम किस को ब्रह्म समझके पूछते हो। एक ने कहा स्वर्ग को दूसरे ने कहा सूर्य को तीसरे ने कहा पवन को चौथे ने कहा आकाश को पांचवें ने कहा जल को छठवें ने कहा पृथिवी को। उस ने कहा कि तुम सब के सब भूल में पड़े हो। यह कह उन्हें एक और प्रकार की मता सिखला दिई।

परमेश्वर सर्बसामर्थी है*।

छठवें—बिचार किया चाहिये कि ये लक्षण ब्रह्मा विष्णु महेश और राम कृष्ण में पाये जाते हैं कि नहीं। रामायण के बालकांड के ६२ सर्ग में लिखा है कि एक समय धनुष के कारण शिव और विष्णु से बड़ा युद्ध हुआ फिर इन में जो एक भी सर्बसामर्थी होता तो एक दूसरे का साम्हना क्योंकर कर सक्ता इस लिये दोनों का सर्बसामर्थी होना अनहोना ठहरता है। फिर लिंगपुराण में ब्रह्मा के विषय लिखा है जैसा कि ऊपर बर्णन हुआ है कि वह सृष्टि को न सृज सका

*देखो ४ पृष्ठ से।

इस लिये बिलाप कर २ रोने लगा तब शिव उत्पन्न होके सृष्टि को सृजने लगा पर जब उस के पिता ब्रह्मा ने उस की ढीलाई और शिथिलता देखी तो फिर अपना हाथ उस में लगाया ।

सो वे जो सर्बसामर्थी होते तो क्यों ऐसे अशक्त और असमर्थ हो जाते और हिय हार मानते । इस्से जाना जाता है कि वे सर्बसामर्थी न थे । देखो समुद्र मथने के लिये ये तीनों और सकल देवते मिलकर एकत्र हुए पर असुरों की सहायता बिना न मथ सके । फिर ध्यान किया चाहिये कि एक बार असुरों ने उन्हें सारे देवताओं समेत स्वर्गलोक से निकाल दिया और उन से कुछ न बन पड़ा । फिर अत्रि मुनि की स्त्री ने उन तीनों बड़े देवों पर जल छिड़कके उन्हें छोटा २ बालक बनाके पालने में डालके झुलाया तब वे सयाने बनके वहां से क्यों न चले गये । और जब शुम्भ निशुम्भ उन पर चढ़ आये तो उन का साम्हना क्यों न कर सके उस घड़ी उन की सर्बसामर्थ्यता कहां गई थी । फिर ब्रह्मा अपने शिर की रक्षा क्यों न कर सका और महादेव अपने लिंग को क्यों न जुगा सका और विष्णु को भृगु के श्राप से क्यों सात जन्म लेना पड़ा और कृष्ण उसे क्यों निगल गया ।

वा मंह होति जो कुछ प्रभुताई ।
निगलत कृष्ण कवनि बिधि भाई ॥

राम और कृष्ण विष्णु के अवतार कहलाते हैं और जब विष्णु ही सर्बसामर्थी न ठहरा तो वे क्योंकर ठहर सकते हैं । फिर राम जो सर्बसामर्थी था तो उस ने रावण से लड़ाई करने के लिये बानर भालू की सहायता क्यों चाही और हनुमान की नाईं समुद्र लांघिके लंका को क्यों न गया किस लिये उसे बड़ा परिश्रम करके सेतु बांधना पड़ा ।

बांधे सेतु बहुत श्रम करिके।
राम गये तब पार उतरिके॥
अति सामर्थी जो वह रहेऊ।
हनुमत सम किमि लांघ न गयेऊ॥

कृष्ण के विषय में बहुतेरी बड़ी बड़ी बातें लिखी हैं जैसे अजगरों और राक्षसों का मारना और गोवर्द्धन पर्वत को उठा लेना इत्यादि। परन्तु आश्चर्य्य यह है कि फिर वह दूसरे समय में ऐसा असमर्थ और निर्बल हो गया कि उस के पुरुषार्थ और बीरता में सर्वथा सन्देह होता है। सब जानते हैं कि परमेश्वर केवल कभी २ नहीं परन्तु सर्वकाल मे सर्वसामर्थी है। फिर जब कृष्ण जरासंध से लड़ाई मे हार गया और अपना प्राण लेके भाग निकला तो उस का सर्व-सामर्थी होना कहां रहा। इस के उपरान्त उस ने अपनी सामर्थ्य भर अपने परम मित्र भीमसेन से लड़ाई करने मे कुछ घोखा न लगाया जिस्तें राजा डंडा की घोड़ी छीन लेवे जो रात समय सुन्दर स्त्री बन जाती थी पर कुछ न बन पड़ा। फिर जब पाण्डव द्रोणाचार्य्य को न जीत सके तो कृष्ण ने जाके युधिष्ठिर से मिथ्या बुलवाया कि उस ने द्रोणाचार्य्य से कहा कि तेरा पुत्र मारा गया यह सुनके वह मूर्छित हो गिरा इस में कृष्ण और पाण्डव सभों ने मिलके उसे मार डाला। कहावत है कि मित्र का डगे पांव तो शत्रु का लगे दांव। महाभारत में लिखा है कि दुर्बासा ऋषि के श्राप से उस का और उस के सारे कुटुम्ब का नाश हो गया*। सो

*महाभारत मे लिखा है कि कृष्ण के मरने के पीछे जब अर्जुन उस की स्त्रियों को द्वारिका से हस्तिनापुर को लिये जाता था तो पंथ मे डाकू आये अर्जुन ने चाहा कि उन्हे बाणों से मार गिरावे पर उस काल उस का धनुष बाण बंध गया कितना यत्न उपाय किया पर न चल सका तब हिय हार मानके रोने लगा और डाकू स्त्रियों के वस्त्र आभूषणों को लूट ले गये॥

इन बातों से जाना जाता है कि उन में से कोई सर्बसामर्थी न था। फिर जब वे कुछ सामर्थी ही नहीं ठहरते तो अब वह बात कहां रही कि सामर्थी को कुछ दोष नहीं जब पेड़ ही नहीं तो फल कहां।

परमेश्वर एक है* ।

सातवें—परमेश्वर की पवित्रता के विषय में जो ऊपर बर्णन हुआ है उस से जाना गया कि हिन्दुओं के मत में ईश्वर एक तो है पर बड़ी भूल यह है कि उस मत के अनुसार से ईश्वर के परे और कोई जीव ही नहीं ठहरता।

सर्ब्बं विष्णुमयं जगत् ।

अर्थात् सर्ब जगत् विष्णु रूप है जैसा कि ऊपर ईश्वर की पवित्रता के बर्णन के बिषय में वेद शास्त्र से निश्चित हुआ। इस बात के लिये उन की पुस्तकों में बहुत से श्लोक हैं पर उन के लिखने का कुछ प्रयोजन नहीं क्योंकि कोई हिन्दू पण्डित अथवा मूर्ख इस को नांह नहीं करता परन्तु मान लेता है कि एकं ब्रह्म द्वितीयं नास्ति और यह कि बोलता जो है सो वही है। अब सोचा चाहिये कि इस बात में करोड़ों सन्देह होते हैं क्योंकि जब मैं ही जो बोलता चालता हूं आप ही ईश्वर हूं तो फिर जब कहूं कि ईश्वर हर एक मे है तो किस के बिषय मे कहूंगा क्या अपने ही विषय में। फिर इस बात से क्या अर्थ ठहरेगे यह कैसी बे ठिकाने की बात है। पण्डित लोग इस के उत्तर में कहते हैं कि हां ईश्वर सब में है पर वह माया के वश मे पड़के अपने को भूल गया। फिर जब वह जप तप करके माया से छूट जायगा तो

* देखो ४ पृष्ठ मे।

वह अपने को और सब को ब्रह्म जानेगा । सो उन से अब हम यह पूछते हैं कि जो ईश्वर माया के बश हो गया तो उस का सर्बसामर्थी होना कहां रहा । और जब वह माया के बश में होके अपने को भूल गया तो उस का सर्बज्ञानी होना कहां रहा क्या वह आप ही भूल जाके अपनी ही नांह करता है अर्थात् मनुष्य होके कहता है कि मैं ईश्वर नहीं । फिर क्या वह रज और तम से मिलके कृष्ण के कहने के समान सब में कर्त्ता होके जितने पाप कि जगत में होते हैं सब का करनेहारा और कारण हुआ जब ऐसा है तो उस में पवित्रता और न्याय कृपा और सच्चाई कहां रही । सो बिचार किया चाहिये कि इसी एक बात से कि एकं ब्रह्म द्वितीयं नास्ति परमेश्वर का होना और उस के सारे गुण उड़ गये । यदि कोई कहे कि ईश्वर नहीं पर माया और कर्म पाप पुण्य का कर्त्ता और कारण है तो हम कहते हैं कि माया क्या बस्तु है । इस पर कोई कहे कि प्रकृति अथवा तीन गुण मिलके माया कहलाती है तो हर प्रकार से जाना जाता है कि वह आप से कुछ नहीं कर सकती वह केवल कल कांटे की नाईं है करनेहारा और ही है । यदि कोई कहे कि कर्म सब कुछ करता है तो उस से पूछा चाहिये कि पहिले कर्म है अथवा कर्त्ता जब लों कर्त्ता न हो कर्म क्योंकर हो सके । फिर इस में एक बड़े सन्देह की बात यह है कि जब परमेश्वर सगुण रूप होके कर्म के अधीन हो तो कर्म का कर्त्ता कौन है क्या वह आप ही स्वामी और सेवक भी है माया से परे और लिप्त भी है क्या ईश्वर दो प्रकार का है । ऐसे ज्ञान और बुद्धि पर हाय है परमेश्वर कृपा करके हर एक के मन से ऐसी भूल चूक और पाखण्डता शीघ्र दूर करे ।

परमेश्वर समभाव है* ।

आठवें—ऊपर की बातों से जाना गया कि परमेश्वर का यह लक्षण भी हिन्दुओं के मत में नहीं मिल सकता क्योंकि जब वह कभी एक है कभी अनेक कभी दृश्य कभी अदृश्य आज इस तन में कल उस तन में आज मनुष्य और कल पशु है आज सज्ञान कल ऐसा अज्ञान कि आप को न जान सके तो क्योंकर कह सकिये कि उस के गुण स्वभाव और इच्छा बिचार में अदल बदल नहीं वह तो बहुरूपिया ठहरा कि नित्य एक नया रूप बनाता है ।

सो बिचार की रीति से हिन्दुओं के मत के बीच परमेश्वर का गुण एक भी नहीं मिलता इस से ठीक जाना गया कि उन के मत में परमेश्वर का ज्ञान नहीं है ।

दूसरा अध्याय ।

सृष्टि और मनुष्य की उत्पत्ति के विषय में ।

सत्य मत में सृष्टि और मनुष्य की उत्पत्ति और उस की उत्पत्ति के कारण का बर्णन जो कुछ हो सो परमेश्वर के गुण और माहात्म्य के योग्य हुआ चाहिये* । सृष्टि की उत्पत्ति के बिषय हिन्दुओं के कई शास्त्रों में लिखा है कि तत्व का अस्ति ही नहीं जितनी वस्तु दृश्यमान हैं केवल माया की पसारी हैं । न्यायशास्त्र और वैशेषिक में लिखा है कि तत्त्व अनादि और अनन्त हैं । फिर वेदांत और सांख्यसार और कितने पुराणों में लिखा है कि सृष्टि के समय ब्रह्म से बुद्धि और बुद्धि से अहंकार और अहंकार से आकाश और

*देखो ४ पृष्ठ मे ।

आकाश से वायु और वायु से अग्नि और अग्नि से जल* और जल से पृथिवी और उन से सारी वस्तु उत्पन्न होती हैं। फिर वे उलटके महाप्रलय में सब के सब ब्रह्म में लीन हो जाती हैं। सो सृष्टि का कर्त्ता कोई नहीं क्योंकि उन पुस्तकों से उस की अस्ति ही नहीं है अथवा वह आप ईश्वर का अंश होके अनादि है और पुराणों के मत से वह आप ही ईश्वर है और वेदांत कहता है कि वेद में लिखा है कि सृष्टि परमेश्वर का चतुर्थ भाग है और उस के तीन भाग सृष्टि के परे हैं। फिर देवताओं ने जिस भांति से सृष्टि को रचा उस बात में इतनी बिरुद्धता है कि किसी को निश्चय और प्रतीति नहीं हो सकती जैसा परमेश्वर के सत्य होने के वर्णन में ऊपर लिखा गया। हिन्दुओं के मत के समान मनुष्य की उत्पत्ति इस प्रकार से है कि मनुष्य का आत्मा ईश्वर का अंश है उसी से निकलता है और फिर उसी की ज्योति में मिल जाता है जैसा कि इस पुस्तक के आरंभ में वर्णन हो चुका। यदि कोई पूछे कि वह ईश्वर से क्यों निकला और उस से किस कारण पृथक् हो गया तो इस का उत्तर हिन्दुओं के शास्त्र में न मिलेगा पर इतना तो वे कहते हैं कि यह सब ईश्वर की लीला है। सो भला कौन ज्ञानमान इसे सच जानेगा कि ईश्वर निर्विकार होके अनेक भांति का शरीर धारण करे और वह नाना प्रकार की दुर्दशा में पड़े और यदि हम इसे सच भी मान लेवें कि हां हो सकता है तो परमेश्वर जो ऐसा करे तो चाहिये कि उस की महिमा और माहात्म्य और पवित्रता और सत्यता ज्ञान और बुद्धि गुण स्वभाव और अधिक बढ़े पर हिन्दुओं के मत

*मनु इस के विरुद्ध कहता है कि जल से अग्नि ९ अध्याय ३२ श्लोक मे देखो।

से यह कभी नहीं समझ पड़ता बरन इस के उलटे इस मत की रीति से परमेश्वर ने माया में मिलके अपने सारे गुण को खो दिया और उस के अधीन होके अपनी सारी प्रवीणता और श्रेष्ठता और महत्व मिट्टी में मिला दिई और ऐसा मूढ़ और असमर्थ बन गया कि न अपने को पहिचानता न उस बंधन से छूट सकता। फिर ऐसा अशुचि और अपवित्र हो गया कि संसार में कौन ऐसा अधर्म्म और पाप है जिसे वह नहीं करता। हाय हाय यह कैसा ईश्वरापनिन्दक बचन और पाखण्डता है। फिर ध्यान रक्खा चाहिये कि जब हिन्दुओं की यह बात सत्य नहीं तो उन के मत मे मनुष्य की उत्पत्ति और उस की उत्पत्ति के कारण का भी ठिकाना नहीं। विवेकी पुरुष को टुक सोचना चाहिये।

तीसरा अध्याय।

परमेश्वर और मनुष्य के बीच में क्या क्या सम्बन्ध है।

परमेश्वर मनुष्य से क्या सम्बन्ध रखता है क्या वह सृजनहार और पालनहार और उस पर और जगत पर प्रभुता करनेहारा है कि नहीं*।

ऊपर की बातों से जाना गया कि हिन्दुओं के मत में विशेष करके दो पंथ हैं एक निर्गुणिया कहलाता है दूसरा सगुणिया और सगुणिया पंथ निर्गुणिया पंथ में आने का द्वारा है। जब मनुष्य सगुणिया से निर्गुणिया होता है तो विद्या ज्ञान प्राप्त करके अपने को ब्रह्म समझता है सो वह जब

---

*देखो ५ पृष्ठ मे।

निर्गुणिया हुआ तो ईश्वर से उस को क्या सम्बन्ध रहा वह तो आपही ईश्वर बन बैठा*।

पर सगुणिये के मत से ईश्वर सृजनहार और पालनहार कुछ कुछ समझा जाता है परन्तु स्वयंब्रह्म अद्वैत परमेश्वर जो अनादि और अनन्त है सो हिन्दुओं के यहां सृजनहार और पालनहार नहीं है परन्तु ब्रह्मा विष्णु महेश राम कृष्ण भवानी ऋषि मुनि इत्यादि हैं। ऊपर वर्णन हुआ कि ये सब ईश्वर कभी नहीं ठहर सकते क्योंकि उन में ईश्वर होने का कोई चिन्ह नहीं पाया जाता सो वे जब ईश्वर न ठहर सके तो सृजनहार और पालनहार क्योंकर ठहर सकेंगे। जब जड़ ही नहीं तो पालव कहां और जब उन देवताओं को छोड़ और कोई सृजनहार और पालनहार नहीं तो इस से ठीक समझ पड़ता है कि हिन्दू कभी नहीं जानते कि उन का सृजनहार और पालनहार और प्रभु कौन है और उन को उस से क्या प्रयोजन है। इस के परे वेद शास्त्र और पुराण से जाना जाता है कि चिउंटी से लेके ब्रह्मा लों सब का कर्म पहिले ही से ठहराया गया और यह भी जाना जाता है कि स्वयंब्रह्म अद्वैत परमेश्वर भी इस कर्म से नहीं छूटा परन्तु उस कर्म के समान समय समय के ऊपर अपना पसारा करता है और उस से सृष्टि होती है फिर अपने को समेट लेता है और सृष्टि जाती रहती है। यह तो भानमती का स्वांग हुआ। फिर शास्त्र के दूसरे ठौर

---

*इस के विरुद्ध पुराण के कितने ठौरों मे लिखा है कि ईश्वर मे लीन होना अनहोना है गरुडपुराण मे यह श्लोक है

सर्वज्ञाल्पज्ञयोर्भेदात् सर्वशक्त्यल्पशक्तिनोः।
स्वातन्त्र्यपारतन्त्र्याभ्यां सम्भोगोनेशजीवयोः॥

अर्थात् सर्वज्ञान और अल्पज्ञान मे सर्वशक्ति और अल्पशक्ति मे स्वामी और सेवक पद मे इतना बोध है कि जीव ईश्वर मे लीन हो नहीं सकता।

में लिखा है कि निद्रा से जब वह जाग उठता है तो सृष्टि बन जाता है और जब सो जाता है तो सृष्टि उस में लीन हो जाती है जैसे कठपुतली का खेल । यह सब अटल कर्म के समान होता है जैसा भरथरीशतक में ब्रह्मा विष्णु महेश और सूर्य के विषय में लिखा है

ब्रह्मा येन कुलालवन्नियमितो ब्रह्मांडभांडोदरे ।
विष्णुर्येन दशावतारगहने क्षिप्तो महासंकटे ॥
रुद्रो येन कपालपाणिपुटके भिक्षाटनं कारितः ।
सूर्यो भ्राम्यति नित्यमेव गगने तस्मै नमः कर्म्मणे ॥

अर्थात् जिस कर्म ने ब्रह्मा को ब्रह्मांडभांड के बीच सृष्टि रचने के लिये कुम्हार की नाईं ठहराया और विष्णु को दश अवतार लेने के महा संकट में संयुक्त किया और रुद्र से कपालपात्र में भिक्षा मंगवाई और जिस करके सूर्य भी आकाश में सदा भ्रमण करता है उस कर्म को मैं नमस्कार करता हूं । फिर शुद्धतत्त्व और ज्योतिष में लिखा है कि लड़के की छट्ठी की रात्रि भावी उस के कपाल में कर्म लिखने आती है इस लिये षष्ठी की पूजा होती है । सो इस मे जो जो प्रश्न हम करेंगे उन का भी उत्तर वेद शास्त्र से कभी न मिल सकेगा जैसे यह कि कर्म क्या वस्तु है और वह कहां से है और उस का कर्त्ता कौन है कि जिस से परमेश्वर भी नहीं छूटा फिर वह ईश्वर कैसा है जो और के बश में पड़ता है । भला इन बातों को छोडके हम यह पूछते हैं कि जब हिन्दुओं के मत से कर्म ठहर चुका तो ईश्वर को मनुष्य से क्या प्रयोजन ठहरा बरन प्रयोजन कर्म से हुआ फिर मनुष्य क्या वस्तु ठहरा ।

फिर इस मत में मनुष्य परमेश्वर से क्या प्रयोजन रखता है क्या उस को अपने सब कर्मों का लेखा देना है कि नहीं

यदि देना है और वह पाप भी करता है तो उसे क्षमा होने की आशा है कि नहीं और यदि आशा है तो वह कौन सी आशा है।

जब हिन्दुओं के मत से ठीक प्रगट हुआ कि मनुष्य का आत्मा ईश्वर है* और ईश्वर होके कर्म के वश में है तो चाहिये कि मत और सारा पूजापाठ व्यर्थ ठहरके उठ जावे परन्तु इस के विरुद्ध और सब बिपरीत रीतों की भांति उन के यहां पूजापाठ इत्यादि की आज्ञा है।

पापमोचन के विषय में।

मनु के शास्त्र में पापमोचन के लिये देवताओं का पूजा-पाठ और दान पुण्य तीर्थस्नान ध्यान करने को लिखा है और जाति के लिये भी बिविध व्यवहार हैं पर अचंभे की बात यह है कि जब मनुष्य यह सब कर्म कर चुका तो उस के फल भोगने के लिये देवलोक में केवल थोड़े दिन के लिये जा रहता है और ब्रह्मा इन्द्र तक भी कोई कैसा ही हो पर जब उस का पुण्य चुक जाता है तो फिर उसे वहां से उतरके जन्म लेना पड़ता है असंख्य कोटि ब्रह्मा सप्त कोटि शंभु नव कोटि दुर्गा पद्म गणेश इत्यादि। परन्तु वेद शास्त्र कहता है कि ईश्वर में लीन होना ऐसे लड़कों के खेल से नहीं परन्तु संसार के त्यागने और बनान्तर मे जाके बड़े र उग्र तप और तपस्या और ध्यान करने और अपने को ब्रह्म जानने से यह परमार्थ प्राप्त होता है। इसी कारण बड़े र ऋषि मुनियों ने देवताओं को तुच्छ समझकर उन्हें श्राप दिया जैसे भृगु ने विष्णु से किया और उन को सिंहासन से उतारके जन्म लेने का सम्बन्धी कर दिया क्योंकि देवतागण

---

*भक्तमाल मे यों लिखा है कि भक्ति भक्त भगवंत गुरु चतुर्नाम बपु एक अर्थात् भगवान गुरु भक्त और भक्ति चार नाम पर एक ही वस्तु है।

काम क्रोध लोभ मोह इन्द्री के बश में हैं पर वे ज्ञान अर्थात् ऋषि मुनि महाब्रह्म के समान हैं। फिर यह भी शास्त्रों में लिखा है कि मुक्ति विष्णु की कृपा से होती है। पर विष्णु ने आप मुक्ति नहीं पाई जो पाई होती तो क्यों लक्ष्मी को लेके क्षीरसमुद्र में शयन करता। यद्यपि हिन्दुओं के मत से ठीक जाना जाता है कि मनुष्यपापी और ईश्वरकोपी दोनों एक हैं इस लिये पाप क्षमा होने का यत्न उपाय कुछ आवश्यक नहीं तौभी पापमोचन के लिये वेद शास्त्र में बहुत सी बाते हैं जैसे पूजापाठ दान पुण्य इत्यादि। पर आश्चर्य्य यह है कि वेदान्ती जो निर्गुणिये और सिद्ध कहलाते हैं उन सब कर्मों को गुड़ियों का खेल जानते हैं।

फिर बिचार करने से ठीक जाना जाता है कि ये सब विधि पाप को कभी मिटा नहीं सकतीं और इस बात के बिषय वेद शास्त्र की पहिली भूल यह है कि वे ठीक नहीं बतलाते कि पाप क्या वस्तु है*। मनु के एक श्लोक से यह जाना जाता है कि तीनों लोक के लोगों को घात करना और नीच के हाथ से खाना दोनों बराबर हैं। दूसरे ठौर में लिखा है कि यदि ब्राह्मण कुत्ते बिल्ली अथवा मेंडक छिपकली अथवा कौवे उल्लू को घात करे तो उसे वही प्रायश्चित्त करना अवश्य है जो शूद्र के मार डालने से करना पड़ता है। [देखो ११ अध्याय १३२ श्लोक में] काला पीला एकै रंग, उन की समझ का देखो ढंग। उसी शास्त्र के दूसरे ठौर में लिखा है कि पाप पुण्य दोनों ईश्वर ही ने बनाये हैं।

अब हम संक्षेप में वर्णन करते हैं कि पापमोचन के लिये

---

*मनु के शास्त्र के ११ अध्याय ३६२ श्लोक में देखो।

क्या क्या यत्न उपाय हैं। शास्त्र मे लिखा है कि स्नान ध्यान दान पुण्य तीर्थ करने और काशी में मरने और प्रयाग में त्रिवेणी पर करवट लेने इत्यादि से पाप नाश होता है और मुक्ति मिलती है इस में उन्हों ने क्या ही चुभकियां खाईं और शिथिलता के सागर में डूबकर थाह तक पहुंचे हैं।

प्रायश्चित्तनिर्णय शास्त्र में लिखा है कि यदि कोई ब्राह्मण को घात करे तो उसे चाहिये कि प्राजापत्य प्रायश्चित्त चौबीस बरस लग करे अथवा अपने प्राण को घात करे और जो कोई गौ को मारे उसे बड़े २ प्रायश्चित्त करना चाहिये यदि किसी दूसरे जीव को मारे तो ब्राह्मण को दान देवे और जो शूद्र किसी ब्राह्मणी के संग प्रसंग करे तो चाहिये कि अपने को घात करे और वह स्त्री भी निकाल दिई जावे।

यदि ब्राह्मण जनेऊ बिना भोजन करे तो शत बार गायत्री पढ़े और उस दिन गौमूत्र पीवे और कुछ भोजन न करे फिर यदि कोई किसी चांडाल के पोखरे का जल पीवे अथवा उस में स्नान करे तो वह गौ का मल खावे और मूत्र पीवे तब शुद्ध होवे*। असत्य बोलने के प्रायश्चित्त करने मे केवल एक बार विष्णु का नाम ले लेवे और ब्राह्मण के प्राण बचाने और अपनी स्त्री का क्रोध ठंडा करने को असत्य बोलना पाप नहीं यह सब बाते प्रायश्चित्तनिर्णय शास्त्र में लिखी हैं। मनु के शास्त्र में यह श्लोक है†

तद्वदन् धर्म्मतीर्थेषु जानन्नप्यन्यथा नरः।
न स्वर्गाच्च्यवते लोकाद् दैवीं वाचं वदन्ति ताम्॥

---

*दूसरे ठौर मे लिखा है कि एक पाप के लिये जो अयस्करणी कहलाता है मनुष्य मृतो देवी को काला अथवा काना गदहा बलि चढ़ावे और उस को खाल पहिनके सात द्वारे भीख मांगे और अपने पाप को सब के साम्हने प्रत्यक्ष करे। देखो मनु के शास्त्र के ११ अध्याय मे।

†आठवें अध्याय के १०६ श्लोक में।

अर्थात् जो मनुष्य किसी की भलाई के लिये जान बूझके झूठ बोले वह स्वर्गलोक से बिरहित न होगा क्योंकि ऐसी बात को देववाणी कहते हैं। फिर तुलसी और कमलाक्ष की माला पहिरना और शंख चक्र की रेखा भुजा पर करनी और मस्तक में तिलक मुद्रा करना पाप मिटाने की एक रीति है और यम की आज्ञा है कि जिन पर ये चिन्ह होवें उन को न छूना। यह काशीखण्ड में लिखा है।

फिर पाप क्षय होने के लिये गायत्री का जप और सब बातों से बड़ी बिशेषता रखता है इस के बिषय मनु के शास्त्र में लिखा है कि पण्डित गायत्री पढ़ने से निस्सन्देह मुक्ति पाता है चाहे वह अपने मत की और कुछ बात करे अथवा न करे वेद को वही जानता है जो गायत्री के पहिले अक्षर को जानता है। फिर यह श्लोक है

योऽधीतेऽहन्यहन्येतां त्रीणि वर्षाण्यतंद्रितः ।
स ब्रह्म परमभ्येति बायुभूतः खमूर्त्तिमान् ॥

अर्थात् जो तीन बर्ष लों प्रतिदिन आलस्यरहित गायत्री पढ़ता है सो आकाश और पवन के समान निर्मल होके परब्रह्म में लीन हो जाता है। फिर उस में यह भी श्लोक है

साविच्यास्तु परं नास्ति मौनात्सत्यं विशिष्यते ।
कुर्यादन्यं न वा कुर्यान्मंत्री ब्राह्मण उच्यते ॥

अर्थात् गायत्री से कोई श्रेष्ठ नहीं और मौनता से सत्य बड़ा है ब्राह्मण और कुछ करे अथवा न करे परन्तु गायत्री का जप अवश्य करे क्योंकि वह सूर्य का उपासक कहलाता है। और यह भी श्लोक है

सहस्रकृत्वस्त्वभ्यस्य वहिरेतन्न किं द्विजः ।
महतोप्येनसो मासात्त्वचेवाहिर्विमुच्यते ॥

अर्थात् जो ब्राह्मण सहस्र बार एकान्त मे सांग गायत्री का

जप करता है सो महीने भर में महा पाप से छूट जाता है जैसे सर्प अपनी केचुली से।

सूर्यनारायण उपनिषद् में लिखा है कि जो सूर्य के सन्मुख बैठके गायत्री का जप करता है उस के मन का डर जाता रहता है और बिपत्ति आपदा टल जाती है और सर्व प्रकार के अशुद्ध खान पान बुरी संगति से शुद्ध और पावन हो जाता है। सो वह अद्भुत गायत्री जिस के यह आश्चर्य्य कर्म हैं सो यह है

ओं भूर्भुवःस्वः।

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्। अर्थात् भू आकाश स्वर्ग हम सूर्य्य की बड़ी ज्योति का ध्यान करते हैं वह हमारे मन को प्रकाश करे पर ओं जो स्तव का शब्द है और भूर्भुवःस्वः जो व्याहृती कहलाती हैं गायत्री के प्रारम्भ में उस की सिद्धता के लिये लिखी जाती हैं। सो यही गायत्री है जिस के बिषय स्कन्दपुराण में लिखा है कि वेद में गायत्री से कोई बात बड़ी नहीं और न कोई मंत्र उस के समान है जैसे कोई नगर काशी के समान नहीं है गायत्री वेद और ब्राह्मणों की माता है और वह अपने पढ़नेहारों की रक्षा करती है जैसा लिखा है

गायन्तन्त्रायते।

अर्थात् वह अपने जप करनेहारों की रक्षा करती है इस लिये वह गायत्री कहलाती है। गायत्री के प्रताप से एक क्षत्री बिश्वामित्र नामे राज ऋषि से ब्रह्म ऋषि हुआ और नई सृष्टि रचने की सामर्थ्य पाई। सो ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो गायत्री से न हो सके गायत्री से तो ब्रह्मा विष्णु महेश तीनों वेद हुए।

महाभारत में लिखा है कि कृष्ण भी पापहारक है जैसे यह श्लोक है

तव सन्दर्शनादेव मुक्तोहं सर्व्वकिल्बिषैः ।

अर्थात् तेरे दर्शनमात्र से मैं सर्व पाप से छूटा । फिर गीता में यों लिखा है

अहं त्वां सर्व्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुच ।

अर्थात् मैं तुझ को सब पापों से छुड़ाऊंगा ।

ऋग्वेद और महाभारत और ब्रह्मपुराण अरु और शास्त्रों में लिखा है कि सती होने से पाप दूर होता है जैसा उन में लिखा है कि जो स्त्री अपने पुरुष के संग जल जाती है सो उस को वह नरक में से यों खींच लेती है जैसे मदारी सांप को बिल में से खींच लेता है और उस को लेके एक संग स्वर्गलोक में बास करती है जब लों उस का समस्त पुण्य हो न जावे । फिर जो स्त्री अपने पुरुष के संग सती हो जाती है वह अपने को और अपने पति को और अपने पति के सारे घराने को तार देती है यद्यपि उस का पति कैसा हो ब्रह्मघ्न मित्रघातक और कृतघ्नो हो तथापि उस के सती हो जाने से उस का समस्त पाप मिट जाता है । सो स्त्री के लिये सती होने के बराबर कोई धर्म्म नहीं है । मिताक्षरा में यह श्लोक है

मातृकं पैतृकं चैव यत्र कन्या प्रदीयते ।
कुलत्रयं पुनात्येषा भर्त्तारं यानुगच्छति ॥
व्यालग्राही यथा सर्पं बिलादुद्धरते बलात् ।
तद्वदुद्धृत्य सा नारी सह तेनैव मोदते ॥

अर्थात् जो स्त्री अपने पति के संग अग्नि में जलती है वह अपने मातृकुल और पितृकुल और पतिकुल को तीन तीन पीढ़ी लों पवित्र करती है जैसे मदारी सांप बिल से बरबस्ती

निकालता है तैसे वह स्त्री अपने पति को नरक से निकालके उस के संग स्वर्ग में आनन्द करती है। जैसे गरुड़ सर्प को बरबस्ती बिल से निकाल लेता है वैसा ही सती होनेहारी स्त्री अपने पति को नरक से निकालके स्वर्ग में उस के संग आनन्द करती है। अचंभे की बात यह है कि वेद शास्त्र की रीति से स्त्री ऐसी बुरी है कि मानो पाप ही का स्वरूप है किसी बात मे उन की साक्षी प्रमाण नहीं और उन्हें पूजापाठ और वेद शास्त्र से कुछ प्रयोजन नहीं। मनु के इस श्लोक के समान

नास्ति स्त्रीणां पृथग् धर्म्मो न व्रतं नाप्युपोषणम्।
पतिं शुश्रूषते येन तेन स्वर्गे महीयते॥

अर्थात् स्त्रियों के लिये पृथक् धर्म और व्रत उपवास नहीं क्योंकि वे पति ही की सेवा करने से स्वर्गलोक मे महान् होती हैं। फिर नीतिशास्त्र में यह श्लोक है

अनृतं साहसं माया बचनं परुषाक्षरम्।
अशुचित्वं निर्दयत्वं स्त्रीणां दोषाः स्वभावतः॥
स्वभाव एष नारीणां नराणामिह दूषणम्।
अतोर्थान्न प्रमाद्यंति प्रमदासु बिपश्चितः॥

अर्थात् झूठ बोलना सहसा करना और छल छिद्र और कठोर बात कहनी अशुचि रहना निर्दय होना यह सब स्त्रियों का स्वाभाविक दोष है और उन का यह भी स्वभाव है कि पुरुषों पर दोष लगाती हैं इस लिये बुद्धिमान पुरुष स्त्रियों से चौकस रहते हैं। स्त्री की प्रकृति पुरुषों पर दोष लगाने की है इस करके बुद्धिमान मनुष्य उन के बश में नहीं रहते। पर अचंभा यह है कि यद्यपि स्त्रियां ऐसी निकम्मी और [illegible] हैं तथापि सती होने से वे पलमात्र में ऐसी पुण्यात्मा [illegible] हैं कि केवल अपने को नहीं परन्तु अपने माता

पिता और पति की तीन तीन पीढ़ी को भी नरक से निकालके स्वर्ग में ले जाती हैं और वहां अपने पति के संग आनन्द करती हैं ।

शास्त्र और पुराण में लिखा है कि लूला लंगड़ा असाध्य रोगी कोढ़ी किसी पवित्र स्थान में अपना प्राण अर्पण करें अर्थात् जगन्नाथ के रथ के पहिये तले पड़के अपने को पिसवा डालें अथवा त्रिवेणी में जाके करवट लेवें तो उन के सारे पाप दूर हो जावें और स्वर्ग में जावें पर ऐसे मनुष्यों की मुक्ति नहीं हो सकती इस परमार्थ के प्राप्त करने को सर्वांग सहित और स्वच्छ चाहिये । और भविष्यपुराण में लिखा है कि कृष्ण का पुत्र साम्ब कुष्टी था पर नहीं लिखा है कि उस के पिता ने उसे अच्छा किया । फिर लिखा है कि शिव के नैवेद्य के खाने से सारा पाप जाता रहता है जैसे शाक्तानंद-तरंगिणी में यह है

रोगं हरति निर्म्माल्य शोकन्तु चरणोदकम् ।
अशेषं पातकं हन्ति शम्भोर्नैवेद्यभक्षणम् ॥

अर्थात् निर्माल्य रोग को और चरणोदक शोक को हरता है और शिव का नैवेद्यभक्षण सर्व पापों को नाश करता है । कुलार्णव मे यह श्लोक है जिस की सुघड़ता वर्णन नहीं हो सकती

अन्तर्यागःशश्वद्व्रजतां अंते मोक्षःस्त्रीसंगाच्च ।
हिंसाधर्मः पानं सुकृतं गुप्तो मुक्तः प्रगटो भ्रष्टः ॥

अर्थात् जो लोग अन्तर्याग पंथ को सेवन अर्थात् ब्रह्म का ध्यान करते हैं वे स्त्री के प्रसंग ही से अन्त में मोक्ष पाते हैं हिंसा उन का धर्म मदपान करना पुण्य प्रगट में भ्रष्ट गुप्त मे मुक्त है । श्यामारहस्य में यह श्लोक है

मद्यं मांसं च मत्स्यश्च मुद्रा मैथुनमेव च।
मकारपञ्चकञ्चैव महापातकनाशनम्॥

अर्थात् मद मांस मछली और मुद्रा मैथुन ये पांच मकार महापाप के नाश करनेहारे हैं।

ईश्वर के नाम जपने से भी सारे पाप दूर हो जाते हैं इस बात के प्रमाण के लिये भागवत में यह इतिहास प्रसिद्ध है कि अजामिल नामे एक मनुष्य महापातकी गौ ब्राह्मण का वध करनेहारा और मदपान करनेहारा था वह अपने जीवन भर कुकर्म ही करता रहा। उस के दश पुत्र थे उन में से एक का नाम नारायण था जिसे अजामिल ने मरते समय तृषा की अवस्था में पुकारा कि ओ नारायण ओ नारायण नारायण तू मुझे जल दे। इतने में अजामिल मर गया तो यम के दूत उसे यमपुर ले चले कि इस में विष्णु के दूत भी उस के लेने को आन पहुंचे और दोनों ओर के दूतों में लड़ाई झगड़ा होने लगा। निदान विष्णु के दूत अजामिल को उन के हाथ से छीनके बैकुंठ को ले गये। इस के पीछे यमदूतों ने यमराज के पास जाके उस के आगे अपना सब अस्त्र शस्त्र फेंक दिया और रिसियाके बोले कि महाराज हम आज से आप की सेवकाई न करेंगे क्योंकि इस में हमारी बड़ी अप्रतिष्ठा और अपमान होता है। तब यमराज ने चित्रगुप्त को आज्ञा दिई कि तुम अपनी बही तो तनिक देखो उस ने कैसी करणी किई है। चित्रगुप्त ने बही देखकर कहा कि अजामिल तो महा अधर्मी और अपराधी है उस के अघ तो अगणित हैं। तब यमराज व्याकुल हो बैकुंठ को चला और वहां पहुंचके विष्णु से इस का कारण पूछा। विष्णु ने यमराज से कहा कि हां वह बड़ा ही पापी था मरते समय उस ने तीन बार नारायण का नाम लिया

इस लिये नरक से बचके यहां आया है । निदान यहां हम एक और श्लोक में इस भाग को समाप्त करते हैं

क्षणं ब्रह्माहमस्मीति यः कुर्यादात्मचिंतनम् ।
स सर्वं पातकं हन्यात्तमः सूर्य्योदये यथा ॥

अर्थात् जो कोई अपने मन में क्षण भर भी ध्यान करे कि मैं ही ब्रह्म हूं तो उस के सारे पाप नष्ट हो जाते हैं जैसे सूर्य के उदय होने से तम का नाश होता है ।

निदान शास्त्रों से जाना गया कि ऐसी २ बातों से पाप मिट जाता है सो इन के खण्डन के लिये कोई प्रमाण अवश्य नहीं ये तो आप ही खण्डन होती हैं । बिचारी को यहां टुक बिचार किया चाहिये ।

चौथा अध्याय ।

आश्चर्य्य और भविष्यद्वाणी के विषय में ।

यह भी सत्य मत के आवश्यक चिन्ह हैं अर्थात् आश्चर्य्य और भविष्यबाणी जिन के बिना सत्य मत ठीक नहीं ठहर सकता जैसे ऊपर वर्णन हुआ* । सो हिन्दुओं के मत मे जिस मे ऊपर के चिन्ह नहीं मिले ये दो चिन्ह पाये जाते हैं अथवा नहीं ।

पहिले आश्चर्य्य । बड़े बड़े अचंभे की बातें राम कृष्ण के विषय में लिखी हैं जैसे धनुष तोड़ना सेतु बांधना राक्षसों को मारना गोवर्द्धन को उठा लेना इत्यादि । पर पहिले इस में ध्यान किया चाहिये कि हिन्दू बड़े ही अविवेकी हैं कि विना बिचारे अनृत चमत्कारों पर निश्चय कर लेते हैं जैसे कि किनाराम और तुलसीदास की व्यर्थ बातों को आश्चर्य्य

---

*देखो ८ पृष्ठ मे ।

कर्म समझते हैं। फिर जब मूर्तों की प्राणप्रतिष्ठा करते हैं तो समझते हैं कि उस में शक्ति आ गई इस लिये उस को पूजा अर्चा करते हैं और उस के सन्मुख बैठकर उस के हाथ पांव फैलाने और मुख मुसकाने और रिसिया जाने का ध्यान करते हैं। फिर यह कहते हैं कि काशी सब सोने की बनी है और उस के कंकर सब शंकर समान हैं*। फिर कहते हैं कि पशु पानी पत्थर लकड़ी जिस पर बिश्वास लाओ वही ईश्वर है। भला जिन लोगों की यह मति बुद्धि है क्या आश्चर्य्य कि बिना बिचारे व्यर्थ बातों और अनृत चमत्कारों पर निश्चय करें। फिर यदि हम मान भी लेवें कि शास्त्र के लिखने के समान उन के देवताओं ने आश्चर्य्य कर्म किया पर ठक ठक तो यह है कि उन में आश्चर्य्य कर्म का पहिला चिन्ह भी नहीं पाया जाता कि वह मत के निश्चय ठहराने के लिये दिखाया जावे क्योंकि शास्त्र में तो कहीं लिखा ही नहीं है कि किसी देवता अथवा ऋषि मुनि ने वेद शास्त्र और पुराण ठहराने के लिये कोई चमत्कार किया है और हिन्दू मत की रीति से अनहोना भी है कि आश्चर्य्य और अचंभे किसी स्वर्गीय पुस्तक के चिन्ह ठहरें क्योंकि उन से जाना जाता है कि बहुतेरे राक्षसों ने भी तपस्या करके बड़े बड़े आश्चर्य्य और अचंभे दिखाये और तेतीस कोटि देवताओं

*इस रीति की कथा कहानी पुराणों में बहुत है जैसे रामायण में वातापि और इल्वल की कथा प्रसिद्ध है कि वातापि बकरा बन जाता था और उस का भाई इल्वल उसे रींध ब्राह्मणों को खिलाता था। फिर वातापि उन के पेटों को फाड़ फाड़के बाहर निकल आता। योंही सहस्रों ब्राह्मणों को उन दो भाइयों ने मार डाला। एक समय ऐसा हुआ कि अगस्त्य मुनि उन के यहां गये और वातापि बकरा बन गया और उस के भाई ने उसे मारा और रींधकर मुनि को खिलाया पर अगस्त्य मुनि ने गंगाजल पीके उस को ऐसा पचा डाला कि फिर वह बाहर न निकल सका। चाहो तो रामायण के आरण्यकाण्ड के १७ सर्ग में देख लो जिस में इस का वर्णन है।

को पकड़के बन्दीगृह में डाल रक्खा और ब्रह्मा विष्णु महेश को थरथरा दिया और सारी पृथिवी को उलट पुलट डाला और पवन को चलने से रोक दिया और समुद्र को लहराने से बंद किया जैसे रावण और शुम्भ निशुम्भ के विषय में लिखा है* । इस से ठीक जाना जाता है कि वेद और शास्त्र से आश्चर्य्य और अचंभे मत के चिन्ह नहीं हो सकते क्योंकि जितने आश्चर्य्य कर्म ईश्वर के निज लोगों में पाये जाते हैं उस से अधिक बुरे लोगों में बरन दैत्य दानव में भी पाये जाते हैं ।

दूसरे आगमज्ञान । हिन्दू कहते हैं कि हमारे शास्त्र में भविष्यबाणी हैं जैसे रामायण कि राम के अवतार के पहिले लिखा गया पर यह भूल है क्योंकि बाल्मीक जो रामायण का बनानेहारा है राम के साथ ही साथ रहता था ।

फिर कहते हैं कि संसार में नाना प्रकार के बिपर्य्यय होंगे कि लोग अपने धर्म को छोड़के अधर्मरत होंगे और बड़ा बड़ा दुःख और क्लेश उठावेंगे इस के पीछे कल्की अवतार होगा तब सतयुग व्यापेगा । सो इस भांति के आगमज्ञान से क्या ठहर सकता है जो अब लों पूरे न हुए यदि पूरे भी होते तो उन से कौन से शास्त्र ठीक ठहर सकते क्योंकि उन में तो सारी बिरुद्धता भरी हैं जैसा ऊपर बर्णन हुआ सो जो प्रमाण कि एक को ठहरावेगा दूसरे को अवश्य झुठावेगा ।

---

* यदि कोई कहे कि उन को यह सब बल पराक्रम शिव के बल से मिला था तो हम उस से पूछते हैं कि उसी शिव से जिस ने वह बात मोहनी से कही जिस का वर्णन ऊपर हुआ जिस में ईश्वर का एक चिन्ह भी न पाया गया । फिर जिस में सामर्थ्यता का लेश नहीं है वह किस प्रकार किसी को बर दे सकता है वह तो सौ बरस में एक लड़का भी उत्पन्न न कर सका । बाल्मीकीय रामायण के १ काण्ड के ३१ सर्ग में देखो ।

फिर कोई कल्की अवतार होने और सर्वत्र धर्म्म फैलने की बात को आगमज्ञान समझे तो बड़ी भूल है क्योंकि लोग कहते हैं कि कल्की अवतार विष्णु का होगा और विष्णु ईश्वर नहीं ठहर सकता जैसा ऊपर वर्णन हुआ तो फिर वह कुंवारी कन्या से क्योंकर अवतार लेगा और किस भांति का धर्म फैलावेगा जिस ने जलंधर दैत्य की स्त्री के संग अधर्म किया।

फिर जिन पुस्तकों में भूत और वर्त्तमान काल का ठीक वर्णन नहीं लिखा उन में भविष्य काल का ठीक वर्णन किस रीति से होगा।

निदान अब सत्य मत के चिन्हों अर्थात् परमेश्वर के गुण प्रभाव और सृष्टि और मनुष्य की उत्पत्ति और परमेश्वर और मनुष्य के बीच संबंध और आश्चर्य्य और भविष्यद्वाणी से हिन्दू धर्म की परीक्षा हो चुकी पर इस में उन में से एक चिन्ह भी न पाया गया इस लिये निश्चय है कि हिन्दुओं का मत परमेश्वर की ओर से नहीं परन्तु मनमता है।

द्वितीय खण्ड।

सत मत के लक्षणों से हिन्दू धर्म की परीक्षा हो चुकी और जो कोई ऊपर की बातों को सोचेगा वह निःसन्देह मान लेगा कि हिन्दू मत परमेश्वर की ओर से नहीं सो लक्षणों के विषय मे जो प्रमाण हमें लाने थे ला चुके पर और भी कितनी बातें हैं जिन के विचार करने से और अधिक खुल जायगा कि यह मत परमेश्वर की ओर से नहीं उन में से थोड़ा यहां वर्णन होता है।

पहिला अध्याय ।

युग और वेद के अनादि होने के बर्णन में।

वेद शास्त्र में चार युग अर्थात् सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग का बर्णन है जिन की लत्तों बरस की संख्या है पर ऊपर के बर्णन से जाना गया कि ये पुस्तक सत्य नहीं इस लिये कि उन में परमेश्वर और सत्य मत के कोई लक्षण नहीं पाये जाते इस कारण युगों की बातों के खण्डन करने का कुछ आवश्यक नहीं क्योंकि जब ये पुस्तक ही खण्डन हो चुकीं तो फिर युग का कहां ठिकाना रहा फिर जिस में किसी बात का झगड़ा रगड़ा न रहे उस बात को भी वेद शास्त्र ही से खण्डन करते हैं ।

१ वेद शास्त्र में लिखा है कि सतयुग में पाप न था और यह भी लिखा है कि साधु सन्तों की रक्षा करने के लिये और दुष्टों का संहार करने को बारंबार अवतार होते हैं जैसे भगवद्गीता मे यह श्लोक है ।

परित्राणाय साधूनां बिनाशाय च दुष्कृताम् ।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥

अर्थात् मैं साधुओं की रक्षा करने और दुष्टों के नाश करने और धर्म के स्थापन करने के लिये युग युग मे अवतार लेता हूं । फिर लिखा है कि सतयुग में चार अवतार हुए अर्थात् मच्छ कच्छ बाराह नरसिंह । मच्छ का अवतार इस लिये हुआ कि हयग्रीव को मार डाले कि वह वेद को चुरा ले गया था । बाराह अवतार हिरण्याक्ष के मार डालने के लिये हुआ कि वह पृथिवी को बटोरके समुद्र में ले गया था । फिर कच्छ का अवतार पृथिवी के स्थिर करने के लिये हुआ जब

दैत्य उसे डगमगाते थे और नरसिंह अवतार हिरण्यकशिपु के मार डालने के लिये हुआ । लिखा है कि उस ने खम्भ से निकलके अपने नख से उस का उदर बिदारा और उस की अंतड़ियां निकालके अपने गले में पहिना और उस के रुधिर को पिया* । निदान जिस समय में ऐसी लड़ाई झगड़ा चोरी हत्या अधर्म होवे वह सतयुग क्यों ठहरे वह तो ठीक कलियुग है । फिर यदि सतयुग को मानो तो अवतार को झूठा जानो और अवतार को मानो तो सतयुग को झूठा जानो उन मे से एक को जिसे चाहो उसे मानो पर उस के संग यह भी जान रक्खो कि जब एक बात असत्य ठहरी तो दूसरी का क्या ठिकाना है ।

२ वेद शास्त्र में लिखा है कि सतयुग में मनुष्य लाखों वर्ष जीते थे । यदि यह बात सत्य है तो यजुर्वेद के इस वाक्य का क्या अर्थ है अर्थात् जो मनुष्य अपने धर्म की बात का प्रतिपालन करता रहता है यदि चाहे तो वह सौ बर्ष लग जीता रहे पर तौभी चाहिये कि उस समय लों उस का कर्म कुछ और प्रकार का न हो । हिन्दू मानते हैं कि यजुर्वेद सतयुग में बरन उस के बहुत आगे भी था सो जो उस समय मनुष्य लक्षों बरस जीते थे तो सौ बर्ष का जीना क्यों बड़ी बात मानी ।

३ सत्यव्रत के विषय जो अब का मनु अर्थात् सातवां मनु कहलाता है लिखा है कि वह सारा सतयुग अर्थात् सत्रह लक्ष अट्ठाईस सहस्र वर्ष राज्य करता रहा । उस्से

---

* जैसे उन के यहां और आश्चर्य्य बातों में वैसा ही इस कथा में भी बड़ा सन्देह होता है । वे कहते हैं कि जब हिरण्यकशिपु ने प्रह्लाद से पूछा कि तेरा राम कहां है तो उस ने कहा कि मोहि मे तोहि मे खड्ग खंभ मे । भला जब वह सब में ठहरा तो किस का रुधिर पिया गया और किस ने पिया ।

लेके राम तक सूर्यवंश के ५५ राजा लिखे हैं। सब जानते कि राम त्रेता के अंत में अयोध्या का राजा था और त्रेता को १२ लक्ष ९६ सहस्र वर्ष की संख्या करते सो वे ५५ राजा जो त्रेता भर के थे उन में से हर एक ने तेईस २ सहस्र वर्ष कुछ ऊपर राज्य किया। द्वापर को ८ लक्ष ६४ सहस्र वर्ष का समझते हैं उस मे २९ राजा लिखे हैं सो उन से हर एक का २९ सहस्र सात सौ ९३ वर्ष राज्य ठहरा। कलियुग के आरंभ से सूर्यवंश के समाप्त होने लों सहस्र वर्ष और ३० राजा लिखे हैं सो उन में से हर एक राजा के लिये तेंतीस तेंतीस वर्ष ठहरा। विचार किया चाहिये कि यद्यपि राजा सत्यव्रत ने समस्त सतयुग अर्थात् १७ लक्ष २८ सहस्र वर्ष राज्य किया पर तिस पर भी उस समय के लोग केवल लक्ष वर्ष जीते थे। फिर त्रेता में राजा २३ सहस्र वर्ष से ऊपर राज्य करते थे पर उन के प्रजा दश ही सहस्र वर्ष जीते थे और द्वापर में मनुष्य की बय सहस्र वर्ष की होती थी पर उन के राजा २९ सहस्र सात सौ ९३ वर्ष राज्य में विराजते थे। बड़े आश्चर्य्य की बात है कि त्रेता में राजा इतने वर्ष नहीं रहते थे जितने द्वापर में और भी अधिक आश्चर्य्य की बात है कि यद्यपि बहुधा राजाओं का राज्य करने का समय मनुष्य की बय से निपट कम होता है पर यहां उस के विरुद्ध हर एक राजा का राज्य मनुष्य की बय से दुगुना तीन गुणा भी नहीं बरन सतयुग में तो १७ गुणे और द्वापर में २९ गुणे से भी अधिक ठहर गया यह बात बुद्धिमान के सोचने और बिचारने के योग्य है।

४ मनु का शास्त्र सतयुग में लिखा गया। फिर कहते हैं कि सतयुग में पाप न था और उसी शास्त्र में स्त्रियों की बुराइयों की बहुत सी बातें हैं अर्थात् यह कि वेद के वाक्यों

से स्त्रियों को कुछ काम नहीं यह आज्ञा ठहराई गई है सो पापिनी स्त्री वेद से और व्यवस्था से अज्ञान होके ऐसी मलीन और अशुद्ध हैं कि मानो पाप ही रूप हैं। और यह भी श्लोक है

बालया वा युवत्या वा वृद्धया वापि योषिता ।
न स्वातंत्र्येण कर्त्तव्यं किञ्चित्कार्य्यं गृहेष्वपि ॥
बाल्ये पितुर्वशे तिष्ठेत्पाणिग्राहस्य यौवने ।
पुत्राणां भर्त्तरि प्रेते न भवेत् स्त्रीस्वतंत्रता ॥

अर्थात् स्त्री बाला हो अथवा युवा अथवा वृद्धा पर गृह में कोई काम स्वतंत्रता से न करे बाल्यावस्था मे पिता के बश में रहे युवावस्था में पति के बश मे और पति के मरने के पीछे पुत्र के बश में परन्तु स्वतंत्र कभी न रहे। और यह भी श्लोक है

अविद्वांसमलं लोके विद्वांसमपि वा पुनः ।
प्रमदाह्युत्पथं नेतुं कामक्रोधबशानुगम् ॥
मात्रा स्वस्रा दुहित्रा वा न बिबिक्तासनो भवेत् ।
बलवानिंद्रियग्रामो विद्वांसमपि कर्षति ॥

अर्थात् स्त्री काम क्रोध के वशी पुरुष को मूर्ख हो अथवा बुद्धिमान कुमार्ग में ले जाने के लिये लैस है इस लिये मा अथवा बहिन अथवा बेटी के संग एकान्त मे न बैठा चाहिये क्योंकि इन्द्री बड़ी प्रबल है विद्वान को भी फंसा लेती है। फिर यह लिखा है

नैता रूपं परीक्षंते नासां बयसि संस्थितिः ।
सुरूपं वा बिरूपं वा पुमानित्येव भुंजते ॥
पौंश्चल्याच्चलचित्ताच्चनैस्नेह्याच्च स्वभावतः ।
रक्षिता यत्नतोपीह भर्तृष्वेता बिकुर्वते ॥

स्त्रियां पुरुष की सुन्दरता और तरुणता को नहीं देखतीं

कुरूप हो अथवा सुरूप पर पुरुष मात्र को भजती हैं और उन का स्वभाव पुरुषप्रवृत्त और चंचल और निर्दय होता है इस कारण उन की चैाकसी यत्न से करनी चाहिये । सब जानते हैं कि हर समय से स्त्रियां गिन्ती में पुरुष के बराबर वरन पुरुष से अधिक होती आती हैं सो जब सतयुग मे भी स्त्रियों की यही दशा थी तो वह सतयुग क्योंकर हुआ परन्तु भंड़युग ठहरा और सारे पुरुष वरन ज्ञानी पुरुष का भी कैसा स्वभाव था कि अपनी मा बहिन अथवा लड़की के संग अकेले में न बैठ सके हाय हाय ऐसे को सतयुग समझते हैं इसे तो ठीक कलियुग कहा चाहिये* ।

५ वेद शास्त्र में लिखा है कि आगे के तीनों युग उन्तालीस लाख वर्ष के लगभग हुए पर यह कभी नहीं ठहर सकता है क्योंकि शास्त्र के वचन से उन तीनों युग के लोग एक ही समय में थे अथवा थोड़ा सा कुछ आगे पीछे ।

६ सब पण्डित जानते हैं कि बालमीकि अरु वेदव्यास एक ही समय में थे क्योंकि वेदव्यास ने जब महाभारत के बनाने का ठान ठाना तो बालमीकि से परामर्श किया तिस पर भी उन के समयों मे आठ लाख चैांसठ सहस्र वर्ष का बीच जाना जाता है जैसे शास्त्र मे लिखा है कि बालमीकि त्रेता के अन्त मे हुआ और वेदव्यास द्वापर के अन्त में ।

---

*मनु के शास्त्र मे नाना प्रकार की मनमता और पाखण्डता का बखान है जो वेद के विरुद्ध है देखो १२ अध्याय ९५ और ९६ श्लोक मे फिर १२ अध्याय १०९ श्लोक मे शास्त्र और पुराणों की चर्चा है सो क्या सतयुग में मनमता और पुराणादिक रहे जो कोई मनु के शास्त्र और दूसरे स्मृतियों का पढ़ेगा सो जान जायगा कि जितने विधि व्यवहार हिन्दुओं के हैं थे निष्पापी लोगों के लिये नहीं ठहराये गये नहीं तो परस्त्रीगामी पुरुषगामी और हर प्रकार के कुमार्गियों का दण्ड उन मे न ठहराया जाता । यदि कोई कहे कि यह सब कलियुग के लिये है, तो हम कहते हैं कि सतयुग की व्यवस्था कहां है दिखलाओ ।

इस से यह भी जाना जाता है कि कृष्ण और पाण्डव वेदव्यास के समय में थे अथवा कुछ आगे क्योंकि उन का सारा वृत्तान्त महाभारत में लिखा है* ।

७ फिर बड़ी लड़ाई जो समुद्र मथने के समय सुर और असुरों के बीच एक सौ वर्ष लों हुई सतयुग में थी । देखो रामायण के बालकाण्ड में इन्द्र ने कामातुर होके अपने गुरु गौतम की स्त्री अहिल्या से कुकर्म किया सतयुग ही में । विष्णु और शिव ने धनुष के लिये आपस में लड़ाई किई सतयुग ही मे । ब्रह्मा ने अपनी पुत्री से और विष्णु ने जलंधर दैत्य की स्त्री से प्रसंग किया और महादेव मोहनी पर मोहा सतयुग ही में । निदान सब ठौर सतयुग ही लिखा कहीं पता सत जन का न लिखा ।

फिर जो कहते हैं कि वेद अनादि है तो किस भांति से ठहर सकता है पहिले तो यही नहीं जाना जाता कि वे कहां से हैं और किस से हैं कोई तो कहता है कि ब्रह्मा के चार मुख से और कोई कहता है कि अग्नि वायु सूर्य से जैसे मनु के शास्त्र में यह लिखा है

अग्निवायुरविभ्यस्तु त्रयं ब्रह्म सनातनम् ।
दुदोह यज्ञसिद्धार्थमृग्यजुःसामलक्षणम् ॥

अर्थात् ब्रह्मा ने अग्नि और वायु और सूर्य से तीन सनातन वेद दुहे । अब विचार करो कि जब वेद उन से निकला तो अनादि किस भांति से ठहरा जो कोई वेद की बातों को सोचेगा वह कभी न मानेगा कि वेद अनादि है क्योंकि उस में संसार की बहुत सी बातों का वर्णन है जो समय समय

*मनु के शास्त्र मे अनेक प्रकार के पाप के प्रायश्चित्त लिखे हैं पर किसी मे युग का प्रतिबन्ध नहीं किया और इस में राजा वैनो का वर्णन प्राचीनों की रीति किया है जिसे ब्राह्मणों ने मार डाला । देखो ९ अध्याय ३३ श्लोक मे ।

लिखी गईं । ऋग्वेद के आठवें अष्टक में एक ऋचा है जिसे एक राजा ने अपने दान पुण्य की प्रशंसा में लिखी जब वह नपुंसकता से किसी ऋषि के कर्त्तव्य से फिर अपने पुरुषत्व को प्राप्त हुआ और उस ने उस ऋषि को बहुत सा कुछ दिया । उस में एक भजन भी है जो उस की रानी ने उस आनन्दता के कारण से अलाप किया । फिर उसी वेद की दूसरी ठौर मे एक मंत्र है जिसे बशिष्ठ मुनि ने अन्न चुराने के समय एक कुत्ते को भूंकने से चुप करने के लिये पढ़ा । अथर्वण वेद मे लिखा है कि तोपता ऋषि ने इन्द्र के नाश के निमित्त बलिदान चढ़ाया इस लिये कि इन्द्र ने उस के तीन पुत्रों को मार डाला था । ऋग्वेद के पहिले अध्याय में यह ऋचा है

अस्य पीत्वा शतक्रतो घनो वृत्राणामभवः
प्रावोवाजेषु वाजिनम् ।

अर्थात् हे इन्द्र तू उस को पीकर वृत्रों का संहार करनेहारा हुआ तू ने रण में लड़नेहारों की रक्षा किई । फिर यह ऋचा है

त्वमग्ने मनवे द्यामवाशयः पुरूरवसे सुकृते सुकृत्तरः ।

अर्थात् हे अग्नि तू ने स्वर्ग की बात मनु पर प्रगट किई और धर्मी पुरुष से सुव्यवहार किया । फिर यह ऋचा है

मनुष्वदग्ने अङ्गिरस्वदङ्गिरोययातिवत्सदने पूर्ववच्छुचे
ऋच्छया इन्द्रेत्यादि ।

अर्थात् हे अग्नि तू मनुष्य और अंगिरस और ययाति और अगिले दिनों के मनुष्यों की भांति जग में आ । फिर यह ऋचा है

इन्द्रस्यनुर्वीर्याणि प्रवोचं यानि चकार प्रथमानि वज्री ।

अर्थात् अब मैं इन्द्र के बड़े बड़े कर्मों की प्रशंसा करूंगा जो

वज्र से हुआ। इस्से समझ पड़ता है कि पहिले इन्द्र ने बड़े बड़े काम किये पीछे से किसी ने वेद में उन्हें लिखा। ऊपर की ऋचा वेद में से संग्रह किई गईं और इसी आशय की और भी बहुत ऋचा ढूंढ़ने से मिल सकती हैं पर क्या प्रयोजन।

वेद में भेड़ बकरी घोड़ा गदहा बैल इत्यादि का बलिदान लिखा है और अग्नि जल सूर्य चन्द्रमा धरती आकाश इन्द्र वरुण सरस्वती इत्यादि की पूजा है। इस्से प्रगट होता है कि ये सब वस्तें पहिले ही थीं और इन के पीछे वेद हुआ। फिर उस में बाराह अवतार का वर्णन है जिसे कहते हैं कि सतयुग में हुआ अथर्वण वेद की रामतापनी उपनिषद् और गोपालतापनी उपनिषद् में राम कृष्ण का वर्णन है यद्यपि हिन्दुओं में प्रसिद्ध है कि राम त्रेता में और कृष्ण द्वापर के अन्त और कलियुग के आरंभ में हुए और साम वेद के छांदोग्य उपनिषद् के तीसरे अध्याय में लिखा है कि कृष्ण देवकी से उत्पन्न हुआ और घोर से शिक्षा पाई इस की यह ऋचा है

अथयत्तपोदानमार्जवमहिंसा सत्यवचनमिति ता अस्यदक्षिणाःतस्मादाहुःसोष्यत्यसोष्टीव पुनरुत्पादनमेवास्य तन्मरणमेवावभृथस्तदेतद् घोर आंगिरसः कृष्णाय देवकीपुत्रायोक्त्वोवाचा पिपासहैव स बभूव सोन्तवेलायमेतत्त्रयंप्रतिपद्येताक्षितमसि अच्युतमसि प्राणसंशितमसीति तत्रैते द्वे ऋचो भवतः॥

निदान जो कोई पक्ष छोड़के इन बातों को सोचेगा वह अवश्य करके मान लेगा कि युग का वर्णन और वेद के अनादि होने का व्याख्यान सत्य नहीं बरन उस में ऐसी भूल चूक है जैसे वह बात जो लिखी है कि परमेश्वर मच्छ का अवतार लेकर वेद के निकालने के लिये समुद्र में डूबा और शूकर का

अवतार लेकर पृथिवी को स्थिर किया और बामन का रूप धरके राजा बलि को छला और बौद्ध अवतार लेकर नास्तिक मत फैलाया और कि वही सब घट व्यापक और सब में बोलता बनकर जितने पाप और बुराइयां जग में होती हैं उन का कर्त्ता वही है* । यह भी ध्यान रक्खा चाहिये कि जिन पुस्तकों में ये बाते हैं ऊपर के प्रमाणों से खण्डन हो चुकीं।

दूसरा अध्याय ।

इस के बर्णन में कि बुद्धि से जाना जाता है कि सत्य मत सारे जगत के लिये है और हिन्दुओं का मत केवल हिन्दुओं के लिये है ।

पहिले परमेश्वर एक है और इस बात को हिन्दू भी जानते हैं । सो जब परमेश्वर एक है तो उस का मत और आचार भी एक ही होगा और न्याय दया इत्यादि मे सब के लिये अग्रसर हो । इस करके जगत् के सारे लोग मानो गुरुभाई हैं और परमेश्वर सब का गुरु और मत का तात्पर्य यह है कि उस के कारण से मनुष्य परमेश्वर के समान पवित्र और धर्मी हो जायें । मत तो मानो एक सांचा है कि उस में जो वस्तु ढालिए एक ही प्रकार की ढलेगी दूसरे प्रकार की नहीं । इस रीति से संसार के सारे मनुष्य परमेश्वर के मत से एक ही प्रकार के हो जाते अर्थात् पवित्र और धर्मी बनते इस लिये एक ही मत चाहिये क्योंकि जो सांचे अनेक होते तो लोग अनेक प्रकार के स्वभाव से स्वर्गलोक में जा सकते पर यह तो अनहोना है ।

दूसरे प्रगट है कि संसार के सब मनुष्यों को तन मन

---

* और यह बात कि अठारह पुराण वेदव्यास से लिखे गये और उन मे से एक अर्थात् पद्मपुराण है जिस में रामानुज का बर्णन है जो सन १२०० ईस्वी मे था ।

की प्रकृति एक ही प्रकार का और सब को एक ही प्रकार की उत्पत्ति और सब आंख कान नाक हाथ पांव में बराबर और उन की एक ही भांति की आवश्यकता और एक ही भांति की संतुष्टता जो एक के लिये अमृत है तो दूसरे के लिये बिष नहीं पीडा बेदना सोच चिन्ता बिपत्ति आपदा हित मित्र अपने पराये छोटे बड़े के रोग शोक और समस्त दुःख सुख में एक सार और सब के कल्याण के लिये सत्यमत से ब्रह्मज्ञान अवश्य है और अनन्त जीवन की इच्छा भी सब के मन में बनी है ज्ञान की और सांसारिक बस्तुन के विषय में भी हर एक की बुद्धि और ज्ञान में बहुत ही समानता देख पडती है पर हां उन के पदों में विभेद है कि कोई राजा कोई प्रजा कोई छोटा कोई बड़ा है तथापि सब के सब मन प्रकृति और तत्त्व प्रभाव में बराबर हैं जैसे समस्त संसार एकड़ा रखता है कि दो दो पांच कभी नहीं होते और न लोहा सोना न काष्ठ पत्थर न सूर्य से अन्धकार न शीत ऐसा ही संसार की बहुत सी बातों मे मेल पाया जाता है पर मत में इस फूट और भिन्नता का क्या कारण है कि कोई तो पाषाण को पाषाण समझता है कोई देवता और सूर्य को कोई जगत् का दीपक जानता है कोई परमेश्वर। भला जब कि परमेश्वर एक है और सब मनुष्यों की देह और आत्मा मे भी ऐसी समानता पाई जाती है और हर एक इस बात को मान लेता है कि संसार के सारे लोगों को चाहिये कि एक दूसरे को प्यार करे और मत का भी अभिप्राय यही है कि ईश्वर को मनुष्य पर प्रगट करे जिस करके मनुष्य ईश्वर को पहिचाने और उस के स्वभाव के समान हो जावे यह बात सब में प्रामाणिक भी ठहर गई किसी प्रकार से खण्डन के योग्य नहीं तो निश्चय करके

ईश्वर का मत भी एक ही है और सब के लिये है क्योंकि सत्य जो पदार्थ है एक है और सब के लिये है पर हिन्दुओं का मत सब के लिये नहीं वरन अनहोना है कि कोई दूसरा उन के मत में आ सके यद्यपि सब मान लेते हैं कि परस्पर प्रेम रक्खा चाहिये पर यह बात उन के मत में कहीं नहीं पाई जाती परन्तु इस के बिरुद्ध और मतवालों से घिन रखने की आज्ञा है कदाचित् उन से कोई बोले चाले अथवा छू छा लेय तो उन्हें स्नान अथवा प्रायश्चित्त करना पड़े ।

तीसरा अध्याय ।

जाति के विषय में ।

यदि हिन्दुओं का धर्म्म सत्य भी होवे तौभी और मत-वालों को उन के मत से कुछ लाभ नहीं क्योंकि वे उन के मत में कभी नहीं आ सकते हैं जैसे दूसरे अध्याय में बर्णन हुआ । फिर वे अपने मत से केवल और ही देश के लोगों से अलग नहीं हुए परन्तु आपस में भी बंट गये ब्राह्मण से लेके डोम चमार तक जिन का नाममाच लेते ब्राह्मण घिनाते हैं । सहस्रों जाति भीत की नाईं एक को दूसरे से पृथक् पृथक् रखती है । चार वर्ण का बर्णन वेद शास्त्र में है और ये चारों ऐसे चिर्रवाती हो गये कि कुछ बर्णन नहीं किया जाता और हिन्दू की जाति ऐसी निर्जीव बातों पर ठहराई गई कि यदि उन की परीक्षा शास्त्र की रीति से होवे तो कभी एक भी अपनी जाति पांति में न ठहरे ।

१ फिर जाति के स्थापित करने में बहुत ही सन्देह होता है । सामवेद और स्मृति और कितने पुराणों के लिखे के समान ब्राह्मण ब्रह्मा के मुख से क्षत्री भुजा से और वैश्य

जांघ से और शूद्र पांव से निकले। कितने पुराणों में लिखा है कि ब्रह्मा ने पहिले एक स्त्री और एक पुरुष को बनाया। और भागवत में यह बात है कि ब्रह्मा ने अपने को आधे आध कर डाला दहिना भाग पुरुष बना जिस का नाम स्वयंभू और बाम भाग स्त्री जिस का नाम सत्यरूपा और उन्हों ने अपने सन्तान चार बर्ण में बांटे मानो एक फल को फांक चौमुखी काटी*।

२ वेद शास्त्र के बीच जाति पांति के स्थापित होने के विषय ऐसा बिरोध है जैसा उन की दूसरी बातों में जिस प्रकार से ऊपर बर्णन हुआ सो अब हम उस को छोड़के यह पूछते हैं कि जाति क्या बस्तु है अथवा ब्राह्मण होना क्या बस्तु है वह जीव है अथवा जाति अथवा शरीर अथवा आचार अथवा कर्म अथवा वेद।

यदि तुम कहो कि ब्राह्मण होना जीव से संबन्ध रखता है तो यह बात वेद के बिरुद्ध है क्योंकि वेद में लिखा है कि सूर्य चन्द्रमा इन्द्र अरु और देवते पहिले चतुष्पद थे और दूसरे देवते भी वैसा ही थे इस के पीछे देवते हो गये बरन श्वपाकी भी देवते हो गये। महाभारत में लिखा है कि कुंजलगिरि पर्वत के सात अहेरी और दश हरिण और मानसरोबर के एक हंस और सिंहलद्वीप के एक चकवा ने कुरुक्षेत्र में ब्राह्मण का जन्म पाया और वेद पढ़के बड़े पण्डित हुए। फिर धर्मशास्त्र मे मनु कहता है कि यदि कोई ब्राह्मण

---

* सब ब्राह्मण एक ही वंश से नहीं हैं बहुतेरे कैवर्त्तकुल से बहुतेरे राजकुल से और बहुतेरे चाण्डालकुल से हैं और जब लो वे जगत मे रहे चूड़ाकरण और मौञ्जी-बंधन और दन्तकाष्ठ यज्ञोपवीत इत्यादि करते रहे और मरने के पीछे ब्राह्मण करके विदित हुए निदान वैसे ब्राह्मणो की जाति मे गड़बड़ अध्याय वैसा ही पत्री इत्यादि जाति से भी है।

चारों वेद और वेदांग और उपांग को जानके किसी शूद्र से दान प्रतिग्रह करे तो वह गदहे का बारह जन्म और शूकर का साठ जन्म और कुत्ते का सत्तर जन्म पावेगा। इन बातों से निश्चय है कि ब्राह्मण होना जीव से कुछ संबन्ध नहीं रखता क्योंकि यदि जीव से कुछ संबन्ध होता तो ये बातें नहीं हो सकतीं।

फिर यदि कहो कि ब्राह्मण होना कुल से है अर्थात् जिस के माता पिता ब्राह्मण होवें वह अवश्य करके ब्राह्मण होगा सो इस बात को स्मृति खण्डन करती है कि अचल मुनि हस्ती से उत्पन्न हुआ और केशपिंगल मुनि उल्लू से और अगस्ति मुनि अगस्त के फूल से और कुशिक मुनि कुशा से और कपिल मुनि मरकट से और गौतम ऋषि एक शाखा लता से और द्रोणाचार्य्य घट से तैत्तिर ऋषि तीतर से और परशुराम रज से और शृङ्गी ऋषि हरिणी से और व्यास मुनि कैवर्तिन से और कौशिक मुनि शूद्रिन से और बिश्वामित्र चाण्डालिन से और वशिष्ठ मुनि वेश्या से उत्पन्न हुए इन में से एक की मा ब्राह्मणी न थी तथापि सब के सब ब्राह्मण कहलाये। इस्से जाना गया कि शास्त्र की रीति से ब्राह्मण होना कुल करके भी नहीं है।

मनु के शास्त्र में लिखा है कि बहुत से शूद्र धर्म के प्रताप से ब्राह्मण हो गये जैसे कथन मुनि तपस्या करने से ब्राह्मण हुआ और नारद मुनि जो कलवारिन के पेट से था तपस्या करके ब्राह्मण हो गया और लिखा है कि व्यास ने एक शूद्र को ब्राह्मण बनाया। इस्से भी जाना गया कि ब्राह्मण होना कुल करके नहीं है।

फिर कोई कहे कि जिस के माता पिता ब्राह्मण होवें वही ठीक ब्राह्मण है तो हम उस्से पूछते हैं कि मुख्य ब्राह्मण

कौन है क्योंकि कोई ऐसा नहीं है जिस के घराने में कुछ कलंक दोष न लगा हो। फिर मनु के शास्त्र में लिखा है कि जो ब्राह्मण मांस ग्रास करे वह उसी घड़ी जाति पांति से निकाला जाय। फिर जो कोई मधुर अम्ल अथवा लोन अथवा दुग्ध बेचे तो वह तीन दिन के बीच में शूद्र हो जावे। इन बातों से भी जाना गया कि ब्राह्मण होना कुल जाति करके नहीं है क्योंकि जो जाति कुल करके होता तो ऐसी बातों से किस रीति जाता रहता क्या तुम ने कभी सुना है कि उड़ता घोड़ा भूमि पर उतरने से कहीं शूकर हो गया है यह तो अनहोना है।

फिर कोई कहे कि ब्राह्मण होना देह शरीर करके है तो यह भी बिरुद्ध है क्योंकि जो देह ब्राह्मण है तो अग्नि जिस्से वह दग्ध किया जाता है ब्राह्मण का घातक ठहरा और इसी प्रकार से वे सब भी उस के घातक ठहरे जो उस की लोथ को जलने के लिये चिता पर रख देते हैं और जब देह ब्राह्मण ठहरा तो हर एक मनुष्य जिस का पिता ब्राह्मण होय और माता क्षत्रियाणी अथवा वैश्यानी अथवा शूद्राणी वह ब्राह्मण ठहरेगा क्योंकि वह अपने पिता की हड्डी का टुकड़ा और उस के मांस का लोथड़ा है पर इस बात को कौन मानता है।

फिर जो यज्ञ करना कराना और पढ़ना पढ़ाना और दान देना लेना अरु और जितने धर्म के कार्य हैं सब ब्राह्मण ही की देह से होते हैं तो क्या उन सब कर्मों का पुण्य ब्राह्मण की देह जलाने से जाता रहता है इसे कोई न मानेगा। सो जाना गया कि ब्राह्मण होना देह करके भी नहीं है।

यदि कोई कहे कि ब्राह्मण होना ज्ञान से है तो यह भी भूल है क्योंकि जो ज्ञान से ब्राह्मण होता तो अब तक बहुत से शूद्र ज्ञानमान होकर ब्राह्मण हो गये होते इस लिये कि कितने शूद्र ऐसे हैं कि चारों वेद और व्याकरण और मीमांसा

श्रीर सांख्य श्रीर वैशेषिक श्रीर ज्योतिष शास्त्र पढ़े हैं तथापि उन में से कोई ब्राह्मण नहीं कहलाता । इस्से जाना गया कि ज्ञान से कोई ब्राह्मण नहीं हो सकता । यदि कोई कहे कि क्रिया आचार से ब्राह्मण होते हैं तो यह भी ठीक नहीं क्योंकि नट श्रीर भाट श्रीर कैवर्त्त श्रीर भांड़ श्ररु श्रीर बहुत से लोग हैं जो धर्म के दुर्गम कार्यों को करते हैं क्रिया श्राचार में वे सब से प्रसिद्ध हैं तथापि उन्हें कोई ब्राह्मण नहीं कहता । इस्से ठीक जाना जाता है कि ब्राह्मण होना क्रिया आचार से भी नहीं है ।

यदि कहो कि वेद के पढ़ने से ब्राह्मण होता है तो बतलाश्रो कि कौन से वेद पढने से । लंका में रावण के समय बहुत से राक्षस वेद को पढ़ते थे पर उन में से कोई ब्राह्मण न हुश्रा सो जब वेद पढने श्रीर संस्कार श्रीर कुल बर्ण श्रीर क्रम से ब्राह्मण नहीं हो सकता तो फिर ब्राह्मण होना क्या वस्तु है । वेद में लिखा है कि देवते उसे ब्राह्मण जानते हैं जिस के मन मे नेम धर्म दीनता श्रीर अधीनता श्रीर कोमलता हो श्रीर संग श्रीर परिग्रह श्रीर राग श्रीर द्वेष न हो । हर एक शास्त्र में लिखा है कि ब्राह्मण के लक्षण दया सत्य तपस्या इन्द्रियों को बश में करना है श्रीर चांडाल के लक्षण इन के बिरुद्ध । फिर शंकराचार्य्य ने कहा है कि देवते कुछ जाति के ऊपर नहीं जाते परन्तु जो सज्जन पुरुष हैं उसी को ब्राह्मण जानते हैं यद्यपि वह सब से नीच जाति होय । जैसे यह श्लोक है

> शुचिः सद्भक्तिदीप्ताग्निदग्धदुर्जातिकल्मषः ।
> श्वपाकोऽपिबुधैःश्लाघ्योनवेदज्ञोऽपिनास्तिकः ॥

अर्थात् सद्भक्ति अग्नि करके जिस दुष्ट जाति के पाप जले हैं वह चांडाल बुध जनों के प्रशंसा योग्य है श्रीर जो वेद का

जाननेहारा होके नास्तिक है वह प्रशंसा के योग्य नहीं। फिर यह श्लोक है

नमेभक्तश्चतुर्वेदी मद्भक्तःश्वपचःप्रियः।
तस्मै देयं ततो ग्राह्यं स च पूज्यो यथाह्यहम्॥

चतुर्वेदी भक्तिहीन मेरा प्रिय नहीं परन्तु चांडाल भक्तिमान मेरा प्रिय है उसी को देना लेना और उसी को मान्ना है जैसा मुझे।

यह अचंभे की बात है कि पहिले तो तुम कहते हो कि एक ही अर्थात् ब्रह्मा से सब उत्पन्न हुए और फिर चार वर्ण को भी ठहराते हो तो इस में तुम्हारी बड़ी भूल है क्योंकि एक माता पिता के जो चार पुत्र होते हैं तो उन चारों की एक ही जाति कहलाती है जैसे उदुम्बर और कटहर के पेड़ कि उन की डाली और स्तम्ब और गांठ और जड़ सब में फल लगते हैं पर सब ठौर के फल एक ही भांति के कहलाते हैं दूसरे प्रकार के नहीं। फिर जो तुम कहो कि ऊपर का फल ब्राह्मण और नीचे का फल शूद्र है तो लोग तुम्हें क्या कहेंगे तुम ही टुक मन में सोचो हां पशुन की जाति पांति और उन के अंग ढंग अरु और उन की कितनी बातों में बीच है जैसे हाथी के पांव घोड़े के पांव के ऐसे नहीं न बाघ के पांव हिरण के पांव ऐसे इसी प्रकार से हर एक भांति के जीव जन्तुन के पांव में बिभेद है और इसी करके उन की नाना प्रकार की जाति जानी जाती है पर हम ने कभी नहीं सुना कि ब्राह्मण और क्षत्री के पांव में अथवा शूद्र और वैश्य के पांव में कुछ बीच है। फिर गाय भैंस हाथी घोड़े बैल गदहे भेड़ बकरे इत्यादि के अंग ढंग मल मूत्र गंध बास और बोलियां अलग २ हैं और इन्हीं करके वे सब भिन्न २ जाने जाते हैं पर ब्राह्मण क्षत्री शूद्र

वैश्य इन सब बस्तुन में बराबर हैं और उन के तन मन की बात एक ही भांति की और रुधिर मांस और हाड़ चाम और रूप रंग खाने पीने हगने मूतने उत्पन्न होने पालने पोषने की रीति एक ही है और जिन बातों से ब्राह्मण को दुःख सुख होता है उन्हीं बातों से और बर्ण को भी होता है। और चारों के जीने मरने की रीति एक है और उन की बुद्धि बिचार और भय आशा में कुछ भेद नहीं सो निश्चय हुआ कि सब मनुष्य एक ही जाति हैं और ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र में जो भेद है सो केवल धर्म और व्यवहार और उद्यम में है और किसी बात मे नहीं जैसे बैशंपायन ऋषि और राजा युधिष्ठिर के वाक्य से जाना जाता है कि एक दिन पांडु के पुत्र युधिष्ठिर ने जो अपने समय का बड़ा ज्ञानी था हाथ जोड़के वैशंपायन ऋषि से पूछा कि महाराज आप ब्राह्मण किस को कहते हैं और ब्राह्मण के क्या लक्षण हैं वैशंपायन ने कहा कि ब्राह्मण के लक्षण ये हैं कि उस में धर्म और धर्म के गुण होवें और वह कभी अधर्म और कुकर्म न करे और कभी मांस न खावे और किसी जीव को न सतावे। दूसरा लक्षण यह है कि जो पराई बस्तु मार्ग में पड़ी पावे तो उस के स्वामी को बिन आज्ञा न लेवे। तीसरा लक्षण यह कि काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर से न्यारे रहे और संसार के विषयों पर मन न लगावे। चैाथा यह कि वह काम के बश न होवे। पांचवां यह कि उस में ये पांच पवित्र गुण हों दया सत्य इन्द्रियों को बश मे करना तपस्या और सब से प्रेम। जिस में ये गुण होवे मैं उसी को ब्राह्मण जानता हूं और जिस में ये नहीं सो शूद्र है क्योंकि ब्राह्मण होना जाति वर्ण और कुल अथवा पूजा पाठ से नहीं पर चाण्डाल जो धर्मी हो और उस में ऊपर के सब लक्षण

पाये जायें तो वही ब्राह्मण है । हे युधिष्ठिर इस संसार में पहिले एक ही जाति थी पर धर्म अधर्म करने से चार जाति हो गईं सब मनुष्य स्त्री से एक ही रीति पर उत्पन्न हुए सब को भूख प्यास शीत उष्णता होती है सब के एक ही प्रकार के अंग ढंग और प्रकृति स्वभाव हैं । पर जिस का चाल चलन सदा से अच्छा है वही ब्राह्मण है नहीं तो शूद्र हो शूद्र से भी निकृष्ट है इस के विरुद्ध जिस शूद्र मे ये लक्षण होवें वही ब्राह्मण है । हे युधिष्ठिर जो अपनी इन्द्री को बश किये है उसी को ब्राह्मण जान्ना और उसी को देना पुण्य है उस की जाति पर भ्रम न करना बरन उस के गुण प्रभाव को देखना । जो कोई इस संसार मे भलाई करता अरु औरों का भला चाहता और भले कामों में रात दिन लगा रहता वही ब्राह्मण है और जो सांसारिक कामों को छोड़के केवल मुक्ति के खोज में रहता वही ब्राह्मण है और जिस में क्षमा दया दम दान सत्य शौच स्मृति ऋद्धि सिद्धि ज्ञान विद्या इत्यादि हैं वही ब्राह्मण है । वैशंपायन ऋषि की इन बातों में से यदि कोई निषेध के योग्य होय तो होय पर उन का तात्पर्य्य यह है कि चार वर्ण का ब्यवरा केवल भावना है सो वेद शास्त्र से जाति के ठहराये जाने का कुछ ठिकाना नहीं जाना जाता न चार बर्ण के होने की कुछ प्रतीति समझ पड़ती है बरन ऊपर के प्रमाणों से निश्चित हुआ कि सब मनुष्य एक ही जाति हैं ।

भागवत मे लिखा है कि राजा पुरूरवा के पहिले एक ही जाति और एक ही अग्नि और एक ही नारायण था । फिर लिखा है कि राजा शौनक ने चार बर्ण को ठहराया और सर्वत्र लिखा है कि सतयुग में एक ही जाति थी ।

३ अब हम जाति की बुराई को संक्षेप में बर्णन करते

हैं। पहिले चार वर्ण के नाम रखने के विषय में मनु के शास्त्र में लिखा है कि ब्राह्मण के नाम मे दो शब्द चाहिये पहिले का अर्थ पवित्रता हो दूसरे का तेज प्रताप। इसी प्रकार क्षत्री के नाम में दो शब्द चाहिये पहिले शब्द का अर्थ पराक्रम हो दूसरे शब्द का अर्थ रक्षा। वैश्य के नाम में भी दो शब्द होवें पहिले का अर्थ सम्पत्ति दूसरे का अर्थ प्रतिपाल करना। फिर शूद्र के नाम मे भी दो शब्द होवें पहिले का अर्थ तुच्छता दूसरे का अर्थ दीनता से सेवा टहल करनी। इस रीति से ब्राह्मण सब का स्वामी और क्षत्री उस का प्यादा वैश्य उस का बनजारा और शूद्र उस का दास ठहरता है। स्मृति में लिखा है कि ब्राह्मण से दश और क्षत्री से पन्द्रह और वैश्य से बीस और शूद्र से पचास रुपये सैकड़े व्याज लिया चाहिये।

मनु के शास्त्र में लिखा है कि ब्राह्मण शूद्र से बरबस सेवा टहल करवावे चाहे वह उस का मोल का लिया हो चाहे मोल का न लिया हो क्योंकि शूद्र को जो सेवक की जाति है ब्राह्मण ही की सेवा के लिये स्वयंभू ने उत्पन्न किया जैसा मनु के शास्त्र मे लिखा है ८ अध्याय ४१४ श्लोक

न स्वामिना निसृष्टोऽपि शूद्रो दास्याद्विमुच्यते।
निसर्गजं हि तत्तस्य कस्तस्मात्तदपोहति॥

अर्थात् स्वामी शूद्र को अपनी सेवकाई से छुड़ा देवे तौभी वह सेवकाई से नहीं छूटता क्योंकि सेवकाई ही उस का धर्म है इस लिये कौन उसे सेवकाई से छुड़ा सकता है फिर उसी शास्त्र में लिखा है

एकजातिर्द्विजातींस्तु वाचा दारुणयाक्षिपन्।
जिह्वायाः प्राप्नुयाच्छेदं जघनप्रभवोहिसः॥

अर्थात् यदि शूद्र ब्राह्मण को कठोर बाणी कहे तो उस

की जीभ काटी जाय क्योंकि शूद्र नीचांग से उत्पन्न हुआ है।

फिर यों लिखा है कि जो कोई द्विज को गारी देय तो उस की जीभ बीचोबीच से चीर डाली चाहिये और यदि उस के नाम और जाति पांति की निन्दा करके कहे कि अरे देवदत्त तो दश अंगुल का सूजा तप्त करके उस के तालू में कर दिया चाहिये और यदि दंभ से पण्डितों को उपदेश करे तो राजा को चाहिये कि तेल उष्ण करके उस के मुंह और कान मे डलवा देवे। फिर मनु के शास्त्र में लिखा है ८ अध्याय के २८१ श्लोक में

सहासनमभिप्रेप्सुरुत्कृष्टस्यापकृष्टजः।
कट्यां कृताङ्कोनिर्वास्यः स्फिचं वास्यावकर्त्तयेत्॥

अर्थात् जो निकृष्ट जाति उत्कृष्ट जाति के आसन पर बैठे तो उस को कटि मे चिन्ह करके बाहर निकाल देय अथवा उस के चूतड़ में घाव कर देय और जो नीच उत्तम को देखके थूके तो राजा को चाहिये कि उस के दोनों होठों को काट लेवे फिर मूतनेहारे का लिंग काटे और पादनेहारे का गुदा छेद डाले। फिर यह लिखा है ४ अध्याय के ८० श्लोक

न शूद्राय मतिं दद्यान्नोच्छिष्टं न हविष्कृतम्।
नचास्योपदिशेद्धर्मन्नचास्य व्रतमादिशेत्॥

अर्थात् शूद्र को ज्ञान न देना और न ब्राह्मण का जूठा और न होम का शेष और न धर्म्मोपदेश और न व्रत उसे बतलाना। शास्त्र मे इस के परे और बहुत सी बाते हैं पर सब का वर्णन करना कुछ आवश्यक नहीं।

दूसरी कोई जाति व्यभिचार करे तो शास्त्र की आज्ञा है कि वह मारा जाय पर यदि ब्राह्मण व्यभिचार करे तो

केवल उस की चूंदी मुंड़वाई जाय । फिर यद्यपि ब्राह्मण पर हर प्रकार के पाप ठहरे पर राजा उसे कभी न मारे हां उस को भला चंगा उस के धन सम्पत्ति समेत अपने देश से निकाल देवे जगत् में ब्राह्मण के मारने के बराबर कोई पाप नहीं इस लिये राजा को चाहिये कि ब्राह्मण के मारने का ध्यानमात्र भी अपने मन में न करे । फिर हर एक वर्ण की नरवलि हो सकती है पर ब्राह्मण की नरबलि कभी न किई चाहिये । मनु के शास्त्र में यह श्लोक है

मौण्ड्यं प्राणांतिकोदण्डो ब्राह्मणस्य बिधीयते ।
इतरेषां तु वर्णानां दंडः प्राणान्तिको भवेत् ॥
न जातु ब्राह्मणं हन्यात्सर्वपापेष्ववस्थितम् ।
राष्ट्रादेनं बहिः कुर्य्यात्समग्रधनमक्षतम् ॥

अर्थात् ब्राह्मण को मूंड़ना यही उस को प्राणांत दण्ड देना है परन्तु और वर्ण को प्राणांत दण्ड देना चाहिये यद्यपि ब्राह्मण सर्ब पाप किये हो तौभी उसे बध न किया चाहिये परन्तु उस को बिना घाव किये सर्ब धन समेत देश से बाहर कर दीजिये । फिर यह श्लोक है

महापातकयुक्तोपि न बिप्रो बधमर्हति ।
निर्वासनाङ्कं मौण्ड्यं हि तस्य कुर्य्यान्नराधिपः ॥

अर्थात् यदि ब्राह्मण महापातकी हो तौभी बध के योग्य नहीं परन्तु राजा उस का मूंड मुंड़वाके और शरीर में चिन्ह करके देश से निकाल देवे । फिर यह श्लोक है

आचार्य्यञ्च प्रवक्तारं पितरं मातरं गुरुम् ।
न हिंस्याद् ब्राह्मणान् गाश्च सर्बांश्चैव तपस्विनः ॥

अर्थात् आचार्य्य और पढ़ानेहारे और माता पिता और गुरु और गौ और ब्राह्मण और तपस्वी को बध न करना चाहिये । ब्राह्मण के न मारने का एक बड़ा ही कारण यह है कि

ब्राह्मण की देह समस्त देवताओं के रहने का स्थान है सो यदि वह मारा जावे तो उन का कहां ठिकाना है जैसे लिखा है

ब्राह्मणस्य तनुर्ज्ञेया सर्व्वदेवसमाश्रिता।
साचेत्संतापिता राजन् किमु वक्ष्यामहे वयम्॥

अर्थात् ब्राह्मण का तन सर्व देवताओं का निवासस्थान है सो जो वह तन दुःखित हो तो हम क्या कहें। फिर यह श्लोक है

विस्त्रब्धं ब्राह्मणः शूद्राद् द्रव्योपादानमाचरेत्।
न हि तस्यास्ति किंचित् स्वं भर्तृहार्य्यधनो हि सः॥

अर्थात् ब्राह्मण शूद्र के द्रव्य को निधड़क ले लेवे क्योंकि शूद्र का कुछ भी नहीं है उस का द्रव्य उस के स्वामी ही का है।

दूसरे ठौर मे लिखा है कि यदि कोई ब्राह्मण को एक तिनके से भी मारे तो उसे एक्कीस बार पशु का जन्म लेना पड़ेगा देखो एक तिनके से अपराध का पहाड़ ऐसा दण्ड। राजा यद्यपि भूखों मरता हो पर ब्राह्मण से कर कभी न लेवे पण्डित यदि गड़ी हुई सम्पत्ति पावे तो वह सब को सब ले लेवे क्योंकि वह सब का स्वामी है पर जो राजा गड़ी सम्पत्ति पावे तो आधा ब्राह्मण को बांट देवे। फिर मनु की आज्ञा है कि जो धन बिना स्वामी का ठहरे तो उस का स्वामी ब्राह्मण है और शूद्र के लिये आज्ञा है कि धन न बटोरे। फिर यदि ब्राह्मण को कोई सतावे और वह क्रोधित होवे तो वह राजा को और राजा की सारी सेना को मार डाल सकता है और एक नई सृष्टि देवता मनुष्य राजा समेत उत्पन्न कर सकता है और सारा जगत् उस की कृपा और सहायता से स्थित रहता है।

निदान मनु की और वेद शास्त्र की बातों के बिचार

करने से अब निश्चित हुआ कि हिन्दुओं का मत केवल ब्राह्मणों की बनावट है क्योंकि शास्त्र की रीति से महीसुर वही और उन्हों से और उन्हों के लिये सब कुछ उत्पन्न हुआ है सो यह कैसी पाखंड की बात है। ऐसी २ बातों के पढ़ने सुन्ने से ब्राह्मणों का मन यद्यपि कैसा ही दीन हो पर अवश्य करके बिगड़ जायगा और घमण्ड में आ जायगा क्योंकि अपने को देवता समझकर अरु और सभों को अपना सेवक जानकर क्योंकर हो सकता है कि उन का जी ठिकाने रहे और वह भलमनसी और मनुष्यत्व से अपना समय निबाहें और जब वे अपने को आप ईश्वर समझते हैं तो उन के मन में भय डर कहां। यों ही शैतान के जाल मे फंस रहे और उस में असमर्थ और बेबस हो गये हैं*।

---

*यदि कुछ अवश्य होता तो इस बात का कि हिन्दूमत ब्राह्मणों की बनावट है प्रामाणिक करना कुछ बड़ी बात न थी इस लिये संक्षेप से सोलह सत्रह प्रमाण लिखते हैं।

१ प्रमाण ब्राह्मण पृथिवी के देवते है।

२ प्रमाण ब्राह्मण किसी कारण से मारे न जावें।

३ प्रमाण शूद्र से पचास रुपये सैकड़े ब्याज लेने की आज्ञा है पर ब्राह्मणों से दश ही रुपये सैकड़े।

४ प्रमाण ब्राह्मण ही वेद के पढ़नेहारे और उन्ही के लिये सारा दानपुण्य और भेंट पूजा इत्यादि है।

५ प्रमाण ब्राह्मण ही गुरु हो सकते हैं।

६ प्रमाण ब्राह्मण कदाचित् किसी को मार डाले और उस मारे गये के लिये कोई रोदन करे तो उसे प्रायश्चित्त करना पड़ेगा।

७ प्रमाण लिखा है कि देवी मनुष्य के रुधिर चढ़ाने से सहस्र बरस लों प्रसन्न रहती है पर ब्राह्मण का रुधिर चढ़ाना वर्जित है।

८ प्रमाण गरुड़ सकल जीव जन्तु को खा सकता पर जो ब्राह्मण को खावे तो उस का पेट ऐसा पिरावेगा कि वह सह न सकेगा।

९ प्रमाण ब्राह्मण ही को दान देने से सर्व प्रकार के पाप के प्रायश्चित्त होते हैं।

१० प्रमाण ब्राह्मण का कोई कुछ बुरा करे तो एक्कीस बार अपावन जीव जन्तुन का जन्म लेना पड़ेगा।

इस के परे जाति के कारण से हिन्दुओं में बड़ी २ फूट मति हुई कि एक दूसरे को लताड़ता और चिथाड़ता है और इस का बिष छोटे बड़े में भोन गया है यहां लों कि उन में से कोई अपनी जाति के संग बिन जाने बूझे नहीं खा पी सकता और अरोसी परोसी हित मित्र कैसा हो बडा प्रिय हो पर हर एक के आगे रुकावट के एक २ पहाड़ खड़े रहते हैं। जाति उन लोगों के हाथ मे लड़ने का अस्त्र देकर उन के मन में दंभ क्रूरता अत्यन्त भरा देती है और सारी माया मोह को खींच लेती है यहां लों कि एक को दूसरे की भलाई करने से रोक रखती है। उन में उत्तम जातिवाला यद्यपि प्यास के मारे मर जावे तथापि नीच जाति के हाथ से कभी पानी न पीवेगा यदि शूद्र ब्राह्मण की रसोई को छू ले तो वह सब निकालके फेंक फांक देगा।

फिर नीच जाति के छूने से ब्राह्मण को छूत लग जाती है और उसे स्नान करना पडता है। निदान जाति सारी सुजाति को नष्ट करके एक का मन दूसरे से ऐसा रुका देती है कि बनपशुन में भी यह झिझक कभी नहीं पाई जाती। उन के यहां जाति की बात केवल इसी लोक के

---

११ प्रमाण यदि कोई गौ बेचे तो वह नरक मे पड़े पर जो ब्राह्मण का संकल्प करे तो स्वर्ग को प्राप्त हो।

१२ प्रमाण ब्राह्मण को बचाने के लिये झूठ बोलना पुण्य है।

१३ प्रमाण लिखा है कि सारा जगत् ब्राह्मण ही के पुण्य प्रताप से जीता और चलता फिरता है।

१४ प्रमाण जगत् और जो कुछ उस मे है ब्राह्मण ही का है।

१५ प्रमाण ब्राह्मण से कर लेना बर्जित है यदि वह गड़ी हुई द्रव्य पावे तो सब ले लेवे और जो राजा पावे तो आधा ब्राह्मण को देवे।

१६ प्रमाण जिस संपदा का कोई अधिकारी न ठहरे उस का अधिकारी ब्राह्मण।

१७ प्रमाण ब्राह्मण ही मनुष्य के हर लोक परलोक का स्वामी। निदान यह मत ब्राह्मण को साक्षात् ईश्वर ठहराता है इस्से निश्चय है कि इस मत के ठहरानेहारे ब्राह्मण ही हैं स्वयं ब्रह्म परमेश्वर नहीं॥

लिये नहीं परन्तु परलोक से भी संबंध रखती है और शूद्र के लिये सब से बड़ा धर्म पुण्य यह है कि ब्राह्मण का दास बने और जीवन भर उस की सेवा टहल किया करे जिसतें दूसरे जन्म में ब्राह्मण के घर जन्म पाके मुक्ति की आशा रक्खे। निदान ब्राह्मण ही गुरु और वही वेद पढ़ानेहारे और उन्हीं के हाथ मे लोक परलोक के सब पदार्थों की कुंजी है। फिर यह श्लोक है

देवाधीनं जगत् सर्वं मंत्राधीनाश्चदेवताः।
ते मंत्रा ब्राह्मणाधीनास्तस्माद् ब्राह्मणदेवताः॥

अर्थात् सर्व जगत् देवताओं के अधीन है और देवते मंत्रों के अधीन और मंत्र ब्राह्मणों के अधीन हैं तिस्से ब्राह्मण ही देवते हैं। इस के समान हिन्दू बपुरा जब से माता के गर्भ मे पड़ा और जब लग गया मे उस का पिण्डा न पारा गया ब्राह्मणों के लिये अहेर है।

चौथा अध्याय।

तीर्थ तपस्या मूर्त्तिपूजा इत्यादि के विषय में।

जब हम हिन्दुओं के मत को और उन के तीर्थ तपस्या इत्यादि के विषय को सोचते हैं तो नहीं कह सकते हैं कि वह मनुष्य की सांसारिक दशा के लिये भी भला है। और फिर जब उस की मूर्त्तिपूजा और स्वर्गलोक के बीच थोड़े दिन के लिये रहने मे और फिर जग मे आके जन्म लेने अथवा मोक्ष पाके ईश्वर में लीन होने को सोचते हैं तो नहीं कह सकते कि हिन्दुओं का मत मनुष्य की बुद्धि और आत्मा के लिये अच्छा है अथवा कि वह मत कभी उन

बांछाओं को पूरा कर सकता है जो परमेश्वर की पहिचान और सर्वदा के जीवन और आत्मा की आनन्दता के लिये मनुष्य के मन में होती हैं। सब जानते हैं कि जो मत परमेश्वर की ओर से होय अवश्य है कि उस से मनुष्य का शरीर और आत्मा दोनों की भलाई होवे सो जब यह हिन्दुओं के मत से प्राप्त नहीं हो सकता तो और भी निश्चय है कि वह परमेश्वर की ओर से कभी नहीं।

दोहा।

कुशल आत्मा देह को . जेहि मत से नहिं होय।
सो मत ईश्वर को नहीं . यह जानेहु सब कोय॥

चौपाई।

यामें जाकह संशय होई . तेहि सम मूरख अहैं न कोई।
मानहु सत्य बचन यह नीके . तजहु भावना दुब्धा जीके॥
खोजहु सत्य मता जग माहीं . जेहि ते पहुंचो ईश्वर पाहीं।
नहिं तो भटक भटक मरि जैहो . रतन जन्म यह बृथा गमैहो॥

अब टुक सोचा चाहिये कि जो सारे जगत् का ईश्वर है वही सत्य मत का भी ईश्वर है दूसरा नहीं संसार की सारी बातों के बिषय जिन में मनुष्य को परिस्रम करना पड़ता है बहुधा हर एक अपने २ परिस्रम के समान फल पाता है जैसे किसान जब खेत को जोतता बोता है तो बहुधा उस्से अन्न पाता है। फिर जो कुछ कि वह बोता है उसी की बढ़ती बटोरता है जैसे गेहूं बोने से गेहूं मिलता है पर जो बबूल लगावेगा आम का फल न खावेगा। कहावत है पेड़ लगावे बबूल का आम कहां से खाय। इसी भांति करणी और करणी के फल से संबन्ध है पर जब कि लोग अपना घर द्वार छोड़के लड़केबाले समेत सैकड़ों कोस की यात्रा करते हैं तो उन के आने जाने में बर्षों बीत जाते हैं और उन्हें यात्रा

में हर प्रकार के दुःख और क्लेश होते हैं चलते २ थक जाते हैं और बीमार पड़ते हैं मार्ग में औषध बारि पथ्य कहां से मिल सके शीत उष्णता और वृष्टि के क्लेश में पड़ते हैं कितने अपने घर तक भी नहीं पहुंचते मार्ग ही में मर जाते हैं बरन सहस्रों खप जाते हैं तीर्थ के आसपास उन की हड्डियों के ढेर के ढेर लगे रहते हैं विशेष करके जगन्नाथ के निकट उन बपुरों के लिये हड़ावर स्थान सा बन रहा है । इन आपदों के परे तीर्थ में एक बड़ी उपाधि यह है कि स्त्री पुरुष के कुकर्म करने के लिये बड़ा सुभीता है जिस्से सहस्रों कुलवंतिन का भ्रष्ट होना बिदित है ।

चौपाई ।

भ्रष्ट भई कुलवंतिन जाई . सो तीरथ कैसो रे भाई ॥
श्रवण सुने अरु नयनहु सूझै . ताहू पर मूरख नहिं बूझै ॥
आपु गये अरु औरहि घाला . दुहूं लोक से भये निराला ॥

भला जो जन अपना घर द्वार छोड़के तीर्थ यात्रा को गया और अपने धन संपत्ति को नष्ट किया फिर आने पर यद्यपि वह ऋणी न हुआ और उस की स्त्री की पत न गई और उस के लड़के जीते जागते भले चंगे रहे और अपनी सब वस्तें और ठौर ज्यों की त्यों पाईं तौभी उस ने इतने परिश्रम और श्रम करके क्या पाया क्या पदार्थ प्राप्त किया । कहावत है कि पहाड़ खोदे मूसा हाथ । बगुला मारे पंख हाथ । हां इतना तो हुआ कि काशी में गंगास्नान और मूर्त्तों का दर्शन पर्सन किया और गया में जाके पिण्डा पारा और जगन्नाथ में जाके सर्ब जातों के संग खाया पिया और एक कुरूप और भयानक स्वरूप का दर्शन किया इस पर भी यदि उस से पूछो कि अब तेरी गति निश्चय करके हुई तो वह बोलेगा कि भगवान् जाने हम नहीं जानते और मरते समय

उस पर ऐसा उत्पात होता है कि उस को आंखों के सामने अंधेरा छा जाता है और वह ऐसा थरथराता और कांपता है जैसे वह जन जो कभी तीर्थयात्रा को नहीं गया। तीर्थ करने से उस का मन निर्मल और आत्मा शुद्ध नहीं हुआ वह इन बातों के लिये तीर्थयात्रा को गया भी न था। जैसे घर से निकलते समय उस की मति अन्धी और मन कठोर था वैसा ही घर फिर आने में बना रहा बरन और अधिक हो गया। परमेश्वर की पहिचान उस ने कुछ प्राप्त न किई। मन की शान्ति और कुशल आनन्द जितने कि उस से दूर थे जब वह तीर्थ को निकला उतने ही बरन और भी अधिक दूर हो गये।

चौपाई।

सुनतेहि तासु आगमन भाई . सो डग पीछे हटी भलाई।

फिर शुद्धतत्त्व में लिखा है कि गंगा किसी अपवित्र मनुष्य को पवित्र नहीं कर सकती

गंगातोयेन कृत्स्नेन मृद्भारैश्च नगोपमैः।
आमृत्योःस्नातकश्चैव भावदुष्टो न शुध्यति॥

अर्थात् जिस का दुष्ट भाव है यदि वह जीवन भर पर्वतों को इतनी मिट्टी से अपने शरीर को मांजके सर्व गंगा जल से स्नान करे तौभी शुद्ध नहीं। परमेश्वर ने हर एक मनुष्य के मन मे सुख और चैन की इच्छा उत्पन्न किई है फिर तपस्या के बड़े २ कष्टों को सहना जैसे ऊर्द्धमुख और ऊर्द्धबांह होना और पंचाग्नि तापना चरख पर लटकना त्रिवेणी में करवट लेना और जगन्नाथ के पहिये तले दबके मर जाना इत्यादि किस की आज्ञा से हैं यह परमेश्वर की ओर से कभी नहीं क्योंकि उस ने मनुष्य के मन में मरने और दुःख उठाने की इच्छा नहीं डाली है। फिर इसे छोड़ शरीर के

मारने से आत्मा को क्या लाभ है क्योंकि करनेवाला आत्मा है और शरीर केवल हथियार है सो करनेवाले को दण्ड दिया चाहिये कि हथियार को । फिर संसार को परमेश्वर ने खाने पीने और हर भांति की अच्छी वस्तुन से भर दिया पर योगी यती तपस्वियों ने अहंकार करके यह सब कुछ दयासागर परमेश्वर पर पटक देके और बन में जाके भूख प्यास मार दुःख क्लेश सहके आत्मघाती होते हैं यद्यपि उन्हों ने न अपने को उत्पन्न किया न अपने को जिला सकते हैं ।

मारे जिआवे वह जगत्राता ॥
यामे कहा मनुज की बाता ॥

जब ऊपर की बातों से वेद शास्त्र खण्डन हो चुके तो मूर्त्तिपूजा भी झूठ ठहर चुकी अब उस के झुठलाने के लिये प्रमाण का कुछ प्रयोजन नहीं* परन्तु यहां हम उस के औगुण का कुछ वर्णन करते हैं । मूर्त्तिपूजा बुद्धि को ऐसी अन्धी कर देती है कि कुछ सूझ ही नहीं पड़ता और शास्त्र में यह लिखा है

मृच्छिलाधातुदार्वादिमूर्त्तावीश्वरबुद्धयः ।
क्लिश्यन्ति तपसा मूढ़ाः परां शान्तिं न यान्ति ते ॥

अर्थात् जो मूर्ख मृत्तिका पाषाण धातु काष्ठ इत्यादि की मूर्त्ति को ईश्वर करके मानते है सो क्लेश को पाते हैं और मोक्ष को प्राप्त नहीं होते । सो जो कि पशु पाषाण इत्यादि को पूजते हैं वे अपने को उन से अति लघु समझते हैं ।

---

* ब्रह्मवैवर्त्त पुराण से जाना जाता है कि राजा सुरथ ने पहिले दुर्गा की मूर्त्ति की थापना किई और राजा मंगल ने लक्ष्मी की और अश्वपति ने सावित्री की और राजा सुयज्ञ ने राधा की और राजा रामरथ ने कार्त्तिक की और राजा शिव ने सूर्य्य की और बौधायन मुनि ने गणेश की । इस्से समझा जाता है कि मूर्त्तिपूजा मनुष्य के मन से निकली है ।

चौपाई।

जो नर पूजहिं काठ पखाना . सो उन से हैं अति अज्ञाना।
जग मंह जानत यह सब कोई . इष्ट बड़ो पूजक से होई॥

यो मां सर्व्वेषु भूतेषु सन्तमात्मानमीश्वरम्।
हित्वार्च्चां भजते मौढ्यात् भस्मन्येव जुहोति सः॥

अर्थात् जो लोग मुझ सर्बभूतव्यापक ईश्वर को तजके प्रतिमा को पूजा करते हैं सो भस्म में आहुति देते हैं। ये लोग बालक और पशु से भी निर्बुद्धि हैं पशु गंगा को पानी जानकर पीता है और तुलसी और पीपल को घासपात समझकर खाता है और बालक भी शालिग्राम और महादेव को पत्थर करके समझते हैं पर जब वे सयाने हुए और पूजना सीखा तो ज्ञान खोके उन्हें ईश्वर समझने लगे और उन मूर्त्तों को जिन्हें वे पहिले पत्थर समझते थे प्राणप्रतिष्ठा करके सिंगार करने और उन से कहने लगे कि आइये बैठिये अपनी अंगूठी पहिनिये और इस फूल को सूंघिये और नैवेद्य लीजिये। फिर चंवर करते कि वे ठंढे रहें और वस्त्र पहिनाते उढ़ाते कि शीत न सतावे और खस की टट्टियां लगाते कि उष्णता न पहुंचे मुसहरी लगा देते कि मक्खी मच्छर न सतावें रोली चन्दन अच्छत लगाते कि अपनी छबि के सिंगार को निरखके प्रसन्न होवें और लिटा देते कि बिश्राम करें और उन से स्वप्नार्थ पूछते और शकुन करते। फिर एक ही देवते की मूर्त्तों में बिभेद समझकर कहते हैं कि अमुक मूर्त्ति लड़केवाले धन सम्पत्ति देने में औरों से अधिक सामर्थी है। फिर समझते हैं कि यदि कोई मुसलमान अथवा अंगरेज़ उन को छू लेवे तो उन का महत्त्व और पवित्रता जाती रहती है इस लिये उन्हें फिर पवित्र करना पड़ता है और बीमार समझके कभी उन्हें इधर उधर फिराते हैं।

फिर हिन्दुओं की मूर्त्ति के रूप ऐसे हैं कि देखनेहारे को बरबस हंसी आती है अथवा घिन अथवा बुरी इच्छा मन में उपजती है । गणेश का हाथी का सा शिर और गोण सा पेट और विष्णु और शिव और रामकृष्ण के अद्भुत रीति के हाथ और उन में लकुट और संख चक्र गदा पद्म और मुंडमाल इत्यादि और देवी के सिंह के से दांत और बिल्ली की सी आंख और कुत्ते की सी जीभ और बिकराल स्वरूप और ब्रह्मा को हंस का वाहन अरु और अनेक प्रकार के काष्ठ पाषाण की घिनौनी डरावनी गढ़ी बनाई मूर्त्तें हैं यह तो सचमुच खिलौने ठहरे और शास्त्र के लिखे हुए के समान लड़कियों के लिये गुड़ियों के खेल हैं । फिर इन पर ध्यान करने से लोक परलोक सुधरने का ज्ञान क्योंकर प्राप्त हो सकता है और मन की निर्मलता और पवित्रता कैसे मिल सकती है । हां जब उन के कामो को चित्त मे लाते जिन की ये मूर्त्तें हैं तो और अधिक मन बिगड़ जाता और बुरी इच्छा उपजती है । जब देवते ऐसे तो अर्चक कैसे । अन्धकार से प्रकाश क्योंकर होवे । और काम क्रोध मद लोभ मोह की बातों पर ध्यान करने से पवित्रता और ब्रह्मज्ञान कैसे मिल सके । जड़ मूर्त्ति से चैतन्य आत्मा कभी ब्रह्मज्ञान प्राप्त कर सकता है । बुद्धि कहीं निर्बुद्धि से ईश्वर का भेद पा सकती है अथवा ओखली मूसल पूजने से कहीं सृष्टिकर्त्ता की पहिचान होती है । क्या लिंग के पूजने से काम की इच्छा जाती रहती है अथवा अधिक होती है । भला आग बुझाने के लिये कोई उस मे तेल भी डालता है । हाय हाय ऐसी बुद्धि पर चाहिये कि मत मनुष्य को सुधारे न कि बिगाड़े । अब जीवन उन पर मृत्यु हो गया क्योंकर जीवन प्राप्त करे और बिन मारे क्यों न मरे । जैसे कोई स्त्री अपना पति

छोड़के जब दूसरे को करती है तो फिर वह सैकड़ों सहस्रों पुरुष करने को लैस है वैसा ही इन लोगों ने जब सच्चे ईश्वर को छोड़ दिया तो एक दो दस बीस सौ पचास लाख को नहीं परन्तु तैंतीस कोटि देवताओं को अपना अपना ईश्वर बना लिया और बहुतेरी बस्तुन को पूजने लगे जैसे सूर्य्य चंद्र तारे आकाश अग्नि पृथिवी ब्राह्मण और उस की कन्या गुरु* गौ बन्दर कुत्ता गदहा गीदड़ हाथी सांड़ सांप सिंह चूहा उल्लू अरु और कितनी भांति के पंछी और बृक्ष और नदियां और मछलियां और पुस्तकें लेखनी और मसी शिल और चक्की इत्यादि पूजते है। निदान जब इन सब को पूजा कर चुके और अपनी मति बुद्धि और बय उन के पीछे खो चुके तो वेद शास्त्र उन्हें मूर्ख बनाके कहते हैं कि तू इन सब के पीछे किस के खोज में है क्या तू इन से मुक्ति की आशा रखता है† इन मे जिसे तू ढूंढ़ता है तू आप ही है यदि आप को पहिचाने तो ब्रह्म तू ही है।

---

* फिर यह श्लोक है

हरौ रुष्टे गुरुस्त्राता गुरौ रुष्टे न कश्चन।

अर्थात् जब हरि रूठता है तो गुरु रक्षा करता है और जब गुरु रूठे तो कौन बचा सके सो गुरु ईश्वर ठहरा।

† प्रगट है कि हिन्दुओ के मत मे मूर्त्तिपूजा से मुक्ति नहीं होती क्योंकि लोग मूर्त्तों से केवल सांसारिक बस्तुओ को अभिलाषा रखते है जैसे जो इन्द्री का स्वाद चाहता है सो इन्द्री की पूजा करता है और जो धन संपत्ति चाहता है सो लक्ष्मी की पूजा करता है और जो बल पराक्रम चाहता है सो रुद्र की और जो बहुत खाने की इच्छा रखता है वह अदिती की और जो राजा हुआ चाहता है सो बिश्वेदेव की और आयुर्दा बढ़ने के लिये अश्वनीकुमार की और शरीर पुष्ट होने के लिये पृथिवी की और सुन्दरता के लिये गन्धर्ब की और शत्रु के नाश होने के लिये निर्ऋति की पूजा करते है इत्यादि और देवते मुक्ति के लिये ईश्वर और मनुष्य के बीच मध्यस्थ भी नहीं क्योंकि हिन्दुओ के मत से मुक्ति पदार्थ ईश्वर मे लीन होना है और यह ज्ञान विवेक और योग्य तपस्या से होता है इस मे देवतो की कुछ नहीं चलती क्योंकि वे आप इस पद को नहीं पहुंचे औरो को कब दे सकते अथवा दिला सकते है।

एकं ब्रह्म द्वितीयं नास्ति ।

अर्थात् एक ब्रह्म ही है द्वितीय कुछ नहीं। वह बात जो दूसरी ठौर लिखी है कैसी सत्य ठहरती है कि जो मूर्त्ति को बनाते हैं सो उसी के तुल्य बन जाते हैं और वैसा ही वह जो उन को पूजता है।

फिर जब मनुष्य वेदांत के जाल मे फंसा और परमहंस होकर आप ईश्वर बन बैठा तो उस की यह दशा है कि वह अपने ही स्वार्थ के रत होके किसी से कुछ प्रयोजन नहीं रखता वह मुरझाये हुए पत्ते और मिट्टी के टीले समान है जिस में न कुछ नवीनता है न कुछ गुण हां उस मनुष्य के समान है जिस की हड्डी टूट गई हो और सर्वथा असमर्थ और निकम्मा है। परमेश्वर नित्यानन्द और आनन्ददाता और हर एक का कल्याणकर्त्ता है उस ने मनुष्यों को इस लिये उत्पन्न किया कि आपस मे प्रेम रक्खें और एक दूसरे की भलाई करके हर्षित होवें ये बातें हर एक के मन में पत्थर की लीक हो गई हैं परन्तु परमहंस अपनी मति बुद्धि खोके ईश्वर के गुण पराक्रम और उस के कामकाज से आंख मूंदके और अपने भाई बन्धुओं और सारे मनुष्यों से न्यारे होके बन मे व्यर्थ कुन्दे की नाईं पड़े रहते हैं सृष्टि और सृष्टिकर्त्ता दोनों को मिटाके नेत्र मूंदे बौड़हे की नाईं समझते हैं कि जो कुछ हम देखते हैं सो सब ईश्वर ही है बरन चाहते हैं कि कुछ भी न समझें और अपनी अस्ति को भी भुला देवें भला न होने और अपने होने के न जान्ने में क्या बिभेद है जो कोई टुक सोचेगा सो जान जायगा कि यह नास्तिक की मता है।

पांचवां अध्याय ।

बार बार जन्म लेने के वर्णन में ।

वेद की एक ऋचा यह है जिस्से जाना जाता है कि बार बार जन्म लेना पड़ता है

कर्मणा ब्रह्मलोकगतस्यानावृत्तिः ।

अर्थात् कर्म करके जो ब्रह्मलोक को गया उस का आगमन फिर नहीं होता है । और इस का वर्णन शास्त्र पुराण में बहुत है । मनु भी कहता है कि जो कोई ब्राह्मण का सोना चुरावे तो दूसरे जन्म उस के हाथ में घिनही हो और जो मद्पान करे उस का दांत काला हो और जो किसी पर कलंक लगावे उस का मुंह बसावे और जिस को वेद पढ़ने की आज्ञा नहीं यदि वह पढ़े तो गूंगा हो और जो वस्त्र चुरावे कोढ़ी हो जो घोड़ा चुरावे लंगड़ा हो जो दीपक चुरावे अन्धा हो जो दुष्टता से दीपक को बुझा देय काना हो इत्यादि । इसी रीति से वे पूर्व जन्म को करनी के समान मूर्ख अज्ञान लुंजे लंगड़े अन्धे बहिरे उत्पन्न होते हैं और उत्तम जन्मवाले के समीप तुच्छ गिने जाते हैं । इस कारण से ऐसे लोगों के लिये धर्मशाला नहीं बनाते सब उन्हें कुकर्म्मी और कुमार्गी समझते हैं उन की बंधुआ की सी दशा समझते हैं कि जब अपने पापों का दण्ड भोग चुकेंगे तो इस से छूट जायेंगे । यह विचारके हिन्दू लोग अपने अरोसी परोसी के दुःख संकट रोग शोक को देखके निठुर और निर्दय बने रहते हैं बरन वे आप भी जानते हैं कि हमारी ऐसी दशा केवल पूर्वजन्म के पाप से हुई है । इस लिये निराश होके अपने प्रारब्ध और देवताओं पर धिक् २ करते हैं पर यह बात उन के मन मे नहीं समाती कि पश्चात्ताप करे और परमेश्वर से

अपने पापों की क्षमा चाहें कि वह उन की सुने और उन पर कृपा करके उन की भलाई करे * । इस को तो वे वृथा समझते हैं क्योंकि प्रारब्ध और वारंवार जन्म लेने को निश्चय करके समझते हैं कि जो कुछ हम ने आगे किया उस का फल अब भुगतना अवश्य है और जो कुछ अब करते हैं इस का फल प्रारब्ध के समान दूसरे जन्म मे भुगतना होगा † ।

निदान प्रारब्ध और वारंवार जन्म लेने में ये लोग ऐसे फंसे कि उस से छूटने की आशा छोड़के शैतान के हाथ बिक गये और जो कुछ मन में आता सोई झटपट कर डालते हैं और कहते हैं कि इस में हमारा क्या वश है जो कुछ प्रारब्ध में लिखा है वही अवश्य करके होता है । भला जिस की यह समझ है वह पाप से कैसे बच सकता है और कैसे पवित्र होके परमेश्वर के पास जा सकता है ।

फिर हिन्दू के शास्त्र मे लिखा है कि मनुष्य पूर्वजन्म के पाप करने से केवल लुंजे लंगड़े अन्धे बहिरे ही नहीं होते परन्तु पशु पक्षी वृक्ष तृण भी होते हैं मनु के शास्त्र में लिखा है कि जो प्राणी बिना दांवा अनाज चुरावे तो उस का जन्म चूहे का हो और जो जल चुरावे तो डुबिये का और जो तेल चुरावे पतिंगे का और हिरण चुरावे तो भेड़िये का और जो फल चुरावे तो बन्दर का और जो पण्डित का धन चुरावे

* हाय हाय ये यह बात जानते ही नहीं कि परमेश्वर पतितपावन करुणानिधान दयासागर धैर्यवान् और किसी के दुःख का कारण नहीं और अपराधियों की नष्टता नहीं चाहता वरन वह चाहता है कि अपने पापों से हाथ उठाके त्राण पावें ।

† गौतम कहता है कि मनुष्य समय और ठौर और पाप पुण्य के अधीन होके जन्म पाता है । और भृगु कहता है कि ईश्वर ने अटल कर्म से उन की करणी के समान सब को उत्पन्न किया । और दुर्वासा का पुत्र अंगिरा कहता है कि ईश्वर आप करणी के अधीन है । और न्यायशास्त्र मे लिखा है कि देह और इन्द्री करणी के फल है । इस बात के विषय और भी देखो ९१ और ९२ पृष्ठ मे ।

तो घड़ियाल का अथवा उस के समान दूसरे जन्तु का और जो रत्न चुरावे तो वह सैकड़ों सहस्रों बार घासपात बेल बूटी इत्यादि का जन्म लेगा। बरन जिस जिस भांति के पाप करेंगे वैसे २ जन्म भी पावेंगे। क्रोधी और बैर लेनेहारा बाघ सिंह का जन्म पावेगा और जो कामी और कुचाली हैं उन के जन्म अशुद्ध और अपावन बस्तु खानेहारे पक्षी और कीड़े मकोड़े के होंगे। और अग्निपुराण में लिखा है कि जिस ने मनुष्य की योनि से बाहर होके और किसी योनि मे जन्म लिया तो वह आठ लक्ष योनि भ्रमणे के पीछे मनुष्य का जन्म फिर पा सकता है। हाय हाय ऐसी बातों से मनुष्य कब पवित्र हो सकता है परन्तु और भी अशुद्ध और अपवित्र हो जाता है जैसे पानी अच्छे सोते से निकलके मैली नारियों में बहे तो जहां लों वह नारी मैली होगी वहां लों पानी भी मैला हो जायगा। इसी भांति जो कोई मनुष्य का जन्म पाके बड़ा खाऊ होवे और फिर वह शूकर का जन्म पावे तो क्या उस के खाने की हौंस जाती रहेगी अथवा क्रोधी और हत्यारा बाघ का जन्म पावे तो क्या वह कोमल और दयालु होगा। क्या यह हो सकता है कि कोई अध्यक्ष चोर को चोरी करने से रोकने के लिये चोरों में भेजे अथवा कोई व्यभिचारी व्यभिचारियों मे रहने से पवित्र होवे। कभी नहीं। इसी रीति से असंभव है कि मनुष्य बारंबार जन्म पाके सुधरे और संभर जाय अथवा परमेश्वर जो धर्म्माध्यक्ष और सर्वज्ञ है उस से ऐसा व्यवहार करे और उसे उन पापों का दण्ड देय जिन्हें वह नहीं जानता। फिर जब लों मनुष्य का मन उसे पाप के कारण दोषी न ठहरावे तो वह पाप से क्योंकर पश्चात्ताप कर सकता है और जब लों पश्चात्ताप न करे तो सुधर क्योंकर सकता है और जब लों न सुधरे

तो क्योंकर परमेश्वर के समीप परमानन्द को पहुंच सकता है ।

छठवां अध्याय ।

हिन्दुओं के धर्म की दूसरी हानि का वर्णन ।

बुद्धि यह चाहती है कि जो मत परमेश्वर की ओर से हो वह द्रोह द्वेष बैर दूर करने और माता पिता और लड़केबाले के प्रेम उपजाने और सब को अपने समान प्रिय जान्ने वरन सारो बातों के विषय मनुष्यों के चाल चलन और मन के सुधारने मे कुछ गुण रक्खे । अब हम पूछते हैं कि हिन्दुओं के मत में यह गुण है कि नहीं । हाय है कि वह जैसे और भलाइयों से रहित वैसा ही उस मे यह पदार्थ भी नहीं क्योंकि जाति पांति मूर्त्तिपूजा इत्यादि को छोड़ वह द्रोह लोभ व्यभिचार करने और बैर लेने को भी उभाडता है ।

अथर्व्वण वेद जो श्रापित कहलाता है उस मे बैरियों के मारने के लिये अनेक प्रकार के मंत्र हैं और उन बलिदानों का वर्णन है जो भगवती को चढ़ाना चाहिये जिसतें मनुष्य अपने बैरियों को मार डाले । एक ठौर लिखा है कि जिसे मार डालना हो उस का पुतला कागज़ पर बना और उस का शिर काटके देवी को चढ़ा । और उसी वेद में दूसरे ठौर यह लिखा है कि हे पवित्र कुश तू मेरे सब बैरियों को मार डाल और हे बहुमूल्य मोती तू उन सब को जो मुझ से बैर रखते हैं मिटा डाल । फिर यों लिखा है कि हे अग्नि तू जो घृत को भक्षण करता है और सदा तेजवंत रहता है

हमारे शत्रुओं को जो हमारा बुरा चाहते हैं और हम से बैर रखते हैं मिट्टी में मिला दे और हे इन्द्र तू हमारे शत्रुओं का नाश कर और हमारे दाता मित्रों को पाल और हमें सहस्रों अच्छी २ गायें और घोडे दे और महान् बना। उस मे यह भी निवेदन है जिस्से वेद का मनुष्य को लालची बनाना ठीक जाना जाता है जैसे हे इन्द्र हम तुझ से बहुत धन चाहते हैं तू मनुष्यों अथवा स्वर्गबासियों अथवा नभ-निवासियों अथवा और किसी ठौर जहां से हो तहां से हमें धनमान कर दे हे इन्द्र हम तेरी बिन्ती करते हैं कि तू हमें अनमोल रत्न हीरा मणि और बहुत सा द्रव्य दे हम उन धनों को जो भोगने के योग्य हैं बिभव कहते है और बहुत धनों को प्रभु कहते हैं हे इन्द्र और हे बरुण तू हमारी बांच्छा के समान हमे दे और सर्वथा हम को भरपूर कर हम तेरी बिन्ती करते हैं कि तू नित्य हमारे संग रह हे इन्द्र और हे बरुण हम यह सब कुछ पूजा और बलिदान तेरे संतुष्ट होने के निमित्त करते हैं और उस करके तुझ से धन पाते हैं और धन पाके भोग करते हैं और भोग करने से जो बचता है उसे बटोरते हैं सो अब भोग करने और बटोरने से भी तू अधिक धन हमें दे हे इन्द्र हम मे से हर एक अपनी अपनी स्त्री के संग चैन से दिन काटे और यम के प्यादे सो जावे कि हमें न देखें तू हमे सहस्रों अच्छी २ गायें और घोड़े दे और हमें बड़े लोगों में गिन। फिर ऋग्वेद में यह ऋचा है

सद्यानोयोगआभवत् सरायेसपुरंध्यामा
गमद्वाजेभिरासनः।

अर्थात् हे इन्द्र तू हमे बड़े लोगों मे मिला और धन द्वारा

और ज्ञान और भोजन देने को लैस हो*। भगवद्गीता में कृष्ण कहता है कि सम्पत्ति चाहनेहारे भले हैं दोष के योग्य नहीं। भला जो पुस्तक लालच बढ़ानेहारी है वह परमेश्वर की ओर से हो सकती है।

मनु के शास्त्र में व्यभिचार करने की आज्ञा है पर इस रीति से कि जो स्त्री चाहे। फिर एक ठौर में लिखा है कि यदि स्त्री पुरुष से रति करने को कहे और पुरुष उस का कहना न माने तो वह कोढ़ी हो जावे जैसे महाभारत में भी लिखा है कि एक बार ऐसा हुआ। फिर इस की सैन मनु के शास्त्र के नवें अध्याय के एक सौ सत्तर श्लोक में है। बाम मत में वेश्या बिना कोई पूजा पूरी नहीं हो सकती।

मनु के शास्त्र में लिखा है कि पूजा पाठ की सामग्री के लिये चोरी करना पाप नहीं और किसी पुण्यार्थ कर्म के लिये झूठी किरिया खाना अयुक्त नहीं वरन वह देववाणी है और ब्राह्मण के प्राण बचाने और स्त्री का क्रोध मिटाने और उढरी के प्रसन्न करने के लिये झूठ बोलना उचित है जैसा ऊपर वर्णन हुआ।

अपने लाभ के लिये हत्या करना बर्जित नहीं है जैसे शुक्र ने अदिति के वंश को और कंस ने बसुदेव के लड़कों को मार डाला रामायण के बालकाण्ड के ३७ सर्ग में देखो। और जब कंस ने बसुदेव के लड़कों को मार डाला तो पीछे से कहा कि मेरा कुछ दोष नहीं कर्म में जो लिखा था सो

---

* ऐसी बातों के साम्हने उस प्रार्थना को जो प्रभु यीशु ने अपने लोगों को सिखाई सोचो अर्थात् हे हमारे पिता जो स्वर्ग पर है तेरा नाम पवित्र होवे तेरा राज्य आवे तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग पर है पृथिवी पर भी होवे हमारे प्रतिदिन की रोटी आज हमें दे और हमारे अपराधों को क्षमा कर जैसे हम अपने अपराधियों को क्षमा करते हैं इत्यादि।

हुआ और बसुदेव ने भी मान लिया कि हां ठीक है बिधना ने तो ऐसा ही लिखा था महाभारत के दसवें पर्व्व में देखो।

शास्त्र में यह भी आज्ञा है कि अन्धे बहिरे लुंजे लंगड़े गूंगे कोढ़ी मेहरे सिड़ी बौड़हे को स्त्री हो अथवा पुरुष संपदा का अधिकार नहीं और इस मत की रीति से ऐसे लोगों के लिये सब से अच्छी बात अपने तईं मार डालना है।

मनुष्य बुराई करते समय यदि ईश्वर का नाम ले तो उस के लिये बुरा नहीं परन्तु भला और फलोदय है। ठग और डाकुओं के भी देवते हैं जिन की वे पूजा करके अपनी ठगई और डकैती को जाते हैं। और हर प्रकार की हत्या हां ब्रह्महत्या का भी प्रायश्चित्त रुपये पैसे से हो सकता है। और यह भी कहते हैं कि मनसा का कुछ पाप नहीं पर नहीं सोचते कि लालच सब पापों का मूल है।

माता पिता लड़केबाले स्त्री पुरुष के परस्पर प्रेम रखने की आज्ञा शास्त्र में कहीं नहीं पाई जाती और इस मत के समान असंभव भी है क्योंकि जहां मया तहां माया। फिर पिता पुत्र को कैसी ही बुरी आज्ञा दे उसे मान्ना अवश्य है यदि वह न माने तो अपराधी ठहरे और भलाई से हाथ धोवे इसी लिये वे कहते हैं कि परशुराम ने जो अपने पिता की आज्ञा से अपनी माता को मार डाला तो उसे कुछ पाप न हुआ बरन उस ने अच्छा किया। पर बड़ा अन्धेर यह है कि प्रह्लाद ने जो अपने पिता हिरण्यकशिपु की बात न मानी और उसे मरवा डाला सो बड़ा पुण्यात्मा ठहरा और उस की कीर्त्ति जग में फैली। निदान इस मत की रीति तो यही है कि सर्वथा बिरुद्धता चली आती है कहीं मेल नहीं देख पड़ता। फिर इस मत में स्त्रियों का पद अत्यन्त निकृष्ट है उन्हें वेद और व्याकरण पढ़ने की आज्ञा नहीं और

लिखना पढ़ना भी वे बहुधा नहीं जानतीं । फिर जब स्त्रियों को यह गति है तो वे अपने लड़केबालों को शिक्षा क्योंकर दे सकें । मनु के शास्त्र मे लिखा है कि स्त्री के लिये सब से बड़ी बात यह है कि अपने पति की आज्ञा माने यद्यपि पति स्त्री को व्यभिचार करने कहे तौभी स्त्री को अपने पति का बचन मान्ना अवश्य है जैसे शास्त्रों मे कितने ठौर स्त्रियों का ऐसा बर्णन हुआ और उन पर पाप नहीं ठहरा । स्कंद-पुराण में यह श्लोक है

तीर्थस्नानार्थिनी नारी पतिपादोदकं पिवेत् ।
शंकरादपि विष्णोर्वा पतिरेकोऽधिकः स्त्रियाः ॥
भर्त्ता देवो गुरुर्भर्त्ता धर्मतीर्थव्रतानि च ।
तस्मात्सर्वं परित्यज्य पतिमेकं समर्चयेत् ॥
विष्णोस्तु पूजनं कार्यं पतिबुध्या न चान्यथा ।
पतिमेव सदा ध्यायेद्विष्णुरूपधरं हरिम् ॥

अर्थात जो स्त्री तीर्थस्नान करने को इच्छा रक्खे सो अपने पति का चरणोदक पीवे क्योंकि पति स्त्री के लिये शंकर और विष्णु से भी अधिक है पति तो स्त्री का ईश्वर और गुरु और उस का धर्म और तीर्थ व्रत है इस कारण वह सब को छोड़के केवल अपने पति ही की पूजा में लव लगावे और विष्णु की पूजा पति समझकर करे और पति को विष्णुरूप समझकर सदा ध्यान करे ।

वेद शास्त्र बार बार कहता है कि कोई स्त्री व्याकरण को न पढ़े और मनु यह कहता है कि उस को वेद से भी कुछ काम नहीं * । और उस का सब से बड़ा पुण्य यह है

---

* ९ अध्याय का १८ श्लोक

नास्ति स्त्रीणां क्रिया मंत्रैः ।

अर्थात् स्त्रियों को मंत्र सयुक्त कर्म नहीं है । और भागवत में यह श्लोक है

स्त्रीशूद्रद्विजबंधूनां त्रयी न श्रुतिगोचरा ।

अर्थात् स्त्री और शूद्र और भ्रष्ट ब्राह्मण इन तीनों को वेद के सुन्ने का अधिकार नहीं ।

कि अपने पति के संग जल मरे । यद्यपि मनु के कहने के समान स्त्री सर्वथा पापरूप है पर अपने पति के संग जल मरने से केवल अपने ही को नहीं परन्तु अपने पति और अपनी कितनी पीढ़ियों को नरक से बचाके बैकुण्ठ में पहुंचाती है जैसे ऊपर वर्णन हुआ । शास्त्र में कहीं नहीं लिखा है कि पुरुष केवल एक ही स्त्री रक्खे परन्तु जितनी उस की इच्छा हो । मनु के शास्त्र के ९ अध्याय १४९ के श्लोक से जाना जाता है कि ब्राह्मण चाहे तो चार स्त्रियां ब्याहे ।

ब्राह्मणस्यानुपूर्व्येण चतस्रस्तु यदि स्त्रियः ।
तासां पुत्रेषु जातेषु बिभागेऽयं बिधिः स्मृतः ॥

अर्थात् जिस ब्राह्मण को चार वर्ण की स्त्रियों से पुत्र उत्पन्न हुए हों उन के बिभाग की यह आज्ञा है । इस के विषय मे मनु के ११ अध्याय के ५ श्लोक और ८ अध्याय के २०४ श्लोक और ९ अध्याय के ८५ श्लोक को देखो । और प्रसिद्ध है कि कुलीन ब्राह्मण जो सब ब्राह्मणों से उत्तम कहलाते हैं सो सौ सौ स्त्रियों से ब्याह करते हैं । इस मत में स्त्री को त्यागना बहुत ही सहज है मनु के शास्त्र में लिखा है कि यदि पत्नी अपने पति से कोई कठोर बचन कहे तो वह उसे त्यक्त कर देवे और पति यदि उसे माता कह देवे तो वह अपने पति से न्यारी हो गई ।

इस मत की रीति से पुरुषमेध करना योग्य है जैसे ऋग्वेद में यह ऋचा है जो शुनःशेफ ने कही जब वह बलिदान होने के लिये बांधा गया था ।

कस्यनूनंकतमस्यामृतानांमनामहेचारुदेवस्यनाम ।
को न मह्या अदितये पुनर्दात्पितरं च दृशेयं मातरं च ॥

इस का भावार्थ यह है कि मैं किस देवता को मनाऊं अथवा किस प्रजापति की स्तुति करूं कि वह मुझ को छुड़ावे जिस्तें

मैं अपने माता पिता को फिर देखूं* । कालिकापुराण के रुधिर अध्याय में पुरुषमेघ का वर्णन है और उस में यह भी लिखा है कि एक मनुष्य के बलि करने से काली सहस्र वर्ष के लिये प्रसन्न हो जाती है और तीन मनुष्य के बलि करने से लक्ष वर्ष के लिये आनन्दित होती है । फिर एक ठौर लिखा है कि आगे लोग महानौमी मे मनुष्य का बलिदान करते थे । और भविष्यपुराण में यह लिखा है कि भैंसा के बलिदान करने से जितना दुर्गा प्रसन्न होती है उस से सहस्र गुणा मनुष्य के शिर चढ़ाने से सन्तुष्ट होती है ।

यह रीति भी हिन्दुओं में बिदित है कि उन को कोई जाति बेटियों को जन्मते ही मार डालते हैं और उन के बध करनेहारे उस कर्म के कारण से अपने लोगों में कुछ अपराधा पापी और निन्दित नहीं ठहरते और कभी अपयशी नहीं कहलाते । फिर त्रिवेणी में करवट लेना भी धर्म समझते हैं । वेद से जाना जाता है कि जिस किसी का मन जीवन से भर गया अथवा उदास हुआ तो वह जो अपने को घात करे तो कुछ दोष नहीं जैसे कलन नामे एक ब्राह्मण ने जो सिकंदर के संग गया अपने को बाबुल में जलाया ।

सो हे प्रिय हिन्दुओ तुम आप ही बिचार करो कि जब तुम्हारे मत में ऐसी २ बातें हैं तो उन के गुण कैसे होंगे क्योंकि जैसा पेड़ वैसा फल होता है जो बात आप ही बुरी है वह मान्ने से कब भली हो सकती है इस लिये कि संसार में कोई लोग अपने मत से बढ़के अच्छे नहीं हो सकते परन्तु उस से बुरे हों तो हों । हिन्दुओं के यहां योंही हुआ जैसे त्रिदेव और राम कृष्ण के चाल चलन से प्रगट हुआ है

---

* इस नरमेध का स्पष्ट वर्णन जो अयोध्या के राजा अंबरीष से हुआ रामायण के बालकाण्ड के ४८ और ४९ सर्ग में देखो ।

और उन से किसी दूसरे देवताओं और ऋषियों मुनियों की चाल अच्छी नहीं ठहरती जैसे इन्द्र की बात सब जानते हैं कि उस ने राजा सगर का घोड़ा चुराया अरु अपने गुरु गौतम की स्त्री को भ्रष्ट किया इस लिये गौतम ने उसे स्राप दिया और वह नपुंसक हो गया दूसरे पुराण में लिखा है कि उस के सारे शरीर में भगही भग हो गये *। महाभारत में लिखा है कि सूर्य ने एक कुंआरी कन्या से बरबस्ती कुकर्म किया जिस का नाम कुंती था जिस से राजा कर्ण उत्पन्न हुआ। चन्द्रमा ने अपने गुरु वृहस्पति की स्त्री को भ्रष्ट किया इस लिये बृहस्पति ने क्रोधित होके उसे समुद्र में डाल दिया जहां वह आठ सौ चौंसठ कोटि वर्ष लग अङ्गारे की नाईं पानी में सनसनाता रहा और सारे जगत को अन्धकार में छोड़ गया। कृष्णनाथ की सौ बेटियों पर पवनदेव मोहित हुआ और उस ने केशरी बानर की स्त्री से कुकर्म किया जिस से हनुमान उत्पन्न हुआ। वरुण ने उर्वशी से कुकर्म किया और उस से अगस्ति मुनि की उत्पत्ति हुई। महाभारत में लिखा है कि यम ने क्रोधित होके अपनी माता को एक लात मारी इस लिये उस की माता ने उसे स्राप दिया और उस का पांव सूज आया और उस में कीड़े पड़ गये और कहते हैं कि उस के पांव को कीड़े आज लों खाते हैं। फिर उसी ने अपनी बहिन यमुना से कुकर्म करने को चाहा। अग्नि देवता छः ऋषियों की छः बेटियों पर मोहित हुआ पर अपनी स्त्री के डर से उन के संग कुछ न कर सका।

बलराम बड़ा मद्यप था। विष्णुपुराण के चौथे अंश के ११

---

*यह सब कथा रामायण के बालकाण्ड के ३८ और ३९ सर्ग में लिखी है और उस में यह भी है कि जब उस का लिंग गिर पड़ा तो ऋषियों ने बकरे का लिंग उस ठौर लगा दिया॥

अध्याय से १५ अध्याय लों लिखा है कि जब लोगों ने कृष्ण को मणि की चोरी लगाई तो आपस में बड़ा झगड़ा हुआ और कृष्ण ने कहा कि बलराम इस के यत्न करने के योग्य नहीं क्योंकि वह बड़ा कामी और मद्यप है।

फिर महाभारत में लिखा है कि बृहस्पति ने जो देवताओं का गुरु है अपने बड़े भाई उतथ्य की पत्नी का पातिव्रत्य भंग किया। वेदव्यास जो चार वेद का संग्रहकर्त्ता और वेदान्त और शास्त्र और अठारह पुराण का कारक कहलाता है व्यभिचार से उत्पन्न हुआ और अपने भाई की तीन स्त्रियों से उस ने तीन बेटे उत्पन्न किये उन मे से एक का नाम पांडु दूसरे का नाम धृतराष्ट्र तीसरे का नाम बिदुर था। पांडु के पांच पुत्र थे अर्थात् युधिष्ठिर भीम अर्जुन नकुल सहदेव और उन पांचों की एक ही पत्नी द्रौपदी थी। बिश्वामित्र ने बशिष्ठ के सौ पुत्रों को स्राप दिया और उन्हें चाण्डाल बना डाला इस के उपरान्त अपने पुत्रों को भी स्राप दिया और उन्हें भी चाण्डाल बना डाला और आप अप्सरा के वश में हो गया और अपना सहस्रों वर्ष का तप खोया और अन्त को जब उर्वशी का जाना इन्द्रलोक मे अवश्य हुआ तो कुत्ता बनकर उस के संग २ चला गया। ऋग्वेद में एक मंत्र है जिसे एक ऋषि ने अन्न चुराते समय पढ़ा कि कुत्ते का भूंकना बन्द हो जाय और भृगु ने जो उसी वेद के एक शाखा का बनानेहारा है अपनी माता का शिर काट डाला।

भाइयो उत्तम वर्ण को चाहिये कि हमारे लिये भला अग्रसर हो कि बुरा। रघुबंश के तीसरे सर्ग में यह श्लोक है

पथःशुचेर्दर्शयितार ईश्वरा मलीमसामाददते न पद्धतिम्।

अर्थात् हे महाशय जो सुमार्ग बताते हो आप कुमार्ग पर मत चलिये परन्तु जिन का ऊपर बर्णन हुआ वे इस बात

को भूल गये थे। फिर एक और बुरी बात यह है कि दुर्गा काली इत्यादि की पूजा में ऐसी २ बुरी गीतें गाई जाती हैं और होली में पुरुष और कजली में स्त्रियां ऐसी फूहड़ पातर बकतीं और स्वांग बनतीं बनाती हैं कि कभी कोई भला मनुष्य उन की चर्चा अपने मुख से न करेगा। दिवाली में उन के यहां जुआ भी खेलना उचित है यदि कोई न खेले तो उन की समझ में उस का छछूंदर का जन्म होय। हाय हाय कि ऐसी बातों का करना मताचार समझते हैं जो साक्षात् अपकर्म हैं।

सातवां अध्याय।

इस बात के उत्तर में कि सामर्थी को कुछ दोष नहीं इत्यादि।

जब देवताओं के पाप का बर्णन होता है तो बहुतेरे हिन्दू यह कहते हैं कि सामर्थी को कुछ दोष नहीं। ऊपर परमेश्वर के सर्बसामर्थी होने के बर्णन में वेद और शास्त्र से निश्चित हुआ कि ब्रह्मा विष्णु महेश और राम कृष्ण सर्बसामर्थी नहीं सो जब इन्हीं में यह बात नहीं ठहर सकती फिर दूसरे किसी में कब ठहर सकेगी। फिर अब उन की यह बात कहां रही कि सामर्थी को कुछ दोष नहीं क्योंकि उन की पुस्तकों से तो कोई सामर्थी ठहरता ही नहीं सब के सब काम क्रोध लोभ मोह में पड़के माया के बश और कर्म के अधीन हो रहे जैसे रामायण में लिखा है

चौपाई।

को जग जाहि न ब्यापी माया . को जग जाहि न काम नचाया।

दोहा।

तुलसी या जग आयके . कोउ न भयो समरत्थ।
एक कंचन दोय कुचन पर . को न पसारो हत्थ॥

भला यह बात तो खण्डन हो चुकी पर अब हम इसे छोड़ दूसरे चार प्रमाणों से और भी प्रामाणिक करते हैं कि कदाचित् हिन्दू इन्हों करके उस भूल से बचें कि सामर्थी को कुछ दोष नहीं ।

पहिले परमेश्वर निस्सन्देह सर्वसामर्थी है और जो चाहता सो करता है पर वह अपनी पवित्रता के विरुद्ध कभी कुछ नहीं करता जैसा नाम वैसा काम झूठ कपट व्यभिचार इत्यादि उस के स्वभाव के विरुद्ध हैं वह न अपने पर न किसी दूसरे पर उन का करना योग्य समझता है परन्तु जो कोई ऐसा करे वह उसे अवश्य करके दण्ड देगा ।

दूसरे ऐसा कौन कारण है कि परमेश्वर आप बुराई करे अथवा दूसरे से करावे वह तो नित्यानन्द है और उस की आनन्दता में कुछ हानि नहीं फिर क्या कारण है कि वह बुराई करे अथवा दूसरे में उस का होना उचित समझे । यदि कोई कहे कि औरों के सिखाने के लिये करता है तो ऐसी बात मूर्खता और अज्ञानता और महा पाखण्डता की है उत्तर के योग्य नहीं ।

तीसरे देवताओं ने अपने सरीखे देवताओं के बहुत से अपराध किये सो क्या सामर्थी परस्पर लड़े झगड़े और शिर फुटौवल करें और फिर निष्पापी ठहरे फिर जब निष्पापी नहीं तो सर्वसामर्थी परमेश्वर कैसे ठहरे ।

चौथे परमेश्वर ने जो जो बुराइयां औरों के लिये बर्जी वह उन्हें आप क्योंकर करेगा । हाय २ क्या वह अपने को उदाहरण बनावेगा अथवा और के लिये उपदेशक अपने लिये निन्दक होगा कभी नहीं वह तो निस्सन्देह सब से उत्तम और सब से भला है इस करके वह सारी पवित्रता और सत्यता में सब के लिये एक निदर्शन है । यदि वह

झूठा और छली होवे तो उस की प्रतीति कौन करे और जो वह आप अन्धेर करे तो उस की दोहाई कौन दे यदि उस के गुण प्रभाव सर्व प्रकार से सर्वथा पवित्र और पावन न ठहरें तो साधु सन्त कोई उस से प्रेम प्रीति काहे को करे। निदान जो वह बिगड़े तो सभी बिगड़ जावें जैसे इस की साक्षी भगवद्गीता के ३ अध्याय में २० श्लोक से २४ लों है

कर्म्मणैवहिसंसिद्धिमास्थिता जनकादयः।
लोकसंग्रहमेवापिसम्पश्यन्कर्त्तुमर्हसि १॥
यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत् प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्त्तते २॥
न मे पार्थास्ति कर्त्तव्यं त्रिषु लोकेषु किञ्चन।
नानवाप्तमवाप्तव्यं वर्त्त एव च कर्म्मणि ३॥
यदि ह्यहं न वर्त्तेयं जातु कर्म्मण्यतन्द्रितः।
मम बर्त्मानुवर्त्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्व्वशः ४॥
उत्सीदेयुरिमे लोका न कुर्य्यां कर्म्म चेदहम्।
संकरस्य च कर्त्ता स्यामुपहन्यामिमाः प्रजाः ५॥

अर्थात् जनकादि कर्म ही करके सिद्ध हुए इस लिये हे अर्जुन तू भी लोगों का हित समझके कर्म कर क्योंकि श्रेष्ठ जन जो जो कर्म करते हैं सोई सब लोग भी करते हैं और जिस प्रमाण को वे मानते हैं उसी को और लोग भी मानते हैं हे पार्थ तीनों लोक में मुझे कोई कर्म कर्त्तव्य नहीं और ऐसी कोई वस्तु नहीं जो मुझे प्राप्त नहीं तथापि मैं कर्म करता हूं यदि कर्म मैं न करूं तो मेरे समान लोग भी न करेंगे और सब भ्रष्ट हो जायेंगे क्योंकि मैं वर्णसकर का करनेहारा होऊंगा और लोगों का नाशक बनूंगा।

फिर हिन्दू कहते हैं कि देवताओं के पाप का फल अच्छा था क्योंकि जिन के संग उन्हों ने बुराई किई उन को भलाई हुई जैसे कृष्ण ने गोपियों के संग कुकर्म किया पर उन्हें

मुक्ति तो दिई और पराशर ने जो मछुए की कन्या के संग कुकर्म किया तो वह ऐसा पुत्र जनी कि ऐसा पुत्र व्याही से कभी नहीं उत्पन्न हो सकता है जिस का यश तीनों लोक में विदित है। हाय हाय भला ऐसी बातों को कौन मानेगा क्या व्यभिचारी व्यभिचारिणी स्त्री से प्रसन्न होके उसे मुक्तिदान दे सकता है अथवा कोई बड़े सपूत का अभिलाषी अपनी स्त्री छोड़कर और की बेटी बहू पर जा गिरता है बिचार किया चाहिये कि जो आप को न बचा सका वह और को किस भांति बचावेगा और जो आप माया में लिप्त है वह दूसरे को मुक्ति क्योंकर दे सकेगा।

फिर हम कहते हैं कि उन के पाप का फल अच्छा न था जैसे कि ब्रह्मा ने अपना सारा धर्म्म और अपनी सारी मर्यादा हां अपना शिर भी पाप के कारण खोया और शिव ने पाप के कारण अपना लिंग गंवाया और विष्णु शापित हुआ राम अपने भाई स्त्री लड़केवालों को खो खाके सरयू नदी में डूब मरा * और कृष्ण भी पशुन के समान बन में व्याधा के हाथ मारा गया और उस का क्रिया कर्म कुछ भी न हुआ उस की लोथ को चील्ह कौवे और गीदड़ सब खा गये।

फिर यदि कोई हम से कहे कि भला तुम तो शास्त्र की इस बात को मान लेते हो कि देवताओं ने ऐसे २ काम किये पर शास्त्र की इस बात को क्यों नहीं मानते हो कि उन से पाप नहीं हुए तो हम इस के उत्तर में यह दृष्टान्त कहते हैं कि जैसे एक मनुष्य हम से आके कहे कि हम ने चोरी किई है और हम उस की बात को मान लेवें और फिर वह हम से कहे कि चोरी करना पाप नहीं तो क्या हम ने जो

* यह जो कहते हैं कि राम के हाथ मारे जाने से रावण की मुक्ति हुई सो विष्णुपुराण इस बात को झुठलाता है और कहता है कि रावण दूसरा जन्म लेकर शिशुपाल हुआ और कृष्ण के हाथ से मारा गया।

उस की पहिली बात मानो दूसरी भी मान लेंगे। यदि कोई स्त्री व्यभिचार करे और फिर कहे कि मुझे कुछ पाप नहीं तो क्या कोई उस की बात पर प्रतीति करेगा सो जब देवताओं और ऋषियों मुनियों ने ऐसे २ कर्म किये और फिर कहा कि यह पाप नहीं तो भला उन का यह कहना कब प्रामाणिक हो सकता है। निदान जब पक्ष का कपाट मन के द्वार से खुल जाय तो अच्छी रीति से सब को देख पड़े कि परमेश्वर अवतार लेके ऐसा काम कभी न कर सकेगा जैसे हिन्दुओं के देवताओं और ऋषियों मुनियों ने किया और यह कि यदि कोई पुस्तक कहे कि ऐसे काम पाप नहीं तो दोनों बातें भूल की हैं।

इस बात से यह सारार्थ निकलता है कि यदि देवते ऋषि मुनि इत्यादि सचमुच थे तौभी हिन्दुओं के पुरखाओं में थे और पिछले लोगों ने उन्हें देवता करके समझा जैसा कि और देश के मूर्त्तिपूजकों में हुआ है और यदि ये बुरे कर्म जो शास्त्र और पुराण में लिखे हैं उन्हों ने किये तो निस्सन्देह बड़े पापी हुए और यदि नहीं किये तो लोगों ने अपनी समझ से ऐसी २ बाते लिखीं सो वे अब उन देवताओं के पापों को अपनी आड़ समझकर पाप करने को सुभीता पाये हैं कि नित्य प्रति निधड़क किया करते हैं और उन के बड़े २ अचंभे और चमत्कार जो पुस्तकों में लिखे हैं सो राजाओं और महत् जनों ने अपनी इच्छा के समान कवियों और पण्डितों से लिखवाये*। और उन्हों ने भी उस के

* विष्णुपुराण के पांचवें अंश के तैंतीसवें अध्याय मे लिखा है कि जब कृष्ण ने अपने पोते के छुड़ाने के लिये बाणासुर से लड़ाई किई तो ज्वर ने एक ऐसा भेष पकड़ा कि तीन शिर और त्रिपद हो गया और कृष्ण का साम्हना किया कदाचित् पर्वत जिसे कहते है कि कृष्ण ने उठा लिया और अजगर इत्यादि जिन्हें उस ने मारा ऐसी ही कुछ कल्पना की वस्तु होगी।

अभिप्राय के समान उन के प्रसन्न होने के लिये मन लगाके बनाया और रचा जैसे कि अगिले समय के यूनानी और रूमी मूर्त्तिपूजकों की पुस्तकों में सहस्रों बातें ऐसी २ लिखी हैं कि उन्हों ने अपने पुरखाओं को उन के मरने के पीछे मूर्त्ति बना बनाके पूजा और उन का माहात्म्य पुस्तकों में गाय गायके देवता ठहराया बरन सिकन्दर इत्यादि ने जीते जी अपनी पूजा करवाई । कदाचित् उन लोगों की समझ कुछ आगे अच्छी थी । पर आप से आप परमेश्वर को कौन पा सकता है उस की गति को कौन लख सकता है उस का पद स्वर्ग से भी अत्यन्त ऊंचा है किसी की बुद्धि वहां लग नहीं पहुंच सकती उस का भेद समुद्र से भी गहिरा है कोई थाह नहीं पा सकता उस का बिस्तार पृथिवी से भी अत्यन्त अधिक है कोई परिमाण नहीं कर सकता उस का ज्ञान समुद्र से भी बड़ा अपरंपार है किस की बुद्धि पार लह सकती है । मनुष्य परमेश्वर की सहायता बिना परमेश्वर की गति कब जान सकता है उन्हों ने सच्चे परमेश्वर का ज्ञान न पाके औरों को उस का नाम पद और माहात्म्य देके रोपा जो कभी परमेश्वर नहीं ठहर सकते इसी लिये वे हर भांति की भूल चूक में पड़े हैं । जो कोई इस बात को सोचेगा वह जान लेगा कि वेद शास्त्र से परमेश्वर की पहिचान होनी अनहोनी है क्योंकि उन में केवल दो ही मत हैं एक निर्गुण दूसरा सगुण निर्गुण होके ईश्वर न कुछ बोलता न चालता न कुछ करता न धरता तो फिर उस दशा में उस से वेद शास्त्र किस रीति से बन सकेंगे और जब सगुण होता तो भूलकर माया के बश में पड़ता तो फिर उस समय उस के करने धरने में भूल चूक अवश्य होगी और वेद शास्त्र में की कई प्रकार की भूल इस की पूरी साक्षी है जैसा ऊपर वर्णन हुआ ।

सारांश।

हिन्दू मत का निर्णय हो चुका अब हम उन की दुर्दशा पर हाथ मारके इन समस्त बातों से यह आशय निकालते हैं तनिक ध्यान रक्खा चाहिये।

पहिले हिन्दुओं के मत के समान कोई देवता नहीं है जिस में सच्चे परमेश्वर का एक भी लक्षण पाया जाय।

दूसरे सृष्टि और मनुष्य की उत्पत्ति के वर्णन में ऐसी विरुद्धता है कि कभी प्रतीति के योग्य नहीं।

तीसरे उस मे मनुष्य और परमेश्वर के बीच सम्बन्ध का कुछ यथार्थ और योग्य वर्णन नहीं।

चौथे उस में सच्चे मत की छाप अर्थात् आश्चर्य और भविष्यद्वाणी नहीं।

पांचवें उस मत के आचार और गुण से ठीक जाना गया कि वह परमेश्वर की ओर से कभी नहीं इस लिये कि वह केवल एक ही देश के लोगों के लिये है परन्तु बुद्धि कहती है कि परमेश्वर की बात जो सब का सृजनहार है सब के लिये है। फिर यह कि एक जाति चार वर्ण और चार वर्ण सहस्र शाखा हो गये इस लिये प्रेम स्नेह मेल उन में से जाता रहा। फिर बारंबार जन्म लेने और तीर्थ करने और मूर्त्ति और पशुन हां ओखली मूसल इत्यादि को पूजने और बैर लेने लालच और व्यभिचार की ओर मन के उभाड़ने और शत्रुन के मारने के मंत्र और स्त्रियों के सन्ताप और सती होने और पती को पति की और लड़केबाले माता पिता की आज्ञा में इस भांति रहने को कि जो वे उन्हें पाप करने की भी आज्ञा दें तो उन को करना उचित है और छोटे छोटे बालकों को मार डालने और आत्मघात करने और पुरुषमेध और देवताओं के बुरे २ कर्म करने और यह कि

पाप पुण्य दोनों ईश्वर ही करता बरन वह सब कुछ आप ही करता और आप ही बनता है ऐसी २ बातों के सोचने से निश्चय जाना जाता है कि यह मत परमेश्वर की ओर से नहीं इस लिये जो अपनी भलाई और मुक्ति चाहते हैं उन्हें अवश्य है कि इस मत को त्यागें ।

सो हे प्रिय हिन्दू लोगो इस बात को तनिक सोचो और विचारो और ऊपर के केवल चार पांच ही प्रमाणों की ओर न देखो परन्तु सभों पर ध्यान करो यदि तुम ऊपर के प्रमाणों में से किसी को अपनी समझ में खण्डन भी कर सको तौभी इस से न समझो कि वह मत प्रमाणिक है और सारा सन्देह जाता रहा क्योंकि यह अनहोना है जब लों ऊपर के समस्त प्रमाणों का ठीक उत्तर न दे लो और सच्चे मत के लक्षण उस में पाये न जावें । परमेश्वर का मत एक ही ओर से प्रकाशित नहीं परन्तु उस पर तो चारों ओर से ज्योति की जगजगाहट है और वह कुछ कच्चा नहीं बरन सर्वथा पक्का है सो परमेश्वर तुम पर अनुग्रह करे और तुम्हें शिक्षा देवे और तुम्हारे मनों को सत्य की ओर फेरे । हे प्रिय यह न समझो कि हम ने यह पुस्तक बैर से लिखी है अथवा अपने कुछ स्वार्थ से क्योंकि तुम्हारे मत से हमारा कुछ अकाज नहीं है और न तुम्हारे इस के छोड़ देने और दूसरे के ग्रहण करने से हमें कुछ काज परन्तु हम तुम्हें केवल अपना भाई समझकर तुम्हारी भलाई चाहते हैं इस लिये तुम्हें चाहिये कि अचेतता और पक्षपात को मन से दूर करके और जगत् का लाज ग्लानि और भय को त्याग करके सत्य की ओर फिरो और सत्य मार्ग का खोज करो कि परमेश्वर तुम्हारा भला करे ।

चौपाई ।

भला करे प्रभु तुम सब केरा . निज बुधि ज्ञान देय बहुतेरा ॥
जेहिते लहो परमगति भाई . छूटे भव बंधन कठिनाई ॥
यहिते अधिक का कहों निहोरी . बचिहो बात जो मनिहो मोरी ॥

समाप्ति ।

शेष कथा ।

१ [देखो राम के चरित्रों में जो इस पुस्तक के चौदहवें पृष्ठ इत्यादि में लिखा है] ।

रामायण मे लिखा है कि रामावतार नारद मुनि के स्राप से हुआ ।

२ [देखो हिन्दू धर्म की बिरुद्धता में जो इस पुस्तक में लिखा है] ।

पद्मपुराण में लिखा है कि ब्रह्मा अहंकारी और शिव कामातुर केवल विष्णु पवित्र है ।

बहुतेरे हिन्दू समझते हैं कि भागवतपुराण वेदव्यासकृत है पर कितने कहते हैं कि बोपदेव से जो ईसवी सन १२०० मे था लिखा गया इसे बहुत पण्डित लोग भी कहते हैं ।

सुमेरुगिरि के बिषय में विष्णुपुराण में लिखा है कि वह गावदुम की नाईं है नीचे मोटा ऊपर पतला । पद्मपुराण में लिखा है कि वह धतूरे के फूल की नाईं है । भागुरि कहता है कि चौखूंटा । सावर्णि कहता है कि वह अष्टखूंट है । अत्रि कहता है कि वह शत खूंट है । भृगु कहता है कि सहस्र खूंट है । गर्ग कहता है कि गुथे हुए बाल के समान है । अरु और कहते हैं कि गोल है और मत्स्यपुराण मे यह श्लोक है

चतुर्वर्णः सुसौवर्णश्चतुरस्रः समुच्छ्रितः ।

अर्थात् वह चौरंगा सुवर्णमय और चौखूंटा ऊंचा है । निदान पुराणों मे इस पर्वत के विषय इतनी बिपरीत बाते लिखी हैं

कि निश्चय समझ पड़ता है कि सारी मिथ्या हैं। फिर लिंगपुराण में लिखा है कि जिस समय ब्रह्मा विष्णु इस बात पर लड़ रहे थे कि हम में श्रेष्ठ कौन है शिव ने उन्हें अलग २ कर दिया और उसी पुराण में लिखा है कि शिव के अट्ठाईस अवतार हैं और विष्णु के चौबीस। फिर उसी पुराण में है कि दधीच ने विष्णु और उस के सेवकों को मारा। और कालिका उपपुराण में लिखा है कि शिव ने शरभ होकर विष्णु को बाराह अवतार मे और उस के सब बच्चों को भक्षण कर डाला। हरिवंश में लिखा है कि दक्ष के यज्ञ में विष्णु ने शिव को पकड़के ऐसा उस का गला घोंटा कि श्वास निकलने लगा तब शिव किसी भांति से छुड़ाके भाग निकला और लिखा है कि उस के गले में नीलाहट पड़ने का कारण यही है और दूसरे ठौर जो लिखा है कि समुद्र मथने के समय बिष पीने से नीलाहट हुई सो भूल है। बामनपुराण में लिखा है कि शिव अपने ससुर दक्ष के मारने से ब्रह्मघाती हुआ और इस पापमोचन के लिये काशी तीर्थ किया।

रामायण में लिखा है कि राम ग्यारह सहस्र बर्ष तक जीता रहा परन्तु वेद और मनु का शास्त्र इस को नाह करते हैं।

प्रजापति की बात।

३ [देखो पिंडा पारने के बिषय में जो इस पुस्तक में लिखा है]।

पुराणों से निश्चय जाना जाता है कि जो प्रजापति और उन की स्त्री कहलाती हैं सो केवल दृष्टान्त की रीति पर हैं अर्थात् बुद्धि और धर्म और प्रजा पाठों के लक्षण हैं जैसे विष्णुपुराण मे लिखा है कि धर्म ने श्रद्धा को ब्याहा और

उस से काम उत्पन्न हुआ। फिर उस ने लक्ष्मी को ब्याहा और उस से दर्प उत्पन्न हुआ। फिर धृति को ब्याहा और उस से नियम उत्पन्न हुआ। फिर तुष्टि को उस से संतोष उत्पन्न हुआ। फिर पुष्टि को उस से लोभ उत्पन्न हुआ और मेधा से श्रुति उत्पन्न हुई। फिर कृपा को और उस से दण्ड न्याय और बिनय उत्पन्न हुए और बुद्धि से क्रोध और शान्ति से क्षेम और सिद्धि से सुख और कृत से यश उत्पन्न हुआ। फिर लिखा है कि यज्ञ ने दक्षिणा को ब्याहा और धर्म के पुत्र काम ने नन्दी को ब्याहा और उस से हर्ष उत्पन्न हुआ। हे भाइयो इस में तनिक बिचार करो यही प्रजापति कहलाते हैं पर केवल ये गुण हैं जो दृष्टान्त की रीति पर शिक्षा के लिये लिखे गये हैं परन्त ब्राह्मणों ने उन्हें स्त्री पुरुष ठहराके प्रजापति स्थित कर रक्खा है और उन में पितरों को मिला दिया है कि जिस से पिंडा पारने का लाभ उन्हें हो। पुराणों मे लिखा है कि प्रजापति और पितर एक ही लोक में रहते हैं अर्थात् पितृलोक और प्रजापतिलोक एक ही स्थान है सो जब प्रजापति नहीं ठहरे तो उन का लोक कहां। फिर जब उन का लोक नहीं तो पितृलोक कहां और जब पितृलोक नहीं तो फिर किस लिये पिंडा पारना है। हे भाइयो टुक सोचो और धोखा न खाओ।

फिर उसी शास्त्र में लिखा है कि अधर्म ने हिंसा को ब्याहा जिस से अनृत अर्थात् झूठ उत्पन्न हुआ और उस की पुत्री निकृति थी और इन दोनों भाई बहिन ने परस्पर ब्याह किया और उन के दो पुत्र अर्थात् भय और नरक उत्पन्न हुए और उन की दो पुत्री माया और वेदना थीं जो अपने दोनों भाइयों से ब्याही गईं और भय और माया से मृत्यु उत्पन्न हुई और नरक और वेदना का पुत्र दुःख हुआ और

मृत्यु के पुत्र व्याधि और जरा और शोक तृष्णा और क्रोध थे सब अधर्म के वंश और दुखदायक हैं। जो चाहो तो इन बातों के स्पष्ट वर्णन भागवत और विष्णुपुराण के पहिले अंश के सातवें अध्याय अरु और पुराणों में देख लो।

४ [देखो विष्णु और कृष्ण के चरित्र में जो इस पुस्तक में लिखे हैं]।

विष्णुपुराण के पांचवें अंश के पहिले अध्याय में लिखा है कि जब देवतागण ब्रह्मा समेत विष्णु के पास जाके बिन्ती करने लगे कि संसार में जा अवतार लेवें तो विष्णु ने अपने शरीर से दो बाल एक श्वेत और एक काला निकालके कहा कि श्वेत बलराम और काला कृष्ण होके पृथिवी का भार उतारेंगे। फिर इन दोनों बालकों ने मनुष्य बनके परस्पर झगड़े रगड़े किये और एक ठौर में लिखा है कि कृष्ण ने कहा कि बलराम तो बड़ा मद्यप और बड़ा जुआरी है मणि की रखवाली करने के योग्य नहीं।

५ [देखो जाति के वर्णन में जो इस पुस्तक में लिखा है]।

शास्त्र से जाना जाता है कि ब्राह्मण को जो जो पूजा पाठ अर्थात् स्नान ध्यान गायत्री पंचसंस्कार वेद पढ़ना इत्यादि प्रतिदिन अवश्य है सो यदि वे यह सब करें तो उन्हें और कुछ काम करने का अवकाश न मिलेगा। यदि कंगाल होके कुछ सांसारिक काम किया चाहें तो शास्त्र की रीति से पापी और अधर्मी ठहरेंगे और यदि अपने धर्म और पूजा पाठ में लगे रहें तो भूखों मरें हां यह उस समय होता जब कि सब जाति ब्राह्मण के सेवक थे पर इस समय तो अत्यन्त कठिन है कि शास्त्र की रीति से ब्राह्मण का हरलोक परलोक दोनों बने। इस लिये अवश्य है कि ऐसी भावना की बातों को छोड़के सत मत ग्रहण करें। फिर लिखा है कि मनुष्य

के चार आश्रम हैं अर्थात् ब्रह्मचर्य्य गृहस्थ बाणप्रस्थ सन्यास सो अपने लड़कों के सिखाने और सुधारने अरु और ऐसे २ अवश्य काम के लिये हिन्दू के जीवन का चौथा ही भाग है।

६ [देखो तंत्र के बिषय जो इस पुस्तक में लिखा गया है]।

मनु के शास्त्र के दूसरे अध्याय के पहिले श्लोक की कुल्लूक भट्ट की टीका मे लिखा है कि श्रुति दो प्रकार की हैं अर्थात् वैदिकी तांत्रिकी उस के बचन ये हैं

श्रुतिश्च द्विबिधा वैदिकी तांत्रिकी च॥

फिर लिखा है कि गायत्री ने ब्राह्मणों को श्राप देके कहा कि तुम कलियुग में तांत्रिक होओ।

७ [देखो आश्चर्य्यों के बर्णन में जो इस पुस्तक में लिखे गये हैं]।

रावण की सामर्थ्य के बिषय में बाल्मीकीय रामायण में लिखा है

न तत्र सूर्य्यस्तपति न भयाद्वाति मारुतः।
नाग्निर्ज्वलति वै तत्र यत्र तिष्ठति रावणः॥
जलोर्मिमाली तं दृष्ट्वा समुद्रोऽपि च कम्पते।
नष्टो बैश्रवणस्त्यक्त्वा लंकां तद्वीर्य्यपीडितः॥

अर्थात् रावण के डर से सूर्य्य तपन नहीं करता और पवन बहता नहीं और आग जलन नहीं करती और समुद्र देखकर कांपता है और कुबेर भय के मारे लंका छोड़ भागा।

८ [वेद के पवित्र होने के विषय मे]।

वेद और विष्णुपुराण अरु और ठौरों में लिखा है कि यजुर्वेद का तैत्तिरीय अंश याज्ञवल्क ने बमन किया तब उस के गुरु वैशम्पायन ऋषि ने अपने दूसरे शिष्यों को आज्ञा दिई कि उसे निंगल जायें वे तीतिर बनके उसे घोंट गये इस लिये वह तैत्तिरीय कहलाया। बहुधा कहानियों में तो

कुछ रस की बात भी है पर इस कहानी में तो वह भी पदार्थ नहीं है ।

९ [देखो तप के विषय मे जो इस पुस्तक में लिखा है] ।

शास्त्र की रीति से जाना जाता है कि तप से मनुष्य का भला नहीं होता देखो कि जब रावण ने बड़ा उग्र तप किया और उस का फल लहके सारी सृष्टि को बश में कर लिया तो ऐसा उपद्रव मचाने लगा कि उसे नाश करने के लिये ईश्वर को अवतार लेना पड़ा । हाय हाय एक देवते ने उसे वर दिया कि वह बर श्राप ठहरा जिस से वह कुल समेत दूसरे देवते से नाश हुआ । फिर बिश्वामित्र ने सहस्रों बरस तप किया पर जब उर्वशी उस पास आई तो वह उसे देखके अपने को संभाल न सका और अपने तप का सारा फल खोके उस से भोग करके भ्रष्ट हुआ और कोढ़ी हो गया अन्त में श्वान बनके उस के पीछे २ इन्द्रलोक लों गया । फिर विष्णुपुराण के २ अंश के १३ अध्याय में लिखा है कि राजा भरत एक हरिण को ऐसा प्यार करने लगा कि उस का तप भंग हो गया और दूसरे जन्म में उस का हरिण की योनि में जन्म हुआ ।

१० [देखो युग के विषय में जो इस पुस्तक में लिखा है] ।

राजतरंगिणी ग्रन्थ में यह लिखा है जिस से जाना जाता है कि कृष्ण कलियुग के साढ़े छः सौ वर्ष के लगभग था उस के बचन ये हैं

अष्टषष्ठ्यधिकामब्दशतद्वाविंशतिं नृपाः । अपीपलंस्ते काश्मीरान् गोनर्द्दाद्याःकलौ युगे । भारताद्द्वापरान्तेऽभूद्वार्त्तयेति बिमोहिताः । केचिदेतां मृषा तेषां कालसंख्यां प्रचक्रिरे । लब्धाधिपत्यसंख्यानां वर्षान्संख्याय भूभुजाम् भुक्तात्कालात्कलेः शेषोनास्त्येवं तद्विवर्जितात् । शतेष्वष्टसु सार्द्धेषु ब्यधिकेषु च

भूतले । कलेर्गतेषु वर्षाणामभवन् कुरुपाण्डवाः । लौकिकेब्दे चतुर्विंशे शककालस्य सांप्रतम् । सप्तत्या त्र्यधिकं यातं सहस्रं परिवत्सराः । प्रायस्तृतीयगोनर्दादारभ्यशरदान्तदा । द्वे सहस्रे गते त्रिंशदधिकञ्च शतत्रयम् । वर्षाणां द्वादशशती षष्ठिः षड्भिश्च संयुता । भूभुजां कालसंख्यायांतद्विपञ्चाशतीमता । कृत्वाद्रूपं शतेनाब्दैर्यासु चित्रशिखंडिषु । उच्चारे संहिताकारैरेवंदत्तोत्रनिर्णयः । आसन्मघासु मुनयः शासति पृथिवीं युधिष्ठिरे नृपतौ । षड्द्विकपञ्चयुतशककालस्तस्य राज्यस्य ॥

११ [देखो मूर्त्तिपूजा के बिषय में जो इस पुस्तक में लिखा है] ।

वेद में मूर्त्तिपूजा कहीं नहीं है । जाना जाता है कि मूर्त्तिपूजा पहिले सूर्य्य चन्द्र ग्रह इत्यादि के बिलोकने से हुई कि लोग उन्हें ईश्वर के समीपी समझके उन का आदरमान् करने लगे होते होते देवता जानके पूजने लगे । फिर जब सूर्य्य अस्त होता तो अग्नि जलाके सूर्य्य की सन्ती उस की पूजा प्रतिष्ठा करते थे । फिर पृथिवी जल* आकाश से अपना लाभ बिचारके उस की भी पूजा करने लगे । फिर मनुष्यों में जो बड़े २ बुद्धिमान और ऐश्वर्यमान और शूरबीर हुए कि किसी ने जोतने बोने का यत्न सिखाया और किसी ने चित्रकारी इत्यादि उत्पादन किया और किसी ने महासंग्राम करके धन धाम और कोश को बचाया इस लिये उन के मरने के पीछे क्रम २ से उन की पूजा स्थापित हुई । तिथिग्रन्थ से जाना जाता है कि पहिला मनुष्य जिस की पूजा इस रीति से हुई बाबुल का राजा निमरूद का पुत्र बेलस था इस प्रकार से कितने राजाओं ने अपने जीते जी अपनी पूजा

* वरुण कोई देवता नहीं है यह केवल जल है और यह भी वचन का अर्थ ही है। ऐसा ही पवन इत्यादि ।

करवाई बरन यहां काशी के महल्ले ब्रह्मनाल में सन् ईसवी १८०१ में लाल शिवनाथसिंह नामे एक क्षत्री महा जुआरी और बड़ा गुण्डा था जिस के घर में सैकड़ों खिलाड़ी हर दम रहते थे और नाल की आमद से उस का खर्च बर्च चलता था यह खबर पाके हाकिम ने उसे तलब किया पर वह हाजिर न हुआ किन्तु गुप्त हो गया बाद इस के उस को गिरफतारी के लिये जब सिपाही गये तो वह और उस का संगी बहादुर-सिंह दरवाजे के बाहर निकले कि एक डेवढ़ तिलंगों की उन पर छूटी और वे वहीं तमाम हुए । लोग वहां जिस जगह कि शिवनाथसिंह मरा उस के नाम की एक वेदी बनाके चन्दन अच्छत फल फूल और जल चढ़ा चढ़ाके पूजा और दण्डवत करते हैं तो क्या आश्चर्य्य कि कुछ दिन बीते लोग उस की एक मूर्त्ति बनाके खड़ी करें और उस के माहात्म्य को एक पुस्तक बनावें इसी प्रकार पूजा पाठों की जड़ समझनी चाहिये ।

१२ [ब्रह्मा की लड़ाई मे सब जानते हैं कि अंगरेज समस्त देश जीत पश्चात् रंगून नगर को लेके आवा नगर को जो ब्रह्मा देश की राजधानी है चले जाते थे जब नगर के निकट पहुंचे तो वहां के राजा ने अपना वकील भेजकर मेल करने चाहा और बहुत रुपये पैसे और देश देकर उन्हें प्रसन्न किया इस के पीछे राजा ने इस वृत्तान्त को अपने दफ्तर में यों लिखवाया कि पूर्व का राजा जो श्वेत हाथियों का प्रभु और समुद्र का अध्यक्ष और जीवन मरण का स्वामी है उस के राज्य के अमुक सम्वत् में गोरे लोग आये और महाराज ने उन्हें रंगून नगर से एक मंज़िल अपनी राजधानी तक आने दिया जब वे वहां पहुंचे तो महाराजाधिराज के तेज प्रताप से ऐसे घबरा गये कि एक क़दम आगे न बढ़ सके इस के

पीछे उन्हों ने महाराजा के पास अरज़ी भेजी कि हमारे अपराध को क्षमा कीजिये और हमे फिर अपने देश को जाने दीजिये । तब महाराजाधिराज ने जो कृपानिधान हैं अपनी अपरंपार दया से उन की बिन्ती मान लिई बरन उन्हें राह-ख़र्च के लिये बहुत सा धन सम्पत्ति भी दिया। कितनों ने जो अपने देश को फिर जाने को न चाहा उन्हें महाराज ने कई एक सूबे रहने के लिये दिये । सो इस बात को कदाचित् सौ पचास वर्ष पीछे ब्रह्मा देश के लोग यों ही समझ लेवें तो क्या आश्चर्य्य । इसी प्रकार जाना चाहिये कि पुराणों की बहुत कथा लोगों ने पक्ष करके उलटी बर्णन किई है और अब के लोग बिचार न करके उन्हें सत्य समझते हैं] ।

१३ [देखो निर्गुण सगुण के बिषय में जो इस पुस्तक में लिखा है] ।

वेद शास्त्र और पुराणों में कहीं लिखा है कि ईश्वर निर्गुण है और कहीं लिखा है कि सगुण है कहीं लिखा है कि ईश्वर ही विष्णु शिव इत्यादि बनकर लीला क्रीड़ा करता है और वेदान्त यद्यपि ईश्वर को निर्गुण कहता है तौभी उसे सर्व-ज्ञानी सर्वसामर्थी सृष्टिकर्त्ता इत्यादि लिखता है और वेद में यह श्रुति है

अपाणिपादो जवनोगृहीता पश्यत्यचक्षुः शृणोत्यकर्णः
स वेत्ति वेद्यं नच तस्य वेत्ता तमाहुरग्र्यं पुरुषं महांतम् ॥

अर्थात् वह बिना हाथ पांव चलता और धरता और बिना नेत्र देखता और बिना कान सुनता और सब कुछ जानता है पर उसे कोई नहीं जानता महापुरुष उसी को कहते हैं । निदान परमेश्वर का ज्ञान जो मत की जड़ है उस के बिषय हिन्दुओं के यहां ऐसा गड़बड़ है कि ठीक वह दृष्टान्त जो उन के यहां प्रसिद्ध है स्मरण आता अर्थात् किसी गांव में

सब अन्धे ही रहते थे वहां एक दिन संयोग से एक हाथी आया किसी ने उस के पांव को पकड़ा और कहा कि ताड़ की नाईं है किसी ने कान को पकड़के कहा कि सूप की नाईं है किसी ने सूंड़ को पकड़ा और दोनों को झुठाके कहा कि हाथी मूसल के समान है इत्यादि । ठीक इसी प्रकार शास्त्रवालों ने अटकल से परमेश्वर के विषय बकवाद किई पर किसी ने भेद न पाया ।

ऊपर के लक्षणों से ईसाई मत का निरूपण।

प्रथम खण्ड।

पहिला अध्याय।

अब बिचार किया चाहिये कि सत मत के लक्षण जो ऊपर लिखे हैं* ईसाई मत में हैं अथवा नहीं। यदि उस में हैं तो उसे ग्रहण करना और तन मन से मानना उचित है नहीं तो उसे भी खण्डन करना चाहिये। वे पुस्तक जो ईसाई मत की हैं सो तौरेत जबूर और भविष्यद्वक्तों की पुस्तक और इंजील हैं जो सब मिलकर बैबल कहलाती है।

बैबल से जाना जाता है कि परमेश्वर एक है और सकल सृष्टि से परे सो इस का बर्णन आगे स्पष्ट और सप्रमाण होगा और इस मत के निरूपण करने के लिये यह भी सोचा चाहिये कि इस मत की रीति से परमेश्वर की एकताई में तीन हैं अर्थात् पिता पुत्र पवित्रात्मा और ये तीनों अनादि और अनन्त और अबिनाशी हैं और एक ही इच्छा स्वभाव प्रभाव और एक ही सामर्थ्य रखते हैं और ये तीनों एक ही अद्वितीय परमेश्वर हैं। इस घड़ी हमारा काम नहीं कि इस में कुछ छेड़छाड़ करें कि एक परमेश्वर में तीन क्योंकर हैं परन्तु यह पूछा चाहिये कि जिस परमेश्वर का बर्णन बैबल में है उस में वे लक्षण जो इस पुस्तक के आरंभ में बर्णन किये गये पाये जाते हैं अथवा नहीं जैसे कि हम ने हिन्दू के मत के अनुसन्धान करने में यह बिवाद नहीं किया कि परमेश्वर एक होके अनेक क्योंकर होता अथवा निर्गुण होकर सगुण किस रीति से बनता परन्तु

---

*देखो २ पृष्ठ से ८ पृष्ठ तक।

पहिले तो हम इस बात की खोज में थे कि वह निर्गुण हो चाहे सगुण पर परमेश्वर के लक्षण उस में हैं अथवा नहीं। अब हम ईसाई मत का निरूपण भी इसी रीति पर करते हैं परमेश्वर चाहे तो अद्वैतता और तीन एक होने का अनुसन्धान आगे चलके करेंगे। अब बैबल की रीति से बिचार किया चाहिये कि

परमेश्वर पवित्र है।

१ परमेश्वर पवित्र है अथवा नहीं* इस गुण के बिचार करने में हम को उचित है कि उस के बचन और कर्त्तव्य को सोचें जिस्तें निश्चय हो कि वह पवित्र है अथवा नहीं। बैबल में बर्णन है कि परमेश्वर पवित्र है जैसे तौरेत में लिखा है† कि इसराएल के सन्तानों से कह कि तुम पवित्र हो कि मैं तुम्हारा प्रभु परमेश्वर पवित्र हूं। गीतपुस्तक में लिखा है‡ कि हमारे प्रभु परमेश्वर की महिमा कर और उस के चरण पर गिरके आराधना कर क्योंकि वह पवित्र है§ प्रभु अपने सारे पंथों में सत्य और अपने सारे कामों में पवित्र है। फिर भविष्यद्वक्तों की पुस्तकों में लिखा है‖ कि एक दूत दूसरे को पुकारके कहता है कि पवित्र पवित्र पवित्र सेनाओं का प्रभु सारा जगत् उस की महिमा से भरपूर है। इंजील में भी यही बातें लिखी हैं¶ कि दूत रात दिन उसी की स्तुति करते हैं कि पवित्र पवित्र पवित्र परमेश्वर सर्वसामर्थी जो था जो है जो आनेहारा है। जब परमेश्वर ने मनुष्य का रूप धारण किया तब भी उस का यही गुण सदा बर्णन होता है कि वह पवित्र है** और पवित्रात्मा अपने नाम ही से प्रगट होता कि वह कैसा है। सारे बैबल से जाना जाता

---

* देखो ३ पृष्ठ। † लैव्यव्यवस्था १९ २। ‡ ९९ गीत ५। § १४५ गीत १७।
‖ यश. ६. ३। ¶ प्रकाशित ४. ८। ** लूक १ ३५।

है कि परमेश्वर की पवित्रता के गुण से उस के और सब गुण शोभायमान हैं माना यह गुण उस के सब गुणों का मुकुट-मणि है क्योंकि वह बारंबार पवित्र ही कहलाता है और कहीं नहीं लिखा कि सामर्थी सामर्थी सामर्थी अथवा ज्ञानी ज्ञानी ज्ञानी प्रभु परमेश्वर परन्तु पवित्र पवित्र पवित्र प्रभु परमेश्वर ही वर्णित है* । यद्यपि उन पुस्तकों में खोल खोलके लिखा है कि वह पवित्र है तौभी परमेश्वर के बचन और कर्त्तव्य को बिचारा चाहिये जिस्तें उस की पवित्रता अच्छी रीति से प्रगट हो। इस बात पर हम तीन प्रश्न करते हैं कि परमेश्वर ने आप को सृजनहार और व्यवस्थादायक और त्राणकर्त्ता किस रीति से प्रगट किया। तौरेत के पहिले पर्ब्ब से समझ पड़ता है कि परमेश्वर ने पृथिवी और स्वर्ग और जो कुछ उस में है बनाया और जब बना चुका ते देखा कि सब अच्छा है†। उस ने सब दूतों को पवित्र बनाया और मनुष्य को भी अपने स्वरूप में उत्पन्न किया अर्थात् अपने समान पवित्र‡। बैबल में कहीं नहीं है कि वह पाप का उत्पादक है अथवा किसी के प्रारब्ध में उस का लिखनेहारा है क्योंकि वह ज्योति है§ उस में कुछ अन्धकार नहीं अर्थात् पाप का लेश नहीं और न हो सकता है। इस से ठीक समझा गया कि परमेश्वर ने उत्पत्ति के बिषय अपने को पवित्र ठहराया। फिर परमेश्वर ने अपने को व्यवस्थादायक किस प्रकार से प्रगट किया। जब आदम और हव्वा को उत्पन्न किया तो उन को इस भांति की समझ दिई थी कि जिस से वे जानते थे कि हमें क्या क्या करना योग्य है और केवल एक यह आज्ञा दिई‖ कि तुम भले

* यस. ६. ३। † उत्पत्ति १ ३१। ‡ उत्पत्ति १ २७ और इफिस ४: २४। § योहन की १ पत्री १: ५। ‖ उत्पत्ति २. १६ और १७।

और बुरे की पहिचान के वृक्ष का फल न खाना। यद्यपि मनुष्य उस वृक्ष का फल खाके पापी हो गया तौभी उस समझ का कुछ शेष उस में रह गया जिस करके वह परमेश्वर की पवित्रता की साक्षी देता है। फिर परमेश्वर ने मूसा के द्वारा अपनी व्यवस्था को प्रगट किया और कहा* कि मैं ही परमेश्वर हूं मुझे छोड़ किसी दूसरे को ईश्वर मत समझ। अपने लिये कोई मूर्त्ति न बना और मुझे छोड़ किसी दूसरे की पूजा न कर। मेरे नाम को वृथा न ले। सात दिन में से एक दिन पवित्र जानकर मेरी आराधना कर। अपने माता पिता का आदर कर। मनुष्य का घात न कर। व्यभिचार न कर†। चोरी न कर। किसी प्रकार का झूठ न बोल। लोभ न कर। निदान मुझ को अपने सारे मन और सारे जी और सारी सामर्थ्य से प्यार कर‡ और अपने परोसी को ऐसा प्रिय समझ जैसे आप को§। सो सर्व प्रकार से उस की यही आज्ञा है कि अपना मन पवित्र कर बरन जिस भांति तुम्हारा बुलानेहारा अर्थात् परमेश्वर पवित्र है उसी प्रकार तुम भी अपने सारे चालचलन में पवित्र होओ‖। यह पवित्र होना कुछ शरीर की फरछाई और नहाने धोने से नहीं परन्तु पवित्रता से तात्पर्य्य यह है कि अपने तन मन को पापों से पवित्र रक्खो इस कारण अपने अंगों को परमेश्वर को सौंपो कि तुम एक जीवता और पवित्र और ग्राह्य बलिदान होओ¶ क्योंकि बिना पवित्रता परमेश्वर के साम्हने कोई नहीं जा सकता जैसे लिखा है** कि पवित्रता का पीछा करो क्योंकि उस बिना कोई परमेश्वर को न देख सकेगा। सो

---

* यात्रा २० : १। † मत्ती ५ : २७ और २८। ‡ विवाद ६ : ५। § लैव्यव्यवस्था १९ १८। मत्ती २२ : ३८ से ४० तक। ‖ १ पितर १ : १५। ¶ रोमि. १२ : १।
** इब्रि. १२ . १४।

परमेश्वर की आज्ञा है* कि तुम पवित्र बनो जैसा मैं पवित्र हूं। यही परमेश्वर की व्यवस्था है और वह उस को अचल भी रखता उस का उल्लंघन करनेहारा परमेश्वर के समीप कभी रह नहीं सकता बरन दण्ड के योग्य ठहरता है इस लिये जब स्वर्गीय दूत ने परमेश्वर की व्यवस्था को न माना तो उस ने उन्हें अपने साम्हने से निकाल दिया† और जब आदम और हव्वा ने पाप किया तो उन को अदन की बाटिका से निकाल दिया क्योंकि परमेश्वर को पाप से ऐसा घिन है कि कभी कोई पापी उस के साम्हने नहीं जा सकता और उन्हीं के पाप से सारी पृथिवी श्रापित हुई। इसी भांति उत्पत्ति के सोलह सौ बरस के पीछे नूह के दिनों में जब सारा जगत् पाप में डूब गया और लोगों का मन मुकुर मलीनता की काई से सर्वथा अन्ध हो गया और सब अधर्म में लिप्त हुए तो परमेश्वर ने अपनी पवित्रता के कारण उन को जलप्रलय से नष्ट कर डाला‡ क्योंकि वे सब उस के आगे निपट अभागे और घिनौने थे केवल नूह और उस का बंश बचा। इसी रीति से लूत के दिनों में जब सदूम और अमूरा के लोग कुकर्मों और पापों के दलदल में गले तक फंस रहे थे परमेश्वर ने अपनी पवित्रता के लिये अग्नि बरसाके उन्हें भस्म कर डाला§ और कनानियों ने यद्यपि सदूम और अमूरा के लोगों की यह दशा अपनी आंखों से देखी तिस पर भी पाप से हाथ न उठाये इस लिये परमेश्वर ने इसराएलियों के द्वारा उन पापियों का ध्वंस किया‖। फिर जब इसराएली जो परमेश्वर के बड़े प्रिय थे पाप में लिप्त हुए तो परमेश्वर ने उन्हें भी नहीं छोड़ा बरन छिन्न

* १ पितर १ १६। † २ पितर २.४। ‡ उत्पत्ति ६ और ७ पर्व्व। § उत्पत्ति १९ पर्व्व।
‖ गिन्ती ३३. ५२–५६ और विवाद २०. १६।

भिन्न कर डाला और वे आज लों परमेश्वर की पवित्रता के एक प्रत्यक्ष चिन्ह हैं । इन बातों के सोचने से जाना जाता है कि परमेश्वर ने व्यवस्था से अपनी पवित्रता प्रगट किई । फिर केवल व्यवस्था ही से नहीं परन्तु उस के स्थापित करने से भी क्योंकि जिस किसी ने उस के बिरुद्ध पाप किया चाहे मनुष्य हो चाहे स्वर्गीय दूत परमेश्वर उस से घिनाता और उस को दण्ड देता है इस से भी निश्चय हुआ कि वह पवित्र है । और यद्यपि जगत् की उत्पत्ति और व्यवस्था और व्यवस्था के अचल रखने से परमेश्वर की पवित्रता प्रगट हुई तौभी संसार के लिये मुक्तिमार्ग ठहराने से और अधिक प्रगट हुई क्योंकि जब मनुष्य पाप के कारण परमेश्वर के साम्हने अभागा और घिनौना हुआ यद्यपि वह पापी पर अपनी पवित्रता के कारण दया नहीं करता और अपने समीप आने नहीं देता तौभी उस ने अपनी सर्वज्ञता से ऐसा सुन्दर उपाय किया कि न्याय पूरा हो गया और दया का द्वार खुल गया और पवित्रता ने भी हर भांति से बड़ाई पाई अर्थात् परमेश्वर का पुत्र मनुष्य हुआ और उस ने जीवन भर पाप से पवित्र रहके परमेश्वर की व्यवस्था को पूरा किया और मनुष्यों के पाप का दण्ड अपने ऊपर उठाके अपने प्राण को बलिदान किया । फिर तीसरे दिन उठकर स्वर्ग पर गया और पवित्रात्मा के भेजने से अपने बलिदान पर एक पक्की छाप किई कि वह परमेश्वर की पवित्रता के योग्य और उस के मनोनुकूल हुआ* । जिस रीति कि शैतान और उस के संगियों के सर्वदा के दण्ड से परमेश्वर की पवित्रता प्रगट हुई यदि सारे जगत् के लोग भी नरक में पड़ते और वहां

* रोमि. ३ : २१ पद से ८ पर्ब्ब के अन्त तक और गलातियो का ३ और ४ पर्ब्ब और योहन १४—१७ पर्ब्ब तक ।

सर्वदा दुःख सहते तीभी परमेश्वर की पवित्रता इतनी प्रगट न होती जितनी पिता के प्रिय पुत्र के क्रूस पर खींचे जाने और दुःख उठाने से प्रगट हुई और यदि पाप से उस को घिन न होता तो वह क्यों मनुष्यों के पाप की सन्ती अपने प्रिय पुत्र के देने से पापों को मिटाता और उस के मरने का सारार्थ यह था कि पवित्रात्मा के सहाय से मनुष्यों के आत्मा पवित्र होयें और स्वर्ग के जाने के योग्य ठहरें उन के मन की अंधेरी कोठरी उंजियाली हो जाय और पवित्रात्मा की ज्योति से भरपूर हो। इन बातों पर ध्यान करने से निश्चय हुआ कि परमेश्वर पवित्र है और उस का स्वभाव पवित्र और सिरजने में पवित्र और व्यवस्था की रीति और उस के अचल रखने में पवित्र निज करके मनुष्यों की मुक्ति के उपाय में पवित्र ठहरा है।

परमेश्वर न्याई है।

२ अब बिचार किया चाहिये कि इस मत की रीति से परमेश्वर न्यायी भी है कि नहीं*। यह गुण बैबल में बारंबार प्रकीर्त्तित है जैसे तौरेत में लिखा है† कि परमेश्वर का कार्य्य सिद्ध है और उस के सारे पंथ न्याय के हैं वह परमेश्वर सत्य स्वरूप है और बुराई से परे वह यथार्थी और धर्मी है। गीतपुस्तक में लिखा है‡ कि न्याय और बिचार तेरे सिंहासन के पाये हैं कृपा और सच्चाई तेरे साम्हने हैं। भविष्यद्वक्तों की पुस्तक में भी यों ही है§ कि मैं परमेश्वर न्यायी और रक्षक हूं। इंजील में भी यही बात है कि जब परमेश्वर ने अवतार लिया तो उस का एक मुख्य नाम न्यायी और धर्मी हुआ और लिखा

* देखो ३ पृष्ठ। † विवाद ३२. ४। ‡ ८९ गीत १४। § यस. ४५: २१।

है* कि वह न्याय और बिचार की रीति से राज्य करेगा और पवित्र आत्मा का काम यही है कि संसार में न्याय प्रगट करे जैसे लिखा है† जब वह अर्थात् पवित्र आत्मा आवेगा तो जगत् को पाप और धर्म और न्याय के बिषय दोषी करेगा । इन पदों से ठीक जाना जाता है कि परमेश्वर न्यायी कहलाता है कि उस के सब कार्य्य न्याय से पूर्ण हैं और उस का सिंहासनस्थान न्याय और बिचार है और यदि वह सचमुच न्यायी है तो उस की आज्ञा भी वैसी ही होंगी उन आज्ञाओं में का सारार्थ जिन्हें परमेश्वर ने मनुष्यों के लिये दिईं इन दो आज्ञाओं में समाप्त है‡ अर्थात् कि तू परमेश्वर को सब से अधिक प्यार कर और अपने पड़ोसी से अपने समान प्रीति रख । फिर जितनी वस्तें सत्य हैं और जितनी वस्तें योग्य हैं और जितनी वस्तें सिद्ध हैं और जितनी वस्तें पवित्र हैं और जितनी वस्तें सब के मनभावन और उजागर हैं और जितनी सुन्दरता सुघरता हैं उन में ध्यान करो ।§ निदान जैसा तुम चाहते हो कि लोग तुम से करें तुम भी उन से वैसा ही करो । ‖ अब उन बातों पर ध्यान करने से निश्चय होता है कि प्रभु की आज्ञा पूरी और सच्ची और सीधी और फर्च्छी है और पवित्र और न्यायसंयुक्त और उत्तम है । इन बातों से जाना गया कि जिस प्रकार से परमेश्वर न्यायी है वैसा ही उस की आज्ञा भी न्याय की है । इस लिये जो मनुष्य कि न्यायी और धर्मी नहीं सो परमेश्वर के समीप अप्रिय है जैसे लिखा है¶ कि जो न्यायी नहीं वह धर्मी के समीप घिनौना है जो पाप करता है परमेश्वर के साम्हने

* यस. १ : ७ । † योहन १६ : ८ । ‡ मत्ती २२ : ३७ । § फिलिप ४ : ८ । ‖ मत्ती ७ : १२ । लूक ६ : ३१ । गीत १९ ७, ९ । रोमि. ७ . १२ । ¶ दृष्टान्त २९ : २७ । बिवाद २५ : १९ ।

आ नहीं सकता क्योंकि कोई हो जिस ने उस की आज्ञा न मानी वह उस को बिना दण्ड दिये नहीं छोड़ता है। दूतों ने उस की आज्ञा को उल्लंघन किया उन का दण्ड घोर नरक हुआ। आदम और हव्वा ने पाप किया उन को भी दण्ड मिला। परमेश्वर ने आदम से कहा कि जो तू मेरी आज्ञा न मानेगा तो मर जायगा और इसी प्रकार से आदम को हुआ और वैसा ही उस के बंश को भी आज लों होता चला जाता है और यद्यपि संसार मे किसी को उस के कर्मों के समान अभी पूरा प्रतिफल नहीं मिलता परन्तु बैबल की रीति से परमेश्वर ने इस बात के लिये एक दिन ठहराया है जिस में हर एक को उस के मनसा बाचा कर्मना के समान प्रतिफल देगा। जो वह न्यायी परमेश्वर अपने न्याय के सिंहासन पर बैठकर न्याय करता तो कोई मनुष्य उस के साम्हने निष्पापी नहीं ठहरता क्योंकि उस के न्याय का पंथ जो बाल से भी सूक्ष्म है इस रीति पर है कि जिस ने उस की एक आज्ञा के भी बिरुद्ध किया तो उस ने मोक्ष पदार्थ कहां पाया बरन स्रापित हुआ। फिर जिस ने कि व्यवस्था की सब बातों पर अपना पांव दृढ़ता से नहीं जमाया उस के लिये यहां तो मृत्यु और वहां नरक का दण्ड ठहरा यही परमेश्वर का न्याय है जो बैबल में लिखा है उस के बिरुद्ध परमेश्वर कभी नहीं करता।

फिर यद्यपि परमेश्वर न्याय स्वरूप और धर्ममय है तौभी नहीं चाहता कि कोई पापी पाप के समुद्र में डूब मरे बरन उस को यही भावता है कि सब मुक्ति पदार्थ पावें इस लिये परमेश्वर ने एक ऐसा मार्ग निकाला कि पाप का दण्ड पूरा हो और पापी उद्धार भी पावें जिस में परमेश्वर का न्याय और दया दोनों अचल रहें इस लिये ईश्वरत्व में दूसरा

अर्थात् प्रभु यीशु मसीह ईश्वर और मनुष्यों का बिचवई हुआ और उस ने नर रूप धारण करके उन की सन्ती परमेश्वर की सब आज्ञाओं को जो उन्हों ने नहीं माना था माना और पूरा किया। फिर मनुष्यों के पापों का दण्ड आप भोगा और उन के अपराधों का बोझ उस के सिर पर ऐसा भारी था कि उस के तन से पसीना रुधिर की नाईं होकर भूमि पर गिरा। तीन बार उस ने प्रार्थना किई कि हे पिता यदि हो सके और न्याय में बट्टा न लगे तो इस कष्ट का कटोरा मुझ से दूर हो परन्तु न हो सका।' जब मसीह क्रूस पर लटकाया गया तो परमेश्वर का न्याय संपूर्ण हुआ क्योंकि जिस भांति मनुष्यों ने तन मन और आत्मा से पाप किया उसी प्रकार मसीह ने भी तन मन और आत्मा से दुःख उठाया और ऐसा कष्ट सहा कि जिस का वर्णन नहीं हो सकता। देखो उस के न्याय का क्या ही महत् पद है कि पिता ने अपने प्रिय पुत्र का छोड़ना अंगीकार किया पर अपने न्याय को न छोड़ा। इस रीति परमेश्वर न्यायी होके मसीह के बलिदान के कारण से पापियों का पाप क्षमा करता है जैसे लिखा है* कि वह अपनी सत्यता और न्याय से हमारे पापों को क्षमा करता† और उस के पुत्र का रुधिर हमे सारे पापों से पवित्र करता है। उसी बलिदान के द्वारा परमेश्वर आप धर्मी ठहरा और उन को जो यीशु मसीह पर बिश्वास करते हैं धर्मी जानता है और उन्हें न्यायी स्वभाव बनाता है।‡ इन बातों से परमेश्वर हर प्रकार से पूरा न्यायी ठहरा और सारी बैबल इस पर साक्षी देती है कि उस की सब आज्ञायें न्याय से परिपूर्ण हैं और उस ने पाप के दण्ड और मुक्तिपदार्थ

---

* १ योहन १ • ९। † १ योहन १ : ७। ‡ रोमि. ३ • २६।

के देने से अपना न्याय प्रगट किया बरन अपने प्रिय पुत्र अर्थात् प्रभु यीशु मसीह को दे दिया पर अपने न्याय को न छोड़ा।

यद्यपि संसार में परमेश्वर का न्याय अभी संपूर्ण प्रगट नहीं होता और सब लोगों को उन की करणी के समान प्रतिफल नहीं मिलता क्योंकि अब लों मनुष्यों का न्याय नहीं हुआ परन्तु उस न्यायी का पूरा न्याय बिचार के दिन प्रगट होगा और उसी दिन पूरा न्याय किया जायगा और क्या धर्मी क्या अधर्मी क्या आगमज्ञानी क्या गुरुज्ञानी जो कुछ परमेश्वर ने उन्हें दिया वैसा ही उन से लेखा लिया जायगा और हर एक को उन की अन्तर्गति और चाल चलन के समान ठीक ठीक प्रतिफल देगा और एक को जब किसी बात के लिये प्रतिफल देगा तो दूसरे को उस बात के लिये कभी न छोड़ेगा जैसे मत्ती २५ पर्ब्ब और प्रकाशित के २० पर्ब्ब में लिखा है। सो ईसाई मत में परमेश्वर के न्याय का महत्व सूर्य्य की नाईं जगप्रकाशक है। भला यह तो निश्चय हुआ कि बैबल की रीति से परमेश्वर न्यायी है।

परमेश्वर दयालु है।

३ अब बिचार किया चाहिये कि परमेश्वर दयालु भी है कि नहीं* ऐसा न हो कि उस का न्याय उस की दया को कहीं कलंक लगावे। जब परमेश्वर मूसा पर प्रगट हुआ तो अपने बिषय मे यों कहा† कि मैं प्रभु परमेश्वर दयालु और कृपालु और धीर और सच्चाई और भलाई में अधिक हूं। और गीतपुस्तक में भी लिखा है‡ कि प्रभु दयालु और कृपालु और वह क्रोध में धीमा और उस की दया अपरंपार। आगमज्ञानियों की पुस्तक में भी यही है§ कि हे प्रभु कौन तेरे

* देखो ३ पृष्ठ। † यात्रा ३४ : ५, ७। ‡ गीत १०३ : ८। § मीक. ७ . १८।

समान है जो पापों को क्षमा करता है और अपने अधिकार के बचे हुए लोगों के पापों पर दृष्टि नहीं करता वह प्रतिदिन क्रोध में नहीं रहता क्योंकि दया करने में वह हर्षित होता है । और इंजील में भी लिखा है* कि परमेश्वर बड़ा दयावान् और दयाशील है । और जैसा आप दयालु है वैसा ही उस ने आज्ञा दिई कि मनुष्य भी दयावन्त होवें जैसे लिखा है† कि जिस प्रकार तुम्हारा पिता दयालु है वैसा ही तुम भी दयालु होओ । इन पदों से निश्चय होता है कि बैबल में तो परमेश्वर दयालु कहलाता है अब उस के कार्यों पर ध्यान किया चाहिये जिस्तें अच्छी रीति से प्रगट हो कि सचमुच वह दयालु है कि नहीं । बैबल में लिखा है कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा को अदन की बाटिका से निकाला और पृथिवी को स्राप दिया । जलप्रलय से नूह और उस के वंश को छोड़ और सब मनुष्यों को नष्ट कर डाला । कनानियों को भी इसराएलियों के द्वारा नाश किया और यहूदियों को जो उस के ग्राह्य थे सर्वथा छिन्न भिन्न किया । क्या यही दयालु के कर्म हैं यद्यपि यह सब बातें दया की नहीं देख पड़ती हैं पर जो तनिक ध्यान से देखा जाय तो ठीक जाना जाय कि यह कर्म दयालु के हैं अथवा अन्यायी के । जिस समय आदम और हव्वा ने पाप किया तो परमेश्वर ने अपने न्याय के कारण उन्हें अदन की बाटिका से निकाला और पृथिवी को भी स्राप दिया क्योंकि वह न्यायी और पवित्र है परन्तु जहां यह लिखा है कि उन को अदन की बाटिका से बाहर निकाल दिया तहां यह भी लिखा है कि परमेश्वर ने आदम और हव्वा पर बड़ी दया किई क्योंकि उन को पाप परिताप में छोड़ न दिया वरन उन से एक

*याकूब ५ : ११ । †लूक ६ : ३६ ।

ऐसे मुक्तिदाता भेजने की प्रतिज्ञा किई कि जिस के द्वारा आदम और हव्वा और उन के सारे वंश के लिये उद्धार का मार्ग निकला। नूह के जलप्रलय से एक सौ बीस बरस पहिले परमेश्वर ने उस के द्वारा सब को जता दिया कि यदि तुम पश्चात्ताप न करोगे तो नाश होओगे उन्हों ने परमेश्वर की दया और आज्ञा को तुच्छ जाना और कुछ ध्यान में न लाये इस लिये परमेश्वर के न्याय और पवित्रता ने उन्हें प्रतिफल दिया। कनानी भी नष्ट हुए पर नष्ट होने के पहिले उन के मध्य परमेश्वर ने इब्राहीम और इसहाक और याकूब को जो भविष्यद्वक्ता थे भेजा तिस पर भी उन्हों ने परमेश्वर की दया को सर्वथा तुच्छ जाना अन्त को जब उन के पाप का नपुआ भर गया तब वे नष्ट हो गये। यहूदी भी छिन्न भिन्न हुए परन्तु पहिले परमेश्वर ने उन पर ऐसी दया किई थी कि वैसी किसी पर न किई क्योंकि उन को अपना बचन सौंपा और उन के पास भविष्यद्वक्तों को भेज दिया बरन प्रभु यीशु मसीह आप उन के बीच प्रगट हुआ। फिर जब उन्हों ने उन सब बातों को तुच्छ जानकर भविष्यद्वक्तों और मुख्य प्रभु और उस के प्रेरितों को मार डाला तब परमेश्वर की पवित्रता और न्याय की आग भड़की और उन को छिन्न भिन्न कर डाला सो इस से निश्चय है कि परमेश्वर की दया सत्य दया है कि उस के न्याय में तनिक बाधा नहीं पड़ती बरन उस की महिमा उस से प्रगट होती है।

फिर उस सर्व दयासागर ने निज करके मनुष्य की मुक्ति के उपाय से अपने दया के सूर्य्य को संसार पर ऐसा उदय किया कि जिस की ज्योति से दूतों को भी चकचोंधी लगी और उस की स्तुति पवित्र जन और दूतगण एकाग्र और एक मुख होकर रात दिन करते हैं अर्थात् जब मनुष्य पापी

हो गये और उन के बचने की आशा कुछ न रही और ऐसी दशा पहुंची कि मनुष्य के लिये परमेश्वर की पवित्रता और न्याय के कारण नरक की आग छोड़ कोई ठिकाना और मृत्यु को छोड़ कुछ प्रतीकार न रह गया और कोई उद्धार करनेहारा दूतों और मनुष्यों में न मिला कि आप ईश्वर और मनुष्य होके एक हाथ से परमेश्वर का हाथ और दूसरे हाथ से मनुष्य का हाथ लेके धरा दे तब परमेश्वर ने अपने बड़े प्रेम का भण्डार खोला और अपनी परम दया से मुक्ति-मार्ग निकाला कि जिस करके परमेश्वर की दया ऐसी चमकने लगी कि उस के साम्हने सूर्य्य की ज्योति फीकी पड़ गई जैसे लिखा है* कि परमेश्वर ने जगत् को ऐसा प्यार किया कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दिया कि जो कोई उस पर बिश्वास करे सो नाश न होवे परन्तु अनन्त जीवन पावे। यही दया की बाचा परमेश्वर ने आदम से किई और इब्राहीम इसहाक याकूब मूसा और दाऊद से दुहराई और उन्हें छोड़ और जितने भविष्यद्वक्ता संसार में होते आये सभों ने उस पर साक्षी दिई कि परमेश्वर दयासागर है क्योंकि उस ने पापियों के लिये एक मुक्तिदाता ठहराया। और प्रभु यीशु मसीह ने जगत् को ऐसा प्यार किया कि उस का त्राणकर्त्ता हुआ और मनुष्यों की दुर्दशा देखकर उन पर दया किई शारीरिक और आत्मिक दुःख उन के लिये सहा जिस्तें वे उद्धार पावें और धर्मी गिने जावें और जब उन के कारण मुक्ति प्राप्त कर चुका तो अपना पवित्र आत्मा उन के लिये भेजा जो मनुष्यों के मनों में समाकर समझाता है कि उस बड़ी दया को ग्रहण करें और यद्यपि मनुष्य उस का कहना नहीं सुनते परन्तु अपने मन को कठोर कर लेते हैं तथापि जब

* योहन ३ : १६ ।

लग उन के बचने की आशा रहती है तब लग वह उन्हें नहीं छोड़ता। सो परमेश्वर पिता ने अपनी दया और प्रेम से अपना प्रिय पुत्र जगत् के कारण दे दिया और परमेश्वर के पुत्र ने अपनी दया और प्रेम के कारण मनुष्यों के लिये मुक्ति प्राप्त किई परमेश्वर पवित्र आत्मा अपनी दया और प्रेम के कारण मनुष्य का मन प्रकाश करता और सत्य मार्ग पर ले जाता और अगुआई करता है और जब मनुष्य को स्वर्ग के जाने के योग्य बना चुकता है तो उस को अनन्त सुख में पहुंचा देता है*। यही परमेश्वर की दया है और यही सत्य दया जो न्याय और पवित्रता में बाधा नहीं डालती परन्तु मर्य्यादा देती है।

परमेश्वर अन्तर्यामी और सर्वज्ञानी है।

सो दया का गुण तो सत्य मत के लक्षणों के समान बैबल में पाया गया अब बिचारें कि बैबल की रीति से परमेश्वर अन्तर्यामी और सर्वज्ञानी है कि नहीं† समझ पड़ता है कि अन्तर्यामी होने का गुण बैबल की रीति से परमेश्वर के विषय में है कि लिखा है‡ प्रभु उन भेदों को जो अंधियारे में हैं प्रकाश करेगा और मनों के भेदों को प्रगट करेगा। दाऊद भी कहता है § कि हे प्रभु तू ने मुझे परखा और पहिचाना तू मेरे बैठने उठने को जानता है तू मेरी दूर दूर की चिन्ताओं को समझता है तू ने मेरे मार्ग और शयनस्थान को घेरा और मेरे सारे चाल चलन को देखता है क्योंकि हे प्रभु मेरी रसना पर कोई ऐसी बात नहीं है जिसे तू सर्वथा नहीं जानता तू आगे पीछे मुझे घेरता है और तू ने अपना हाथ मुझ पर रखा है यह पहिचान मुझे निपट व्याकुल करती है यह उत्तुंग है मैं

---

*१ करिन्थ. २ . १२-१६ और १२ ३। तीतस३ : ५। रोमि. ५ : ५ और १५ : १३, १६। † देखो ३ पृष्ठ। ‡ १ करिन्थ. ४ . ५। § गीत १३९।

उस तक नहीं पहुंच सकता तेरे आत्मा से किधर जाऊं और मैं तेरे साम्हने से कहां भागूं यदि मैं स्वर्ग पर चढ़ जाऊं तो तू वहां है और यदि मै समाधि में बिछौना बिछाऊं तो देख तू वहां भी है यदि मैं उड़के सूर्य्य की ज्योति बनूं अथवा समुद्र के पार जा बैठूं तो वहां भी तेरा हाथ मेरा पता पावेगा और तेरा दहिना हाथ मुझे पकड़ेगा यदि मैं कहूं कि अंधेरे मे छिप जाऊं तो रात मेरे चारों ओर उंजियाली हो जायगी सचमुच अंधियारा तुझ से कभी छिपा नहीं सकता और रात दिन की नाईं उजियाली है रात दिन दोनों तेरे समीप बराबर हैं। इन पदों से ठीक जाना जाता है कि बैबल में अन्तर्य्यामी होने के गुण का स्पष्ट बर्णन है क्योंकि जो सारी बातों का जान्नेहारा है अवश्य है कि अन्तर्य्यामी ही है। इस के परे यह भी प्रगट है कि बैबल की रीति से परमेश्वर ने जलप्रलय का संदेश एक सौ बीस बरस पहिले दिया कि जलप्रलय आवेगा और मनुष्यों को नष्ट करेगा।* इब्राहीम इसहाक याकूब से वाचा बांधी कि उन के बंश को चार सौ बरस पीछे कनान का देश दिया जायगा† और इसराएलियों को मूसा के द्वारा कहा कि यदि वे परमेश्वर की आज्ञा पर चलेंगे तो धन्य होंगे नहीं तो समस्त संसार में तीन तेरह हो जायेंगे। और मूसा और दाऊद और भविष्यद्वक्तों के द्वारा परमेश्वर ने भविष्यद्वाणी की रीति पर यहूदी और ईसाइयों का बृत्तान्त बर्णन किया उस मे से कुछ तो पूरा हुआ और कुछ होता है और और बाते न्याय के दिन लों पूरी होंगी।

४ फिर जब परमेश्वर ने अवतार लिया तब भी यह गुण उस में प्रत्यक्ष था जैसे उस के बिषय में लिखा है‡ कि वह

---

* उत्पत्ति ६ : ३, १३। † उत्पत्ति १२ . १-७ और २६ : ३, ४ और २८ : ३-१५।
‡ योहन २ : २४, २५।

सब को जानता था और कुछ अवश्य न रखता था कि कोई मनुष्य के बिषय में साक्षी दे क्योंकि जो कुछ मनुष्य में था जानता था। और उस ने संदेश दिया था कि यहूदा इस्करियोती मुझ को पकड़ावेगा और यहूदी लोग मेरा बैर रखके मुझ को रूमियों को सौंप देंगे और मैं क्रूश पर लटकाया जाऊंगा और मर जाऊंगा फिर तीसरे दिन जी उठूंगा। फिर कहा कि वे मेरे सब शिष्यों को भी सतायेंगे और यरूशलीम नष्ट हो जायगा और मन्दिर का एक पत्थर दूसरे पत्थर पर न रहेगा और इंजील यरूशलीम से आरंभ होके सारे जगत् में सुनाई जायगी। यदि इन बातों में कुछ सन्देह हो तो तिथिग्रन्थ में देख लो।* मसीह के चालीस बरस पीछे रूमियों के राजा वेस्पेश्यान ने अपने बेटे तीतस को भेजा जिस ने आके यरूशलीम को घेर लिया और उस के सिपाहियों ने मन्दिर को सर्वथा नष्ट किया यहां लों कि उस का कुछ नाम ठाम भी न रहा और मसीह के शिष्य भी हर भांति से सताये गये और इंजील यरूशलीम से प्रारंभ होके आज लों सारे जगत् में सुनाई जाती है सो अन्तर्ज्ञानी को छोड़ कौन ऐसे २ समाचार को पहिले से कह सकता है। पवित्र आत्मा में भी यह गुण है क्योंकि समस्त भविष्यद्वाणियां उसी के द्वारा प्रगट हुईं जैसे लिखा है† कि तुम यह सब से पहिले जानते हो कि पुस्तक में हर एक आगम की बात आप से आप वर्णन नहीं किई गई क्योंकि आगम की बात मनुष्यों की इच्छा से कभी नहीं हुई परन्तु परमेश्वर के पवित्र लोग आत्मा के बुलवाये बोलते थे। इन बातों से ठीक जाना जाता है कि अन्तर्ज्ञानी होने का गुण बैबल की रीति से परमेश्वर मे साक्षात् है और यह सब समाचार भविष्यद्वाणी के लक्षण

* देखो आगम की बात—अध्याय चौथा। †२ पितर १. २०, २१।

में स्पष्ट वर्णित होंगे। फिर ईश्वर का सर्वज्ञानी होना इस से भी निश्चित है कि बैबल की रीति से परमेश्वर सब लोगों की अवस्था और आवश्यकता को आदि से अन्त लों जानता है और सब लोगों के लिये एक ही मुक्ति का मार्ग ठहराया जिसे सब मान सकते और उस से सब उद्धार पा सकते हैं। भला वह मुक्ति का मार्ग कौन है जिस के द्वारा परमेश्वर पाप का भी दण्ड देता है और पापियों को भी क्षमा करता है। यदि सारे जगत् के लोग क्या बुद्धिमान क्या ज्ञानमान क्या धनमान क्या कंगाल क्या छोटे क्या बड़े पूर्व पश्चिम उत्तर दक्षिण से एकट्ठे होवें और स्वर्ग पर जाके वहां के सब दूतगण के संग जिन की समझ बूझ अत्यन्त है और उन का ज्ञान भी अकथ्य है मिल बैठें और जो ज्योतिमण्डल से उंजियाला पाके समस्त संसार का भेद जान सकते वह भी एकत्र होवें और परामर्श करें और चिन्ता के अथाह समुद्र मे डूवें और अपने बूझ विचार के रोकड़ को उस सूक्ष्म के निर्णय करने में उठावे और अपनी चिन्ताओं के उड़नखटोलनों पर बैठके पाताल से स्वर्ग और स्वर्ग से पाताल तक पहुंचें वरन जगत् की सारी लंबाई चौड़ाई और गहिराई में फिरे और स्वयं ब्रह्म परमेश्वर का न्याय और दया और समस्त पराक्रम को विचारे और भलाई बुराई से और खोट निष्खोट से और बैर प्रीति से तौलें और उस की पवित्रता न्याय और सच्चाई को मनुष्यों की अपवित्रता और अघ और असत्य से मिलान करके चाहें कि एक ऐसा पथ निकालें कि जिस से परमेश्वर पापों का यथायोग्य दण्ड भी दे और पापियों का उद्धार भी करे तो कभी न पावेंगे और उन के यह श्रम क्लेश और बूझ विचार उस भेद के जान्ने में केवल व्यर्थ होंगे। ऐसा पथ निकालनेहारा वही अद्वैत परमेश्वर है जो

पिता पुत्र पवित्र आत्मा है जिस से परमेश्वर के सब गुण बड़ाई पाते हैं और उस का सर्वज्ञानी होना प्रगट होता है और ऐसा मुक्तिमार्ग कि जो न केवल एक ही जाति और एक ही देश और एक ही समय के लोगों के लिये है बरन समस्त देश के लोगों के लिये जो आदम के समय से आज लों उत्पन्न हुए और अब लों बने हैं और अन्त लों उत्पन्न होंगे परमेश्वर को छोड़ कोई नहीं निकाल सकता। सच तो यों है कि जो किसी की बुद्धि में न आई वह उस सर्वज्ञानी ने कर दिखाई यही परमेश्वर का सर्वज्ञानी होना और सत मत का पक्का लक्षण है।

परमेश्वर सत्य है।

५ अब हम सर्वज्ञानी होने के गुण के सोते से तृषा मिटाके प्रश्न करते हैं कि परमेश्वर सत्य और सत्यवादी है* अथवा नहीं। बैबल में परमेश्वर बारंबार सत्य कहलाता है जैसे लिखा है† कि तेरी दया आकाश से ऊंची है और तेरी सच्चाई बादलों तक है।‡ प्रभु के सारे पथ उन के लिये जो उस की बाचाओं को ध्यान मे रखते हैं दया और सच्चाई है।§ तेरी सच्चाई अपरंपार सच्चाई है तेरी व्यवस्था सत्य है।‖ तू ने अद्भुत कर्म किये तेरे परामर्श सनातन से सत्य और ठीक हैं।¶ तू हे परमेश्वर पवित्र और सत्य है तेरे काम अकथ्य और अगम्य है हे प्रभु परमेश्वर।** सर्वसामर्थी तेरे पंथ सच और ठीक हैं।†† हे प्रभु परमेश्वर सर्वसामर्थी तेरे न्याय सच्चे और यथार्थ हैं। इन पदों से प्रगट है कि सच्चाई का गुण बैबल के समान परमेश्वर के बिषय में है और उन सारी पुस्तकों मे एक बात ऐसी नहीं है जिस से परमेश्वर की

---

* देखो ४ पृष्ठ। † गीत ५७ १०। ‡ गीत २५. १०। § गीत ११९. १४२। ‖ यश २५. १। ¶ प्रकाश. ६. १०। ** प्रकाश. १५ ३। †† प्रकाश. १६. ७।

सच्चाई में हानि होवे। झूठ बोलना बर्जित है और बैबल के समान ऐसा पाप है कि झूठ बोलनेहारा कभी स्वर्ग मे प्रवेश नहीं कर सकता जैसे लिखा है कि * टोन्हे छिनले हत्यारे मूर्त्तिपूजक और जो कोई झूठ का कहने और चाहनेहारा है स्वर्गहीन है। यद्यपि बैबल के लिखने में सोलह सौ बरस लगे अर्थात् मूसा के समय से लेके योहन के समय तक तौभी एक बात दूसरे के बिरुद्ध नहीं। † बैबल के समान आदि से अन्त लों सब लोगों के त्राण का मार्ग एक ही है पहिले आदम के समय से मूसा तक लोगों ने उस आनेहारे पर बिश्वास लाके बलिदान किया और वे उस आनेहारे बलिदान के कारण ग्राह्य हुए। फिर मूसा के समय से भी वही पहिला पंथ स्थिर रहा और निषेध नहीं हुआ बरन पहिले आचरण के समान परमेश्वर ने मूसा के द्वारा और अधिक ठहराया अर्थात् खाने पीने बस्त्र पहिन्ने और यरूशलीम में प्रतिवर्ष तीन बार एकट्ठे होने इत्यादि के विषय और मूसा और दूसरे भविष्यद्वक्तों के द्वारा खोल खोलके कहा कि वे सब बिधि व्यवहार जस के तस रहेंगे जब लों मसीह न आवेगा। और इन विधि व्यवहारों के बिषय का तौरेत और गीतपुस्तक और भविष्यद्वक्तों की पुस्तक और इंजील में स्पष्ट बर्णन है कि पहिले परमेश्वर ने चाहा कि यहूदियों को अपने बचन का जुगानेहार करे और उन में आप अवतार लेवे इस लिये उस ने ऐसा बिधि व्यवहार ठहराया कि जिन करके यहूदी और लोगों से न्यारे रहें। जब यह अभिप्राय पूरा हो चुका तो उन बिधि व्यवहारों का कुछ प्रयोजन न रहा क्योंकि सब बाते पूरी हो चुकीं। ‡ दूसरे जो आदम के समय से मसीह

---

* प्रकाश. २२ : १५। † इब्र. १ पर्ब्ब। ‡ विवाद १८ : १५-१७। प्रेरित. ३ : २२-२६। यरमि. ३१ : ३१-३४। इब्रियो की समस्त पत्री।

तक लोगों ने बलिदान चढ़ाया और जो बलिदानों के बिधि व्यवहार विशेष करके यहूदियों में स्थापित थे वे सब प्रभु यीशु मसीह के लक्षण थे। परमेश्वर ने उस आनेहारे बलिदान पर दृष्टि करके पापियों और उन के बलिदानों को ग्राह्य किया परन्तु सचमुच वे केवल चिन्ह और प्रतिबिम्ब की रीति पर थे मुख्य बलिदान प्रभु यीशु मसीह था जैसे कि इबरानियों की पत्री में स्पष्ट वर्णन है। इस लिये जब प्रभु यीशु मसीह आप जगत् में आके बलिदान हुआ तो ये सब बातें पूरी हुईं। और कुछ प्रभु यीशु मसीह इस लिये नहीं आया कि अगिले पंथ को निषेध करे बरन उस के पूरा करने को आया जैसे लिखा है।* यह बिचार मत करो कि मैं इस लिये आया हूं कि तौरेत और भविष्यद्वक्तों की पुस्तकों को उठा देऊं मैं उठा देने को नहीं आया बरन पूरा करने को आया हूं क्योंकि मैं तुम से सत्य कहता हूं कि जब लग स्वर्ग और पृथिवी बिलाय न जाय एक बिंदु अथवा एक बिसर्ग तौरेत से जाता न रहेगा जब लों कि सब पूरा न होवे। फिर जब उन बलिदानों का अभिप्राय पूरा हो चुका तो फिर उन पर चलने से क्या लाभ बरन हानि है। इन बातों के समान जब प्रभु यीशु मसीह एक पहाड़ पर चढ़ गया और उस का स्वरूप सूर्य्य के समान चमकने लगा तो उस समय मूसा जिस के द्वारा तौरेत है और इलियास जो मूसा से लेके मसीह तक जितने भविष्यद्वक्ता आये सब से श्रेष्ठ है प्रभु की सेवा में उपस्थित थे कि एक शब्द स्वर्ग से आया कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिस से मैं प्रसन्न हूं तुम उस की सुनो—मत्ती १७ : १—५ पद। फिर सारे बैबल में जहां जहां मनुष्य के पाप क्षमा किये जाने और परमेश्वर के समीप उस के ग्राह्य होने

* मत्ती ५ : १७।

का संदेश है तहां तहां सर्वत्र मंगलसमाचार अर्थात् इंजील को साक्षात् जानो चाहे वह स्थान तौरेत में हो चाहे गीतपुस्तक में अथवा भविष्यद्वक्तों की पुस्तक में अर्थात् जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा से कहा कि स्त्री का वंश सांप का शिर कुचलेगा और वह उस की एड़ी को काटेगा और इब्राहीम से कहा कि तेरे वंश से सारे संसार के घराने आशीष पावेंगे सो वह इंजील ही है। और ऐसे ही गीतपुस्तक में और भविष्यद्वक्तों की पुस्तकों में भी सहस्रों वचन हैं और इंजील में यों लिखा है कि व्यवस्था हमें मसीह लों पहुंचाने को हमारी गुरु है जिसते हम मसीह के बिश्वास से धर्मी ठहरें—गलातियों का ३ : २४। तात्पर्य्य यह है कि बैबल की रीति से जब मनुष्य पापी न था तब मुक्ति उस की करणी से थी पर जब पापी हो गया तो यीशु मसीह पर विश्वास करने से उस की मुक्ति ठहरी। और इन दोनों पथ का वर्णन तौरेत और गीतपुस्तक और इंजील में है कि एक नरक को दूसरा स्वर्ग को ले जाता है। धन्य वह जिस के अन्तःकरण की आंखें खुली हैं और अपनी करणी का भरोसा छोड़के सारे बैबल में तौरेत से लेकर प्रकाशितवाक्य पुस्तक तक मसीह पर बिश्वास करने का पथ समझकर उस को अंगीकार करता और मसीह के समान पवित्र होके उस के अनुग्रह से स्वर्ग मे जाने की आशा रखता है। इस बात के विषय में इस पुस्तक के जिस पृष्ठ में यह चिन्ह ☞ मिलेगा और बातें पाई जायेंगी। सो उद्धार का मार्ग अगिले लोगों और अब के लोगों का एक ही है और अन्त लों एक ही रहेगा अर्थात् मनुष्य अपनी करणी से नहीं बरन यीशु मसीह की करणी और उस के बलिदान होने से पापमोचित होता और धर्मी गिना जाता और पवित्र होके स्वर्गलोक को प्राप्त

करता है। इस लिये ईसाइयों की पुस्तक एक बड़े मन्दिर से उपमा दिई गई है कि तौरेत उस की नेव गीतपुस्तक और भविष्यद्वक्तों की पुस्तक उस के नीचे का खण्ड और इंजील उस के ऊपर का खण्ड है और उसी से सारे मन्दिर की शोभा है यदि उस मन्दिर से एक ईंट अर्थात् बैबल से एक पत्रा अथवा एक पद निकालें तो सारे मन्दिर में हानि हो जावे।

और जिस भांति ये पुस्तक एक दूसरे से बिरुद्ध नहीं वैसा ही लौकिक विद्या से भी बिरुद्ध नहीं और ऐसी २ बातें कि सूर्य पंक की नदी में डूबता है अथवा मधु दूध इत्यादि के समुद्र हैं अथवा ऐसे २ पर्वत जो लाखों क्रोश ऊंचे हैं और सच पूछो तो इन में एक भी कहीं नहीं है पर सूर्य की व्यवस्था में कहीं २ कुछ लिखा है कि मानो वह चलता है यद्यपि पृथिवी चलती है परन्तु इस का कारण यह है कि मनुष्यों की बोलचाल यों ही है और कि यों ही प्रत्यक्ष देख पड़ता है। और बैबल में परमेश्वर मनुष्य से मनुष्य की रीति बात करता है कि मनुष्य की समझ में अच्छी रीति से आवे। इस के परे बैबल कुछ लौकिक विद्या की शिक्षा के लिये नहीं बरन धर्म के निमित्त है कि जिस में संसार का भला होवे और सब का परलोक बने।

अब वर्णन हो चुका कि परमेश्वर सच्चा है और उस की सच्चाई इन बातों से निश्चित हुई कि यद्यपि यह पुस्तक सोलह सौ बरस के मध्य लिखी गई पर तौभी उस की एक बात दूसरी से बिरुद्ध नहीं और आदि से अन्त लों मुक्तिमार्ग भी एक ही है।* और लौकिक विद्या से भी इस में कुछ बिरुद्ध नहीं। सो यह गुण भी ऊपर के लक्षणों से अच्छी रीति

* इब्र. ११ और १२ पर्ब्ब का १ और २१ पद इत्यादि।

से मिलता है इस लिये सत मत का एक और लक्षण परमेश्वर की महिमा के बिषय हाथ लगा है।

परमेश्वर सर्वसामर्थी है।

६ अब सत्यता के गुण के बर्णन से शांति पाके प्रश्न करते हैं कि बैबल के समान परमेश्वर सर्वसामर्थी है कि नहीं। * यह गुण तो बैबल में जैसा कि चाहिये बर्णित है परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा कि मैं सर्वसामर्थी हूं † गीत और भविष्यद्वक्तों की पुस्तकों में भी यही बात है और मसीह अपने बिषय में कहता है कि मैं अलफा और ओमेगा आदि और अन्त हूं जो है जो था जो आनेहारा सर्वसामर्थी ‡ इस के परे परमेश्वर ने आप अपने को सर्वसामर्थी ठहराया कि जगत् को उत्पन्न किया और सब का प्रतिपालन करता है। इस से जाना जाता है कि परमेश्वर बैबल के समान सर्वसामर्थी है पर कितने सन्देह करते हैं कि यदि परमेश्वर सर्वशक्तिमान और पवित्र है तो किस लिये शैतान को और पाप को नष्ट नहीं करता। बैबल में इस बात के बिषय में यों लिखा है कि वह सर्वशामर्थी होके पाप और पापी और पापात्मा अर्थात् शैतान को एक क्षणमात्र में नाश कर सकता है परन्तु ऐसे कुछ गुप्त कारण से जो केवल उसी को मालूम हैं नहीं चाहता बरन उस की यह इच्छा है कि हर एक उस की सृष्टि में से चाहे भला करे चाहे बुरा परन्तु न्याय के दिन उन्हें अपने सारे कामकाज और चालचलन और चिन्ता भावना का लेखा देना पड़ेगा और उसी दिन परमेश्वर पापियों को दण्ड और धर्मियों को प्रतिफल देगा। पाप के होने का कारण कोई मनुष्य अच्छी रीति से बर्णन नहीं कर सकता और यह

* देखो ४ पृष्ठ। † उत्पत्ति १७ : १। ‡ प्रकाश. १ : ८।

बात ईसाई मत के ठहराने से कुछ प्रयोजन भी नहीं रखती यह मत सत्य हो चाहे असत्य पर पाप का होना तो है और उस का होना ईसाई मत से नहीं क्योंकि यद्यपि ईसाई मत का नाम ठाम भी संसार में न होता तौभी पाप है और इस मत का सारार्थ यह है कि पाप कैसे मिटे और मनुष्य उस से कैसे बचे न कि वर्णन करे कि उस का होना किस लिये हुआ ।

फिर जब परमेश्वर ने अवतार लिया तो क्या उस समय में भी सर्वसामर्थी था । जाना जाता है कि तब यह गुण प्रगट नहीं हुआ क्योंकि उस ने खाया पिया सोया थका प्रार्थना किई बैरियों ने उसे पकड़ा और क्रूस पर खींचा फिर वह मर गया और गाड़ा गया । इन बातों से प्रगट है कि यह सर्वसामर्थी के लक्षण नहीं बरन मनुष्य के हैं यही बात बैबल और सब ईसाई कहते हैं क्योंकि लिखा है कि वह न केवल परमेश्वर परन्तु मनुष्य भी था । और बैबल में कहीं नहीं लिखा है कि उस का मनुष्यत्व सर्वसामर्थी था परन्तु उस के ईश्वरत्व में यह गुण था वह मनुष्य होकर बालक बना तरुण हुआ खाया पिया सोया थका प्रार्थना किई क्रूस पर खींचा गया फिर मर गया ।* निदान पाप को छोड़ मनुष्य के सब लक्षण उस में प्राप्त थे और यदि यह लक्षण उस में न होते तो मनुष्य न होता फिर क्योंकर मनुष्य की सन्ती दुःख उठा सकता और उस के उद्धार का कारण होता । योशु मसीह मनुष्य होकर दुःख क्लेश में पड़ा और मरा परन्तु परमेश्वर होके इन सब से परे रहा परमेश्वर हर प्रकार के दुःख से न्यारा है और बैबल की रीति से योशु मसीह पर-मेश्वर है इन दोनों बातों से यह अर्थ निकलता है कि जो

* १ तिमो. २ : ५ । इब्र. २ . ९ से १८ ।

कुछ दुःख क्लेश यीशु मसीह को था सो उस के मनुष्यत्व को था वह मनुष्य था और परमेश्वर भी था परन्तु मनुष्य होकर सर्वसामर्थी न था और परमेश्वर होकर सर्वसामर्थी था और उस ने सर्वसामर्थी होकर आश्चर्य कर्म दिखाये। भविष्यद्वक्तों ने परमेश्वर के नाम से आश्चर्य दिखाये परन्तु यीशु ने आप परमेश्वर होकर उन्हें अपने नाम से प्रगट किये अन्धों को आंख लंगड़ों को पांव टुण्डों को हाथ बहिरों को कान दिया कोढ़ियों को पावन किया पिशाचों को भगाया मृतकों को जिलाया थोड़ी सी रोटियों से दस पांच सहस्र मनुष्यों को खिलाया समुद्र पर चला बयार और लहरों को रोका और उन सब कामों को केवल आप ही नहीं किया बरन अपने शिष्यों को भी सामर्थ्य दिई कि ऐसे २ अद्भुत कर्म करें। * सो उन्हों ने भी मसीह के नाम से वैसे ही काम किये [देखो मत्ती मार्क लूक योहन और प्रेरितों की क्रिया मे]। इन बातों पर ध्यान करने से निश्चित है कि प्रभु यीशु मसीह सर्वसामर्थी है क्योंकि जो ऐसा आश्चर्य अपने नाम से कर सकता है जैसे उस ने किये अरु औरों को भी ऐसे कर्म करने की सामर्थ्य दिई तो निश्चय वह प्रभु परमेश्वर सर्वसामर्थी है। उसी से स्वर्ग पृथिवी उत्पन्न हुए जैसे लिखा है कि प्रभु यीशु मसीह के द्वारा सब कुछ उत्पन्न हुआ और उसी से सारी बस्तें देखी और अनदेखी जो स्वर्ग और पृथिवी में हैं क्या सिंहासन क्या प्रभुता क्या प्रधानता क्या अध्यक्षता उत्पन्न हुईं सारी बस्तें उस से और उस के लिये उत्पन्न हुईं। † सो तात्पर्य्य इस का यह है कि सर्वसामर्थी होने का गुण भी ऊपर के लक्षणों के समान ईसाई मत में परमेश्वर के विषय निश्चित है।

---

* मत्ती १० पर्व्व। लूक ८. १-६। † कल. १. १६।

परमेश्वर एक है।

७ अब हम प्रश्न करते हैं कि बैबल की रीति से परमेश्वर एक है कि नहीं।* बैबल में बारंबार लिखा है कि परमेश्वर एक और उसे छोड़ दूसरा कोई परमेश्वर नहीं जैसे तौरेत में लिखा है।† सुन हे इसराएल हमारा प्रभु परमेश्वर एक परमेश्वर है। फिर भविष्यद्वक्तों की पुस्तक में प्रभु यों कहता है‡ कि मैं आदि और अन्त और मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं§ मैं ही परमेश्वर हूं दूसरा कोई नहीं मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं। और इंजील में लिखा है‖ कि वह प्रभु जो हमारा परमेश्वर है एक ही परमेश्वर है। सो परमेश्वर एक है और उसे छोड़ और कोई नहीं और यह भी लिखा है कि मूर्त्ति कुछ वस्तु नहीं और कोई परमेश्वर नहीं केवल एक। यद्यपि स्वर्ग और पृथिवी में बहुत से देवते कहलाये जाते हैं जैसे भ्रान्त बहुतेरे देव और बहुतेरे प्रभु को मानते हैं परन्तु हमारा परमेश्वर एक है¶ इन पदों से प्रगट है कि बैबल की रीति से परमेश्वर एक और उसे छोड़ कोई दूसरा परमेश्वर नहीं। और जो कहता है कि इस एक परमेश्वर के परे दूसरा कोई परमेश्वर है वह परमेश्वर को झूठा बनाता है क्योंकि उस ने कहा कि मै एक हूं और मुझे छोड़ कोई दूसरा नहीं। सृष्टि में सहस्रों लाखों वस्तु हैं पर उन में से हर एक को अपने अपने पद के समान मान्ना चाहिये जैसे सूर्य्य सूर्य्य को मान्ना और जल जल को और मनुष्य मनुष्य को मान्ना इत्यादि। परन्तु सारी सृष्टि मे किसी को परमेश्वर करके न मान्ना वह तो एक है और सृष्टि से परे और सब पर

---

* देखो ४ पृष्ठ। † विवाद ६ ४। ‡ यस. ४४ : ६। § यस. ४५ . ५। ‖ मार्क १२ : २९, ३२। ¶ १ कर. ८ . ४–६। गल. ३ . २०।

प्रधान है और उस एक परमेश्वर में तीन हैं अर्थात् पिता पुच पवित्र आत्मा। * और वे कुछ तीन परमेश्वर नहीं बरन एक अद्वितीय परमेश्वर हैं। क्योंकि लिखा है कि जो स्वर्ग पर साक्षी देते हैं तीन हैं पिता पुच पवित्र आत्मा और यह तीनों एक ही हैं और जब कि यह बैबल से बहुत प्रमाणिक है कि पिता पुच पवित्र आत्मा तीन नहीं परन्तु एक परमेश्वर हैं इस लिये हमें चाहिये कि उस पदार्थ को हम यों ही समझें और मान लेवें और मिथ्या वाद बिवाद न करें क्योंकि लिखा है कि † पिता पुच एक है और मसीह कहता है कि जिस ने पुच को देखा पिता को भी देखा क्योंकि मैं और पिता एक हूं। और यद्यपि एक हूं तौभी तीन जैसे लिखा है कि ‡ पिता ने पुच को जगत् में भेजा और पुच ने अपना प्राण मनुष्यों के लिये बलिदान किया। § फिर पवित्र आत्मा पिता और पुच से निकलता है। ‖ और मनुष्य का मन प्रकाश करता है और उन में बिश्वास उपजाता और उन्हें स्वर्ग के जाने के योग्य बनाता है। और बैबल की रीति से मनुष्यों के उद्धार के लिये तीन का एक होना अवश्य है क्योंकि उस बिना कोई मनुष्य उद्धार नहीं पा सकता। परन्तु जगत् के लोग जिन्हें अभी निश्चय के फल का स्वाद नहीं मिला है और इस भेद की थाह को नहीं पहुंचे कहते हैं कि यह बात हम कभी नहीं समझते इस लिये ग्रहण भी नहीं कर सकते हैं। यद्यपि यह ऐसी सूक्ष्म बात है कि जब ऊपर की बातों को जो हर भांति के प्रमाणों से प्रमाणिक हो चुकी अपने मन में निश्चय करे तो आप से आप इस बात का भी प्रावरण टल जाय और उस भेद का मुखड़ा उस की बुद्धि मुकुर में

---

* मत्ती २८ : १९ । १ योहन ५ : ७ । † योहन १० · ३० । और १४ : ९ । ‡ १ योहन ४ : ९ । § मत्ती २० : २८ । १ तिमो. २ . ६ । ‖ योहन १५ . २६ और २० : २१, २२ । गल. ४ : ६ ।

दिखाई पड़े तौभी वह गुप्त भेद रहेगा और इस में कुछ आश्चर्य्य नहीं क्योंकि ईश्वरत्व को बरन सृष्टि की भी बहुतेरी ऐसी बातें हैं जो हमारी समझ में नहीं आतीं पर तौभी उन्हें मान लेते हैं जैसे कि परमेश्वर सर्वव्यापी और सर्वदर्शी है। भला यह क्योंकर हो सकता है कि जिस घड़ी परमेश्वर यहां सम्पूर्ण उपस्थित हो तो उसी घड़ी दूसरी ठौर में भी सम्पूर्ण उपस्थित हो यद्यपि हम जानते हैं कि सचमुच ऐसा ही है परन्तु किस भांति से है सो हम नहीं जानते क्योंकि वह समझ से दूर है और अल्पबुद्धि अल्पज्ञान अपरंपार गुण के समुद्र का पार क्योंकर पावे। फिर किस ने आज लों समझ बूझके बर्णन किया कि लड़का मा के पेट में किस रीति से बन जाता है और कौन बतला सकता है कि आकाश की सीमा कहां है यह तो सृष्टि की बातें हैं जो हम देखते और बिषय की भावना से बिचार कर सकते हैं पर तौभी उन का सारा भेद नहीं पा सकते। जब सृष्टि में ऐसी कठिन बातें हैं तो क्या सृष्टिकर्त्ता में कुछ कठिन बात होने से आश्चर्य्य है। सो यदि एक बात उस अद्वैत परमेश्वर के बिषय में बुद्धि के प्रमाण बिना निश्चय कर लेवें और उस के कहे से मान लेवें तो क्या अचरज है। इस के परे संसार में भी कितनी वस्तुन से तीन का एक होना प्रगट है और यद्यपि हम समझते हैं कि वह ऐसा ही है तौभी उस के होने की रीति समझ नहीं सकते जैसे मनुष्य शरीर और प्राण और आत्मा से बना है और ये तीनों अलग अलग हैं परन्तु सच-मुच एक ही मनुष्य हैं और उन के एक होने की रीति कोई नहीं कह सकता इसी प्रकार आग की भी बात है कि एक आग और एक ज्योति और एक उष्णता है और उष्णता कुछ ज्योति नहीं और ज्योति कुछ उष्णता नहीं और आग कुछ

उष्णता से पहिले नहीं और न उष्णता कुछ आग से पहिले और आग इन दोनों से अलग है तौभी वे तीनों तीन आग नहीं बरन एक ही आग हैं। इसी रीति संसार की सहस्रों बातें हैं जो बुद्धि में नहीं आतीं। फिर जिस दशा में कि इस छोटे से जगत् में ऐसी २ बातें हैं तो क्या उस महत् ईश्वरत्व में ऐसी कोई बात नहीं हो सकती जो मनुष्य की बुद्धि में न आ सके और इस बात को बुद्धिमान से मूर्ख तक मान लेते हैं कि परमेश्वर असीम अनादि और अनन्त है। और उस के सम्पूर्ण ज्ञान दूतों के ध्यान में भी नहीं आते फिर मनुष्य क्योंकर जान सके। सो यदि ईश्वरत्व मे तीन एक का भेद वैसा ही समझे तो बुद्धि के समीप कुछ अचंभित नहीं। इस्से अधिक बैबल में लिखा है कि जो उस अद्वितीय परमेश्वर के परे दूसरे को परमेश्वर समझे तो वह पापी है और स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता जैसे लिखा है* कि भयमान और अविश्वासी और घिनौने और हत्यारे और छिनले और टोनहे और मूर्त्तिपूजक और सारे झूठे उसी झील में जो आग और गन्धक से जलती है एक संग पड़ेंगे यह दूसरी मृत्यु है। इस प्रसंग पर एक बात की सुर्त आई है कि मसीह के चार सौ बरस के पीछे अगस्तीन नामे ईसाई मत का एक आचार्य्य था एक दिन इसी बात की चिन्ता के भंवर में डूबा था कि पिता पुत्र पवित्र आत्मा किस रीति से एक परमेश्वर हो सकते हैं। यद्यपि वह इन तीनों की आवश्यकता और उत्तमता को अच्छी रीति से जानता था कि उन के बिना मनुष्य के उद्धार का ठिकाना नहीं जाना जाता है परन्तु मन मे यही सोचता था कि किस रीति से तीनों एक हो सकते हैं यह सूक्ष्म बात उस के मन में नहीं समाती थी। निदान उसी

* प्रकाश. २१. ८।

सोच के तरंग में पड़के बहते २ कहीं समुद्र के तीर पर जा निकला तो वहां क्या देखता है कि एक सुन्दर सुघड़ छोटे से लड़के ने बड़े यत्न और परिश्रम से रेती में एक गड़हा खोदा है और एक अंडे के छिलके में समुद्र का जल दौड़ दौड़कर भर भर ले जाता है और उस गड़हे में डाल दिया करता है। अगस्तीन ने यह चरित्र देखके उस से पूछा कि क्यों बच्चे यह तू क्या करता है। उस ने उत्तर दिया कि मेरा बिचार है कि समुद्र के सारे जल को इस गड़हे में भर दूं। अगस्तीन यह बात सुनकर हंसा और कहा कि हे भोले बच्चे तू कैसा अज्ञान है और यह तेरी कैसी समझ है भला तेरे परिश्रम से कहीं समुद्र का सारा जल उस गड़हे में जा सकता है। उस लड़के ने उस की ओर टक लगाके कहा कि भला हम तुम में से अज्ञान कौन है मैं तो चाहता हूं कि इस समुद्र को जिस की कुछ सीमा है अंडे के छिलके से गड़हे में भरूं, और तू तो चाहता है कि उस असीम अनादि और अनन्त परमेश्वर को चिन्तन से अपनी नन्ही सी खोपड़ी में लावे यह कहकर अन्तर्ध्यान हो गया। सो सारे बैबल में यह वर्णन है कि पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा तीन नहीं बरन एक अद्वितीय परमेश्वर हैं। और निश्चय हुआ कि उस के द्वारा से परमेश्वर के सारे गुण की महिमा और बड़ाई होती है और यह मनुष्य के उद्धार के लिये आवश्यक है।

परमेश्वर समभाव है।

अब एक और गुण रह गया है उस का भी विचार किया चाहिये अर्थात् परमेश्वर समभाव है। * यह गुण परमेश्वर के विषय में बैबल की रीति से प्रगट है जैसे लिखा है कि † तू ने आरम्भ से पृथिवी की नेव डाली ये सारे स्वर्ग तेरे हाथ

* देखो ४ पृष्ठ। † गीत १०२ : २५, २७।

को कृति हैं वे नाश होंगे परन्तु तू सर्वदा रहेगा हां ये सब वस्त्र की नाईं पुराने होंगे तू उन्हें बागे के समान बदल डालेगा और वे बदल जायेंगे परन्तु तू वैसा ही रहेगा तेरे बरसों का अन्त नहीं। फिर भविष्यद्वक्तों की पुस्तक में लिखा है कि मैं प्रभु हूं और बदलता नहीं। इंजील में भी * यही बात लिखी है। परन्तु यद्यपि प्रत्यक्ष लिखा है कि परमेश्वर समभाव है तौभी सोचा चाहिये कि परमेश्वर ने अपने को वचन और कर्त्तव्य से समभाव ठहराया है कि नहीं। समभाव उसे कहते हैं कि जिस के गुण स्वभाव और इच्छा विचार बदलते नहीं। बैबल में लिखा है कि परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथिवी को उत्पन्न किया संसार का पालनकर्त्ता है और लोगों को त्राण देता है। परन्तु वह तो पहिले सृष्टिकर्त्ता न था अब क्योंकर हुआ इस बात से तो असमभाव ठहरता है और जब कोई सृष्टि न थी तो किस का प्रतिपालन करता और जब मनुष्य पापी न थे तो त्राणकर्त्ता क्योंकर होता था। पर समझने की बात है कि इन बातों से उस के गुण और स्वभाव में बीच नहीं होता है और ऐसी बात किस ने कही और कौन कह सकता है। इसी प्रकार ऊपर की बातों पर दृष्टि करने से जाना जाता है कि परमेश्वर के अवतार लेने से उस के समभाव होने में अवश्य करके बट्टा लगा। भला कहीं लिखा है कि उस का ईश्वरत्व मनुष्यत्व हो गया अथवा उस का मनुष्यत्व ईश्वरत्व बना वह परमेश्वर होकर समभाव बना रहा परन्तु उस के मनुष्यत्व में बीच होता था पर उस के ईश्वरत्व में नहीं सो जैसे उस का स्वभाव जगत् के उत्पन्न करने से बदल न गया परन्तु उस की सामर्थ्य और सज्ञानता प्रगट हुई और जैसा प्रतिपालन करने से परमेश्वर

* इब्र. १. १०–१२ ।

के सोच बिचार नहीं बदले परन्तु उस को भलाई और उत्तमता प्रगट हुई इसी भांति उद्धार करने में भी उस का स्वभाव न बदला परन्तु उस की पवित्रता और न्याय और दया और प्रेम प्रगट हुआ और परमेश्वर एक ही रहा परन्तु उस के सम्बन्ध और हो गये अर्थात् वह मनुष्यों का सृजनहार और पालनकर्त्ता और मुक्तिदाता हुआ कुछ वह नहीं बदल गया और न उस का कोई गुण। परमेश्वर ने अवतार तो लिया परन्तु उस के सारे गुण अर्थात् पवित्रता सत्यता न्याय दया अन्तर्ज्ञानी सर्वज्ञानी सर्वशक्तिमान होना इत्यादि ज्यों का त्यों रहा बदलने की बात केवल उस के मनुष्यत्व के बिषय समझा चाहिये।

और यह जो बैबल में लिखा है कि परमेश्वर खेदित होता और हर्षित होता सुनता नहीं सुनता क्या यह समभाव के लक्षण हैं यदि बिचार न करें तो निश्चय करके वैसा ही समझ में आवे परन्तु कुछ सोचने से जाना जाता है कि परमेश्वर सचमुच नहीं बदलता * पर मनुष्यों से मनुष्य की रीति बोलता नहीं तो वे कैसे समझते वह उदास नहीं हो सकता क्योंकि वह तो सच्चिदानन्द सर्वदा बना रहता है। जब लिखा है कि परमेश्वर खेदित होता है इस से यह अभिप्राय है कि मनुष्यों के बिगड़ जाने और पाप करने से उन से ऐसा व्यवहार करता कि माना उन पर खेदित है। और जहां लिखा है कि परमेश्वर हर्षित होता तो उसी प्रकार से उस को भी समझा चाहिये। जैसा और मत की पुस्तकों से प्रगट होता वैसा हम सारे बैबल में कहीं नहीं पाते कि परमेश्वर आज एक आज्ञा देता और कल उसे खण्डन करता फिर अपने को पवित्र कहता और पाप को

* मलाकी ३ : ६ । यरमि. १८ : ७ ।

कारण ठहरता अपने को सच्चा कहता फिर अपने बचन को आप ही झुठलाता अथवा वह कभी एक है और कभी अनेक आज एक देह में कल दूसरी देह में आज मनुष्य रहता कल पशु हो जाता कभी बुद्धिमान है कभी ऐसा मूर्ख कि अपने को भी नहीं जानता। ऐसी बातों का चिन्ह बैबल में कहीं नहीं बरन उस में यह लिखा है कि वह यहोवाह अर्थात् स्वयंब्रह्म बदलनेहारा नहीं और उस में अदल बदल का कहीं लेश भी नहीं। [मलाकी ३ पर्व्व ६ पद और याकूब १ पर्व्व १७ पद ।] सो बैबल की रीति से परमेश्वर समभाव है और उस के बचन और कर्त्तव्य से उस के सारे गुण बड़ाई पाते हैं। अब यदि ऊपर की बातों पर कोई ध्यान करे तो साक्षात् प्रगट होगा कि ईसाई मत मे परमेश्वर के मत के लक्षण सब ऐसे मिलते हैं जैसे दहिनी आंख बाईं आंख से और बैबल मे उन्हीं के समान सारा वर्णन है इस लिये ईसाई मत में सत मत का पहिला लक्षण सूर्य के समान चमक रहा है और निश्चय है कि जगत् में यदि सत मत है तो वही ईसाई मत है।

दूसरा अध्याय।

जगत और मनुष्य की उत्पत्ति के विषय में।

चाहिये कि सत मत मे जगत् की और मनुष्य की उत्पत्ति और उस के कारण का वर्णन जो कुछ कि हो परमेश्वर की महिमा और उस के गुण के योग्य होवे जैसा ऊपर बर्णन हुआ।*

पहिले जगत् की उत्पत्ति और उस के कारण का वर्णन। बैबल से प्रगट होता है कि परमेश्वर ने स्वर्ग और पृथिवी को छः दिन में बनाया और सातवें दिन को अपनी आराधना

* देखो ४ पृष्ट।

के लिये ठहराया। उत्पत्ति की पुस्तक के पहिले और दूसरे पर्व्व में जगत् की उत्पत्ति के समाचार का स्पष्ट बर्णन है और गीत और भविष्यद्वक्तों की पुस्तक और इंजील में भी वही बर्णन है। तौरेत में लिखा है कि * आरंभ में परमेश्वर ने पृथिवी और स्वर्ग को उत्पन्न किया और भविष्यद्वक्तों की पुस्तक में लिखा है कि प्रभु जिस ने स्वर्गों को रचा। † परमेश्वर जिस ने पृथिवी को बनाया यों कहता है उस ने पृथिवी को स्थिर किया और व्यर्थ नहीं बनाया उस ने उस को बनाया जिसतें वह बसाई जावे। और इंजील में भी यही बात है ‡ कि परमेश्वर ने जगत् और सब कुछ जो उस में है उत्पन्न किया। जैसे लिखा है § कि उस से सारी बस्तें जो स्वर्ग और पृथिवी पर हैं क्या देखी क्या अनदेखी क्या सिंहासन क्या प्रभुता क्या प्रधानता क्या अध्यक्षता उत्पन्न किई गईं सारी बस्तें उस से और उस के लिये उत्पन्न हुई हैं।

जगत् की उत्पत्ति का कारण यह है कि परमेश्वर अपने को और अपने उत्तम गुणों को प्रगट करे। जैसे १९ गीत का पहिला पद और १४८ गीत और रूमियों को पत्री पहिला पर्व्व १९ और २० पद में लिखा है।

दूसरे मनुष्य की उत्पत्ति और उस के कारण का बर्णन। बैबल से जाना जाता है कि परमेश्वर ने पहिले मनुष्य को मिट्टी से बनाया और उसे अपने स्वरूप पर रचा। जैसे लिखा है ‖ कि प्रभु परमेश्वर ने मनुष्य को पृथिवी की धूल से बनया और परमेश्वर ने मनुष्य को अपने स्वरूप पर रचा परमेश्वर के स्वरूप पर उस ने उन्हें बनाया नर और नारी उन्हें उत्पन्न किया। यही बात गीत और भविष्यद्वक्तों की पुस्तक में और

* उत्पत्ति १ : १। † यस. ४ : १७। ‡ प्रेरित. १४ : १५ और १७ : २४ से २८। § कल. १ : १६। ‖ उत्पत्ति १ : २६, २७ और २ : ७।

इंजील में बहुत ठौर लिखी है परन्तु परमेश्वर के स्वरूप पर बनाने से यह तात्पर्य नहीं कि परमेश्वर ने मनुष्य के प्रगट स्वरूप को अपने स्वरूप पर बनाया बरन उस की अन्तर दशा को अपने स्वरूप पर बनाया अर्थात् जैसा परमेश्वर आप चैतन्य स्वरूप और पवित्र और सच्चा है वैसा ही उस ने मनुष्य को भी चैतन्य और धर्मी और पवित्र बनाया। जैसा लिखा है * कि नये मनुष्यत्व को जो ज्ञान में अपने सृजनहार के स्वरूप के समान नया बन रहा है पहिनो। † फिर नये मनुष्यत्व को जो परमेश्वर के समान धर्म और सत्य और पवित्रता में बना है पहिनो। जब प्रथम में परमेश्वर ने मनुष्य को बनाया तो वह पापी न था परन्तु निष्पाप और उस ने मनुष्य को इस लिये बनाया कि वह अपने सृजनहार को पहिचानके उस्से प्रीति रक्खे। ‡ और उस की इच्छा पर चले और सदा अपने सारे मन से परमेश्वर की बड़ाई करे और § अपने पड़ोसियों की भलाई करके और परमेश्वर से मेल रखके आनन्दित और मगन रहे। और यद्यपि मनुष्य ने पाप किया तौभी वही अर्थ जो निर्दोषता में उस के लिये था बना रहा परन्तु उस के प्राप्त करने की रीति बदल गई कि परमेश्वर ने एक मुक्तिदाता ठहराया और मनुष्य को अपना बचन दिया जिसतें वे उसे पहिचानें और पाप और नरक से बचें। ‖ सच पूछो तो परमेश्वर ने नरक को मनुष्य के लिये नहीं बनाया पर केवल शैतान और उस की सेना के लिये जैसे लिखा है ¶ हे स्रापितो मेरे सन्मुख से अनन्त अग्नि में जो शैतान और उस की सेना के लिये सिद्ध किई गई है जाओ। मनुष्य को निज करके

---

* कल. ३ : १० । † इफिस. ४ : २४ । ‡ उत्पत्ति १ : २३ । विवाद ६ : ४ । लूक १० : २७ । § लैव्य. १९ : १८ । मत्ती २२ : ३९ । इब्रियो १३ : १९ । याकूब २ : ८ । ‖ १ तिम. १ : १५ । हिज. १८ : २३ और ३३ : ११ । ¶ मत्ती २५ पर्ब्ब ।

स्वर्ग के लिये बनाया है पर पाप के कारण वह नरक के योग्य हुआ तौभी उसे वहां जाना अवश्य नहीं क्योंकि परमेश्वर ने ऐसा उपाय किया कि वह नरक से बचके उद्धार पा सकता है और इस उद्धार से मनुष्य ऐसा श्रेष्ठ पद प्राप्त कर सकता है कि जो उस के निष्पाप होने की दशा में नहीं हो सकता
[illegible] जब वह अपने आप नरक में जाने के योग्य ठहरा
था [illegible] ी का है। और इस बात पर उसे दोहरा दण्ड
तो दोष उ[illegible]ह कि वह परमेश्वर की आज्ञा भंग करके
मिलेगा एक [illegible]यह कि पाप के औषध को जो यीशु मसीह
पापी हुआ दूसरे [illegible] है उस ने ग्रहण न किया* और उस
का बलिदान हो[illegible]या। जैसा लिखा है कि वह जो उस का
पर बिश्वास न [illegible]ी नहीं पर वह जो बिश्वासी नहीं दोषी
बिश्वासी है† दोष[illegible]मेश्वर के एकलौते पुत्र पर बिश्वास न
हो चुका कि वह प[illegible] अपने पापों से पश्चात्ताप करके प्रभु
लाया। सो जो पाप[illegible]ास लावे वह उद्धार पावेगा पर जो
यीशु मसीह पर बिश्[illegible]गा और प्रभु यीशु मसीह पर बिश्वास
अपने पापों में बना रहे नरक मे पड़ेगा जैसे लिखा है‡ कि
न लावेगा सो निश्चय[illegible]लाता है अनन्त जीवन उसी का है
जो पुत्र पर बिश्वास[illegible]ास नहीं लाता जीवन को न देखेगा
और जो पुत्र पर बिश्व[illegible]ध उस पर है।
बरन परमेश्वर का क्रो[illegible]

[illegible]ीसरा अध्याय।

त[illegible]नुष्य के बीच में क्या सम्बन्ध है।

परमेश्वर और म[illegible]र और मनुष्य के परस्पर के सम्बन्ध
सत मत में परमेश्व[illegible]

---

* विषाद २८ : १५। गीत [illegible] : ११। रूमियों ५ : १२–२१। गल. ३ : १०। मार्क १६ : १५, १६। कर. १५ : [illegible] ४९। २ कर. ३ : १८। † योहन ३ : १८। ‡ योहन [illegible] : ३६।

का बर्णन अवश्य चाहिये । * बैबल में यह बर्णन है कि परमेश्वर मनुष्य का सृजनहार और पालनहार और सारे जगत पर प्रभुता रखता है और हर एक जीवधारी को हर घड़ी का श्वास और जीवन देता है । बैबल में कर्म्म लिखे की बात का कुछ लेश नहीं बरन उस के बिरुद्ध लिखा है कि परमेश्वर ने मनुष्य को सामर्थ्य दिया चाहे वह उसे पहिचानके उस की आज्ञा माने चाहे उसे भुलवाके उस की अवज्ञा करे मरने के पीछे अपनी करनी के समान फल पावेगा । परमेश्वर ने तो उसे ठीक २ बतला दिया है कि यह काम योग्य और यह काम अयोग्य है । आगे मनुष्य का मन जैसा चाहे वैसा करे सो इस मत के समान मनुष्यों को अवश्य है कि परमेश्वर पर बिश्वास करके उस से डरता और अपने सारे अन्तःकरण और बल बुद्धि से उसे प्यार करता और आत्मा और सच्चाई से उस का आराधना करता और हर दशा में उस का गुण गाता और हर घड़ी उस पर भरोसा रखता रहे उस के नाम और बचन को बड़ाई करता और जीवन भर सच्चे मन से उस की आराधना करता और सदा उसी की प्रार्थना करता रहे ये बातें परमेश्वर से सम्बन्ध रखती हैं । समझा चाहिये कि इस सम्बन्ध में यह भी है कि सब मनुष्यों को अपने जी से प्रिय रक्खे और सब से वह रीति प्रीति करे जो वह उन से चाहता हो † वह माता पिता से प्रेम रक्खे और उन की प्रतिष्ठा करे और उन की हर अवस्था में सुधि लेता रहे अपने राजा और उस की ओर के अध्यक्षों का आदरमान करे और उन्हें माने और अपने स्वामी की आज्ञा की बातें और मत के प्रधानों से आधीनता रक्खे और उन

---

* देखो ४ पृष्ठ । † रुम. १२ पर्ब्ब । इफिस. ५ और ६ पर्ब्ब । १ कर. १३ पर्ब्ब । मत्ती ५ और ६ पर्ब्ब ।

की प्रतिष्ठा करे बड़ों के संभ्रम दीनताई से करे और अपने चलते किसी के दुःख क्लेश और क्षति का कारण न होवे और अपने सब कामकाज में निष्ठा प्रमाण से रहे कभी किसी बात के निमित्त हां अपने प्राण के लिये भी झूठ न बोले किसी से बैर द्रोह न रक्खे और धूर्तता और छल छिद्रता से दूर भागे किसी पर कलंक दोष न लगावे और आप अत्यन्त चैाकसी और सुचेती से रहे और किसी से कुछ लालच न रक्खे बरन अपनी जिविका अपने बांहबल से उपराजे अपने शत्रुन से प्रेम रक्खे और उन का भला करे और अपने सताने-हारों और दुःखदायकों के लिये प्रार्थना करे जिस्तें वह अपने पिता का जो स्वर्ग पर है योग्य पुत्र ठहरे जिस रीति परमेश्वर भले और बुरे और न्यायी और अन्यायी पर सूर्य्य उदय करता उन्हें उंजियाले में रखता उन पर मेंह बरसाता और उन्हें जीविका पहुंचाता उन को जीवन और कुशल देता है बरन उस की सृष्टि में से गाय कसाई को दूध पिलाती और वृक्ष अपने काटनेहारों को फल खिलाता और छाये मे रखता है वैसा ही इस मत में मनुष्य के लिये आज्ञा है कि परमेश्वर का ऐसा स्वभाव और उस की सी पवित्रता और उत्तमता प्राप्त करें और अकेले दुकेले और मण्डली में और अपने घर के लोगों के संग परमेश्वर की पुस्तक पढ़ें और उस की आराधना करे और जो कुछ हाथ अथवा मुंह से करें सो परमेश्वर की महिमा प्रगट करने के लिये करे। इस मत में यह भी बात है कि मनुष्य को परमेश्वर से एक ऐसा सम्बन्ध है कि जिस करके अपनी सब बातों का उत्तर और अपने सब कामों का उस को लेखा देना पड़ेगा इस लिये परमेश्वर ने मनुष्य के कारण व्यवस्था ठहराई जिसते वे उस के समान सोच बिचार और बोलचाल को सुधारे। पर मनुष्य व्यवस्था

के बिरुद्ध चले और पापी हुए तिस पर भी परमेश्वर ने उन्हें पापदशा मे न छोड़ा बरन उन के लिये एक मुक्तिमार्ग ठहराया और उस मार्ग को अपने बचन अर्थात् तौरेत गीत-पुस्तक और भविष्यद्वक्तों की पुस्तक और इंजील में प्रगट किया कि परमेश्वर ने * जगत् को ऐसा प्यार किया कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दान किया कि जो कोई उस पर बिश्वास लावे नाश न होवे परन्तु अनन्त जीवन पावे । इस लिये † यह बात बिश्वास्य और समस्त प्रकार से ग्रहण करने के योग्य है कि मसीह यीशु पापियों के बचाने के लिये जगत् में आया है । जब मनुष्यों ने परमेश्वर की व्यवस्था को उल्लंघन किया और दण्ड के योग्य हुए तब मसीह ने आप व्यवस्था को पूरी कर पाप का दण्ड अपने ऊपर उठाया और अपना प्राण पापियों की सन्ती दिया इस रीति से परमेश्वर और मनुष्यों मे मेल करवाया जैसा लिखा है ‡ कि परमेश्वर ने मसीह में होके जगत् को आप से मिलाया कि उन के अपराधों का लेखा न लिया । स्वर्ग का द्वार खोला और पूरी मुक्ति मनुष्यों के लिये जोड़ी इस लिये मनुष्यों को भी उचित है कि अपने पापों से पश्चात्ताप करें अर्थात् अपने पापों को पहिचानें और उन के लिये मन से पछतावें और उन से घिनाके उन्हें छोड़ दें और प्रभु यीशु मसीह की ओर फिरें और उस पर बिश्वास लावें और उस का प्रायश्चित्त ग्रहण करके उस पर अपने निस्तार का पूरा भरोसा रक्खें और तन मन से उस की आज्ञाओं के पालन करने में लवलीन रहें । फिर जो इस चालचलन पर चलेगा मसीह उस का मन प्रकाश करके उस के पापों को क्षमा करेगा और उस को अपना पवित्र आत्मा देके उस का मन पवित्र करेगा और

---

* योहन ३ : १६ । † १ तिम. १ : १५ । ‡ २ कर. ५ : १९ ।

स्वर्ग पर जाने के योग्य बनावेगा और अन्त के दिन उसे फिर जिलावेगा और इस मृत्तिका की शरीर से आत्मिक शरीर बनावेगा और इसी भांति शैतान और पाप और मृत्यु पर जयमान कराके उसे स्वर्ग में प्रवेश करावेगा जहां वह सारे पवित्र लोगों और सब दूतों से एक मन और एक तन होकर सर्वदा उन के संग परमेश्वर के साम्हने आनन्द किया करेगा। *

चौथा अध्याय।

आश्चर्य्य और भविष्यद्वाणी के बर्णन में।

यदि ईसाई मत सत मत है तो परमेश्वर ने ऊपर के लक्षणों के समान अपनी छाप उस पर अवश्य करके किई होगी। † अब बिचार किया चाहिये कि वह छाप ईसाई मत में पाई जाती है अथवा नहीं और वह आश्चर्य्य और भविष्यद्वाणी हैं। पहिले आश्चर्य्य। जाना जाता है कि यह भी ईसाई मत में पाये जाते होंगे।

मूसा और दूसरे भविष्यद्वक्तों के आश्चर्य्यों के बर्णन में।

मूसा ने जिस के द्वारा बैबल की पहिले पांच पुस्तकें अर्थात् तौरेत लिखी गई बहुत आश्चर्य्य दिखाये। मिसर की सारी नदी रुधिर कर डाली। उस सारी भूमि को मेंडकों से भर दिया। और उस देश की धूलों से चीलरही चीलर बना डाले और झुंड के झुंड मच्छड़ उत्पन्न किये और वहां के सारे चतुष्पदों पर ऐसी उपाधि मचाई कि वे सब मर गये। फिर वहां एक

---

* योहन ५ : २४। योहन ३ पर्व्व। १ योहन ४ पर्व्व। योहन १५ पर्व्व। योहन ८ : ५१। योहन ५ : २८, २९। १ कर. १५. ४२, ४९। १ कर. १५ : ५४, ५७। प्रकाश. ५ : ५–१४। ४ पर्व्व और २० पर्व्व के ११ पद से २२ पर्व्व के अन्त तक। † देखो ५ पृष्ठ मे।

और आग बरसी कि वहां के सब लोगों के तन में फफोले उत्पन्न हो आये। इस के पीछे इतने ओले और पत्थर पड़े कि वहां की भूमि के सारे वृक्ष और सब घास पात नष्ट हो गये। तब ऐसी टिड्डी आईं कि जो कुछ ओले पत्थर से बच रहा था उन्हों ने चाट लिया। फिर एक और अन्धेर टूटी कि मिसर का सारा देश ऐसा अन्धकार से छा गया कि तीन दिन लों एक दूसरे को न देख सकता था। इस के उपरान्त मूसा ने मिसर के राजा से कहा कि आज की रात तेरे और तेरी प्रजाओं के पहिलौठे सब मर जायेंगे और वैसा ही हुआ। * परमेश्वर ने अपना क्रोध मूसा के द्वारा मिसर पर इस कारण प्रगट किया कि वहां के राजा फिरऊन ने इब्राहीम के वंश इसराएलियों को अपने देश से जाने न दिया। और बहुत ठौर लिखा है कि ये आश्चर्य्य इस लिये दिखाये गये कि मूसा स्वर्गीय दूत और भविष्यद्वक्ता ठहरे और उस का फैलाया हुआ मत ईश्वर की ओर से जाना जाय और कि परमेश्वर का नाम सारी पृथिवी पर प्रसिद्ध हो। † इस के पीछे फिरऊन ने आश्चर्य्यों से हार मानके और भय खाके इसराएलियों को जाने दिया। तब मूसा ने उन लोगों को लाल समुद्र के पास पहुंचाया। इस के उपरान्त फिरऊन ने उन्हें जाने देने से पछताके अपनी सेना समेत उस का पीछा किया कि उन्हें फिर पकड़ लावे। ‡ निदान उस ने उन्हें लाल समुद्र के तीर पर जा लिया और वे अपने दहिने बायें बड़े २ पहाड़ और साम्हने लाल समुद्र और पीछे मिसरियों की सेना देख चिल्ला २ रोने और मूसा से कहने लगे कि क्या मिसर में हमारे लिये समाधि का ठौर न था कि यहां तू हमें नाश करने को लाया है। तब

---

* यात्रा ७ पर्व्व से १२ पर्व्व तक। † यात्रा ९ : १३, १६, और १० : १, २। ‡ यात्रा १४ पर्व्व।

परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपनी छड़ी समुद्र की ओर बढ़ा उस ने वैसा ही लाल समुद्र पर किया और वहीं दो भाग हो गया और समस्त इसराएली उस में होके सूखे सूखे चले गये। और मिसरियों ने चाहा कि उन का पीछा करें परन्तु जब इसराएलियों की जथा उस पार जा पहुंची और मिसरी समुद्र के बीचो बीच थे तो परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ समुद्र की ओर फैलावे जिस्तें पानी मिसरियों और उन की गाड़ियों और उन के अश्वारों पर फिर आवे। तब मूसा ने वैसा ही किया और समुद्र का जल पहिले की नाईं फिरा। और परमेश्वर ने मिसरियों को समुद्र में डुबाया और एक भी उन में से न बचा। और इसराएली यह बड़ा आश्चर्य्य जो परमेश्वर ने उन पर प्रगट किया देखके डर गये और परमेश्वर और उस के दास मूसा पर बिश्वास लाये।*

फिर मूसा परमेश्वर की आज्ञा से इसराएलियों को अरब के अरण्य की ओर ले गया और जब वहां उन्हें जल न मिला तो मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा से अपनी छड़ी लेकर चटान पर मारी और उस से जल निकल आया और वह जल नदी की नाईं अरण्य में बहा † फिर जब रोटी न मिली तो स्वर्ग से मन्न बरसने लगा जो हर प्रातःकाल उन के तंबुओं के आसपास ओस की नाईं पड़ता था ‡ वे उसे बटोर २ रींधते और खाते थे। इसी प्रकार चालीस बरस लों बन में फिरा करते और यही खाया करते थे न उन के पांव फूलते न उन के वस्त्र पुराने होते थे। § कदाचित् कोई यह समझे कि उस समय मूसा के संग थोड़े मनुष्य थे सो नहीं लिखा

* यात्रा १४ . २६–३१। † यात्रा १७ : ५, ६। गीत १०५ : ४१। ‡ यात्रा १६ पर्व्व।
§ विवाद ८ : ३, ४। नहमि. ९ : २०, २१।

है कि छः लाख शस्त्रधारी उस के संग बने थे * इस को छोड़ यदि उन की स्त्रियां लड़के बाले और बृद्ध इत्यादि का लेखा किया जाय तो जाना जाता है कि तीस लाख से घटती न होंगे इतने मनुष्य चालीस बरस लों इसी रीति से पाले गये। सोचा चाहिये कि ऐसे आश्चर्य्य कर्म जगत् की किसी दूसरी पुस्तक मे नहीं हैं।

इस के परे और बहुत से आश्चर्य्य मूसा से प्रगट हुए जिन का वर्णन यहां नहीं हो सकता विशेष करके जिस समय परमेश्वर ने सीना पर्वत पर प्रत्यक्ष होके दस आज्ञा अपने मुख से उच्चारीं † सो जो उन आश्चर्य्यों का स्पष्ट वर्णन देखा चाहे तो तौरेत मे यात्रा से बिवाद की पुस्तक तक बिचारके देखे।

जब मूसा स्वर्गधाम को गया तो परमेश्वर ने यहूशूअ को उस के कार्य्य के पद पर ठहराया कि इसराएलियों को कनान के देश में पहुंचावे उस ने भी भांति भांति के आश्चर्य्य दिखलाये यर्दन नदी लाल समुद्र की नाईं दो भाग हो गई और इसराएली बीचो बीच होके सूखे २ पार उतर गये। ‡ और जब इसराएल ने भेड़ के सींग की तुरही फूंकी तो ऐसा प्रलय हुआ कि यरीहो अर्थात रैहा नगर की चारों ओर की भीत गिर गई § फिर यहूशूअ की प्रार्थना से आठ पहर लों सूर्य्य अस्त न हुआ ‖ योंहीं हर प्रकार के आश्चर्य्य भविष्यद्वक्तों से प्रगट होते गये जैसे मृतकों का जिलाना कोढ़ियों का चंगा करना तीन रात दिन मछली के पेट मे रहना इत्यादि। ¶

---

* यात्रा १२ : ३७ । गिनती १ : ४५, ४६ । † यात्रा १९ और २० पर्व्व । ‡ यहूशूअ ३ और ४ पर्व्व । § यहूशूअ ६ पर्व्व । ‖ यहूशूअ १० : १२—१४ । ¶ न्यायी और दोनों समूएल और राजावली और कितने भविष्यद्वक्तों की पुस्तकों में प्रत्यक्ष लिखा है देख लो ।

इंजील के आश्चर्य्य।

जो आश्चर्य्य मसीह और उस के प्रेरितों ने प्रगट किये इंजील में इतने हैं कि विचार में नहीं आ सकते कि हम कहां से आरंभ करें और कहां समाप्त। वे मृतकों को जिलाते कोढ़ियों को पवित्र करते पिशाचों को निकालते अन्धों को आंख बहिरों को कान देते थे। फिर मसीह सहस्रों को पांच रोटी से संतुष्ट करता और आंधी को रोकता और समुद्र पर पांव पांव चलता और उस के मरने की बेला सूर्य्य दो पहर से तीसरे पहर तक अन्धकार में पड़ा रहा। फिर वह मरके आप तीसरे दिन जी उठा और अपने शरीर में होके शिष्यों के सन्मुख स्वर्ग पर चला गया। और इंजील के समस्त आश्चर्य्यों में एक अद्भुत बात यह है कि वे मसीह ही के नाम से दिखाये गये। मूसा और दूसरे भविष्यद्वक्ता जो मसीह के पहिले थे उन्हों ने जो आश्चर्य्य प्रगट किये सो परमेश्वर के नाम से पर मसीह ने अपने ही नाम से। इसी भांति प्रेरितों ने भी उसी का नाम लेके आश्चर्य्य दिखाये इस बात से मसीह का ईश्वरत्व प्रत्यक्ष है।

निदान ये आश्चर्य्य जो उन पुस्तकों में लिखे हैं सो मत के प्रमाणिक होने के लिये किये गये * और मनुष्य की भलाई और परमेश्वर की बड़ाई के लिये दिखाये गये। सो सच्चे आश्चर्य्यों के लक्षण ईसाई ही मत के आश्चर्य्यों में पाये जाते हैं। †

दूसरे भविष्यद्वाणियों के विषय में। ‡

यह भी इस मत में है सब लोग चाहे मुसलमान चाहे

* यात्रा ४ : १–५ । १९ : ९ । योहन ११ : ४२ और १४ . ११ और २० : ३०, ३१ । और प्रेरि. २ : ४ । † देखो ५ और ६ पृष्ठ। ‡ देखो ६ पृष्ठ।

और जाति जो कुछ भी तिथिग्रन्थ को जानते मानते हैं कि तीन सहस्र चार सौ बरस बीते कि तौरेत लिखी गई और उस में बहुत ही भविष्यद्वाणी हैं ।

पहिले नूह की भविष्यद्वाणी के विषय में* ।

नूह ने कहा कि कनान स्रापित होगा और वह अपने भाइयों के दासों का दास बनेगा । फिर उस ने कहा कि यहोवाह शाम का परमेश्वर धन्य हूजियो कनान उस का दास होगा और याफस को परमेश्वर फैलावेगा और वह शाम के तंबुओं में रहेगा और कनान उस का दास होगा । प्रसिद्ध है कि कनान के बंश ने कनान देश और अफरीका को बसाया और शाम से इसराएली और एशिया के लोग उत्पन्न हुए और याफस से पश्चिम के लोग । अब बिचार किया चाहिये कि नूह की भविष्यद्वाणी किस रीति पूरी हुई और होती चली जाती है । इसराएलियों ने कनान के बंश को कनान देश से निकाल दिया और जो आज लों अफरीका में हैं अपने भाई शाम और याफस के बंश के दास होते हैं कि मुसलमानों और ईसाइयों के दास होने से अब तक नहीं छूटे और उन में से लाखों दास बनाके कुस्तुंतुनिया अरु और देशों मे बेचे जाते हैं । नूह ने कहा कि याफस शाम के तंबुओं में रहेगा । अब सोचा चाहिये कि यीशु मसीह मनुष्यत्व की रीति से शाम के बंश में था और अंगरेज फरांसीस रूम इत्यादि याफस के बंश हैं और उन्हों ने ईसाई होकर शाम के तंबुओं में प्रवेश किया है । फिर हिन्दुस्तान के लोग बहुधा शाम के बंश हैं । अंगरेज हिन्दुस्तान के ले लेने से भी शाम के

---

* उत्पत्ति ९ : २५—२७ ।

तंबू में आये हैं यह क्या ही भविष्यद्वाणी है जिसे सहस्रों बरस बीते और हम सब के साम्हने पूरी होती है और तौरेत में यद्यपि कोई दूसरी भविष्यद्वाणी न होती तौभी उस से परमेश्वर की ओर से इस पुस्तक का होना प्रगट होता।

दूसरे इसमअएल के विषय भविष्यद्वाणी।

इसमअएल इब्राहीम का बेटा था जो हाजिरः लौंडी से उत्पन्न हुआ और बहुधा अरब उसी के बंश हैं उस के उत्पन्न होने के पहिले उस का नाम और बृत्तान्त दूत ने हाजिरः से बर्णन किया उन स्थानों में जिन के चिन्ह पन्ने के कगर हैं। लिखा है * कि वह बड़ी जाति होगा और वैसा ही हुआ विशेष करके जब अरब के लोग महम्मद के समय में और उस के पीछे दूसरे लोगों पर चढ़ाई करके उन पर जयमान हुए तो उन का अत्यन्त बड़ा राज्य हुआ जैसे तिथिग्रन्थ से प्रगट है। फिर लिखा है कि वह जंगली मनुष्य होगा और यह भी पूरा हुआ कि उस के कितने बंश जो अपनी जन्मभूमि में रहते तंबुओं के बीच जंगल में फिरा करते हैं और नगर से घिन रखते हैं। फिर लिखा है कि उस का हाथ हर एक से और हर एक का हाथ उस से बिरुद्ध होगा यह भी बिना बिरुद्धता पूरा हुआ वे बहुधा लुटेरे और डाकू हैं नगर बस्ती बणिकों पथिकों यात्रियों पर जा गिरते और उन का धन संपदा लूट लेके अपना निर्बाह करते हैं सो जब कि वे सब के बैरी हैं तो सब उन के भी बैरी होंगे। यह भी कैसी अद्भुत भविष्यद्वाणी है जो इस अद्भुत जाति के पिता की उत्पत्ति के पहिले प्रगट हुई और अब तीन सहस्र सात सौ बरस के पीछे सब के साम्हने पूरी हुई।

---

* उत्पत्ति १६ . १०–१२।

तीसरे इसराएलियें के विषय में भविष्यद्वाणियां ।

यह लोग इसहाक के बंश हैं और इसहाक इब्राहीम का पुत्र है और जो भविष्यद्वाणी कि तैारेत और भविष्यद्वक्तों की पुस्तक में इन लोगें के विषय लिखी हैं अत्यन्त अचंभित हैं ।

तैारेत की भविष्यद्वाणी जो इन लोगें के विषय में है जब इब्राहीम के सारः से जो उस की पत्नी थी कोई लड़का न था और वे देनें पुरनिया थे सारः नब्बे बरस और इब्राहीम सो बरस का था तब परमेश्वर ने उस से कहा कि सारः तुझ से पुत्र जनेगी उस का नाम इसहाक रखियो * और उस के बंश आकाश के तारे और समुद्र की रेत की नाईं होंगे । सो यह सब बातें समय पर ठीक ठीक पूरी हुईं कि इसहाक ठहराये हुए समय पर उत्पन्न हुआ और इस भविष्यद्वाणी के पांच सो बरस न बीते थे कि उस का बंश इसराएल के सन्तान मूसा के समय में तीस चालीस लाख के लगभग हुए और जब लग कि परमेश्वर की आज्ञा मानते रहे यों ही बढ़ते गये † परमेश्वर ने इब्राहीम से कहा कि मैं तुझे और तेरे बंश के कनान का देश देऊंगा परन्तु पहिले वे दूसरे देश में दास होंगे वहां से मैं उन्हें छुड़ाके कनान के देश में लाऊंगा ‡ । सो यह भविष्यद्वाणी चार सो बरस पीछे मूसा के समय पूरी हुई ।

अब हम तैारेत की और सब भविष्यद्वाणियें के छोड़के केवल बिवाद की पुस्तक के २८ पर्ब्ब की भविष्यद्वाणी वर्णन

---

* उत्पत्ति १७ १८—२० और २२ १५—१८ । † यात्रा १२ : ३७ । ‡ उत्पत्ति १५ : १ पद से अन्त तक ।

करते हैं। इस पर्ब्व में मूसा ने परमेश्वर की ओर से कहा कि इसराएल के सन्तान जगत् के समस्त जातिगणों में छिन्न भिन्न होंगे और कहीं विश्राम न पावेंगे वे संतापी और दुःखी होकर गिन्ती के बच रहेंगे और वे समस्त लोगों में उद्वेग से रहेंगे और उदाहरणी बनेंगे और और लोग उन्हें ताना मारेंगे और धिक्कारेंगे और यह सब भविष्यद्वाणी तनिक २ नबूखुदनजर और रूमियों के आने और उन पर जयवंत होने से पूरी हुई और वे समस्त जातिगणों में छिन्न भिन्न हुए। फिर मूसा ने कहा कि उन के शत्रु उन के नगर को घेर लेंगे यह बात पूरी हुई कि मिसर के राजा शीशाक और असूरिया के राजा शलमनाजर और बाबुल के राजा नबूखुदनजर और अन्तियोकुस इपिफानुस और सासीयुस और हिरूदोस और तैतस ने पारी पारी उन के नगरों को ले लिया और उन्हें तीन तेरह कर डाला। फिर मूसा ने कहा कि उन आपदा के दिनों में ऐसा काल पड़ेगा कि नगरों के घेरे जाने के समय वे अपने पुत्रों को भक्षण कर डालेंगे यह भविष्यद्वाणी मूसा के छः सौ बरस पीछे पूरी हुई*। फिर मूसा के नौ सौ बरस पीछे जब यरूशलीम को बाबुल की सेना ने ले लिया यह बात उन पर दुहराके निश्चित हुई†। फिर तीसरी बार उन लोगों मे यह बात सच्ची ठहरी कि रूमियों ने यरूशलीम को ले लिया। सो जैसा कि परमेश्वर ने इब्राहीम से बाचा बांधी थी कि तेरा बंश आकाश के तारों के समान अगणित होगा वैसा ही सूर्य्य के समान उंजियाला और चन्द्रमा के समान पूरा हुआ। और जैसे कि मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा के समान उन लोगों से कहा कि तुम जो आकाश के तारों के समान अगणित हो थोड़े से रह जाओगे क्योंकि तुम ने

*२ राजावली ६ . २६—२९। †यरमियाह १९ . ९ और ४ . ८।

अपने प्रभु परमेश्वर की बात न सुनी और वही पूरा हुआ। निदान मूसा के एक सहस्र पांच सौ बरस पीछे यरूशलीम रूमियों के हाथ से लूटा गया। यूसीफस ने जो यहूदियों में एक महत् जन था इस वृत्तान्त को अपनी पुस्तक में लिखा और उस में लेखा करके बर्णन किया है कि काल और लड़ाई में बारह लाख चालीस सहस्र चार सौ नब्बे मनुष्य मुए और उन के परे. निन्नानवे सहस्र दो सौ पकड़े जाके शत्रुन के हाथ बेचे जाके दास दासी बने। इस के पीछे जब रूम के राजा हाद्रयान ने उन्हें सत्यानाश किया तब उन में से सहस्रों दास दासी बनाके बेचे गये बरन वे इतने बिके कि उन्हें निकम्मी सस्ती बस्तु की नाईं किसी ने बात न पूछी। तब वे मिसर मे भेज दिये गये और उधर जाते हुए नावों के टूट फट जाने से बहुतों का डुबंत बेड़ा हुआ और उन में से जो बचे वे काल और दुर्भिक्ष के कारण से छिन्न भिन्न होके मारे पड़े। इन बातों से मूसा की बातों में क्या ही समानता पाई जाती है कि उस ने कहा था* परमेश्वर तुम्हें नावों पर चढ़ाके मिसर को भेजेगा और वहां तुम दास दासियों की नाईं शत्रुन के हाथ बेचे जाओगे और कोई तुम्हें न चीन्हेगा। इन बातो का सारा निर्णय रूमियों के तिथिग्रन्थ से हुआ जो न यहूदी न ईसाई बरन मूर्त्तिपूजक थे। सो मूसा ने इन सब बातों का सन्देश सत्रह सौ बरस पहिले दिया था जो समय पर रत्ती २ पूरा हुआ देखो यह कैसी अद्भुत भविष्यद्वाणी है।

इन सब से अधिक मूसा ने केवल यही न कहा था कि वे अपनी भूमि और अपने देश से निकाले जायेंगे और उन के नगर फूंक दिये जायेंगे और उन की बस्ती उजाड़ होगी

---

* विवाद २८ : ६८ ।

बरन यह भी कहा था कि वे सब लोगों में छितर बितर होंगे। यह बात हम सब के साम्हने पूरी होती चली जाती है। कौन देश है जिस मे यहूदी नहीं। सच है उन आग की चिनगियों ने अपने लिये ऐसे ही आग बारी जिस में उन के नगर और घर द्वार जलकर भस्म हो गये और वे जलते फूस की नाईं उड़कर जहां तहां जा पड़े। फिर मूसा ने कहा था कि वे यद्यपि सब लोगों के बीच छिन्न भिन्न हो जायेंगे तिस पर भी उन में कभी न मिल जायेंगे बरन वे सदा सर्वदा अलग रहेंगे इस के प्रमाण का कुछ प्रयोजन नहीं क्योंकि सब जानते हैं कि यहूदी हर एक लोगों से न्यारे रहते हैं यह भी एक बड़े अचंभे की बात है क्योंकि यहूदियों के परे कौन लोग हैं कि अठारह सौ बरस तक दूसरे लोगों में छितर बितर रहे तिस पर भी उन में न मिले। उन के इस समय का समाचार जो तौरेत और भविष्यद्वक्तों की पुस्तकों और इंजील की बातों से मिलान किया जाता तो यद्यपि कोई और प्रमाण न होता तौभी उन पुस्तकों के परमेश्वर की ओर से होने के प्रमाण के लिये यही बहुत था।

भविष्यद्वक्तों की पुस्तक और गीतपुस्तक में भी यहूदियों के विषय और बहुत भविष्यद्वाणी हैं।

पहिले यहूशूअ ने कहा है कि जो कोई यरीहो नगर को बनावेगा उस की नेव डालते उस का पहिलौठा मर जायगा और उस का फाटक लगाते उस का छोटा बेटा। सो पांच सौ बरस पीछे यह कहा पूरा हुआ*।

दूसरे यूसियाह राजा के विषय उस के उत्पन्न होने के तीन सौ बरस आगे भविष्यद्वक्ता के द्वारा यह भविष्यद्वाणी

* यहूशूअ ६ : २६। और १ राजा. १६. ३४।

कही गई थी कि यूसियाह नामे मूर्त्तिपूजकों की वेदी ढावेगा और पंडों को बलिदान करके उस पर चढ़ावेगा और मनुष्यों की हड्डियां उस पर जलावेगा* ।

तीसरे तौरेत और भविष्यद्वक्तों की पुस्तक से साक्षात् प्रगट है कि मूसा के समय से बाबुल को चले जाने तक जिसे नौ सौ बरस के लगभग हुआ यहूदी मूर्त्तिपूजा की ओर बहुत लगे रहते थे पर यशायियाह भविष्यद्वक्ता ने जो उन के बाबुल को चले जाने से डेढ़ सौ बरस पहिले था उन की मूर्त्तिपूजा छूट जाने के विषय भविष्यद्वाणी कही है† और दो सौ बरस पीछे जब वे बाबुल से चले आये तो फिर मूर्त्ति-पूजा की ओर उन्हों ने कभी मन न लगाया ।

चौथे यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वाणी की रीति से कहा कि यहूदी और चारों ओर के जातिगण बाबुल के राजा नबूखुदनजर से पराभूत होके उस की सेवकाई करेंगे‡ और परमेश्वर ने उस को आज्ञा दिई कि तू एक एक जुआ बनाके आसपास के सब राजाओं और यहूदियों के राजा पास भेज दे जिस्तें आनेहारी बात उन पर प्रगट हो सो उस के आगमज्ञान की परीक्षा उन सब के सन्मुख यों ही हुई उस भविष्यद्वाणी के कारण यहूदियों ने उसे बन्दीगृह में डाला और जब लों कि बाबुल के राजा नबूखुदनजर ने उस नगर को लिया और उसे छुड़ाया वह वहीं रहा§ ।

कई झूठे भविष्यद्वक्तों ने यरमियाह का साम्हना किया और यहूदियों के भुलावे के लिये उन्हें चिकनी चुपड़ी बातें सुनाईं उन में से एक के विषय जो हननियाह कहलाता था यरमियाह ने कहा कि इसी बरस वह मर जायगा और वैसा

---

* १ राज. १३ : २ और २ राज. २३ . १५–२० । † यशायियाह २ : १८–२१ । ३० : २२ । ‡ यरमि. २७ पर्व्व । § यरमि. ३९ : १–१४ ।

ही हुआ * और उस ने यह भी कहा था कि अखियब कौलायाह का पुत्र और सिदकियाह मअसियाह का पुत्र जो झूठे भविष्यद्वक्ता थे नबूखुदनजर उन्हें पकड़के कुक्कुट की नाईं आग में भूनेगा और सारे यहूदियों के साम्हने उन का पंछी सा जो निकाल लेगा † ।

पांचवें यरमियाह के समय हिजकिएल नामे एक दूसरा सच्चा भविष्यद्वक्ता था और यहूदियों के मन में उन दोनों भविष्यद्वक्ताओं के बिषय सन्देह था क्योंकि उन की बातों में बिरुद्धता देख पड़ती थी यरमियाह ने यहूदियों के राजा सिदकियाह के विषय में कहा कि ‡ वह बाबुल के राजा को देखेगा और अवश्य करके बाबुल में जायगा और हिजकिएल ने कहा कि वह बाबुल को न देखेगा। फिर यरमियाह ने कहा कि वह बिना दुःख और क्लेश के मरेगा और अपने बाप दादों की रीति के समान गाड़ा जायगा और हिजकिएल ने कहा कि वह बंधुआ होके मरेगा। यह दोनों आगम की बातें यद्यपि प्रगट में दो बिपरीतों का एकत्र होना समझी जाती हैं पर सचमुच में दो समताओं की भांति परस्पर ठीक हैं कि सिदकियाह ने बाबुल के राजा को देखा जिस ने उस की आंखें निकलवा लिईं और उसे बंधुआ करके बाबुल को ले गया जहां वह बिना दुःख और क्लेश के मरा और अपने बाप दादों की रीति के समान गाड़ा गया § ऐसी बात में जो प्रगट में बिपरीतता है उन दोनों भविष्यद्वक्ताओं के बीच यद्यपि कि एक बाबुल में और दूसरा यरूशलीम मे था मेल होना अद्भुत और बड़ा आश्चर्य्य है जिस के विचार करने में बुद्धि बिस्मित होती है। हिजकिएल भविष्यद्वक्ता ने जब

---

* यरमि. २८ : १६, १७ । † यरमि. २९ : २१, २२ । ‡ यरमि. ३४ . २–७ । हिज. १२ : १३ । § यरमि. ३९ : ४–७ । २ राजा. २५ : ६, ७ ।

बावुल में बंधुआ था यहूदियों के विषय में बहुत भविष्यद्वाणियां कहीं जैसे यह कि जो यहूदिया के देश मे बावुलवालों के हाथ से बचे वे वहुत सी बिपत्तों में पडेगे और सिहू से बचके सातारोहन के घेरे में पड़ेंगे उन में से एक तिहाई काल से नाश होगी दूसरी तिहाई तलवार से काट डाली जायेगी तीसरी तिहाई बची हुई तीन तेरह होके चौबाई बयार की नाईं चारों ओर उड़ जायेगी और तलवार सर्वत्र उस का पीछा करेगी* ये सब बाते थोड़े ही दिन पीछे बावुल की सेना के आने और यरूशलीम के नष्ट होने से इन लोगों के विषय में पूरी हुईं ।

छठवे दानिएल ने अन्तियोकुस राजा के यहूदियों के मन्दिर को अपवित्र करने और उस के मरने और उस का समस्त वृत्तान्त वरन उस के स्वरूप और स्वभाव की बातें भी चार सौ आठ बरस पहिले प्रत्यक्ष होने से बतलाईं† उस ने एक भविष्यद्वाणी भी कही कि रूमी यरूशलीम को नष्ट करेगे और यहूदिया और यरूशलीम नष्ट हो जायेगे और यहूदियों के मताचार और बिधि व्यवहार और बलिदान इत्यादि जाते रहेंगे‡ दानिएल के छः बरस पीछे उन सब बातों के पूरी होने के सारे तिथिग्रन्थ साक्षी हैं । हूसीअ ने जिसे दो सहस्र पांच सौ अस्सी बरस बीते यहूदियों के इस समय के समाचार की भविष्यद्वाणी कही है कि वे जातिगणों के मध्य बहेतू होंगे । ये सब भविष्यद्वाणी यहूदियों के विषय मे हैं इन के उपरान्त और भी उन पुस्तकों में बहुत हैं कि सब मिलकर दो सौ के लगभग होंगी ।

---

* हिज ४ और ५ पर्ब्ब । † दान. ८ और ११ पर्ब्ब । ‡ यशअियाह १९ पर्ब्ब । यरमि. ४३ : ८–१३ और ४६ पर्ब्ब । हिज. २९ से ३२ तक ।

उन लोगों के विषय भविष्यद्वाणी जो यहूदिया के चारों ओर रहते थे।

जो लोग कि यहूदिया देश के चारों ओर रहते थे उन के विषय मे उन पुस्तकों मे बहुत भविष्यद्वाणी हैं यदि हम सब का बर्णन करे तो एक बड़ी भारी पुस्तक हो जायेगी इस लिये यहां हम थोड़ा सा संक्षेप मे बर्णन करते हैं।

१ सूर नगर के विषय में।

यह बहुत ही सुन्दर मनोहर रमणीय नगर यहूदिया देश के समीप मडिटरेनिअन समुद्र के तीर था उस नगर निवासियों के सुखविलास के ठीक समय में कि उन्हें किसी रीति की कुछ चिन्ता भय नहीं और उन का कोई द्रोही दुर्जन न था उस समय के भविष्यद्वक्तों ने सैकड़ों बरस पहिले उस पर धावा होने और उस के बार बार घेरे जाने और लुट जाने और अन्त को समस्त नष्ट होने के ठीक ठीक सन्देश दिये* आजकल यह नगर उजाड़ और खंडहर है कभी कभी कुछ मछुवे आके उस में रहते हैं। आपदा के जाल में उस नगर के फंसने का सन्देश जो परमेश्वर ने भविष्यद्वक्तों के द्वारा कहा था पूरा हुआ कि परमेश्वर ने उस नगर को कहा था कि मैं तुझे पत्थर के समान कर डालूंगा तू मछुओं के जाल फैलाने का स्थान ठहरेगा† अब यह नगर तुरकों के हाथ है वे उस की अगिली बड़ी बस्ती और अब का अत्यन्त उजाड़ अच्छी रीति से जानते हैं।

२ मिसर देश के विषय में।

सब जानते हैं कि आगे यह बहुत ही बसा हुआ देश था

* दान. ९ . २६, २७। † यशायियाह २३ पर्व्व। यरमि. २५ पर्व्व। हिज. २६ और २७ और २८ पर्व्व। अमूस १ . १, १०। जक. ९ : ३ और ४ पद।

कि उस में अठारह सहस्र बड़े बड़े नगर थे और उस के विभव विभूति के समय में उस के अनेक प्रकार के बार बार के अदल बदल और अन्त मे समस्त नष्ट हो जाने के सन्देश जिसे आज तीन सहस्र बरस बीते भविष्यद्वक्तों में ठीक ठीक मिले * भला उस समय में कौन चिन्ह थे जिन से उन्हों ने जाना हो कि इतना बड़ा राज्य और अदन सी विकसित भूमि इतने बरस के लिये औरों के हाथ में रहेगी और वहां के लोग सेवकाई से न छूटेंगे और न उन में से कोई राजा होगा । इस रीति वह भविष्यद्वाणी ठहरी और इस प्रकार से वह पूरी हुई कि पहिले बाबुल फिर फारस के लोग उस पर चढ़ाई करके जयवंत हुए इस के पीछे सिकन्दर फिर रूमी अन्त को मुसलमान जिन के हाथ में इन दिनों वह देश है उस पर जयमान हुए । और ठीक हिजकिएल भविष्यद्वक्ता की अद्भुत बातों के समान दो हजार बरस के ऊपर गुजरे कि मिसर के राजबंश में से कोई राजा न हुआ † । आज लों उस अटल महाराजाधिराज की आज्ञा चलती रही वाहरे क्या हो यह भविष्यद्वाणी है जिस के सोचने से दूरदर्शी बुद्धि मन्द और बेगवन्त समझ पंगु हो जाती है यह केवल परमेश्वर अन्तर्ज्ञानी और आदि अन्त के जाननेहार की ओर से है ।

३ हवश देश जो मिसर से मिला है ।

उस का वह समाचार जो आनेहारा था यसअियाह और हिजकिएल भविष्यद्वक्ता ने प्रगट किया ‡ तिथिग्रन्थ से यह निश्चय होता है कि पहिले असूरियावालों फिर फारसियों ने उस देश को लूटा और मसीह के जन्म के होने के लगभग रूमियों ने । फिर मुसलमानों ने उस पर चढ़ाई करके उसे लूटा ।

* हिज. २६ : ३–५ । † हिज. ३० . १३ । ‡ यसअियाह १८ और २० पर्व्व । हिज. ३० : ४–६ ।

४ नीनवः नगर के विषय में।

यह नगर असूरिया देश की राजधानी था उस में छः लाख से अधिक लोग रहते थे और तीन दिन के मार्ग का उस का बिस्तार था और उस की चारों ओर की भीत पचास गज ऊंची और तीन गाड़ी चौड़ी और उस पर सौ सौ गज के ऊंचे २ पन्द्रह सौ गर्गज और सैकड़ों फाटक थे। बाहरे तेरी बस्ती जिस के साम्हने सारे संसार की बस्ती एक पासंग है फिर उस के विभव विभूति के समय नाहूम और सफनियाह ने उस की नष्टता का सन्देश दिया और यह भविष्यद्वाणी ऐसी पूरी हुई कि नीनवः नगर का चिन्ह ऐसा मिट गया कि नहीं जान पड़ता कि कहां था।

नाम निशान एक नहिं रहेऊ।
जस प्रभु विमुख कुफल तस भयेऊ॥

५ बाबुल नगर के विषय में।

यह नीनवः नगर से भी बहुत बड़ा और सुन्दर और द्रव्य से पूर्ण था यद्यपि उसे इन्द्रपुर कहिये तो योग्य है और बैकुण्ठधाम का शोभादायक और छवि उपजायक कहिये तो ठीक है नई सृष्टि नहीं परन्तु बड़ी सृष्टि उसे कहा चाहिये उस के विषय में यह भविष्यद्वाणियां हैं कि* फारसवाले आके उसे ले लेंगे और फुरात जो उस के चौदिशा बहती है सूख जायगी† और वह नगर किसी पर्ब्ब के दिन जब उस के राजा और अध्यक्ष और प्रधान सब एकट्ठे होके मत्तवत् होंगे अचानक ले लिया जायगा सो जिस समय फारस के राजा खोरस ने फुरात नदी को काटके फेर दिया और नगर

---

* यशाअयाह १३ पर्ब्ब। यरमि. ५१ पर्ब्ब। † यशाअयाह ४४ : २७। यरमि. ५० : ३८ और ५१. ३६।

को ले लिया और वहां के राजा को सहस्रों अध्यक्ष प्रधान समेत बध किया उस घड़ी यह सब भविष्यद्वाणी रत्ती रत्ती पूरी हुईं जैसे फारसियों के तिथिग्रन्थ से प्रगट है। फिर यसअियाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक के १४ पर्ब्ब में लिखा है कि वह नगर बगले का स्थान और झील बन जायगा उस नगर के इस समय की दशा से यह सब आगम की बातें निश्चय हुईं। यरमियाह का ५० पर्ब्ब ३९ और ४० पद और ५१ पर्ब्ब और २६ और ३७ और ६४ पद और यसअियाह का १३ पर्ब्ब १९ पद से २२ तक मिलान करो।

६ दानिएल ने चार बड़े राजाओं का समाचार जिन में तीन होने को थे बर्णन किया अर्थात् बाबुल और फारस और यूनान और रूम के राज्य का। इन बातों का पूरा होना उन राजाओं के तिथिग्रन्थों से निश्चित है।

तौरेत और गीतपुस्तक और भविष्यद्वक्तों की पुस्तकों में से यीशु मसीह के विषय में भविष्यद्वाणी।

इन पुस्तकों में मसीह के विषय भविष्यद्वाणियां बहुत हैं सो हम उन में से थोड़ी सी चुनकर लिखते हैं।

पहिले जानना चाहिये कि मलाकी जो पिछला भविष्यद्वक्ता था मसीह के जन्म लेने से चार सौ बरस पहिले था और तौरेत और गीतपुस्तक और भविष्यद्वक्ता की सब पुस्तकें मसीह के दो सौ पचीस बरस पहिले मिस्र के राजा तलमी की आज्ञा से इबरानी भाषा से यूनानी बोली में उलथा किई गईं और वे इबरानी भाषा समेत आज लों यहूदियों और ईसाइयों के पास बनी हैं सो अनहोना है कि उस में कुछ अदल बदल हुआ हो क्योंकि यदि ईसाई अपनी ओर से कुछ पद मसीह के विषय बनाकर तौरेत और गीतपुस्तक और भविष्यद्वक्तों की पुस्तक में मिला देते तो यहूदी अवश्य

उन की चोरी पकड़ते और यदि कुछ यहूदी ऐसा करते तो ईसाई अवश्य करके उन्हें चोर बनाते क्योंकि दोनों में ऐसा बैर और विरुद्धता है कि ऐसी बातों मे मेल मिलावट अनहोनी है भला अब उन पुस्तकों से थोड़ी सी भविष्यद्वाणी मोती के दानों के सदृश मसीह के विषय जो मोती अनमोल है और रत्न बहुमूल्य है चुनकर निकालते हैं।

पहिले अर्थात् मसीह के उत्पन्न होने का सन्देश याकूब ने सत्रह सौ बरस आगे दिया और उस का समय बतलाया * कि जब लों सैला न आवे यहूदा से राजदण्ड और उस के चरणों से अध्यक्ष जाता न रहेगा। अब अठारह सौ बरस बीते कि यहूदियों से कोई अध्यक्ष अथवा कोई राजा न हुआ और वे दूसरे लोगों में फैल जाके उन के वश में रहे और इस लिये याकूब के समस्त बंश की बंशावली में बड़ी गड़बड़ हुई। फिर जब कि सब यहूदी मानते हैं कि सैला से तात्पर्य्य मसीह है तो अवश्य उस भविष्यद्वाणी से निश्चय हुआ कि मसीह के आने को अठारह सौ बरस से अधिक बीत गये।

दूसरे जब्राएल ने दानिएल को सन्देश दिया कि तेरे लोग और तेरे नगर पर अपराधों के मिटाने और पापों के दूर करने और दुष्टता के प्रायश्चित्त और सर्बदा की धर्मशीलता और दर्शन और आगम पूरा करने और धर्ममय मसीह के आने के लिये सत्तर सप्ताह ठहराये गये † सो सुचेत होओ और जानो कि यरूशलीम के दूसरी बार बनाने और बसाने की आज्ञा निकलने से प्रभु मसीह के आने तक बहत्तर सप्ताह होंगे कि सकेती के दिनों में सड़क और भीत बनाई जायेंगी और बासठ सप्ताह के पीछे मसीह मारा जायगा पर अपने लिये नहीं। इन पदों के वर्णन का बड़ा बिस्तार है पर हम

* उत्पत्ति ४९ : १० । † दान. ९ . २४–२६ ।

थोड़ा सा संक्षेप मे लिखते हैं कि उस समय से जब कि अरदशेर राजाधिराज ने नहमियाह भविष्यद्वक्ता को यरूशलीम बनाने और बसाने की आज्ञा दिई मसीह के क्रूस पर टांगे जाने तक चार सौ नब्बे बरस होते हैं जो इन पदों के अभिप्राय से ठीक २ मिलते हैं और उन से यह भी निश्चित होता है कि मसीह पापों के लिये प्रायश्चित्त होगा और आगम समाप्त करेगा और इंजील के पीछे कोई स्वर्गीय पुस्तक न होगी । तीसरे हज्जी और मलाकी भविष्यद्वक्ता ने सन्देश दिया * कि दूसरे मन्दिर के रहते जो यहूदियों के आने के पीछे बना था मसीह आवेगा । अब एक सहस्र सात सौ बरस से अधिक हुए कि वह जड़ मूल से खोदा गया और उस का नाम भी न रहा ।

इन दो बातों की भविष्यद्वाणी के विषय में ।

अर्थात मसीह कहां और किस के घराने में जन्म लेगा मीकः भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर की ओर से कहा † कि वह बैतुलहम में यहूदा के घराने से उत्पन्न होगा और उस की साक्षी इंजील मे है ‡ दाऊद के घराने की एक कुंवारी से उस के उत्पन्न होने और आश्चर्य्य दिखाने और उस के दीन हीन होने और यहूदियों के अग्राह्य होने और अन्धों को आंख लंगड़ों को पांव देने रोगियों को चंगा करने और कंगालों को इंजील सुनाने का बर्णन देखो उत्पत्ति का ३ पर्ब्ब १५ पद । यसअियाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक ७ पर्ब्ब १४ पद और ९ पर्ब्ब ६ और ७ पद और ११ पर्ब्ब १ पद और ८ पर्ब्ब १४ और १५ पद और ४२ पर्ब्ब और ६० पर्ब्ब १० पद ।

यसअियाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक के ५३ पर्ब्ब मे मसीह

---

* हज्जी २ : ६—९ । मलाकी ३ . १ । † मीकः ५ २ । ‡ मत्ती २ · १ । यूह. १ : १४ ।

की बहुत ही भविष्यद्वाणी हैं कि वह अत्यन्त दीन हीन और दुःखी और दुखियारा होगा और बड़ी धीरता से उन सब क्लेशों को सहेगा और दुष्ट के संग मारा और धनवान के संग गाड़ा जायगा और फिर जी उठकर पापियों को क्षमा करावेगा और बहुत लोग उस पर बिश्वास लावेंगे। वाहरे क्या ही कंगाल दोनों लोक मे धनी करनेहारा क्या ही दीन हीन इहलोक परलोक की मर्यादा देनेहारा और क्या ही दुःखी और दुखियारा सब के दुःख संकट को दूर करनेवाला और क्या ही संतोषी सब के संतोष का फल देनेहारा और क्या ही क्षमा करनेहारा सब के पापों को मिटा देनेहारा और अपने विश्वासियों को स्वर्ग भवन मे पहुंचानेहारा है। यदि कोई पवन के घोड़े पर चढ़के पृथिवी से आकाश तक जावेगा पर उस के ऊंचे पद का पता कभी न पावेगा और बहुतेरी सीढ़ी आकाश पर लगावेगा परन्तु अपनी समझ को उस के बड़े ऐश्वर्य्य तक कभी न पहुंचावेगा।

भविष्यद्वक्तों का पुस्तकों के और बहुत ठौरों में मसीह के बहुत सन्देश हैं। गीतपुस्तक में लिखा है कि उस का एक शिष्य उसे पकड़वा देगा और दूसरी ठौर में लिखा है कि यद्यपि वह मरके गाड़ा जायगा पर सड़ने का नहीं परन्तु तीसरे दिन जी उठके स्वर्ग पर चला जायगा और स्वर्ग पृथिवी के समस्त सामर्थ्य पाके अपने पिता के दहिने बैठेगा और सारे जगत पर प्रभुता करेगा* जो ऊपर की बर्णन किई हुई भविष्यद्वाणियां इंजील से मिलान करे तो उन के पूरी होने की बात अच्छी रीति से समझेगा।

---

* गीत ४१ · ९। योहन १३ · १८, २६, २७। होशीअ ६ · २। १ कर. १५ : १–१६। गीत ११०। यशाअयाह १ : ७। मत्ती २७ : १८ और २७। लूक २४ : ५०, ५१। प्रेरितों की क्रिया १ : ९।

फिर यह भी लिखा है कि मसीह पुराने नियम अर्थात् मूसा के समस्त व्यवहार और रीति की बातें जो उस के समय से मसीह के समय तक यहूदियों के लिये स्थापित थीं बन्द कर देगा । ११० गीत में लिखा है कि वह मलकिसिदक के समान होगा अर्थात् राजा और याजक दोनों होगा । इस से जाना जाता है कि हारून के वंश जो याजक होते थे मसीह के आने से उस अधिकार के पद से रहित हो गये क्योंकि मसीह आप याजक हुआ । फिर मलाकी भविष्यद्वक्ता कहता है कि सूर्य्य के उदय से अस्त लों हर स्थान में लोग सुगन्ध जलावेंगे और पवित्र बलिदान चढ़ावेंगे । इस से भी निश्चय हुआ कि मसीह के आने से तौरेत की रीति और व्यवहार बन्द हो गये क्योंकि उस समय तक केवल यरूशलीम ही में सुगन्ध जलाना और बलिदान करना योग्य था ।

सच है सूर्य्य के साम्हने दीपक का क्या काम और सागर के होते कूप से क्या बिस्राम इस लिये जब मसीह आप बलिदान होकर तौरेत के व्यवहारों और रीतों को पूरा कर चुका तो उस के पीछे मन्दिर और यज्ञबेदी ढाई गई और तब से फिर न बनी और यहूदी आज लों उस देश और यरूशलीम से निकाले हुए हैं और होनी नहीं कि वे कनान देश से बाहर होके तौरेत की आज्ञाओं को प्रतिपालन करें क्योंकि उस की बहुत बातों पर चलना उन के कनान ही देश में रहने से है।

मसीह के विषय में और बहुत सी भविष्यद्वाणी हैं जिन का वर्णन यहां नहीं हो सकता। ऊपर की भविष्यद्वाणियों का संग्रह तौरेत और भविष्यद्वक्ता की पुस्तकों से है और उन से प्रगट हुआ कि उत्पत्ति होने के समय और उस के जीवनकाल और उस के सारे कार्य्य और उस के आश्चर्य्य और उपदेश और उस के क्रूस पर टांगे जाने और मारे जाने और जी उठने और स्वर्ग पर जाने और पापों के क्षमा कराने का और सकल जगत् में अपने मत फैलाने का सकल सन्देश उन पुस्तकों में है। यहां लों कि यह बात विदित है कि उन पुस्तकों में से चुनकर मसीह का वृत्तान्त लिख सकते हैं यदि किसी एक ही भविष्यद्वक्ता से ये भविष्यद्वाणियां हुई होतीं तौभी बड़ी अचरज की बात होती पर किस भांति अचरज की बात न हो जब कि समझा जावे कि एक दो भविष्यद्वक्ता से नहीं परन्तु बहुत से हुए जो एक साथ एक समय में न थे बरन चार सहस्र बरस के हेर फेर में एक पर एक मेंह की बूंदों के ऐसे थे।

फिर यदि किसी के मन में यह सन्देह उपजे कि ये समस्त भविष्यद्वाणियां मसीह के विषय में नहीं तो इन बातों के ध्यान करने से उस का यह सन्देह जाता रहेगा।

१ यह कि उन सब पुस्तकों में दो चार का नहीं परन्तु एक ही मुक्तिदाता के आने का सन्देश है।

२ यह कि वह मुक्तिदाता कुंआरी से उत्पन्न होगा।

३ यह कि याकूब के पुत्र यहूदाह के बंश और दाऊद के घराने से जन्म लेगा।

४ यह कि यहूदिया के देश बैतलहम नगर में उत्पन्न होगा।

५ यह कि दूसरे मन्दिर के रहते प्रगट होगा।

६ यह कि हर भांति के आश्चर्य्य कर्म्म दिखावेगा।

७ यह कि वह यहूदियों का अग्राह्य होगा और उसे उस का एक शिष्य पकड़ावेगा।

८ यह कि उस के हाथ पांव छेदे जावेंगे और बुरों के संग क्रूस पर टांगा जाके मारा जायगा फिर तीसरे दिन जी उठेगा।

९ यह कि उस के नाम से उपदेश अन्यदेशियों में किया जायगा और वह उन का आश्रा होगा।

इन सब बातों के विषय में पर्व्व और पदों के चिन्ह ऊपर लिखे गये सो जिस मे यह सब बाते पूरी हुई हों वही मसीह है जो आनेहारा था और ये सारी बाते यीशु नासरी में पूरी हुईं किसी दूसरे में नहीं सो निःसन्देह मसीह जो आनेहारा था यही है।

भविष्यद्वाणियां जो इंजील में हैं।

जिस प्रकार कि तौरेत और गीतपुस्तक और भविष्यद्वक्तों की पुस्तक में भविष्यद्वाणियां अगणित हैं वैसा ही इंजील मे भी बहुत हैं जिन का वर्णन करना बड़ा बिस्तारित होगा इस लिये हम उन में से थोड़ी सी चुनकर यहां लिखते हैं।

पहिले मसीह ने बारंबार अपने मुखारबिन्द से अपने

मरने का स्थान और रीति और अपने बधिकों के चिन्ह पहिले से बतलाये कि उस का एक शिष्य यहूदा इस्करियोती उसे पकड़वा देगा और दूसरा शिष्य पितर उस से मुकर जायगा और सब चोर की रीति भाग जायेंगे* क्या ही आश्चर्य्य की बात है कि उस ने अपनी सर्वज्ञता से अपने मरने की विधि ठीक २ बतलाई कि ऊपर उठाया जायगा अर्थात क्रूस पर मारा जायगा† जाना चाहिये कि क्रूस पर लटकाना यहूदियों की रीति न थी परन्तु रूमियों की। आश्चर्य्य यह है कि जब रूम के अध्यक्ष पंतूस पिलातूस ने चाहा कि उसे यहूदियों के हाथ में सौंप दे कि वे उस को अपनी रीति पर मार डालें अर्थात् पत्थरवाह करें तब उन्हों ने नाह किया‡ और यों बिना जाने मसीह के बचन पूरा करने के वे आप ही कारण हुए जो कोई इस बात को बिचारेगा कैसा ही कठोर हो प्र वह अपना पत्थर सा मन मोम करके उस में नाह न करेगा परन्तु मसीह के बचन की सच्चाई का हां करेगा।

दूसरे यीशु ने अपने जी उठने का सब समाचार आगे से पृथक् २ बतलाया और कहा कि मैं तीसरे दिन जी उठूंगा और तुम से पहिले गालील देश को जाऊंगा। इस में मृतक जीवों के जीते जी के बलिदान का क्या ही साज समाज किया है।

तीसरे मसीह ने प्रेरितों पर पवित्र आत्मा के उतरने और उन्हें आश्चर्य्य दिखाने की सामर्थ्य देने की भविष्यद्वाणी कही।

चौथे उस ने यरूशलीम के नष्ट हो जाने का आगम कहा

---

* मत्ती १६ : २१। मार्क १० . ३३, ३४। मत्ती २० : १८ और २६ पर्व्व। योहन ६ : ७०, ७१ और १६ : ३२। † मत्ती २० : १९। योहन १२ : ३२, ३३। ‡ योहन १८ : ३१।

कि वह कब होगा अर्थात् उस समय के लोगों के रहते ही और यह कि किन लोगों के हाथों से होगा अर्थात् रूमियों के जिन की सेना के झण्डे में गिद्ध का आकार बना था कि यहूदी उसे अशुभ जानकर उस से घिनाते थे। फिर कहा कि मन्दिर की ऐसी नष्टता होगी कि पत्थर पर पत्थर न छूटेगा और यह नष्टता की दशा कब लग रहेगी। मसीह के तीन सौ बरस पीछे रूम के राजा यूलियन ने जो ईसाई मत से फिर गया था चाहा कि मसीह के आगम की बात खण्डन करने के लिये मन्दिर को फिर बनावे पर जब वह बनने लगा तब उस की नेव से इतने आग के गोले निकले कि उस के बनानेहारे छोड़कर उड़ भागे और पत्ता हो गये कि उन का पता भी न लगा। इस बात के सोचने से बुद्धि चंपित हो जाती और समझ चक्रित। उस का समाचार बहुत तिथिग्रन्थों में है निज करके उसी राजा के परम मित्र अमानियुस मारसिलियुस नामे ने उस का वर्णन किया है।

पांचवे मसीह ने आगम से कहा कि उस के शिष्य उस के नाम के कारण सताये और उन में से कितने मारे जायेंगे सो यह आज लों पूरा होता चला जाता है। योंही एक ठौर में उन को कहा कि देखो मैं तुम्हे भेड़ों की नाईं भेड़ियों में भेजता हूं और फिर कहा कि नरक के फाटक मेरी मण्डली पर दृढ़ न होंगे अर्थात् मसीह के लोगों पर शैतान और उस की सेना जयवन्त न होगी क्या ही दृढ़ बचन और आश्चर्य्य का स्थान है कि यद्यपि मसीह ने अपने लोगों को मत के विषय लड़ाई झगड़े से वर्जा तौभी उन के जय विजय का बृत्तान्त यों बर्णन किया कि वे बिना अस्त्र शस्त्र भी पराजित न होंगे बरन सब पर जयवन्त होंगे। भला यदि थोड़ी सी भेड़ें भेड़ियों में भेज दीजिये तो वे कब तक

जीती बचेंगी पर देखो ये भेड़ें अठारह सौ बरस भेड़ियों में रहीं परन्तु नाश न हुईं बरन भेड़ के रोम की नाईं दिन २ बढ़ती गईं और प्रतिदिन बढ़ती जायेंगी जब लों एक झुंड और एक चरवाहा न होगा अर्थात् एक इष्ट और एक आस बिश्वास होगा सरिताजल और आकाश के तारों की नाईं ईसाई मत का संसार में फैलते जाना और बिदित और प्रसिद्ध होना केवल उस की भविष्यद्वाणी का पूरा होना ही नहीं परन्तु उस के बचन की सत्यता का भी एक दृढ़ प्रमाण सन्देहभंजक है। सोचा चाहिये कि बारह बपुरे अनपढ़े और असमर्थ मछुओं ने सर्वत्र फिर फिरके इंजील सुनाई जैसा कि मसीह ने उन्हें आज्ञा दिई। इस के अधिक मसीह ने उन से खोलके कहा था कि इस जोखिम कार्य्य में तुम को सब कुछ छोड़ना होगा और हित मित्र तुम से अलग होकर तुम्हारे बैरी बन जायेंगे बरन तुम्हारे प्राण के बधिक भी हो जावेंगे और तुम को मेरे नाम के लिये ऐसी बिपत्ति और कष्ट उठाना होगा कि बर्णन नहीं हो सकता तौभी इस लोक में प्रतिफल की कुछ आशा न रखना और सब के आगे कहना कि केवल मसीह ही जगत् का त्राणकर्त्ता है क्योंकि स्वर्ग के तले उसी का नाम प्रत्यक्ष हुआ जिस से मनुष्य त्राण पावे और यह कि उसी के मत से यहूदी मत पूरा और दूसरे सब मत खण्डित हो गये और अचंभा यह कि जब वे उस का उपदेश सुनाने लगे तो पहिले ही दिन तीन सहस्र मनुष्य बिश्वास लाये उस के पीछे और और देशों में फिर फिरकर बिन युद्ध लड़ाई और बिना अस्त्र शस्त्र के उपदेश किया और इतने मनुष्य बिश्वास लाये कि मसीह के स्वर्ग पर जाने के पीछे अस्सी बरस के लगभग पंत और बिथुनिया के सूबेदार प्लिनी ने अचेत होकर

महाराजा के पास लिख भेजके आयसु चाही कि मैं लोगों के संग कैसा व्यवहार करूं क्योंकि सब अपना अपना मत छोड़कर ईसाई होते चले जाते हैं सो उस की बिनयपत्र का उतार अब लों बना है उस ने यह भी लिखा है कि हर एक बय के और हर एक पद के लोग स्त्री पुरुष के ईसाई हो जाने के कारण मेरी सभा में दुहाई देते हैं और नगरों ही में नहीं परन्तु बाहर की छोटी २ बस्तियों में भी यह मत सरिता की बाढ़ सा फैला जाता और देवल सूने हुए जाते हैं और लोग पुराने चालचलन को त्याग करते है और जो पशु कि बलिदान के लिये हाट में बिकने को आता है उन का गाहक कोई नहीं ठहरता और न उन्हें कोई मोल लेता है। जो कोई अपनी विषयभावना तजके इस में कुछ ध्यान करे तो उसे जान पड़े कि यह कैसा सत मत है जिस के तेज ने इतने बड़े सूबेदार को अचेत और भयभीत कर दिया।

चौपाई ।

यह मत ईश्वर ओर से भाई . जो नहिं माने तासु खोटाई ।
कहूं सत्य यह बचन पुकारी . सादर सुनहु सकल नर नारी ॥

बड़े अचंभे की बात यह है कि उन्हों ने जो उन दिनों में ईसाई हुए चले जाते थे नये प्रकार के विधि व्यवहार को अंगीकार किया और उन के धन संपत्ति घर गृह सब लूट पाट गये उन के प्राण छः पांच में पड़े बरन लाखों मारे गये और उन की दशा ठीक उस मनुष्य की सी हुई जो हिन्दुस्थान में राजाओं के समय ईसाई हो जाता। इस मत पर यही दृष्टान्त कहा गया कि जैसे मूसा ने एक जलती झाड़ी देखी कि वह जल नहीं जाती वैसा ही उस मत की व्यवस्था हुई कि न आग जला सके न पानी डुबा सके न मनुष्य घटा सके।

भविष्यद्वाणी के विषय ऊपर की बातें बस और बहुत हैं। इंजील की पत्रियों में निज करके प्रकाशित पुस्तक में और बहुत सी भविष्यद्वाणियां हैं पर यहां उन के वर्णन का कुछ प्रयोजन नहीं। निदान ईसाई मत की भविष्यद्वाणियों का चिन्ह सूर्य्य सा प्रकाशित है वर्णन के दीपक की कुछ आवश्यकता नहीं। उन की आदि तो आदम के समय से है और वे जगत् के अन्त लों भी सब लोगों की व्यवस्था निज करके परमेश्वर के लोगों की व्यवस्था का सन्देश देते हैं। इन सब का संग्रह मानो एक वृक्ष है जिस की जड़ पृथिवी के तले और उस की फुनंग आकाश पर पहुंची और उस की डालियां पूर्व से पश्चिम और दक्षिण से उत्तर तक पहुंचीं और समस्त पृथिवी पर छाया किये हैं जो कोई उन की छाया सिरों से न ग्रहण करेगा वह परलोक के तीक्ष्ण आतप में तड़पकर नरक की आग में जा गिरेगा और जल भुनकर भस्म हो जायगा।

अब हम ईसाई मत को सत मत के लक्षणों से निरूपण कर चुके और उस के चोखे स्वर्ण को बिचार की कसौटी पर कस चुके और दृढ़ प्रमाण से निश्चित हुआ कि उस में सत मत के सब लक्षण साक्षात् हैं। इस मत से यह निश्चय हुआ कि परमेश्वर पवित्र और न्यायी और दयालु और सत्यवादी सर्वसामर्थी अद्वितीय और समभाव है। इस मत में मनुष्य और सृष्टि की उत्पत्ति और उस के उत्पन्न होने के कारण का भी यथार्थ वर्णन है और मनुष्य और परमेश्वर के बीच क्या क्या सम्बन्ध है और परमेश्वर का न्याय और पवित्रता में बाधा होने बिना बरन उस की महिमा और माहात्म्य और प्रशंसा प्रगट करने के संग मनुष्य यद्यपि पापी होने के कारण किस रीति मुक्ति पावेगा निदान इस में सच्चे मत की छाप अर्थात् आश्चर्य्य और भविष्यद्वाणियां मेघ की बूंदों और

सूर्य की किरणों के समान बहुतायत से हैं सो इस रीति से यह तात्पर्य निश्चित हुआ कि वह सच्चा और परमेश्वर की ओर से है । और यह भी कि कोई दूसरा मत सच्चा नहीं परन्तु सब झूठ और मिथ्या है क्योंकि इस में सैकड़ों ठौर लिखा है कि यीशु नाम छोड़ दूसरा नाम स्वर्ग के तले नहीं जिस से मनुष्य उद्धार पा सके इस लिये उस को जो अपने इह-लोक परलोक की भलाई और कल्याण चाहता अवश्य है कि और सब का भरोसा छोड़के मसीह ही से मुक्ति की आशा रक्खे जैसे कि लोग आत्मा से जीवन की आशा रखते हैं क्योंकि मसीह ने आप कहा कि जो मुझ पर विश्वास न लावेगा उस पर दण्ड की आज्ञा होगी । सो हे प्रिय मेरी बात प्रिय समझकर आनेहारे क्रोध से भागो । इंजील के मत को ग्रहण करो और मसीह के शरणागत होओ कि आत्मा और मण्डली कहती है कि आ और जो सुनता हो वह दूसरों को कहे कि आओ और जो पियासा हो आवे और जो कोई अमृत चाहे संत ले जावे ।

सो हे प्यारो तुम मन चित्त लगाके मेरी बातें सुनो और ध्यान करो और उन्हें अपने सच्चे विश्वास से मान लो कि वे सब मनुष्य के लिये तन में प्राण और आंख में ज्योति की नाईं हैं जो कोई उन्हें ग्रहण करे सर्वदा के जीवन और विश्वास के प्रकाश को दोनों नेत्रों की ज्योति की नाईं एक संग एकट्ठे पावेगा नहीं तो मन का अन्धा जी का मुआ रह जावेगा उस के सुन्ने और मान्नेहारे को परमेश्वर दोनों लोक में कुशल और आनन्द से रक्खे और कृतार्थ और कृतकार्य्य करे ।

दूसरा खण्ड।

पहिला अध्याय।

बिवादों के उत्तर में।

अब परमेश्वर की ओर से ईसाई मत का होना तो निश्चित हुआ क्योंकि वे सब लक्षण जो सत मत के विषय उचित और योग्य हैं और सब लोग उन्हें मान भी लेते हैं उस में साक्षात् हैं इस लिये जो मुक्ति का ढूंढ़नेहार हो उसे उचित है कि इस मत को निश्चय करके ग्रहण करे यद्यपि इस में कोई बात ऐसी होय कि जो मनुष्य की समझ से बाहर अथवा मनमान न होय तौभी उस पर बिश्वास लावे और नाहनूह न करे जिस रीति से वे लोग जो परमेश्वर का होना मानते हैं उस की प्रभुता सारे जगत पर और उस की आज्ञा के मान्ने को अंगीकार करते और उस का न्यायी और बिचारी होना भी निश्चय करते हैं यद्यपि बहुत बातें ऐसी प्रगट होतीं कि जिन्हें न वे समझ सकते और न उन्हें मन-मान करते। इसी रीति इस मत को भी यद्यपि इस की सब बातें न भावें और समझ में भी न आवें तौभी ग्रहण किया चाहिये। इस के परे ईसाई मत में सोचने से न केवल यही प्राप्त है कि वह सत्य मत है और इस रीति से और सब मत जाल और बनावट हैं बरन इस मत की उत्तमता और बिशेषता भी प्रतिदिन अत्यन्त अधिक मन में समावेगी और अच्छी से अच्छी बात हृदय में आवेगी। फिर जब वह समय पहुंचेगा कि सब उसे ग्रहण करेंगे तब लोग पवित्र बनेंगे और इस जगत् के चौगान बैकुण्ठ की फुलवारी की

२ होंगे सब मनुष्य परमेश्वर से प्रेम रक्खेंगे और परोसी

को अपने समान प्रिय और प्यारा समझेंगे जैसे लिखा है कि * वे अपने खड्ग को तो फालें और अपने भालों के हंसुये बना डालेंगे और एक दूसरे पर तलवार न चलावेगा वे फिर समर करने को कभी न सीखेंगे ।

मांस खाने और मद्पान करने के विषय में ।

अब ईसाई मत की उत्तमता प्रगट करने से पहिले उचित है कि कितने विवादों और छेड़नेहारों का उत्तर देवें । पहिला विवाद ईसाइयों के मांस खाने और मदपान करने के विषय में बिदित है कि हिन्दू मांस के खाने और मुसलमान मद के पान करने पर ईसाइयों से बाद विवाद करते हैं सो जब कि पहिले ही निश्चित हो चुका कि हिन्दू और मुसलमान दोनों का मत परमेश्वर की ओर से नहीं है बरन उस के बिरुद्ध तो ऐसों का विवाद भी उन के मत ही के ऐसा होगा इसे छोड़ चार वेद छः शास्त्रों से जो हिन्दुओं के मतों के जड़ मूल हैं निश्चय नहीं होता कि मांस खाना और मदपान करना बर्जित है तब वह उन का यह बाद बिवाद करना कहां से आया ऐसी आज्ञा सारी इंजील में कहीं नहीं कि तुम मांस खाओ अथवा न खाओ फिर यदि खाया भी तो कुछ अपने सत मत से बिरुद्धता न किई क्योंकि लिखा है† कि परमेश्वर की हर एक उत्पन्न किई हुई बस्तु अच्छी है और कुछ अग्राह्य नहीं यदि धन्यबाद से लेवे और जितने जीव जन्तु और बृक्षादिक हैं परमेश्वर ने मनुष्य को उन का स्वामी बनाया मनुष्य का आत्मा छोड़ कोई आत्मा इस संसार में अबिनाशी नहीं इस लिये मनुष्यों को मांस खाना पाप नहीं और न उस के न खाने में भी कुछ पुण्य है इस

* यशायाह २ : ४ । † १ तिम. ४ : ४, ५ ।

के परे सारे संसार में कोई मनुष्य नहीं कि जो पशु पंछी के खाने बिना जी सके जैसे जल कि यदि एक घड़ी मनुष्य को न मिले तो वह तड़प जावे यद्यपि उस मे बहुत जीव हैं तथापि उसे सब हिन्दू भक्त पीते हैं इस से सहस्रों जीवों का खाना निश्चय हुआ और यद्यपि मनु के शास्त्र मे लिखा है कि सागपात में भी जीव है और उन को दुःख सुख होता है तौभी हिन्दू सब के सब खाते हैं और मत्स्यपुराण में लिखा है कि कौशिक मुनि के सात पुत्रों ने गर्ग ऋषि की गौ को खा जाने से मोक्ष पाई परन्तु जीवों का वृथा सताना और क्रोधित दशा मे उन्हें मारना अथवा भूखे रखना अथवा उन से अधिक परिश्रम कराना ईसाई मत से परमेश्वर के समीप पाप है और मदिरा जो दाखरस है परमेश्वर की उत्पन्न किई हुई बस्तु मनुष्यों के लिये है परन्तु उसे पान करके मत्तवत् और मदमाता होना सर्बदा बर्जित है और जो मदिरा पान करके अचेत हो जाते है वे इस मत से सर्वथा पापी और नरक के योग्य हैं। फिर यह बात तो पहिले ही निश्चय हो चुकी कि और मतों के बिरुद्ध ईसाई मत केवल एक ही देश के लोगों के लिये नहीं परन्तु समस्त संसार के लिये है। फिर ध्रुव के समीप कितने देशों में जहां थोड़ा सा अन्न उपजता है अथवा कुछ भी नहीं उत्पन्न होता वहां के रहनेहारे यदि मांस न खावे तो किस भांति जीवे इस लिये ईसाई मत उन बस्तुन को जिन्हें परमेश्वर ने उत्पन्न किया प्रमाण से खाना और पीना नहीं बर्जता बरन हर एक ईसाई को कहता है* कि तुम खाते हो और पीते हो और जो कुछ करते हो सब कुछ परमेश्वर के महत्त्व के लिये करो। इस के परे चेत रक्खा चाहिये कि यह मत कुछ निज करके

* १ करिन्थियो १० : ३१।

शरीर के लिये नहीं और न खाने पीने के व्यवरा से कुछ विषय रखता है बरन उसे आत्मा और मुक्ति से प्रयोजन है जैसे लिखा है* कि खाना पेट के लिये और पेट खाने के लिये पर परमेश्वर उस को और उन को नाश करेगा क्योंकि परमेश्वर का राज्य खाना पीना नहीं बरन धर्मशीलता और पवित्रता से आनन्दता है ।

सो ईसाई मत से यह भलाई है कि उस से मनुष्य परमेश्वर की पहिचान प्राप्त करे और ऐसी बात सीखे कि जिस से उस का मन शुद्ध और पवित्र हो जावे और वह स्वर्ग में जाने के योग्य बने ।

यह तो सत्य है कि यहूदियों को परमेश्वर ने कई एक प्रकार का मांस खाने को बर्जा† और वह बर्जना कुछ इस कारण से न था कि उस का खानेहारा अशुद्ध होगा परन्तु इस लिये कि वे लोग और सब लोगों से न्यारे रहें और परमेश्वर अपना बचन उन्हें सौंपे और आप उन में अवतार लेवे । फिर जब वह बात पूरी हो चुकी तो उस रीति के व्यवहार का प्रयोजन न रहा इस लिये इंजील न कुछ मांस के खाने और मद के पीने को कहती है न बर्जती है खानेहारे और न खानेहारे दोनों वहां बराबर हैं ।

परमेश्वर के पुत्र होने के विषय में ।

फिर कितने कहते हैं कि परमेश्वर तो कहीं पुत्र होता है ईसाई क्योंकर मसीह को परमेश्वर का पुत्र कहते हैं । जब निश्चित हुआ कि हिन्दुओं के मत और मुसलमानों के मत में परमेश्वर की पहिचान का कुछ मार्ग नहीं तो फिर उन के माननेहारे क्या जानें कि परमेश्वर का कोई पुत्र है अथवा

---

* १ करिन्थियों ६ : १३ । रूमियों १४ , १७ । † देखो पृष्ठ १४८ से १५२ तक ।

नहीं। इस के परे जहां लिखा है कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है तो उस से यह तात्पर्य्य नहीं कि वह ऐसा पुत्र जैसे मनुष्यों का होता है। सच पूछो तो ऐसी बात का कहना बैबल की रीति से सर्वथा ईश्वरापनिन्दा है और पाखण्डता है बरन उस का तात्पर्य्य यह है कि जैसे पिता और पुत्र एक ही देह और एक ही रुधिर और एक ही प्रकृति हैं वैसा ही पिता और पुत्र का एक ही ईश्वरत्व और एक ही गुण है। फिर परमेश्वर समभाव है इस लिये जब कहा है कि मसीह परमेश्वर का पुत्र है तो उस से यह तात्पर्य्य है कि वह उस का अनादि पुत्र है क्योंकि इस मत के समान पिता भी अनादि और पुत्र भी अनादि है। देवस्य सुत एक एवाद्वितीयः तो उस के ईश्वरत्व के विषय यह सोचना कि वह कब उत्पन्न हुआ और कहां रहा निपट अनुचित और बृथा है। और यदि यह सन्देह है कि पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा तीनों एक अद्वितीय परमेश्वर कैसे हैं अथवा क्योंकर परमेश्वर अवतार ले सकता है तो हमारा उत्तर यह है कि परमेश्वर ने योंही आप को हम पर प्रगट किया उस की कुछ यही इच्छा थी परन्तु उस के होने की रीति जो बर्णन नहीं किई है इस लिये हम भी बता नहीं सकते* और न केवल यही बात गुप्त बात है परन्तु ईश्वरत्व के और बहुत भेद अब लों हमारी समझ से गुप्त है उसे कौन बर्णन कर सकता है जैसे कि परमेश्वर किस रीति सर्वदर्शी और सर्वब्यापी है कि एक ही समय मे सारे जगत् के बीच और उस से बाहर भी है यह बात यद्यपि सर्वथा ध्यान में नहीं

---

* जब परमेश्वर ने मनुष्य के शरीर के लिये सागपात अरु और जीव जन्तु को ठहराया है तो मनुष्य के आत्मा के लिये परमेश्वर के अवतार का [illegible] कुछ आश्चर्य है।

आतो तथापि ज्ञानी से अज्ञानी तक सब उसे निश्चय करके मानते हैं पर यदि उस के सर्वदर्शी और सर्वव्यापी होने की रीति स्पष्ट पूछी जाय तो किसी मत का विद्वान् और बुद्धिमान वर्णन न कर सकेगा परन्तु उस के उत्तर में मूर्ख और अज्ञान बनेगा इसी प्रकार जैसे यह बात कोई वर्णन नहीं कर सकता और निश्चय करता है कि ईश्वरीय भेद है वैसा ही इस भेद को भी समझा चाहिये निदान ईश्वरत्व मे तीन हैं जो अद्वितीय परमेश्वर है और उस का स्पष्ट वर्णन अथाह और अपार है ।

---

३ ईसाई मत के न फैलने के विषय में ।

जो लोग कहते हैं कि यदि ईसाई मत सत मत है तो क्यों अब लों सारे जगत् में फैल नहीं गया उस के उत्तर में हम कहते हैं कि ऊपर के प्रमाणों से निश्चय हो चुका कि ईसाई मत सत मत है फिर ऐसे बिवाद का ईसाई मत से क्या प्रयोजन प्रभु ने अपने शिष्यों से कहा कि इंजील सारे जगत् में सुनाओ सो यदि उन्हों ने इस आज्ञा के पूरा करने में आलस और ढील किई तो परमेश्वर से नहीं परन्तु उन की ओर से है और यदि वैसा भी किया और लोग बिश्वास न लाये तौभी परमेश्वर की ओर से नहीं परन्तु मनुष्यों की ओर से है। इस पर एक दृष्टान्त है जैसे कि हिन्दुस्तान में कोई बड़ी मरी पड़ी हो और चीन के राजा के पास एक ऐसी औषधि होवे कि जो कोई खावे तुरन्त चंगा हो जाय। फिर वह हिन्दुस्तान की दुर्दशा की खबर पाके एक नाव औषधि लादके हिन्दुस्तान को भेजे और अपने सेवकों को अच्छी रीति से चिता दे कि यह औषधि हिन्दुस्तान के सब रोगियों को देना कि वे चंगे होवें । सो यदि वे सेवक मार्ग में कुछ बिलम्ब करे अथवा हिन्दुस्तान में पहुंचकर भी

औषधि के देने में शिथिलता करें तिस पर भी कितने मनुष्य औषधि खावें और चंगे होवें और कितने न खावें और रोगी बने रहें बरन उस रोग मे नाश भी हो जावें तो इस में किस का दोष है कि सब चंगे न हुए । इस पर कोई न कहेगा कि यह चीन के राजा का दोष है परन्तु सब यही कहेंगे कि सेवकों का दोष अथवा रोगियों की अज्ञानता है । फिर इस मत पर सब लोगों का अभी विश्वास न लाना कुछ उस के झुठलाने का प्रमाण नहीं जिस रीति नास्तिक परमेश्वर का होना नहीं समझते और उसे कुछ वस्तु ही नहीं जानते तो उन की ऐसी समझ से परमेश्वर का अभाव नहीं हो सकता । फिर यदि कोई कहे कि जो परमेश्वर का होना सत्य होता तो सब के मन मे उस का निश्चय होता यह क्या बात है इसी रीति से यदि कितने लोग ईसाई मत को सत मत न समझें तो इस मत में कुछ हानि होने की नहीं । निदान जो कोई इसे ग्रहण करेगा अपने लिये अच्छा करेगा और जो उस मार्ग पर न चलेगा अपनी बाट मे कांटा बोवेगा और सचमुच जो इतने लोगों ने ईसाई मत को ग्रहण किया तो यही आश्चर्य्य की बात है क्योंकि इंजील मे कोई ऐसी बात नहीं जो शरीर के मनमान होय अथवा मनुष्य उस से कुछ इन्द्री का स्वाद पावे बरन इस के विरुद्ध उस में सब आज्ञा ऐसी हैं कि जिन से विषयभावना और बुरी इच्छा तजी जाती है और घमण्ड और अहंकार दब जाता है और मनुष्य पवित्र बनता है । फिर ऐसी कड़ुवी औषधि अज्ञान रोगी कब प्रसन्नता से खावेगा और अभी से जो इंजील सारे जगत् में सुनाई जाती है यह भी ईसाई मत का एक बड़ा प्रमाण है क्योंकि इस से वह आगम की बात पूरी होती है जो प्रभु यीशु मसीह ने

अठारह सैा बरस के पहिले कही थी और परमेश्वर कर्त्ता है तो वह समय भी समीप आता है और बिवाद करनेहारों के मुख पर मैानता का ताला लग जाता है कि भविष्यद्वक्ता की सब बातें पूरी होती हैं और जिस भांति जल से समुद्र भरा हुआ है वैसा ही पृथिवी परमेश्वर के ज्ञान से भरपूर हो जायगी* ।

दूसरा अध्याय ।

ईसाई मत की उत्तमता के वर्णन में ।

ईसाई मत में केवल यही उत्तमता नहीं कि वह सत मत है इस कारण जो उस पर दोष लगावे आप ही दोषी ठहरे वरन इस मत में ऐसी उत्तमता है कि उस पर ध्यान करने से आप से आप उस की सच्चाई प्रगट और निश्चय होती है और आदि से अन्त तक वह सब मनुष्यों की अवस्था और आवश्यकता के योग्य है उस के हर एक बचन से परमेश्वर के गुण महिमा पाते हैं। अब इन बातों के अनुसन्धान के लिये हम पहिले वर्णन करते हैं कि किस प्रकार ईसाई मत सब जगत् के मनुष्यों की अवस्था और आवश्यकता के योग्य है ।

पहिले बिचार किया चाहिये कि जिस रीति संसार की सब बाते जो सृष्टिकर्त्ता ने उत्पन्न किईं मनुष्य की प्रगट दशा और आवश्यकता के योग्य हैं जैसे ज्योति नेत्र के लिये बनी है जिस से मनुष्य जगत् की वस्तु देख सकता और भूमि की संपन्नता मनुष्य के जीवन स्थिति का कारण और उस के रोगों के लिये औषधि है इसी रीति ईसाई मत मनुष्य की आत्मिक आवश्यकता के योग्य है क्योंकि ईसाई मत मनुष्य

---

* यशायियाह ११ : ८ ।

पर उस की हर एक बात को प्रगट करता उस के मन की दशा उसे दिखाता उस के दुःख और बिपत्ति का कारण उस पर खोलता है इस से निश्चय हुआ कि जगत् का कर्त्ता ईसाई मत का कर्त्ता है और जैसे जगत् मनुष्य के प्रगट दशा के योग्य तैसे ईसाई मत उस की अन्तर्गति के योग्य है। पर और किसी मत मे ऐसी बातें नहीं और कोई दूसरा मत मनुष्य का ऐसा स्पष्ट बर्णन नहीं कर सकता कुछ अटकल और अनुमान से कहते हैं पर अच्छी रीति से बर्णन नहीं कर सकते। कुछ २ मनुष्य की दुर्बलता और दुःख और उस के पापी स्वभाव का बर्णन करता है परन्तु यथार्थ समाचार प्रगट नहीं करता वे इन बातों की जड़ मूल को नहीं जानते और मनुष्य का आदि और भलाई और उस का पापी होना और उस की उत्पत्ति का कारण और जो हर्ष कि मनुष्य को परमेश्वर की पहिचान से होता है अच्छी रीति से नहीं बतला सकते ईसाइयों के मत में यह सब बाते ठीक २ प्रगट हैं उस में मनुष्य की पहिली दशा और उस के माहात्म्य का जैसा कि चाहिये वैसा ही बर्णन है अर्थात् मनुष्य इस लिये उत्पन्न हुआ कि अपने सृजनहार को पहिचाने और उस की आज्ञा को माने और उसे तन मन से प्यार करे और आनन्दित रहे। फिर उस में बर्णन है कि वह किस भांति पापी होके उस मंगल दशा से रहित हो गया। फिर उस में लिखा है कि पाप की बुराई और फल क्या है और यह भी कि आत्मा और इन्द्री परस्पर बिरुद्ध हैं। यह सभों पर प्रगट है कि मनुष्य को बुद्धि और बाणी मिली और विद्या की अभिलाषा में डूबके वह यह चाहता है कि अपने को उद्धार के तट पर पहुंचावे और वह सिद्ध होने की योग्यता रखता है। इस से जाना जाता है कि पहिले जब वह निष्पापी

था आनन्दित था और इस कारण से वह परिश्रम करता कि फिर उस पद को पहुंचे परन्तु हाय हाय उस के हृदय के नेत्र बन्द हो गये इस लिये जब लों कि इंजील की शिक्षा ग्रहण नहीं करता तब लों उस की सारी दौड़धूप व्यर्थ है वह एक ऐसा राजा है जो राजसिंहासन से गिरा यद्यपि वह भवसागर में इधर उधर हाथ फेंकता है परन्तु बिश्राम के तीर पर नहीं पहुंचता तौभी परिश्रम से हाथ नहीं खींच सकता यद्यपि उस की योग्यता और प्रवीणता ऐसी है तिस पर वह कीड़े मकोड़े की भांति मट्टी से जीता है यद्यपि उस की बुद्धि और बिचार स्वर्ग पर चढ़ते हैं परन्तु उस की इच्छा पाप के कीचड़ की ओर ले जाती है और संसार जिस से कि वह अप्रसन्न है इस लिये वह उस से अलग हुआ चाहता परन्तु उस का स्वभाव ससार की ओर फिर खींच २ लाता है यद्यपि वह चिन्ता में चिन्तायमान होता और उस का बिचार अपरंपार की बातों के विषय अत्यन्त ऊंचे तक पहुंचता है परन्तु वह अपनी इच्छा और लालसा मे डूबकर और अपनी इन्द्री के वश होकर दीन मलीन और अज्ञान बन जाता है यद्यपि वह धर्म की बात को छोड़ने नहीं चाहता तौभी अधर्मी बना रहता और पशु का स्वभाव दिखलाता है वह चाहता है कि सच्चाई का पीछा करे परन्तु उस से झूठ नहीं छूट सकता निदान ऐसी २ बातें ईसाई मत बतलाता है कि मनुष्य इन आपदों में पड़ा है और उस को ऐसा ही समझकर शिक्षा देता है वह कुछ दूतों और निष्पापियों के लिये नहीं परन्तु निज करके पापी मनुष्यों के लिये है और जिस भांति वैद्य रोगी की अवस्था और उस की सब बात जिस प्रकार कि रोगी पर बीतती बर्णन करके अपनी प्रवीणता प्रगट करता है बरन कितने चिकित्सक

पहिले ही वह औषधि जो रोग को दूर करे बर्णन करके अपना तर्क अच्छी रीति से प्रगट करता है इसी प्रकार ईसाई मत मनुष्य की अवस्था खोलता है अर्थात् उस के अन्तर्गति की बात स्पष्ट बतलाता है और उन के मन की बिपरीतता और इच्छा प्रगट करता बरन जिसे मनुष्य आप नहीं जानता वह समाचार उस पर खोलता। इन्हीं बातों से ईसाई मत प्रतीति के योग्य है। इस के परे केवल न केवल मनुष्य के रोग की जड़ मूल अर्थात् मन की बुराई और उस की बुद्धि और बांछों में बिपरीतता और दुःखों की बातों का बर्णन करती परन्तु वह औषधि भी बतलाती जिस से मनुष्य चंगा होवे। ईसाई मत प्रगट करता है कि परमेश्वर ने अपने प्रेम का भण्डार खोला और मसीह के द्वारा मन के चंगा और आत्मा के शुद्ध करने का उपाय किया जिस्तें मनुष्य को अनन्तजीवन मिले और उस के प्रेमसागर में नहाके निर्मल हो जावे और पवित्र आत्मा के द्वारा से पवित्र होकर स्वर्ग के आनन्द में प्रवेश करने के योग्य होवे और पवित्र आत्मा स्वर्ग का आनन्द और नरक का दुःख उस पर प्रगट करता और उसे नरक की आग से बचने को सिखाता और बिन्ती करता कि स्वर्ग में प्रवेश करने के निमित्त परिश्रम करो और ऐसा मार्ग बतलाता जो मनुष्य के चलने के योग्य है और उस पर खोलता कि तू इस जीवनकाल में बटाऊ होकर परीक्षा में है परन्तु परमेश्वर ने तेरे लिये सर्बदा का आनन्द स्थान लैस कर रक्खा है और उस को दृढ़ आशा है कि यदि वह आप को मसीह के द्वारा से परमेश्वर को सौंपे तो अवश्य उद्धार पावेगा और जिस रीति उस ने आज्ञा पाई कि वह परिश्रम करके अपनी रोटी खावे इसी भांति उस को आज्ञा है कि परिश्रम करके प्रार्थना करे जीवन की

रोटी जो स्वर्ग से आती है प्राप्त करे कि यदि उसे खावेगा कभी न मरेगा और बहुधा ऐसा संयोग हुआ है कि वे लोग जो सदा क्रूरता और दुष्टता से बड़े बड़े पाप करते थे बरन कुकर्म और अधर्म को छोड़ और कुछ उन का काम न था जब कि वे इधर बिश्वास लाये तो बड़े धर्मी और सुकर्मी हो गये यह भी एक इस मत की सत्यता का बड़ा निश्चित लक्षण और बिशेष गुण है। इस के उपरान्त ईसाई मत इस योग्य है कि सारे जगत् में फैले जितने मनुष्य कि पृथिवी पर हैं क्या पूर्व क्या पश्चिम क्या उत्तर क्या दक्षिण सब की दशा के योग्य है जैसे ऊपर बर्णन हो चुका उस में कोई आज्ञा ऐसी नहीं जो सर्वत्र के मनुष्य न मान सकते और कोई ऐसी शिक्षा नहीं कि जो सब नहीं जान सकते कोई काम नहीं जो सब के करने के योग्य न हो इसी कारण से वह हर समय के लोगों और देशों के लिये और उन की सब अवस्था और आवश्यकता के समान है वह मूर्ख और कंगालों के लिये भी है मसीह आप कंगालों में प्रगट हुआ और उन से अच्छी रीति से बार्त्ता किई और इंजील सुनाई परन्तु न इस भांति कि उन्हें अहंकार उपजे अथवा अपने स्वामी और बड़ों से बिमुख होवें। फिर वह सर्व प्रकार के प्रवीणों और ज्ञानमानों के योग्य भी है कि यदि अपनी सारी बुद्धि उस के निरूपण में उठायें तौभी उस के सब भेदों को न पावेंगे निपढ़ा और कंगाल जिस भांति कि उन की मुक्ति के लिये आवश्यक है उसे बिचार सकते हैं और सब से बड़ा प्रवीण बिस्मित होता है बालक इस रीति प्राप्त कर सकता कि उस की बुद्धि के समान है और बृद्ध जो बहुत संसार की परीक्षा कर चुका है वही पाता है जो उसे चैन और बिश्वास देता यह मत सांसारिक बिद्या का सहायक है और

उस से देश का सुभाग और घर घर का सुख चैन होता है और लड़ाई झगड़ा घट जाता है। यद्यपि वह सांसारिक विद्या का सहायक तौभी विद्या के घेरे से बाहर है मनुष्य जिस प्रकार विद्या उपार्जन करे उसी भांति बैबल की सच्चाई को समझे और यद्यपि वह सारे जगत् और समस्त समय के लोगों के लिये है और उन की सारी अवस्था और आवश्यकता के योग्य और परस्पर रीति प्रीति उपजाता है तौभी वह हर एक मनुष्य के लिये एक दर्पण है जिस में वह अपना स्वरूप अच्छी रीति से देखे और अपनी सारी बातों को बिचारे। इस मत के वाक्य सब खुले और सहज हैं यद्यपि उस की बोली निज करके भविष्यद्वक्तों की पुस्तकों में अत्यन्त मधुरवर है तौभी छन्दप्रबन्ध और रचावट से कुछ प्रयोजन नहीं रखता। वह अज्ञानों को मार्ग बतलाता है और विद्वानों को उन की विद्या समेत चक्रित करता है वह मनुष्यों की अवस्था और वृत्तान्त को दिखा दिखाके उस के मन में गड़ाता और अगिले मनुष्यों अर्थात् आदम और काइन और हाबील और हनूक और नूह और इब्राहीम इत्यादि का वृत्तान्त प्रगट करके लोगों को दुहरे लाभ दिलाता। निदान जैसे सूर्य्य की ज्योति नेत्रों के लिये है वैसाही बैबल का प्रकाश हृदय के नेत्रों के लिये है उस में कुछ ऐसा बर्णन नहीं कि जिस से धनमान अथवा विद्यावान् अथवा प्रतिष्ठित मनुष्य समझे कि वे अपनी सम्पत्ति और विद्या के और बड़ाई के कारण परमेश्वर के समीप होवें क्योंकि धनमान और कंगाल छोटे और बड़े मुक्ति के विषय में वहां बराबर हैं और उसी रीति से मद और अहंकार धनमान से और कंगालों से कुड़कुड़ाना और हियहार माना दूर किया जाता है जैसे मसीह के बचन से प्रगट है कि एक दिन आप भण्डार के साम्हने बैठे थे कि देखें लोग किस रीति भण्डार

में रुपये देते हैं धनमानों ने बहुत कुछ दिया और एक बपुरी विधवा ने एक अधेला । यीशु ने कहा इस विधवा ने सब से अधिक दिया क्योंकि धनमानों ने तो अपने धन की बहुतायत से दिया और उस ने अपनी सारी पूंजी दे डाली ।

दूसरे ईसाई मत में पाप से प्रश्चात्ताप करने का ठीक उपाय है कि उस में परमेश्वर आप नररूप धारण करके पाप ही के मिटाने के लिये इस जगत् में प्रगट हुआ और पाप ही के मिटाने के लिये बड़ा २ दुःख क्लेश अपने ऊपर उठाय और अपने प्राण को बलिदान किया जिस्तें उन सब को जो उस की शरण में आवें पाप से पश्चात्ताप करने की सामर्थ्य देवे उन्हें अपनी पवित्रता और अपने व्यवस्था की पवित्रता दिखाके मनुष्यों को पाप से उदास और खेद करावें और उन्हें काम क्रोध लोभ मोह इत्यादि से छुड़ाके अपने समान धर्मी और पवित्र बनावें सो जो इन बातों को समझता और मानता है क्या वह पाप से घिन न करेगा अवश्य करके घिन करेगा क्योंकि यह समझेगा कि पाप की ऐसी बुराई और उस के लिये ऐसा दण्ड ठहरा है कि बिना स्वर्ग और पृथिवी के स्वामी आप दुःख सहने और बलिदान होने से उस का निवारण न्याय की रीति से अनहोना था इस भांति वह अपने मन में सोचेगा कि जो वस्तु परमेश्वर की समझ में ऐसी बुरी है तो क्या मेरे समीप अच्छी हो सकती है। हाय हाय धिक् २ पाप पर कि जिस ने मुझे और मेरे घर को और मेरे कुटुंब को बरन सारे जगत् को लोक परलोक से नष्ट कर डाला और जो मेरे प्रभु परमेश्वर के दुःख उठाने और मारे जाने का कारण हुआ सो क्या मैं ऐसे पापों को फिर करूंगा कभी नहीं क्योंकि मेरा प्रभु फिर मरने का नहीं सो प्रभु परमेश्वर मेरा सहाय करे कि फिर पाप मुझ से

होने न पावे चाहि चाहि मैं मर जाऊं तौभी पाप न करूं।

हे प्रिय हिन्दुओ तुम इस के विषय सोचो कि तुम्हारे मत में पाप के पश्चात्ताप के करने का ऐसा विधान है कहीं वेद शास्त्र में परमेश्वर की पवित्रता अथवा उस की आज्ञा की पवित्रता का कुछ लेश है अथवा कहीं उन में लिखा है कि परमेश्वर पश्चात्ताप करने की सामर्थ्य मनुष्य को देता है। जब हिन्दू अपने पापों को देखके कुछ चिन्तायमान और भयमान होता है तो वह क्या करे वह तो काम क्रोध लोभ मोह में बह गया और कहीं सहायक दृष्टि नहीं आता बरन उस का शास्त्र उस से यह कहता कि जैसा तू ने किया वैसा तू पावेगा सो वह निराश होके और अधिक पाप में डूबेगा अथवा अपना मन कठोर करके यह सोचेगा कि मैं पाप से काहे को भयमान होऊं मैं बुरा तो हूं परन्तु देवताओं से बुरा तो नहीं हूं बरन उन से कहीं भला हूं शिव के समान जाति से अनादृत और अप्रतिष्ठित नहीं हुआ और ब्रह्मा की नाईं कामातुर होके अपनी कन्या से कुकर्म नहीं किया और विष्णु के समान पराई स्त्री को नहीं ठगा और उन के अवतारों की रीति प्रतिज्ञाभंजक और निर्दोषियों का घातक और नास्तिक मत और अधर्म का उपजायक नहीं हुआ और इन्द्र के समान अपने गुरु की पत्नी को भ्रष्ट नहीं किया। कुछ कुछ पाप जो मुझ से हुआ हो सो शास्त्र पुराण की रीति से कुछ बड़ी बात नहीं है यदि कहीं झूठ बोला हूं तो गौ ब्राह्मणों को उस में कुछ लाभ हुआ होगा। अथवा मेरी कुछ भलाई और जो विष्णु का नाम लिया तो फिर कहां मेरा पाप रहा। यदि लेने देने में कुछ अनुचित कर्म किया है तो उस में से कुछ देवताओं को अर्पण किया है यदि परस्त्रीगमन किया तो कृष्ण के समान हुआ वह

तो सामर्थी थे इस लिये उन्हों ने सोलह सहस्र गोपियों को रक्खा और जो मैं ने केवल चार पांच स्त्री रक्खीं तो इस में मेरा क्या दोष निदान जो कुछ पाप मुझ से हुआ हो सो गंगास्नान से सब छूट जायगा और कुछ पुण्य दान करके स्वर्गलोक में अपना कुछ ठिकाना कर लूंगा और कदाचित् अपने पाप ही में बना रहूं तो क्या डर है क्योंकि जले विष्णुः स्थले विष्णुः सर्वम् विष्णुमयं बोलता वही है फिर वह मुझ को लेके क्या करेगा क्या वह अपने को नरक में डालेगा सो मैं काहे को पछताऊं और किस कारण पाप से डरूं और काहे को अपने को शोकित करूं पाप पुण्य का तो शरीर ही बना है और जो कुछ होता सो प्रारब्ध से होता जिस के अधीन ब्रह्मा इत्यादि हैं मैं हूं जो हूं बदलने का नहीं। सो देखो हिन्दू पाप स्वभाव रखके बिना सहाय के और ऐसे जालों में फंसके कब पश्चात्ताप कर सकता है।

इस प्रकार मुसलमान का मत भी है कि उस से पश्चात्ताप अनहोना है उस में कुछ परमेश्वर की सत्यता और पवित्रता और उस की आज्ञा की पवित्रता और मनुष्य की पापदशा और उस के पाप के दण्ड का यथार्थ समाचार नहीं है उस में तो यह बातें हैं कि खुदा और उस के रसूल को मानो कलमः और पांचों वक्त की नमाज़ पढ़ो रोज़ः रक्खो खैरात करो सूअर न खाओ शराब न पीओ चार जोरू से जियादः न रक्खो पर लौंडी को कि जितने की परवरिश हो सके रक्खो इन बातों के सिवा अगर हज्ज को जा सके तो बिहतर है फिर उन के यहां तकदीर है और यह कि खुदा ने आदमी को कमज़ोर जी का कच्चा और जल्दबाज़ पैदा किया है बल्कि खुदा ने गुनाह को भी पैदा किया फिर ऐसी बातों के साम्हने तौबः की जगह कहां रही और इस मज़हब के

रू से शहवत जरूर है नहीं तो बिहिश्त में किस तरह हूरों से सुहबत रक्खेंगे और नजात जो है सो आमाल से है चुनान्चि हजारों जगह कुरान में लिखा है कि उन्हें उन को मजदूरी मिलेगी इस में शेखी और खुदपरस्ती खामख्वाह पैदा होती। फिर जहां शहवत और शेखी है वहां तौबः की जगह कहां और याद रक्खा चाहिये कि बगैर तौबः के कोई आदमी गुनाह न छोड़ेगा और पाक न हो जायगा और जब तक पाक नहीं हुआ खुदा के हुजूर किस तरह जायगा सो देखो हे प्रिय ईसाई मत की उत्तमता को कि उस में पश्चात्ताप करने का ऐसा उपाय है जैसा बर्णन हो चुका पर और किस में बिचार करो।

तीसरे ईसाई मत पाप करने से अत्यन्त बर्जता है केवल काया के पाप से नहीं परन्तु मनसा और बाचा के पाप से भी और आज्ञा करता है कि जितनी बातें अच्छी हैं उन का पीछा करो और उसी पर लौ लगाओ ठीक सूझता और समझ में आता है कि हिन्दू और मुसलमान का मत कई प्रकार से पाप करना पाप नहीं समझते बरन पुण्य जानते हैं जैसे कि प्रयोजन के समय असत्य कहना अथवा चोरी और हत्या करना और ब्यभिचार और आत्मघात करना इत्यादि और कई एक दशा में भलाई का करना उन के मत में मानो पाप करना है पर ईसाई मत में ऐसी बातों का लेश कहीं नहीं वह पाप करना और किसी भांति उचित नहीं रखता और कभी मनुष्यों के मन की बुराई और उन की बुरी इच्छाओं को गंवा नहीं देता उन से कभी लल्लोपत्तो नहीं कराता वह मनुष्यों की इच्छा और बिचार और चाल-चलन के बिपरीत है तौभी वह सर्वथा मनुष्य की भलाई का कारण होता और उस का यही अभिप्राय है कि मनुष्य के

आत्मा का रोग उस से दूर होवे और मन की बुराई जाती रहे और उस को स्वर्गराज्य में जाने के लिये सिद्ध करे ।

और ईसाई मत न केवल पाप करने को निषेध करता है परन्तु भलाई करने की आज्ञा देता है और पहिले आत्मा को शुद्ध करता है और सुख अभिलाषों के घोड़े की बाग लिये रहता है । कुल्हाड़ा वृक्ष की जड़ पर लगाता और पाप को जड़ से उखाड़ता है । वह न केवल यही आज्ञा देता है कि मन से वाचा से पाप न करो परन्तु मनुष्यों को उभाड़ता है कि उन्हों से भलाई करो और इस मत से जो लोग कि केवल अपनी ही भलाई की चिन्ता में जंगलों में जा रहते और आप कुछ सत्पथ की बात समझके भटके हुओं से न्यारे होते हैं और दूसरों की भलाई करने की कुछ चिन्ता नहीं रखते सच पूछो तो बड़ी भूल में हैं और उन की समझ के विरुद्ध उन का पाप और अधिक होता है । फिर जिस दशा में कि वे अपने लड़केवालों को भूख प्यास और निराश में छोड़के जंगलों में जा रहे हों तो उन के पापों की गिन्ती कब लेखा में आवेगी । आज्ञा है कि अपना दीपक ढंपने के नीचे मत रखो परन्तु दीवट पर ।

यह मत राजाओं और अध्यक्षों को उपदेश करता कि तुम न्यायी और दयालु होओ पवित्रता और धर्मशीलता को न छोड़ो पापियों को दण्ड और धर्मियों को प्रतिफल दो और हर भांति से अपनी प्रजा को अपने लड़कों के बराबर समझो उन की भलाई की चिन्ता मे रहो । फिर प्रजा को वह सिखलाता है कि तुम आज्ञा के अधीन रहो अपने बड़ों का आदर करो और उन के लिये प्रार्थना करो और यदि तुम पर अन्धेर होय तो सहो और प्रभु के आने की बाट जोहो

कि वह इन भेदों को जो अंधियारे में हैं प्रगट और मन के बिचारों को प्रत्यक्ष करेगा और उसी समय हर एक मनुष्य क्या अध्यक्ष क्या प्रजा सब को उन के कार्य्यों के समान प्रतिफल देगा। इस मत में नरमेध नहीं है छोटे २ लड़के नहीं मारे जाते व्यभिचार को छोड़ स्त्री को त्यागना भी बर्जित है एक पती के रहते दूसरो पती का करना आज्ञा नहीं स्त्रियों की अवज्ञा करनी बर्जित है और बिचार की बात है कि आदम की रीति एक ही स्त्री के करने से शरीर और आत्मा की पवित्रता और आरोग्यता होती है और घर में लड़ाई झगड़ा चार पांच स्त्रियों के रखने की नाईं नहीं होता स्त्रियों को विद्या और आदर देने से बहुत सा लाभ है जैसे कि बालक को खिलाना सुधारना इत्यादि कंगालों और मजूरों को शिक्षा देना और बृद्धों की प्रतिष्ठा करना भी लाभ का कारण होता है। सप्ताह में एक दिन बिश्राम और विशेष आराधना करने के लिये ठहराया गया है जिस्तें मनुष्य कंगाल से धनवान लों न केवल शरीर परन्तु आत्मा की भलाई प्राप्त करें पर इस मत में शुभ और अशुभ दिन का कुछ बिचार नहीं है और न शकुन का माना है। ईसाई मत में देखा चाहिये कि किस रीति अपने मित्रों और हितों से निर्बाह करने को कहता है और उन की मित्रता में कपट नहीं और ईसाई को आज्ञा है कि एक दूसरे को प्यार करे जैसा मसीह ने उन को प्यार किया अर्थात् यदि काम पड़े तो अपना प्राण भी एक दूसरे के लिये न दुरावें शत्रुता जड़ से उखाड़ी जाय क्योंकि मसीह ने आज्ञा दिई कि मनुष्य अपने पड़ोसी को अपने बराबर प्यार करे और मसीह की प्रीति उस के लोगों को खींचती है क्योंकि वे समझते कि जब एक सब के लिये मुआ तो सब मृतक ठहरे और वह सब के लिये मुआ जिस्तें

जो जीते हैं सो न अपने लिये परन्तु उस के लिये जो उन के लिये मुआ और फिर उठा आगे चलके जीवें * फिर सत मत की यह भलाई है कि जितने ईसाई सच्चे हैं उन सब के स्वभाव प्रकृति और चालचलन समान हैं मानो एकही सांचे के ढले हैं और यह बात और मतों से कब हो सकती। बैर लेना वर्जित है और ईसाइयों को उपदेश है कि मनुष्य की उजागरता और संपत्ति और बड़ी मर्यादा का कभी पक्षपात न करें और इस मत में शूरवीर की प्रशंसा इतनी नहीं जितनी दीन हीन और सन्तोषी स्वभाव की है मसीह कुछ संग्राम का उत्पादक नहीं बरन मेल मिलाप का राजकुमार है † इसी लिये मत के विषय उस ने लड़ने की आज्ञा कहीं नहीं दिई परन्तु उस से बर्जा है। पतियों को आज्ञा है कि अपनी पत्नियों से प्रेम रक्खें और पत्नियों को कि अपने पति की आज्ञा के अधीन रहें और आदर करें और ऐसी बातें लड़कों को कि अपने माता पिता की आज्ञा में रहें और उन की प्रतिष्ठा करें और माता पिता को कि अपने लड़कों को प्रभु की बताई शिक्षा और उपदेश करके प्रतिपाल करे। निदान हर एक घराना और नगर और जाति को आज्ञा है कि परस्पर मेल रक्खें और सब पर स्नेह प्रधान रहे। ईसाइयों को उचित है कि अपने वैरियों का अपराध क्षमा करें और उन से प्रीति रक्खें और उन के लिये जो उन पर स्राप देते हैं आशीष चाहें और जो उन से बैर रखते भलाई करें और अपने दुःखदायकों के लिये प्रार्थना करे एक दूसरे को सच्चे मन से प्यार करें और दयालु कृपालु रहें क्षमा करे जैसे परमेश्वर ने भी उन्हें मसीह के लिये क्षमा किया है और यदि

* २ करिन्थियों ५ . १४, १५ । † यशायाह ९ : ६ ।

किसी को किसी से दुःख पहुंचे तो दूसरा सह ले और क्षमा करे जैसे मसीह ने उसे क्षमा किया वैसा ही उसे भी क्षमा करे * यही ईसाइयों की भलाई का भेद है और हर एक बात में उन का एक ऐसा गुरु है अर्थात् मसीह जो हर भांति से सिद्ध है और आज्ञा है कि उस के तुल्य बनें और यश और भलाई और दया जो उस ने मनुष्यों पर प्रगट किई और उस की अधीनता और कोमलता और उस का संसार की वस्तुन का तुच्छ जानना और मध्यम होना और मन की दृढ़ता स्थिरता और प्रवीणता और बुद्धि विवेक सब भलाइयां जो उस में हैं और जिन से मनुष्य सिद्ध होता है उन सब पर ध्यान करके उन के समान चलें क्योंकि ईसाई यह शिक्षा पाते कि मसीह उन के लिये एक प्रतिरूप छोड़ गया कि जिस के समान चलना अति उचित है। फिर यह बिवाद कि सब ईसाई उस के समान कब चलते हैं केवल व्यर्थ है क्योंकि यहां ईसाइयों का कुछ प्रसंग नहीं और न कुछ उन की प्रशंसा बरन ईसाइयों के मत की चर्चा और उस की परीक्षा है जैसे हम ने इस पुस्तक के आरंभ में हिन्द के मत का बर्णन किया कुछ हिन्दू का बर्णन नहीं किया कि वे अपनी पुस्तक के समान नहीं चलते परन्तु उन के मत का बर्णन किया और इस सारी पुस्तक में जो हम ने परिश्रम सच्चे मन से किया कुछ इस लिये नहीं कि परमेश्वर के लोगों को पावें परन्तु परमेश्वर की पुस्तक का निरूपण करें हमें तो परमेश्वर और उस की पुस्तक से काम है न मनुष्यों से और इस समय तो परमेश्वर की पुस्तक पाके यदि उस की आज्ञाओं के समान काम न करें तो अपना प्राण खटके में डालें दूसरे मनुष्य चाहे करें चाहे न करें और

* इफिस. ४. ३२।

यह हम मान लेते हैं कि ईसाई अपने मत की पुस्तकों के समान कुछ नहीं करते इस बात से तो एक और प्रमाण हाथ लगा कि उन का मत उन से नहीं बनाया गया परन्तु परमेश्वर की ओर से भेजा गया क्योंकि यदि वह मत उन की ओर से होता तो कभी ऐसी आज्ञा नहीं देते कि जो उन के गर्व और दंभ के बिरुद्ध होता और उन्हें पापी बनाता और वे उसे अच्छी रीति से नहीं मान सकते और जो वह मत हर भांति से पूरा और पवित्र है इस लिये चाहता है कि मनुष्य भी ऐसा सिद्ध और शुद्ध होवे कि वैसा कोई आज लों न हुआ हो और यह ठीक जान पड़ता है कि वह अद्वितीय परमेश्वर जिस का कोई साक्षी नहीं इस मत का कर्त्ता है नहीं तो ऐसी बातें मनुष्य के मन में कब आतीं। फिर विचार किया चाहिये कि यद्यपि ईसाई अच्छी रीति से इंजील की आज्ञा नहीं मानते तौभी वे और सब लोगों से परमेश्वर और मनुष्यों को अधिक प्यार करते हैं और उन के परे दूसरी जाति जगत् में नहीं दृष्टि आती जो पराये की भलाई के लिये इतना परिश्रम और चिन्ता करती है वह जाति कहां है जहां सच्चाई और नेम धर्म का ऐसा धूम-धाम है जैसा ईसाइयों में कि प्रभु जिसे अधिक करे उन में से बहुतों के मन में न्याय और पवित्रता और धर्मशीलता का ऐसा जय है कि दीन हीनों और दरिद्रों की इस रीति रक्षा करते हैं कि धर्मशाला कंगालों के लिये बनाते और आप दुःख क्लेश सहके जगत् में चहुंदिशा फिरके मनुष्यों की दशा और मतों का बिचार करते ऐसी उत्तमता बिन ईश्वर की कृपा कब किसी में हो सकती कि लाखों रुपये प्रतिबर्ष उठान करके परमेश्वर का बचन जगत् में फैलाते और यही प्रतिफल चाहते कि मनुष्य परमेश्वर को सब से अधिक

और एक दूसरे को अपने समान प्यार करे और सारा जगत् पवित्रता से भरपूर होय। अब जो ईसाइयों के मत का प्रमाण और उस की पवित्रता और उस का अच्छा गुण समझ चुके और अच्छी रीति से जाना गया कि वह सब मनुष्यों की अवस्था और आवश्यकता और परमेश्वर के विभव के योग्य है और उस के कारण से परमेश्वर के पास और सदा के आनन्द और महिमा को पहुंचना प्रत्यक्ष देख पड़ता है इस से सब को उचित है कि परमेश्वर का धन्यबाद करके इस मत को ग्रहण कर लेवें और उस पर चलें और दूतों के संग कहें कि अत्यन्त ऊंचे पर परमेश्वर को धन्य और पृथिवी पर कुशल और मनुष्य में मिलाप होवे।

यह भी भूला न चाहिये कि परमेश्वर ने मनुष्य को जहां लों सत्य के निरूपण करने को सामर्थ्य दिई है वहां लों उसे सत्य का पहिचानना और उस को प्रतिपालन करना अवश्य है क्योंकि उस को परमेश्वर के न्यायस्थान में लेखा देना होगा इस लिये यह निपट भय की बात है और अवश्य करके चाहिये कि हर एक मनुष्य सत मत की ओर फिरे और अपनी मुक्ति की चिन्ता में रहे और सत्पथ पाके उस के ग्रहण करने और असत्य के त्यागने में मनुष्य के डर अथवा जगत् के किसी प्रकार की सोच चिन्ता न करे बरन तुरन्त अपने सृजनहार और स्वामी और मुक्तिदायक की आज्ञा को मान लेवे और अपनी मुक्ति की बात से लिपटा रहे यद्यपि तन धन सब जावें पर ईश्वर को न बिसरावे और परलोक को न भूले।

चौपाई।

सरवस जाय बने परलोका। नाहिं न है कुछ मन भय शोका॥
जेहि ते ईश्वर हर्षित होई। सोई यतन करहु सब कोई॥

जो मनुष्य परमेश्वर की इच्छा पर चलने चाहेगा वह समझ लेगा कि यह शिक्षा परमेश्वर का है अथवा मैं आप से करता हूं । योहन ७ पर्ब्ब १७ पद ।

शेष कथा ।

निदान सत्य मत में ये तीन बातें अवश्य चाहिये ।

पहिली कि उस से मनुष्य की शरीर की भलाई होवे ।

दूसरी कि उस से मनुष्य के आत्मा की भलाई होवे ।

तीसरी कि वह मनुष्य की अवस्था के योग्य होवे ।

ये तीनों बातें ईसाई मत में साक्षात् हैं पर बताओ तो और किस मत में हैं ।

जिस मत में महीनों व्रत करना अथवा ऊर्द्धबाहु होना और तपस्या इत्यादि करना लिखा है तो क्या उस से शरीर की भलाई हो सकती है ।

फिर जिस मत में लड़ाई करनी वैर लेनी कितनी स्त्रियां रखनी निज करणी से पुण्य प्राप्त करके मुक्ति पानी और जाति पर गर्व करना फूलना है तो क्या ऐसे मतों से आत्मा की भलाई हो सकती है । फिर जिस मत में प्रारब्ध और अटल कर्म का मान्ना और पाप पुण्य दोनों को ईश्वर की ओर से जान्ना और अपने को ब्रह्म समझके ईश्वर बन बैठना है क्या ऐसी ऐसी बातों से मनुष्य शान्ति पा सकता है वह तो अनाथ असमर्थ पापी है सर्व प्रकार के दुःख और क्लेश में पड़े और परमेश्वर की आज्ञा भंग करने से संतापी और रोगी हैं आपदों के गृह में रहता और आंसुओं की सरिता उस की आंखों से बहती मृत्यु के भय और परलोक के डर से कांपता थरथराता है सो इस दशा में पड़के ऐसी बातों से कब उस के मन का बोध होगा ।

ऐसी दशा में पड़के वह जन . राखेगो कैसे निज स्थिर मन।
ईसाई मत में इन्द्रियों का बश करना है और नेम धर्म से रहना परन्तु शरीर को नष्ट करना नहीं इस मत में आत्मा को भलाई है क्योंकि प्रारब्ध की कोई बात इस में नहीं बरन यह है कि मनुष्य अपनी क्रिया पर सामर्थी है और उस से अपनी हर एक बात का उत्तर अपने सृजनहार को देना होगा उस के पाप की क्षमा और उस के मन के रोग की औषधि और उस के आत्मा के लिये सर्वदा का अनन्तजीवन इस मत से है और यह सब कुछ परमेश्वर के सारे गुणों के प्रकाश संयुक्त है यहां तक कि ईश्वर पापियों को मुक्ति देने में मुक्ति पानेहारों के लिये आप एक प्रतिरूप ठहरता है कि जिस में बिश्वासी जन परमेश्वर की दया देखके आप दयालु हो जाता और परमेश्वर की प्रीति को समझके उस से और सब से प्रेम रखता है और उस की पवित्रता निरूपण करके आप पवित्र बनता और उस के न्याय और सत्य पर ध्यान करके न्यायी और सच्चा हो जाता है योंही परमेश्वर के सारे गुणों से जो इस मत में केवल कहने से नहीं परन्तु करने और मुक्ति देने से प्रगट है क्योंकि मसीह के अवतार लेने में मानो परमेश्वर के सारे गुणों का अवतार लेना है सो उन से उपदेश पाके और उन्हें अपने लिये प्रतिरूप ठहराके परमेश्वर की कृपा से सिद्ध और स्वर्ग पर जाने के लिये लैस हो जाता है। सो इस मत में ये तीनों बातें अर्थात् शरीर और आत्मा की भलाई और मनुष्य की अवस्था की योग्यता साक्षात् है मनुष्य की अवस्था और बैबल का बचन दहिने बायें हाथ की भांति एक दूसरे का उत्तर ठहरता है सो हे इस पुस्तक के पढ़ने- ारो मैं ने यहां संक्षेप मे बर्णन किया है पर तुम तनिक च लीजियो इस मत की शिक्षा और परमेश्वर के स्वभाव

और गुणों में बहुत समानता है । फिर इस मत की शिक्षा और उस स्वभाव और बोलचाल में जो इस मत के ग्रहण करने से प्राप्त होता है अत्यन्त ही समानता है । जैसे आज्ञा है कि मनुष्य दंभी नहीं परन्तु अधीन बने और अपनी करणी पर मुक्ति का भरोसा न रक्खे नहीं तो अवश्य मन में अहंकार समा जावेगा । फिर लिखा है कि सब से प्रेम रख इस बात को मनुष्य के मन गड़ाने के लिये लिखा है कि मसीह सब के लिये मुआ । और यह भी आज्ञा है कि व्यभिचार और लालच से सर्वथा अलग रहे और मनुष्य के मन में इस आज्ञा के निवेशन करने के लिये यह भी लिखा है कि मसीह सर्वथा पवित्र होके ऐसी बातों से हम सब के बचाने के लिये आप प्रायश्चित्त हुआ । योंही सब आज्ञाओं में है निदान निश्चय हुआ कि ईसाई मत ईसाई स्वभाव उत्पन्न करता है । फिर भला कहो तो और किसी मत में भी ऐसी बात है । हिन्दुओं के मत में दीनता नाम तो है पर उस के संग जाति का घमण्ड भी है तो कहां दीनता और कहां जातिघमण्ड । योंही मुसलमानों मे शरीर के नेम आचार तो हैं पर अनेक स्त्रियां करनी और स्वर्ग में सत्तर अप्सरा भी मिलनी हैं फिर कहां शरीर का नेम आचार और कहां सत्तर अप्सरा के संग काम केलि इसी रीति सब बातों में समझ लिया चाहिये ।

और सब मत मनुष्य के पाप स्वभाव से अत्यन्त ही समानता रखते हैं । आदम के समस्त वंश चाहे इस देश के लोग अथवा फरंगी अथवा फ्रांसीस अथवा चीन अथवा और देश के रहनेहारे सब के सब जन्म से और करणी से मूर्त्तिपूजक कामातुर अहंकारी हो चुके हैं जो किसी ने मूर्त्ति की पूजा न किई हो तौभी उस के मन में एक बड़ी मूर्त्ति लोभ इत्यादि की बनी है जिस पर परमेश्वर से अधिक प्रेम रखता है ।

यदि मूरत पूजत तुम नाहीं । विषय मूर्त्ति राखत मन माहीं॥

पर जो सच्चे ईसाई हैं उन के मनों में से यह मूर्त्ति तोड़ डाली गई और सच्चे परमेश्वर की प्रीति और पहिचान उस के मन में स्थित हुई है ।

ईश्वर प्रीति बसी उर वाके । भजिगौ भ्रम जित हते वसुधा के॥

इस मत में पापरोग का खोल खोलके वर्णन किया है और उस का एक बड़ो औषधि और एक ऐसा चिकित्सक भी कि वह यद्यपि पापिष्ठी देह के स्वरूप में प्रगट हुआ तौभी पापरोग से न्यारे रहा इस लिये पापी दुःखी की अवस्था अच्छी रीति से समझके और उस की औषधि भली भांति से करके अपने सा भला चंगा बना सकता है पर हाय हाय मनुष्य किसी देश का कैसा ही हो अपने पापी स्वभाव से नहीं चाहता कि ईसाई मत सच्चा ठहरे परन्तु जब लों उस का मन परमेश्वर की सहायता से प्रकाशित और उस के दयारूपी जल से निर्मल न हो जाय तब लों अपने सारे जी से उस को झुठलाने चाहता है क्योंकि वह अपने मन मे निश्चय जानता है कि यदि यह मत सच्चा ठहरा और मैं ने अपने पाप से हाथ न उठाया तो मुझे अवश्य नरक में जाना हुआ और यह बात उस के लिये मत के निरूपण और अनुसन्धान में बाधक भी होती है जैसे कोई न्यायकर्त्ता एक ओर का कनौड़ा होकर दूसरी ओर का न्याय कभी न कर सके योंही मनुष्य पाप और शैतान का दास होकर परमेश्वर के सत मत के बिचार करने में अति ही असमर्थ है और बड़ा कठिनता से परमेश्वर का कठिन पंथ उसे मिल सकता परमेश्वर शीघ्र कृपा करके सब को अपने बचन से समझावे कि सब का मुंह बन्द हो जावे और सब आप को परमेश्वर के आगे पापी समझे और मसीह की शरण गहके परमेश्वर के समीप धर्मी ठहरे ।

इस मत में न्याय और दया को तुला के दोनों पल्ले बराबर और यह दोनों डंडो के तले बराबर भरे हैं और यह मत किसी भांति के पाप को लग नहीं लगने देता और मनुष्य की बुद्धि और समझ और उस के आत्मा के सारे गुणों को सिद्धता पर पहुंचाने को सामर्थी है। मनुष्य जब अपनी पापदशा को सोचता और अपनी निर्बलता और आपदा और दुःख को बिचारता तो इस मत की भलाई अच्छी रीति से समझ सकता है। जो कोई अच्छी रीति से इस मत का बिचार किया चाहे उसे अवश्य है कि मन बच काया कर्मणा से सर्व रीति के पाप को त्यागे और उद्धार का खोजी बनके अपने मन में यह ठान रक्खे कि मैं परमेश्वर के अनुग्रह से उस को पहिचान लूं और उस की नाईं पवित्र हो जाऊं उस घड़ी वह इस मत का भेद जान सकेगा पर उसे चाहिये कि बैबल की बात अपने मन की अवस्था से मिलावे तब वह उस की साक्षी अपने मन ही में साक्षात् पावेगा वह तो उस के लिये एक दर्पण ठहर जायगा जिस में वह आप को पापी देख लेगा और उसे यीशु मसीह का जो बचानेहारा है स्वरूप देख पड़ेगा और नित्य प्रार्थना करने से वह उस के समान पवित्र हो जायगा और परमेश्वर के अनुग्रह से सिद्ध होकर अन्त को स्वर्ग में पहुंच जायगा। भाइयो मनुष्य का मन परमेश्वर का मन्दिर है और उस का कूड़ा कर्कट माया मोह मद अहंकार लालच तृष्णा काम क्रोध इस के परे समस्त औगुण हैं फिर तुम्हें अपने घर के फर्छा रखने की तो इतनी चिन्ता रहती है पर परमेश्वर के घर के फर्छा रखने को कुछ भी सोच नहीं यह धर्म मत से अत्यन्त दूर है।

मन है मन्दिर ईश्वर भाई . ता बिच राखहु अति फरछाई ।
तब देखहु तुम ज्योति प्रकाशा . होय जाय भव भ्रम तम नाशा ॥

मनुष्य को चाहिये कि अपने को पापी जानके नष्ट और नास्ति समझे और संसार की अज्ञानरूपी निद्रा से जाग उठे।

अचेत रहत कछु चेतहु भाई . सांस ते राखहु अति सचेताई ।
छण छण बाजत कूच दमंमा . होहु सजुग जिन करहु बिलंमा ॥

इस जगत् में बड़े २ मंडलेश्वर और चक्रवर्त्ती राजा थे अब जो देखिये तो मिट्टी के एक ढेर को छोड़ उन का कुछ चिन्ह नहीं राज काज धन संपदा नौकर चाकर घर गृह लड़के बाले सब छोड़ छाड़कर सूने जंगल में अकेले जा पड़े हैं।

तब तो ऊंचि अटारिन सोये . अब माटी बिच पड़े मुंह गोये ।
लाखन लोग हते तब साथा . अब एक भुनगा पूछे न बाता ॥

जाना नहीं जाता कि उन पर क्या बीती और परमेश्वर से कैसी बनी ।

फिर्‌यो न कोउ जो गौ वहि देशा . जा सन पूछों कुशल संदेशा ।

पर धन्य है परमेश्वर को कि एक जन ऐसा भी है जो उस देश में गया और फिर आकर उस का सारा बृत्तान्त कह सुनाया और समस्त पता बतला दिया सो प्रभु यीशु मसीह परमेश्वर का प्रिय पुत्र है वह तो मर गया परन्तु मृत्यु पर जय पाके फिर जी उठा और अपने बचन में दोनों लोक के बृत्तान्त को अच्छी रीति से प्रचार किया और जीता जागता स्वर्ग पर जाके उस का द्वार अपने विश्वासियों के लिये खोल दिया इस लिये जो कोई उस के शरणागत होता है वह इस भवसागर से पार उतर जाता है और निस्तार प्राप्त करता है।

ऊपर के निशानों से दीन महम्मदी की परीक्षा।

पहिला पर्ब्ब ।

क्या दीन महम्मदी में खुदा की सिफतों का ठीक बयान मिलता है कि नही।

ऊपर के निशानों के मुवाफिक़ दरियाफ़्त किया चाहिये कि दीन महम्मदी खुदा की तरफ से है या नहीं अगर खुदा की तरफ से है तो हमें क़बूल करना मुनासिब है नहीं तो रद किया चाहिये।

इस दीन के दरियाफ़्त करने के लिये दो राहें खुली हैं एक यह कि हम मुसलमानों का अक़ीदः जैसा वे रखते हैं दरियाफ़्त करके ऊपर के निशानों से मिलावें। दूसरे यह कि उन किताबों को जिन्हें वे पवित्र जानते हैं बिचार बिचारके ऊपर के निशानों से मिलान करें।

केवल पहिली ही राह पर चलना बहुत मुशकिल है क्योंकि उस का अन्त नहीं देख पड़ता इस लिये हम दूसरी राह को लेवें और क़ुरान ओ हदीस का मतलब खूब दरियाफ़्त करके ऊपर के निशानों से मिलावें। और जिस्तें उन किताबों की सचाई बखूबी साबित हो जाय हम उन प्रसंगों को बड़े सोच बिचार से देखें और अपना बयान नहीं परन्तु महम्मदियों के भाष्य और रिवायतों को दिखावें। सब मुसलमान क़ुरान को कलामुल्लाह अर्थात् ईश्वर का बचन कहते है और उस में बहुत जगहों में लिखा भी है कि वह अल्लाह की तरफ से उतरा और उस की असल लौहे महफ़ूज़ में लिखी है सूरे क़दर में यों लिखा है

إِنَّا أَنزَلْنَاهُ فِي لَيْلَةِ الْقَدْرِ ج وَمَا أَدْرَاكَ مَا لَيْلَةُ الْقَدْرِ ط لَيْلَةُ الْقَدْرِ خَيْرٌ مِّنْ أَلْفِ شَهْرٍ ط تَنَزَّلُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ فِيهَا بِإِذْنِ رَبِّهِم مِّن كُلِّ أَمْرٍ ج سَلَامٌ قف هِيَ حَتَّىٰ مَطْلَعِ الْفَجْرِ ط

याने हम ने यह उतारा शबे क़द्र में और तू क्या बूझा क्या है शबे क़द्र शबेक़द्र बिहतर है हज़ार महीने से उतरते हैं फ़िरिश्ते और रूह उस में अपने रब याने ईश्वर के हुकुम से हर काम पर अमान है वह रात सुबह के निकलने तक। और अगरचि हदीस का ज़िक्र कुछ ज़रूर नहीं क्योंकि क़ुरान ही में सब कुछ जिस का समझना हमें ज़रूर है लिखा है इस आयत के मुवाफ़िक़।

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ لِلْمُسْلِمِينَ *

याने उतारी हम ने तुझ पर किताब ब्योरा हर चीज़ का और राह की सूझ और मिहर औ ख़ुशख़बरी हुक्म बरदारों को। तौभी हदीस को देखा चाहिये क्योंकि अकसर लोग बहुतेरी हदीसों को क़ुरान के बराबर जानते हैं इस वास्ते इन दोनों को खोज और ऊपर के निशानों के मिलाने से मालूम होता है कि दीन महम्मदी ख़ुदा की तरफ़ से है या नहीं। पस हम इन निशानों के अनुसार सवाल करते हैं

कि क़ुरान औ हदीस के मुवाफ़िक़ ख़ुदा क़ुद्दूस अर्थात् पवित्र है या नहीं याने गुनाह से निहायत घिन करता और वैर रखता है या नहीं।

पहिला सवाल।

ख़ुदा की पाकीज़गी।

यह पवित्रता का गुण सब गुणों का माहात्म्य और मुकुट है जिस से और सब गुणों की शोभा होती है और तमाम

दुनिया में खुदा के पवित्र होने पर कोई संदेह नहीं करता। क़ुरान के पढ़ने से मालूम होता है कि लफ्ज़ क़ुद्दूस अर्थात् पवित्र सिर्फ दो बेर खुदा के बिषय में लिखा है। हदीसों में भी खुदा के नामों में से क़ुद्दूस एक नाम है। इन बातों से साफ मालूम होता है कि क़ुरान औ हदीस में खुदा क़ुद्दूस कहलाता है लेकिन इस कारण कि खुदा का यह गुण बहुत कम ज़ाहिर है इस लिये अवश्य हुआ कि हम क़ुरान औ हदीस के बयान के मुवाफिक़ खुदा के बचन और चरित्र पर ग़ौर करें तो मालूम होगा कि उन के मुवाफिक़ खुदा क़ुद्दूस ठहरता है या नहीं।

क़ुरान औ हदीस पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि जो कुछ आसमान औ ज़मीन पर वाक़े होता है क्या भला क्या बुरा उस का न सिर्फ जान्नेवाला बल्कि उस का कर्त्ता खुदा है और खुदा ही ने उन सब को मुक़र्रर करके लौहे महफ़ूज़ में लिखा ऐसा कि इन के बरखिलाफ कोई नहीं कर सकता इस को हर एक सच्चा मुसलमान मानता है। चुनानचि ग़िज़ाली महम्मदियों के ईमान के बयान में कहता है कि उस के नाम पर जो कुछ दुनिया मे होता है उस को वह चाहता है और वही सब माजराओं का बंदोबस्त करता ऐसा कि उस की सलतनत में जो कुछ होता है क्या छोटी क्या बड़ी बात क्या भला क्या बुरा क्या ज्ञान क्या अज्ञान क्या आज्ञापालन क्या उल्लंघन सब उसी की सलाह और ठहराई आज्ञा औ इच्छा से है।

हर एक दाना मुसलमान जानता है कि बुतपरस्ती गुनाह है और क़ुरान में भी मना है तौभी इन किताबों और मुसलमानों के अक़ीदे से मालूम होता है कि खुदा इस का भी कर्त्ता है चुनानचि सूरः इनआम में लिखा है

اتبع ما اوحی الیک من ربک لااله الا هو ج واعرض عن المشرکین *
ولوشاءالله ما اشرکوا ط (۲) کذالک زینا لکل امة عملهم (۳) و لکل امة
جعلنا منسکا هم ناسکوه و لو شاء ربک لجعل الناس امة واحدة ولایزالون
مختلفین الا من رحم ربک ولذالک خلقهم وتمت کلمة ربک لاملئن
جهنم من الجنة والناس اجمعین *

अर्थात् चले उसी पर जो हुकुम आवे तुझ को तेरे रब से किसी को बंदगी नहीं सिवाय उस के और जाने दे शरीक वालों को और अगर अल्लाह चाहता तो शरीक न करते इसी तरह हम ने भले दिखाये हैं हर फिरके को उन के काम। हर फ़िरके को हम ने ठहरा दी है एक राह बंदगी की कि वे उस तरह करते हैं। और अगर चाहता राख कर डालता लोगों को एक राह पर और हमेशा रहते हैं इख़्तिलाफ में मगर जिन पर रहम किया तेरे रब ने और इसी वास्ते उन को पैदा किया है और पूरा हुआ लफ्ज़ तेरे रब का कि अलबत्ता भरूंगा दोज़ख़ जिनों और आदमियों से एकट्ठे।

इन आयतों से ज़ाहिर होता है कि खुदा ने न सिर्फ़ जाना कि लोग बुतपरस्त होंगे बरन उस ने चाहा कि लोग मुशरिक और बुतपरस्त हो जावें। इस लिये हो गये बल्कि खुदा ने उन को इसी लिये पैदा किया चुनानचि हदीस में भी लिखा है कि खुदा ने शुरू से बुतपरस्ती और सब का हाल लिख दिया। समीत का बेटा ज़ैद कहता है कि नबी ने कहा है कि पहिली चीज़ जिस को खुदा ने पैदा किया क़लम था तब खुदा ने क़लम से कहा लिख उस ने पूछा मैं क्या लिखूं

ख़ुदा ने कहा हर एक मख़लूक़ अर्थात् कृत का हाल जो पैदा होनेवाला है तब उस ने सारा अहवाल जो था और आगे जो होगा लिख दिया । इब्न उमर ने कहा है कि रसूल अल्लाह ने कहा जो २ दुनिया में है ख़ुदा के हुकुम से है ।

फिर क़ुरान के मुवाफ़िक़ मालूम होता है कि ख़ुदा नापाकी का भी बानी है चुनानचि जलालुद्दीन औ बैज़ावी कहते हैं कि एक रोज़ महम्मद साहिब किसी काम के वास्ते अपने लेपालक बेटे ज़ैद के घर में गये वहां ज़ैद की जोरू ज़ैनब को देखा और ज़ैनब का रूप पसंद आया तो उस की चाहत पैदा हुई लेकिन जब ज़ैनब और उस के भाई अबदुल्लह ने महम्मद साहिब की ख़्वाहिश से नाराज़ होके उसे मना किया तो यह आयत उतरी

وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى اللّٰهُ وَرَسُولُهٗ اَمْرًا اَنْ يَكُونَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ

مِنْ اَمْرِهِمْ وَمَنْ يَعْصِ اللّٰهَ وَرَسُولَهٗ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا مُبِينًا ط

याने किसी ईमानदार मर्द और औरत का काम नहीं कि जब अल्लाह और उस का रसूल कुछ काम ठहरावे कि उन को अपने काम का इख़तियार रहे और जो कोई बे हुकुम चला अल्लाह के और उस के रसूल के सो राह भूला सरीह चूक कर। और इस लिये कि ज़ैद जनाब महम्मद साहिब से नाराज़ और बद गुमान न हो कहा कि इस बात में लाचार हूं कि ख़ुदा ने आप मुझे इस मुक़द्दमे में हुकुम किया है

وَاِذْ تَقُولُ لِلَّذِي اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ وَاتَّقِ

اللّٰهَ وَتُخْفِي فِي نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ مُبْدِيهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ج وَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ

تَخْشَاهُ ط فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنَا لَهَا لِكَيْلَا يَكُونَ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ

حَرَجٌ فِي أَزْوَاجِ أَدْعِيَائِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا *

याने जब तू कहने लगा उस शख्स को जिस पर अल्लाह ने इहसान किया और तू ने इहसान किया रहने दे अपने पास अपनी जोरू को और डर अल्लाह से और तू छिपाता था अपने दिल में एक चीज़ जो अल्लाह खोला चाहता है और तू डरता था लोगों से और अल्लाह से ज़ियादः डरना चाहिये तुझ को। फिर जब ज़ैद तमाम कर चुका उस औरत से अपनी ग़रज़ हम ने वह तेरे निकाह में दिई ताकि न रहे सब मुसलमानों को हर्ज निकाह कर लेना जोरुओं से अपने लेपालकों की जब वे तमाम करें उन से अपनी ग़रज़। इस से मालूम होता है कि खुदा ने इस से पेश्तर लौह महफ़ूज़ में लिखा है कि जनाब महम्मद साहिब ज़ैद की जोरू ज़ैनब से शादी करें। ज़ैद सुनतेही राज़ी था लेकिन तमाम लोग इस बात से आश्चर्य्यित हो पूछ पाछ करने लगे। फिर इस लिये कि उन का मुंह इस विषय में बंद हो जावे यह आयत उतरी

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهُ

याने नबी पर इस बात में जो अल्लाह ने उस के वास्ते ठहरा दिई मुज़ायका नहीं।

फिर ज़मख़शरी और बैज़ावी और जलालुद्दीन ओ यहिया के बयान से जाना जाता है कि एक दिन ऐसा हुआ कि महम्मद साहिब ने मारया काबतिया नामे अपनी एक लौंडी से प्रसंग किया तब उन की जोरुओं में से एक ने उस बात के लिये उन को उलहना दिया इस पर महम्मद साहिब ने क़सम खाई कि मै फिर उस से भोग न करूंगा। लेकिन

रह न सके और कहा कि खुदा ने यों ही हुक्कुम किया है और यह आयत उतरी

يَا ـ اَيُّهَاالنَّبِىُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَا اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ج تَبْتَغِي مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ط وَاللّٰهُ
غَفُورُ الرَّحِيمُ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ وَاللّٰهُ مَوْلِيكُمْ

याने ऐ नबी जो अल्लाह ने तुझ पर हलाल किया तू क्यों उसे हराम करता है। चाहता है तू रज़ामन्दी अपनी औरतों की और अल्लाह बख़शनेवाला मिहरबान है ठहरा दिया अल्लाह ने तुम को उतार डालना तुम्हारी क़समों का और अल्लाह तुम्हारा दोस्त है।

पस क़ुरान की रू से मालूम होता है कि बुतपरस्ती औ नापाकी औ क़सम उतारना और गुनाह करना सब खुदा के हुक्कुम औ ख़ाहिश से है। वही गुमराह करता और गुमराह करवाता है और जिस को वह गुमराह करता उस का कोई बचानेवाला नहीं है। चुनानचि हदीस में भी इस बात का बहुत साफ बयान है अबूहुरैरा कहता है कि रसूल अल्लाह ने फरमाया कि निःसंदेह खुदा ने व्यभिचारियों की क़िसमत में व्यभिचार करना लिख दिया और उन को अवश्य वैसाही करना पड़ता है। फिर नबी ने कहा कि आदम और मूसा ने खुदा के हुज़ूर में झगड़ा किया। और आदम ने मूसा को क़ायल किया कि मूसा कहता था तू वही आदम है जिस को खुदा ने अपने हाथ के ज़ोर से पैदा किया और तुझ को अपनी रूह में से दिया और फिरिश्तों से तुझ को सिजदः करवाया और विहिश्त में तुझे रहने को जगह दिई। इस के बाद अपनी चूक से तू ने आदमियों को ज़मीन पर फेंका। आदम ने कहा तू वही मूसा है जिस को खुदा ने अपना

नबी होने के लिये चुना और जिस से उस ने बार्त्ता किई और उस ने तुझे बारह तख़्ती दिईं जिन में हर चीज़ का ब्यवरा है। और खुदा ने तुझ को अपना दोस्त बनाया और भेदों का पहुंचानेवाला। पस पैदाइश से कितने दिनो पहिले वह किताब लिखी गई मूसा ने कहा चालीस बरस। तब आदम ने कहा क्या तू मुझे इस बात के लिये उलहना देता है जिसे खुदा ने मेरी पैदाइश से चालीस बरस पेशतर किताब में लिख दिया। आदम ने दुरुस्त कहा कि अगर खुदा ने मुक़र्रर किया कि वह गुनाह करे और गुमराह होवे तो वे बेशक बे क़ुसूर हैं क्योंकि कौन सर्वसामर्थी का साम्हना कर सकता है।

अब ग़ौर किया चाहिये कि सिफते क़ुद्दूसी का बयान जैसा क़ुरान ओ हदीस और मुसलमानों के अक़ीदे अर्थात् ईमान में लिखा है ऐसा है कि खुदा की क़ुद्दूसी की बड़ाई होती है या निन्दा।

साबित हुआ कि खुदा इन किताबों में क़ुद्दूस कहलाता है लेकिन क़ुद्दूस खुदा जो हमेशा गुनाह से अलग और घिन करता है बुतपरस्ती का कर्त्ता है और यह कि उस ने लौहे महफ़ूज़ में लिखा कि जनाब महम्मद साहिब अपने लेपालक बेटे की जोरू से शादी करें अपनी क़सम उतार डालें और वही पाक खुदा नेक ओ बद भलाई ओ बुराई का कर्त्ता है। लेकिन क्या वह महा पवित्र जो बुतपरस्ती से घिन करता है आप ही उसे ठहरावेगा क्या वह सर्व स्तुति योग्य ईश्वर जो पाप और अपवित्रता से बैर रखता है आप ही उसे ठहरावेगा और वह सत्य बाचक क़सम उतार डालने की आज्ञा देगा क्या वह सर्वोत्तम जिस के साम्हने फ़िरिश्ते रात दिन पुकारते हैं पवित्र पवित्र पवित्र प्रभु परमेश्वर वह आप ही जो उस की ज़ात और गुण के खिलाफ़ याने मुक़र्रर करेगा।

अब पवित्रता के गुण को छोड़के हम सवाल करते हैं कि कुरान की रू से खुदा आदिल अर्थात् न्यायी है या नहीं।

दूसरा सवाल।

खुदा की मुनसफी।

कुरान ओ हदीस मे बारहा लिखा है कि खुदा न्यायी है और न्याय के दिन खूब इनसाफ़ होगा कि एक बाल का भी फ़रक़ न रहेगा धर्मी शुभ फल और अधर्मी दण्ड पावेंगे जैसा हदीस में भी इस का व्यवरेवार बयान है मगर न्यायी किस को कहते हैं न्यायी वह है जो हरगिज़ किसी का पक्ष नहीं करता बल्कि हर एक को उस के दिल के हाल और उस की चाल के मुवाफिक़ ठीक २ बदला देवे इस तरह पर कि जब एक को किसी बात के लिये बदला देवे तो दूसरे को वैसेही काम के वास्ते हरगिज़ छोड़ न देवे। अब ग़ौर किया चाहिये कि कुरान ओ हदीस की शिक्षा इन बातों से मेल रखती है या नहीं ऐसा नहीं एक तरफ तो खुदा न्यायी कहलावे और दूसरी तरफ उस के न्याय मे खलल आवे।

कुरान में हुकुम है कि जो किताबें अगले नबी ओ रसूलों पर उतरीं उन को मान्ना चाहिये नहीं तो दोज़ख़ में पड़ोगे। और मुसलमानों का ईमान है कि एक सौ चार किताबें खुदा की तरफ से उतरीं इस व्यवरा से आदम को दस शीस को पचास इदरीस को तीस इबराहीम को दस मूसा को एक याने तौरेत दाऊद को एक याने ज़बूर ईसा को एक याने इंजील और महम्मद साहिब को एक याने कुरान। हम यह सुनकर पूछते हैं कि उन पर ईमान लाने से क्या मतलब है कुरान से मालूम होता है कि उन के मतलब पर ईमान लाना चाहिये। हदीसों से भी यही बात साबित होती है और मुसलमानों का अक़ीदः भी यही है कि जो उन किताबों का इनकार करे या

उस के एक हिस्से या एक बाब या एक आयत या एक लफ्ज़ पर शक्क लावे वह काफिर है। भला उन किताबों का मतलब क्या है हम सुनते तो हैं कि वे खुदा की तरफ से उतरीं परन्तु इस कारण कि हमे अपने ईमान का जवाब देना पड़ेगा हमें चाहिये कि इन किताबों से खूब वाकिफ हों पस हम कहते हैं कि वे किताबें हमें दिखलाओ और उन का खुदा की तरफ से उतरना साबित करो और उन का मतलब बताओ तो अलबत्ता हम ईमान लावेंगे। इस पर मुसलमान कुरान औ हदीस के मुवाफिक़ जवाब देते हैं कि उन किताबों में से एक सो खो गईं और तीन उन में से बदल गईं और अगरचि वे बदल गईं और उन के मतलब से वाक़िफ नहीं तोभी उन के मतलब पर ईमान लाना चाहिये नहीं तो काफिर होके दोज़ख़ में जावेंगे।

फिर मुसलमान कुरान औ हदीस के मुवाफिक़ कहते हैं कि जो २ मानना हमें ज़रूर है सो सब कुरान में लिखा है भला फिर अगली किताबों पर ईमान लाने से क्या मुराद है। कुरान में बहुधा हुकुम है कि जो २ उस में लिखा है उन को मानना चाहिये और जो उन पर ईमान नहीं लाता जहन्नम में डाला जायगा इस बात पर यह सन्देह होता है कि कौन सी दलील और कौन से निशानों से साबित हुआ कि कुरान परमेश्वर का बचन है क्योंकि दुनिया में और बहुत किताबें हैं जिन को लोग ईश्वर का बचन कहते हैं जैसा वेद शास्त्र पुराण संतवस्ता वगैरः क्या हमें इन सब को मानना चाहिये अगर नहीं तो कौन सी दलील से साबित हुआ कि कुरान खुदा की तरफ से उतरा। मुसलमान कहते हैं कि कुरान की फसाहत याने अच्छी बोली उस के खुदा की तरफ से होने की दलील है यह हम किस तरह जान

सकें अरब के लोग ते। अलबत्ता यों ही कहते हैं पर जो उन के नज़दीक अच्छी बोली है। औरों की नज़र में उलटी हो सकती है और मान लिया कि कुरान की ज़बान फसीह और अच्छी औ अनूप है तैाभी इस से क्या हासिल हुआ यही कि ज़बान उस की अच्छी न यह कि मतलब उस का खुदा की तरफ से है इस लिये हम फिर कहते है कि कुरान के खुदा का कलाम होने की ऐसी दलील लाओ जो अरबीयों के सिवाय और लोग भी समझें जैसा मूसा औ ईसा ने ज़ाहिर किया तो हम ईमान लावेंगे लेकिन कुरान का जवाब है कि आश्चर्य्य कर्म्मों का वक्त़ गुज़र गया तुम ईमान लाओ नहीं तो तलवार से मारे जाओगे क्योंकि

مَا مَنَعَنَا اَنْ نُرْسِلَ بِالْاٰيَاتِ اِلَّا اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ *

याने हम ने इस से मैाकूफ किईं निशानियां भेजनी कि अगलों ने उन को झुठलाया । अब तलवार चलाने का वक्त़ आया क्या हमें अपने ईमान का जवाब न देना पड़ेगा अलबत्ते देना पड़ेगा क्योंकि इसी वास्ते खुदा ने आदमी को अक़ल औ समझ दिई है तो फिर चाहिये कि इस बात पर कि यह किताब खुदा की तरफ से है ऐसी दलील लाओ जो और लोगों की समझ में भी आवे क्योंकि मान लिया कि इस की बोली अच्छी और अनूप है तैाभी हमें कुरान के मतलब में बड़ा शक़्क़ आता है कुरान का जवाब है शक़्क़ मत लाओ बहस मत करो ईमान लाओ नहीं तो तलवार से मारे जाओगे । फिर लिखा है कि खुदा ने सदूम और अ़मूरा को नेस्त किया और लूत और उस के खा़न्दान को उस की जोरू के सिवा बचाया और इस बात का कई आयतों में

बयान है। इस का सबब भी लिखा है याने यह कि खुदा ने चाहा कि वह नेस्त होवे जैसा लिखा है

فَأَنجَيْنَاهُ وَأَهْلَهُ إِلَّا امْرَأَتَهُ قَدَّرْنَاهَا مِنَ الْغَابِرِينَ *

याने फिर बचा दिया हम ने उस को और उस के घर को मगर उस की औरत ठहरा दिया था हम ने उस को रह-जानेवालों में क्या इस लिये कि उस ने गुनाह किया औ सज़ा पाने के लायक़ हुई थी नहीं बल्कि इस लिये कि खुदा ने योंहीं चाहा उस के इख़तियार में न था कि भागे क्योंकि सर्बसामर्थी ने ठहराया कि वह रह जाय तो कौन उस से मुक़ाबला कर सकता है।

हदीस में भी ऐसी बातें लिखी हैं चुनान्चि मसऊद का बेटा बयान करता है कि रसूल अल्लाह ने कहा कि वह औरत जिस ने अपने लड़के को ज़िन्दा दफ़न किया वह और उस का लड़का जो दफ़नाया गया दोनों दोज़ख़ में हैं। फिर खुदैजा के दो लड़के महम्मद के कहने के मुवाफ़िक़ दोज़ख़ मे हैं क्योंकि वे अज्ञानता के दिनों में पैदा हुए और खुदैजा का वह बेटा जो महम्मद से पैदा हुआ बिहिश्त में क्योंकि वह इसलाम के ज़ाहिर होने के बाद पैदा हुआ फिर मुसलमानों के लड़के बिहिश्त में जाते है और औरों के दोज़ख़ में क्योंकि मुसलमानों के कहने के मुवाफ़िक़ खुदा की यही मरज़ी है। और गुनहगारों को बिहिश्त में पहुं-चाना और धर्म्मी को दोज़ख़ में डालना गोया खुदा के नज़दीक न्याय है। जैसा हदीस में अबूहुरैरा कहता है कि रसूल अल्लाह ने फरमाया बनी इसराएल दो आदमी थे जो आपस में दोस्त थे एक उन में से खुदा के हुकुम मानता और दूसरा गुनहगार था दीनदार ने गुनहगार से कहा

अपने गुनाहों से बाज़ आ उस ने जवाब दिया मुझ को मेरे परवरदिगार पर छोड़ो आख़िर एक दफ़ा उसे बहुत बड़ा गुनाह करते पाया और फिर उसे कहा कि गुनाह से बाज़ आ गुनहगार ने जवाब दिया कि मुझे परवरदिगार पर छोड़ दो तू क्या मेरी निगहबानी के वास्ते भेजा गया है। दीनदार ने कहा मैं ख़ुदा की क़सम खाता हूं कि वह हमेशा तेरा गुनाह मुआफ न करेगा और तुझे बिहिश्त में न ले जावेगा तब ख़ुदा ने एक फ़िरिश्ता भेजकर दोनों की जान ले लिई और वे दोनों ख़ुदा के पास पहुंचे ख़ुदा ने गुनहगार से कहा तू बिहिश्त में जा और दूसरे से कहा क्या तू मुझे अपने बन्दे पर रहम करने से रोक सकता है। उस ने जवाब दिया ऐ मेरी पनाह मैं नहीं मना कर सकता ख़ुदा ने फ़िरिश्ते से कहा इस को दोज़ख़ में डाल देओ।

क़ुरान औ हदीस के रू से साबित है और सब मुसलमान इस को मानते हैं क्योंकि यह उन के ईमान का एक हिस्सः है कि ख़ुदा ख़ुद मुक़र्रर करता है कि आदमी उस की हुक्म-अदूली करे वह ख़ुद उन को बहकाता और गुमराह करता है और जब यह कर चुका तो जिस को चाहता सज़ा और जिस को चाहता वैसेही काम के लिये नेक बदला देता है चुनानचि यह बहुत आयतों से साबित है

مَنْ يَهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِي وَمَنْ يُضْلِلْ فَأُولٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ * وَأَضَلَّ اللّٰهُ
عَلَىٰ عِلْمٍ وَخَتَمَ عَلَىٰ سَمْعِهِ وَقَلْبِهِ وَجَعَلَ عَلَىٰ بَصَرِهِ غِشَاوَةً فَمَنْ يَهْدِيهِ مِنْ بَعْدِ اللّٰهِ

याने जिस को अल्लाह दे राह वही पावे राह और जिस को वह भटकावे सो वही है नुक़सान में और राह से खोया उस को अल्लाह जानता बूझता और मुहर किई उस के कान

पर और दिल पर और डाली उस के आंख पर अंधेरी फिर कौन लावे उस को राह पर सिवा अल्लाह के। फिर जब आदमी गुनाह कर चुका तो जिस को चाहता सज़ा देता और जिस को चाहता जज़ा देता है चुनानचि लिखा है

يَغْفِرُ لِمَنْ يَشَاءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ يَشَاءُ

याने बख़्शे चाहे जिसे और दुःख दे जिस को चाहे अल्लाह सब चीज़ों पर ज़बरदस्त है। और जिस तरह जिस को चाहता सज़ा देता और जिस को चाहता बख़्शता है इसी तरह बाज़ों को दोज़ख़ के लिये और बाज़ों को बिहिश्त के लिये पैदा किया चुनानचि लिखा है

وَ لَقَدْ ذَرَأْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ * اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ اَفَاَنْتَ تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ * وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدَاهَا وَ لٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّي لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ *

याने हम ने फैला रखे हैं दोज़ख के वास्ते बहुत जिन्न और आदमी भला जिस पर ठीक हो चुका अज़ाब का हुक्म भला तू छुड़ावेगा आग में पड़े को और अगर हम चाहते तो देते हर जी को सूझ उस की राह को लेकिन ठीक पड़ी मेरी बात कि मुझ को भरनी दोज़ख़ जिन्नों से और आदमियों से एकट्ठे। हदीस में भी इन बातों का ख़ुलासा बयान है चुनानचि लिखा है आयशा कहती है कि एक दफा किसी दोस्त के लड़के की ताबूत याने रथी पर नमाज़ पढ़ने को नबी बुलाया गया उस से मैं ने कहा कि ए रसूल अल्लाह खुश हो क्योंकि वह लड़का बिहिश्त की चिड़ियों में से एक

चिड़िया है इस लिये कि उस ने गुनाह न किया था नबी ने जवाब दिया कि शायद ऐसा न हो क्योंकि ख़ुदा ने उन को जो बिहिश्त के वास्ते हैं उस वक़्त मुक़र्रर किया कि जब वे पैदा न हुए थे और दोज़ख़ के जानेवालों को भी उसी वक़्त । फिर यसार के बेटे मुसलिम का क़ौल है कि हज़रत रसूल अल्लाह ने फरमाया कि सचमुच ख़ुदा ने आदम को पैदा किया और अपने दहिने हाथ से उस की पीठ को छुआ और एक नसल उस से निकाली और ख़ुदा ने आदम को कहा मै ने बिहिश्त के वास्ते यह नसल निकाली और उन के काम बिहिश्त मे जानेवालों की मानिन्द होंगे तब ख़ुदा ने फिर आदम की पीठ छूई और दूसरी नसल निकाली और कहा मैं ने उन को दोज़ख़ के लिये पैदा किया और उन के काम दोज़ख़ में जानेवालों की मानिन्द होंगे । फिर उमर के बेटे अबदुल्लाह का क़ौल है कि एक दफा रसूल अपने घर से दो किताब हाथ में लिये निकला और पूछा तुम जानते हो यह कैसी किताबें हैं कहा नहीं तू हम को बतला तब उस ने उस किताब की बाबत जो उस के दहिने हाथ में थी कहा कि यह ख़ुदा की तरफ से है इस में बिहिश्त के लोगों का नाम लिखा है और उन के बाप दादे और उन की क़ौम के लोग और किताब के आख़िर में उस की जमा भी लिख दिई और उन में से कम और ज़ियादः न होंगे और दूसरी किताब जो उस के बायें हाथ मे उस की बाबत कहा कि यह भी ख़ुदा की तरफ़ से है इस में दोज़ख़ के लोगों का नाम लिखा है और आख़िर में उन के बाप-दादों और उन के फ़िरक़ों की जमा है और उस से ज़ियादः और कम न होंगे ।

ख़ुलासः इस का यह है कि क़ुरान ओ हदीस और

मुसलमानों के ईमान से साबित हुआ कि खुदा आदिल कहलाता है और अदालत के दिन हर एक को उस के काम के मुवाफिक़ बदला देगा और यह कि सब किताबें शुरू से हर एक नबियों और रसूलों पर उतरीं उन के मतलब और हर एक बाब ओ आयत ओ लफ्ज़ पर अगरचि वे खो गईं और उस का मतलब बदल गया तौभी ईमान लाना चाहिये नहीं तो काफिर होगे और यह कि अगली किताब याने तौरेत ज़बूर इंजील के मतलब को रद समझें और क़ुरान की बातों को मानें। और लूत की जोरू बरबाद हुई क्योंकि खुदा ने योंहीं चाहा। और जो औरत अपने लड़के को ज़िन्दः दफन करे वह और उस का लड़का जो दफनाया गया दोनों दोज़ख़ में हैं। बीबी खुदैजा के दो लड़के जो जिहालत के दिनों में पैदा हुए जहन्नम मे हैं और उस का वह बेटा जो मुसलमानी मज़हब के ज़ाहिर होने पर पैदा हुआ बिहिश्त में है और मुसलमानों के लड़के बिहिश्त मे और औरों के दोज़ख़ में जाते हैं और खुदा बाजे वक़्त धर्म्मी को दोज़ख़ में और गुनहगार को बिहिश्त में पहुंचाता है। गरज़ कि अल्लाह आदमी को बहकाता है और बाद इस के जिस को चाहता नेक बदला देता और जिस को चाहता सज़ा देता है। और बाज़ों को दोज़ख़ और बाज़ों को बिहिश्त के लिये बनाया जैसा कि यह बात दो हदीसों से साबित हुई।

अब ग़ौर किया चाहिये कि इन बातों से सिफत अदालत खुदा की पाक ज़ात पर बुज़ुर्गी पाती है या नहीं क्या अगर अल्लाह हमें इस सबब से सज़ा दे या काफिर बनावे कि हम उन किताबों के मतलब पर दिल से ईमान न लावें जो मौजूद नहीं और जिस को न हमे कोई दिखा सकता न कोई उन का मतलब बता सकता तो वह आदिल है।

फिर अगर अल्लाह हमें इस लिये सज़ा देवे कि हम ने उन किताबों याने तौरेत ज़बूर नबियों की किताबें और इंजील को जिन्हें उस ने मज़बूत दलीलों से साबित किया रद न किया और एक दूसरो याने कुरान को जो अगली किताबों से ख़िलाफ़ है और किसी मज़बूत दलील से साबित न हुई कबूल न किया तो वह आदिल है। गुनहगार को बिहिश्त में और धर्म्मी को दोज़ख़ में भेजना गरीब लड़कों को जिन्हें उस ने इसलाम से दस बरस पेश्तर पैदा किया दुःख में डालना और उन बच्चों को जिन्हें उन की माताओं ने मार डाला जहन्नम में भेजना इनसाफ़ है अगर कोई बादशाह हुक्म करे कि हमारी फ़ुलानी आईन को जो मौजूद नहीं या कोई उसे नहीं जानता मानो तो इस सफ़ेद चीज़ को सियाह और सियाह को सफ़ेद कहो नहीं तो क़तल किये जाओगे अगर वह भले आदमी को भली बात के लिये सज़ा ओ बुरे आदमी को बुरे काम की ख़ातिर नेक बदला दे और एक घराने के लड़कों को क़तल करे और दूसरे को छोड़ दे या एक आदमी से ख़ून करावे बाद उस के उसी ख़ून का उस से बदला ले तो कोई ऐसे हाकिम को मुनसिफ़ या आदिल कहेगा आप ही इनसाफ़ कीजिये।

तीसरा सवाल।

ख़ुदा की रहमत।

हम इसे भी छोड़के सवाल करते हैं कि कुरान ओ हदीस को रू से ख़ुदा रहीम है या नहीं।

यह सिफ़त ख़ुदा की कुरान में बहुत लिखी है ओ सूरे तौबः या बरात के सिवा सब सूरे बिसमिल्लाह रहमाने रहीम से शुरू होते हैं और लफ़्ज़ रहीम और जो २ लफ़्ज़ कि उस

से निकले हैं दो सौ दफा कुरान में आते हैं तौभी दर-याफ़ करना मुनासिब है कि ख़ुदा के कौन फेल से जो कुरान औ हदीस में लिखा है यह सिफत् साबित होती है या नहीं।

ख़्याल किया चाहिये कि ख़ुदा मालिक है इस लिये चाहिये कि उस की सब सिफतें एक दूसरे से मेल रक्खें ऐसा कि उन का एक गुण दूसरे को रद न करे और न एक बुज़ुर्गी पावे और दूसरा हेठ हो जावे पस अगर किसी अहवाल के बयान में ख़ुदा की कुद्दूसी उस की अ़दालत को या उस की अ़दालत उस की रहमत को या उस की रहमत उस की कुद्दूसी और अ़दालत दोनों को रद करे या ख़लल पहुंचावे तो उस अहवाल का बयान ख़ुदा की तरफ से नहीं क्योंकि ख़ुदा आपही अपनी ज़ात और किसी सिफत् को ख़लल न पहुंचावेगा अगर ऐसा करता तो कामिल न होता। कुरान औ हदीस में लिखा है और सब मुसलमानों का ईमान भी इस पर है कि अगरचि आदमी ज़िन्दगी भर बड़ाही गुनहगार रहे मगर जब वह आख़िरी दम तौबः करे और कलमा पढ़े तो बेशक नजात पावेगा गुनाह का कफारा याने प्रायश्चित्त कुछ ज़रूर नहीं न्याय अलबत्ता गुनाह की सज़ा चाहता पवित्रता भी उस पर राज़ी है लेकिन रहम दोनों को किनारे करके गुनहगार को छोड़ देता है चुनानचि अबूसईद ख़ुदरी कहता है कि इसराएलियों में एक मर्द था जिस ने निन्नानवे आदमियों को क़तल किया था बाद उस के बाहर निकला और एक दरवेश से पूछा कि मेरी तौबः मक़बूल होगी या नहीं। दरवेश ने जवाब दिया नहीं तब उस मर्द ने उस दरवेश को भी मार डाला फिर और लोगों से पूछा कि मेरी तौबः मक़बूल होगी एक शख़्श ने उसे कहा

कि फुलाने गांव में जा वहां एक दरवेश रहता है जो तेरी मुश्किल आसान करेगा उसी वक़ मौत के निशान उस पर ज़ाहिर हुए और वह उस गांव की तरफ जाके मर गया। तब रहम और सज़ा के फिरिश्तों ने आपस में बहस किई याने रहम के फिरिश्ते ने कहा खुदा उस को मुआफ करेगा दूसरे ने कहा नहीं खुदा उस को सज़ा देगा तब खुदा ने उस गांव को जिस की तरफ वह जाने को था हुक्म दिया कि लाश के नज़दीक हो और उस गांव को जिस से वह भागा था उस से दूर हो इस के बाद खुदा ने फिरिश्तों से कहा कि उन दोनों गांव का बीच नापो और देखो कौन गांव उस मर्द की लाश के नज़दीक है। उन्हों ने नापा कि वह गांव जिस से वह जाता था बालिश्त भर दूसरे गांव से नज़दीक था इस लिये बख़्शा गया उस शख़्श पर खुदा ने हक़ीक़त में रहम किया वह तो गुनहगार और दोज़ख़ के लायक़ था लेकिन खुदा ने उसे बचाया। फिर दूसरी जगह में भी लिखा है कि खुदा उस गुनहगार को भी जो अपने गुनाहों में बिना तौबः किये मरे नजात बख़्शता है चुनानचि लिखा है कि जाबिर ने कहा कि फ़िलहक़ीक़त उमरवाजी का बेटा तुफैल नबी के पास गया और एक मर्द उस की क़ौम का उस के साथ वह बीमार और निहायत घबराया था उस ने एक छुरी लेके अपनी अंगुलियों की पोर काट डाली ऐसा कि लहू बहते बहते मर गया। तब तुफैल ने उस शख़्श को ख़्वाब में देखा कि खूबसूरत था और हाथ छिपाये हुए उस ने उस से पूछा कि खुदा ने तुम से क्या किया उस ने जवाब दिया कि मुझे नबी के पास जाने के सबब मुआफ़ किया। और अगरचि दूसरी हदीस में लिखा है कि खुदा उस को जो अपनी जान आप मारता है नहीं

बख़्शेगा क्योंकि वह ख़ूनी से बदतर ठहरा तौभी नबी के पास जाने के सबब मुआफ़ किया। फिर क़ुरान में बारहा लिखा है कि दीन की बाबत लड़ाई करो और तलवार से ख़ुदा का दीन फैलाओ हुक्म है कि क़तल करो मार डालो नेस्त करो बाज़ न आओ सो इस हुक्म को मान्ना चाहिये न इस सबब से कि ख़ुदा इस लड़ाई से गुनहगार को सज़ा दिया चाहता है बल्कि इस सबब से कि रहमानुर्रहीम का दीन जारी हो। इस के सिवाय इन किताबों के मुवाफ़िक़ ख़ुदा ने पैदाइश से पेश्तर बाज़ों को मुक़र्रर करके उन की क़िसमत में लिखा कि वे गुनाह करें और मरने के बाद दोज़ख़ में जायें वहां अलज़क़ूम के दरख़्त का फल खायें शैतानों के शरीक होवें और हमेशः दुःख और रंज उठावें और यह सब इस लिये होवे कि ख़ुदा ने मुक़र्रर किया है। ख़ुलासः इस का यह है कि सिफ़ते रहमत का बयान क़ुरान ओ हदीस ओ मुसलमानों के ईमान में बहुत है।

चुनानचि लिखा है कि ख़ुदा ने एक बड़े गुनहगार को जो दोज़ख़ के लायक़ था बचाया और उस के लिये दो गांवों को उन की जगह से हटा दिया। फिर महम्मद साहिब के पास जाने के सबब से एक को जिस ने आप को मार डाला था बे तौबः के बिहिश्त में पहुंचाया और यह भी लिखा है कि दीन की बाबत लड़ाई करो और यह कि अल्लाह ने पैदाइश से पेश्तर बाज़ों को बिहिश्त के वास्ते और बाज़ों को दोज़ख़ के लिये ठहराया। क्या ख़ुदा का रहम बुज़ुर्गी पाता है उस गुनहगार पर अलबत्तः ख़ुदा ने बड़ा रहम किया क्योंकि वह सरासर ख़ूनी ओ दोज़ख़ी था तौभी ख़ुदा ने उसे बख़्शा। क़ुद्दूसी तो कहती थी कि वह मेरे हुज़ूर आ नहीं सकता और अदालत भी उस पर राज़ी थी कि वह

बिना सज़ा पाये छूट नहीं सकता लेकिन रहम ने उन दोनों को अलग करके उसे छोड़ दिया अगर किसी बात के बयान से खुदा की एक सिफत दूसरी को रद करे तो क्या वह कलाम ओ बयान खुदा की तरफ से हो सकता है और अगर खुदा का रहम उस की पाकीज़गी और अदालत को नुकसान पहुंचावे या बदनाम करे तो वह सच्ची रहमत हो सकती है। फिर उस खुदघातक पर भी खुदा ने हकीकत में बड़ा रहम किया क्योंकि उस ने न तौबः किया न कुछ और बल्कि अपने गुनाहों में मुआ तौभी खुदा ने उसे बख़शा और बिहिश्त में पहुंचाया।

अगर कोई खूनी खून करके हाकिम के किसी दोस्त के पास जावे और हाकिम दोस्त के यहां जाने के सबब उसे मुआफ़ करे तो कोई ऐसे हाकिम को आदिल कहेगा सोचो अज़ीज़ो। क्या खुदा अपनी पवित्रताई और न्याय छोड़ देगा या गुनहगार को अपने गुनाहों से बाज़ आना पड़ेगा। फिर लिखा है कि दीन की बाबत लड़ाई करो गुनहगारों की सज़ा के वास्ते नहीं बल्कि रहमानुर्रहीम का दीन जारी करने के लिये। पस समझना चाहिये कि रहमानुर्रहीम के नाम पर आना और लोगों को दीन के लिये कतल करना यही रहम है दोज़ख के वास्ते पैदा करना गुनाह कराना बाद इस के जहन्नम में डालना यही रहमत या इनसाफ है।

चौथा सवाल।

खुदा की हमःदानी।

हम इस सिफत को भी छोड़के आगे बढ़ते और दरयाफ़ करते हैं कि कुरान ओ हदीस ओ अहले इसलाम के ईमान के मुवाफिक़ खुदा आलिमुलग़ैब ओ हमःदां याने सब कुछ

का जान्नेवाला है या नहीं। कुरान ओ हदीस की रू से मअलूम होता है कि खुदा मे यह दोनों सिफते हैं और हम भी अपने दिल की पूरी चाह ओ बड़ी खुशी से इस बात पर यक़ीन करते हैं लेकिन दरयाफ़ किया चाहिये कि कुरान ओ हदीस में इस सिफत का बयान ऐसा है या नहीं कि जिस से खुदा सब कुछ जान्नेवाला ठहरे। कुरान में लिखा है कि महम्मद साहिब को खुदा ने रात ही रात मक्का की मसजिद से लेकर ओरशलीम की मसजिद तक पहुंचाया चुनानचि

سُبْحَانَ الَّذِي أَسْرَى بِعَبْدِهٖ لَيْلاً مِنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَى الْمَسْجِدِ الْاَقْصَى

याने पाक ज़ात है जो ले गया अपने बंदे को रात ही रात अदबवाली मसजिद से परली मसजिद तक। तवारीख़ से साबित है कि ओरशलीम की हैकल वह थी जिस को रूमियों ने महम्मद से छः सौ बरस पेशतर नेस्त कर डाला इस तरह पर कि उस का निशान भी बाक़ी न रहा उस दिन से आज तक फिर न बनी महम्मद के बाद एक मसजिद अलबत्तः ओरशलीम में बनी और ईसाइयों ने भी एक इबादतख़ाना बनाया मगर महम्मद के वक्त में न मसजिद न हैकल वहां थी।

फिर कुरान में लिखा है

سَيَقُولُ السُّفَهَاءُ مِنَ النَّاسِ مَا وَلّٰهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِى كَانُوا عَلَيْهَا قُلِ لِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ يَهْدِي مَنْ يَّشَاءُ اِلَى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ * وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَ الْمَغْرِبُ فَاَيْنَمَا تُوَلُّوا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ اِنَّ اللّٰهَ وَاسِعٌ عَلِيمٌ *

याने अब कहेंगे बेवकूफ लोग काहे को फिर गये मुसलमान

अपने क़िबला से जिस पर थे तू कह अल्लाह की है पूरब और पश्चिम चलावे जिस को चाहे सूधी राह और अल्लाह की है पूरब ओ पश्चिम सो जिस तरफ़ तुम मुंह करो वहां ही सुनता है अल्लाह सचमुच अल्लाह गुंजाइशवाला है ख़बरदार। इन बातों से मालूम होता है कि अल्लाह हर जगह मौजूद है और नमाज़ पढ़ने के वास्ते जिधर मुंह फेरें सब बराबर है यह बात अलबत्तः ख़ुदा के लायक़ और अक्ल के मुवाफ़िक़ है चुनानचि लिखा है सिर्फ बेवकूफ कह सकते हैं कि नमाज़ मे ख़ास जगह की तरफ मुंह फेरो इस के बाद हुक्म आया कि मुंह औरशलीम की तरफ फेरो फिर कहा मक्का की तरफ क्या शुरू से न जाना कि किस तरफ फेरना ज़रूर है।

फिर दीन फैलाने की बाबत लिखा है

لَآ اِكْرَاهَ فِى الدِّيْنِ * وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ * فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلَاغُ الْمُبِيْنُ *

याने ज़ोर नहीं दीन की बातों में और अगर हट रहे तो तेरा ज़िम्मा यही है पहुंचा देना। यह तो अक्ल के मुवाफ़िक़ है क्योंकि दीन बदन के वास्ते नहीं बल्कि अक्ल ओ रूह के वास्ते है और उन्हीं को क़ायल करना चाहिये क्योंकि क्या फायदा अगर अंगरेज़ लोग कहते कि तुम ईसाई हो जाओ नहीं तो हम तुम्हें क़तल करेंगे क्या लाखों तोप हिन्दुओं के दिल से एक बुत निकाल सकेंगी हरगिज़ नहीं इस लिये जैसा लिखा है खोलकर सुना देना बन्दों का काम है। मगर जब जनाब महम्मद साहिब ने मदीनः में आकर ग़लबा और ज़ोर पाया तो कहा कि ख़ुदा फरमाता है कि

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ * يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنَافِقِينَ وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ مَا وَاهُمْ جَهَنَّمُ وَبِئْسَ الْمَصِيرُ * فَاذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا فَضَرْبَ الرِّقَابِ *

याने ऐ नबी शौक़ दिला मुसलमानों को लड़ाई का ऐ नबी लड़ाई कर काफिरों से और मुनाफ़िक़ों से और तुन्दख़ोई कर उन पर और उन का घर दोज़ख़ है और बुरी जगह पहुंचनी सो जब भिड़ो इनकार करनेवालों से मारनी है गर्दनें। फिर ज़बूर और नबियों की किताबों में ख़ासकर बाईसवें ज़बूर और यसअियाह की किताब के तिरपनवें बाब में लिखा है कि ईसा मसीह इस दुनिया में आके दुःख पावेगा और सलीब पर खींचा जाके मारा जायगा और इंजील में लिखा है कि सब बातें ठीक पूरी हुईं। खुदावंद ईसा मसीह दुनिया में आया दुःख उठाया सलीब पर खींचा जाके मारा गया और उस की मौत औ कफारा ईसाई मज़हब की असल जड़ है और हर एक तालीम उसी से इलाक़ः रखती है और बग़ैर इस बात के इंजील का मतलब समझा नहीं जाता और इस बात के साबित करने के वास्ते मसीह के शागिरदों ने भी बहुत आश्चर्य्य कर्म दिखाये। सब ईसाई शुरू से आज तक इसी बात पर ईमान लाते और अपनी नजात का भरोसा रखते हैं। रूमी तवारीख़ लिखनेवाले जैसे तासी-तुस और फिलोनिपुस वग़ैरः ने भी इस बात पर गवाही दिई और जिन्हों ने देखा कि वह मर गया और उस की पसली बरछी से छेदी गई कि वह गाड़ा गया फिर वह ज़िन्दः हुआ औ उस के हाथ पांव को टटोला औ अपने हाथ उस पांजर के सूराख़ मे डाले और उस से बातचीत करके और

खुदा की बादशाहत की तालीम पाके उस को चालीस दिन बाद आसमान पर जाते देखा उन लोगों ने भी गवाही दिई और इस बात को तमाम दुनिया में सुनाया तौभी इन सब गवाहों के बरखिलाफ कुरान में लिखा है कि वह नहीं मरा चुनान्चि यों लिखा है

وَقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُولَ اللّٰهِ *
وَمَا قَتَلُوهُ وَمَا صَلَبُوهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ *

याने यों कहना उन का कि हम ने क़तल किया ईसा मसीह बेटे मरियम पैग़म्बर खुदा को औ न क़तल किया उन को न सलीब पर खींचा उस को लेकिन उसी शकल का दूसरा बनाया गया उन के लिये ।

इन सब बातों पर ग़ौर करके मुनसिफ का काम है कि तजवीज़ करे कि आलिमुलग़ैब औ हमःदानी याने सब कुछ जान्ने की सिफत का बयान भी उन किताबों में दुरुस्ती के साथ है या नहीं सो जो खुदा सर्वज्ञानी के हक़ मे लिखा है कि वह महम्मद साहिब को एक जगह ले गया जिस को रूमियों ने महम्मद साहिब से छः सौ बरस पेश्तर नष्ट किया था तो इस से उस की सिफत आलिमुलग़ैब की बुज़ुर्गी होती है और इसी तरह जो समझते थे कि खास जगह याने क़िबला की तरफ मुतवज्जिह होके नमाज़ पढ़ना ज़रूर है उन्हे बेवकूफ कहा लेकिन बाद इस के जब देखा कि इस हुक्म से मतलब नहीं निकलता तो खुद फरमाया कि औरशलीम की तरफ मुंह फेरो । फिर जब मालूम किया कि उस से भी यहूदी औ नासिरी राज़ी नहीं तो हुक्म आया कि मक्के की तरफ मुंह फेरो । क्या इस से आलिमुलग़ैब औ हमःदानी

को सिफत खुदा के हक़ में ठीक ठहरती। दीन की बाबत सर्वज्ञानी ने फरमाया कि सुनाना तेरा काम है और यह बात कई दफः कही लेकिन जब देखा कि इस से काम नहीं निकलता तो लड़ने का हुक्म उतरा। फिर अगली किताबों याने तौरेत ज़बूर और नबियों की किताबों में लिखा है कि मसीह लोगों के लिये कफारा होके मरेगा और इंजील से साबित हुआ कि ये सब बातें वक्त़ पर पूरी हुईं और जिन्हों ने देखा कि वह मुआ दफनाया गया और उस के जिन्दः होने के बाद उस के साथ खाया पिया और अपना हाथ उस के पांजर में रक्खा जिन्हों ने न उस से आश्चर्य्य कर्म्म करने की ताक़त पाई और जिन से उस ने कहा कि मैं मुआ था अब ज़िन्दः हुआ उन लोगों ने इस बात पर गवाही दिई। इस के सिवाय ईसा की मौत दीन ईसाई की जड़ है और सब ईसाई इसी बात पर अपनी नजात का भरोसा रखते हैं। ग़रज़ कि सब यहूदी यूनानी और रूमी दोस्त दुश्मन इस बात पर मुत्तफिक़ हैं क्योंकि यह हक़ीक़त में ऐसाही वाक़े हुआ। पस अब ग़ौर करने की जगह है कि इस बात के इनकार करने से जो सचमुच वाक़े हुई खुदा के आलि-मुलग़ैब और सर्वज्ञानी की सिफत बुज़ुर्गी पाती है।

शायद कोई कहे कि ईसा और यहूदा की शकल एक सी हो गई तो तवारीख़ जवाब देती है कि यह अनहोना है क्योंकि ईसा के पकड़वाने के बाद यहूदा इसकरयूती खुद मौजूद था और खुद काहिनों के पास गया और तौबः करके कहा कि मैं ने गुनाह किया जो बेगुनाह को पकड़वाया और जब काहिन लोग उस पर मुतवज्जिह न हुए तो लाचार होके उस ने अपने को फांसी दिई और रस्सी टूटके ऊंचे से गिर पड़ा और पेट फटके अंतड़ियां निकल पड़ीं और मर

गया अगर यहूदा मसीह के बदले पकड़ा गया होता तो यह शख़्श कौन था जो यहूदियों के पास गया औ अपना गुनाह इक़रार किया और नाउमेद होके अपने को फांसी दिई इस के सिवा क्या खुदा यहूदा को जो सरासर गुनहगार था लोगों के फरेब देने के लिये मुर्दों में से जिलाता और मसीह के सब शागिर्दों के साम्हने आसमान पर ले जाता और बाद इस के अपने फिरिश्तों को भेजके कहता कि यही ईसा जो तुम्हारे साम्हने आसमान पर जाता है फिर आवेगा अगर यह सच कहो तो खुदा की सब सिफ़्तों को ख़लल पहुंचता है । पस सर्वज्ञानी की सिफतों का बयान कुरान में दुरुस्त नहीं ।

पांचवां सवाल ।

खुदा की सचाई ।

कुरान औ हदीस के मुताबिक़ खुदा सच्चा है या नहीं ।

कोई इनकार नहीं कर सकता कि खुदा की यह सिफत मुसलमानों के मज़्हब के मुताबिक़ उस के हक़ में है क्योंकि क़ुरान औ हदीस मे लिखा है और सब मुसलमान इस को मानते और हम भी इस बात का इक़रार करते हैं कि खुदा सच्चा है और उस का कलाम बदलता नहीं चुनानचि कुरान मे भी लिखा है

لاَ تَبْدِيْلَ لِكَلِمَاتِ اللّٰهِ ذَالِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ *

याने बदलती नहीं अल्लाह की बातें यही है बड़ी मुराद मिलनी । हम यह बिलकुल मान लेते हैं और बेशक यह खुशख़बरी कि खुदा का कलाम नहीं है बदलता क्योंकि खुदा आज और कल और हमेशः एकसां है ।

लेकिन क़ुरान ओ हदीस पर ग़ौर करने से मालूम होता कि अगरचि लिखा है अगरचि बदलती नहीं अल्लाह की बातें तौभी बदलती हैं क्योंकि एक आयत क़ुरान की दूसरी को रद करती चुनानचि ख़ुदा फ़रमाता है कि लौहे महफ़ूज़ में लिखा है कि आदमी नमाज़ के वक़्त जिधर चाहे मुंह फेरे और सिर्फ़ नादान समझते हैं कि फ़क़त एकही तरफ़ मुंह फेरना ज़रूर है। फिर लिखता नहीं बल्कि ओरशलीम की तरफ़ मुंह फेरो बाद इस के मक्का याने क़िबला की तरफ़। लौहे महफ़ूज़ में लिखा है कि दीन फैलाने में ज़ुल्म न करो बाद इस के कहा कि लड़ो मारो क़तल करो।

फिर एक जगह पर लिखा है कि अदालत का दिन हज़ार बरस के बराबर होगा।

ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ اَلْفَ سَنَةٍ مِمَّا تَعُدُّونَ *

याने फिर चढता है उस की तरफ़ एक दिन में जिस का नाप हज़ार बरस है तुम्हारे शुमार में। फिर दूसरी जगह लिखा है कि पचास हज़ार बरस का होगा चुनानचि लिखा है

يَعْرُجُ الْمَلَائِكَةُ وَالرُّوحُ اِلَيْهِ فِي يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهُ خَمْسِينَ اَلْفَ سَنَةٍ

याने चढ़ेंगे उस की तरफ़ फ़िरिश्ते और रूह उस दिन में जिस का लंबाव पचास हज़ार बरस का है। फिर लिखा है

وَمَا اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ اَقْرَبُ اِنَّ اللّٰهَ عَلَى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ *

याने क़ियामत का दिन वैसाही है जैसे निगाह की लपक या उस से क़रीब और अल्लाह हर चीज़ पर ज़बरदस्त है इन तीन बातों में कौन बात सच समझें।

फिर कुरान में लिखा है

وَقَالَتِ الْيَهُودُ عُزَيْرٌ ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ النَّصَارَى الْمَسِيحُ ابْنُ اللّٰهِ

याने यहूद ने कहा कि उज़ैर बेटा अल्लाह का और नसारा ने कहा मसीह बेटा अल्लाह का। ईसाई अलबत्ता कहते हैं कि मसीह बेटा अल्लाह का है लेकिन यहूदियों ने कभी नहीं कहा कि उज़ैर अल्लाह का बेटा है क्योंकि यहूदियों की तवारीख़ जिस में उज़ैर का हाल बख़ूबी बयान हुआ आज तक मौजूद है पर उस में ऐसी बात कहीं नहीं लिखी है।

फिर लिखा है कि ईसाई कहते हैं कि तीन ख़ुदा हैं।

لَا تَقُولُوا ثَلٰثَةٌ اِنْتَهُوا خَيْرًا لَّكُمْ

याने मत बताओ उस को तीन यह बात छोड़ो कि भला हो तुम्हारा और मुसलमान आज तक ईसाइयों के हक़ में यही बात कहते हैं लेकिन मसीह के वक़्त से आज तक न किसी दाना ईसाई ने यह बात कही और न किसी ने कभी लिखी क्योंकि वे ख़ूब जानते हैं कि ख़ुदा एक है और इस के सिवा कोई दूसरा नहीं है।

फिर लिखा है कि तुम और यह जिसे तुम पूजते हो अल्लाह के सिवा दोज़ख़ में झोंके जायेंगे। तमाम ईसाई ईसा मसीह को कहते हैं पर कौन कह सकता है कि वह दोज़ख़ में है।

फिर लिखा है وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ * فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّا اَنْزَلْنَا اِلَيْكَ فَسْئَلِ الَّذِيْنَ يَقْرَؤُنَ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكَ

याने जिन को हम ने किताब दिई वे समझते हैं कि यह उतरी तेरे ख़ुदा के पास से सचमुच सो तू मत हो शक लानेवाला पस अगर तू है शक में उस चीज़ से जो उतारी हम ने तेरी तरफ तो तू पूछ उन से जो पढ़ते हैं किताब तुझ से आगे।

किताबवाले याने यहूदी औ ईसाइयों ने कुरान की सदाक़त और उस के ख़ुदा की तरफ से होने का शुरू से इनकार किया और तमाम दुनिया में आज तक इनकार करते क्योंकि उन की किताब और क़ुरान में ऐसी बरख़िलाफी है कि क़ुरान को कभी सच नहीं समझ सकते तौभी लिखा है कि हम ने किताब जिन को दिई जानते हैं कि यह सचमुच तेरे ख़ुदा के पास से उतरी।

हदीस में लिखा है कि झूठ बोलना भी बाजे वक्त रवा है अगर हम किसी बीमार को देखने जायें और देखें कि वह मरेगा तौभी कहना चाहिये कि वह न मरेगा और हर सूरत से उस की तसल्ली के वास्ते ख़िलाफ कहना चाहिये चुनानचि लिखा है जब तुम बीमारों की मुलाक़ात को जाते हो तो उस को तसल्ली दो और कहो कि तुम अच्छे हो जाओगे और बहुत दिन जीओगे क्योंकि ऐसा कहना कुछ उस की क़िसमत को पलट नहीं सकता लेकिन उस की जान को तसल्ली देता है।

फिर ऐनुलहयात के २४२ सफहे में लिखा है कि सच बोलना दुरुस्त नहीं अगर उस से किसी ईमानवाले का नुक़सान या उस की जान का कुछ ख़तरः हो और झूठ बोलना फ़र्ज़ और वाजिब है बशर्ते कि उस के सबब ईमानवाला क़तल या क़ैद या नुक़सान से बच जाय अगर किसी दीनदार ने अपना अस्बाब हमें सौंपा हो और कोई ज़ालिम

उस को हम से मांगे तो हम पर फ़र्ज़ होता है कि अपने पास उस के होने का इनकार कर जावें बल्कि अगर चाहे तो उस पर क़सम भी खावें कि उस शख़्स को कोई चीज़ हमारे पास नहीं ।

पस सिफ़त सचाई भी क़ुरान औ हदीस की रू से ख़ुदा की शान में पाई जाती है और कई आयतों में लिखा भी है कि बदलती नहीं अल्लाह की बाते तौभी दूसरी आयतों से भी साबित होता है कि बदलती हैं अल्लाह की बातें क्योंकि एक आयत दूसरी को रद करती है और एक हुक्म दूसरे हुक्म को मनसूख़ करता है एक दफ़ः तो फ़रमाया कि दीन की बाबत लड़ाई करना मुनासिब नहीं है फिर कहा लड़ाई करो एक दिन हुक्म आता है कि नमाज़ के वक़्त मुंह फेरो जिधर चाहो सिर्फ़ बेवक़ूफ़ ख़ास क़िबला की तरफ़ मुंह फेरते हैं दूसरे दिन इस के ख़िलाफ़ हुक्म होता है फिर वह भी रद औ मनसूख़ किया जाता है ।

फिर लिखा है कि यहूदी उज़ैर को ख़ुदा का बेटा कहते हैं यहूदियों की किताबें आज तक मौजूद हैं पर न तो किसी यहूदी ने कहा कि उज़ैर अल्लाह का बेटा है और न उन की किताबों में ऐसा कहीं लिखा है ।

अगर मान भी लें कि किसी नादान यहूदी ने कहा भी तो क्या यह तुहमत सब पर घटने से ख़ुदा की सचाई बुज़ुर्गी पाती है ।

फिर नासरियों की बाबत लिखा है कि वे तीन ख़ुदा कहते हैं और मुसलमान यह तुहमत ईसाइयों पर लगाते हैं लेकिन शुरू से आज तक ईसाइयों ने न तो यह बात कही और न कभी लिखी और न कभी कहेंगे इस लिये कि उन की किताबों में साफ़ लिखा है कि ख़ुदा एक है ।

इसी तरह वह बात भी कि अगिले किताबवाले क़ुरान को कलामुल्लाह जानते हैं पर उन्हों ने बरखिलाफ इस के शुरू से आज तक उस की सचाई का इनकार किया क्योंकि क़ुरान और उन की किताबों में ऐसा इख़तिलाफ है कि वे क़ुरान को यक़ीन नहीं कर सकते। अब ग़ैार करने की जगह है कि ऐसी बातों के बयान करने से ख़ुदा की सदाक़त बुज़ुर्गी पाती है या इन बातों से जो हदीस में लिखी हैं कि बाज़े वक्त झूठ बोलना भी फर्ज़ ओ वाजिब है ख़ुदा की सचाई उस के हक़ में सच ठहरती है क्या ख़ुदा क़ादिरे मुतलक़ नहीं कि अपने बन्दों को बचा सके क्या मेरा झूठ बोलना उस से ज़बरदस्त ओ ज़ोरावर है।

छठवां सवाल।

ख़ुदा की क़ादिरी।

फिर इस सिफत को भी छोड़के सवाल करते हैं कि ख़ुदा क़ादिरे मुतलक़ याने सर्वसामर्थी और वाहिद याने एक है या नहीं।

दोनों सिफतों का बयान दुरुस्ती से ठीक अगिली किताबों के मुताबिक़ है याने कि ख़ुदा एक है और उस के सिवा कोई दूसरा नहीं और कि वह क़ादिरे मुतलक़ ग़ैर मुतनाही याने अनंत क़दीम याने अनाद और रूहानी ज़ात अर्थात आत्मा है। दूसरे क़ुरान और हदीस से मालूम होता है कि ख़ुदा की जो जो सिफतें अक़्ल से इलाक़ः रखती हैं उन का सब बयान दुरुस्त है लेकिन उन के लिये आकाशबाणी ज़रूर नहीं क्योंकि परमेश्वर का अनंत पराक्रम और ईश्वरत्व दुनिया की पैदाइश से उस के कामों पर ग़ैार करने से मालूम होती है।

दीने हक़ को चाहिये कि उन सिफतों का खूब बयान करे जो अक़्ल से दरयाफ़्त नहीं हो सकतीं और जो आदमी की नजात से वास्ता रखती हैं याने उस की पवित्रता न्याय दया और सच्चाई है लेकिन उन सब के बयान में भूल है लिखनेवाले ने समझा कि खुदा आदमी सा है और उन के मुवाफिक़ कारोबार करता है पस क़ुरान ओ हदीस में खुदा की सिफतों के बयान बाज़े दुरुस्त और बाज़े नादुरुस्त हैं जिन के लिये आकाशवाणी ज़रूर है वे सब नादुरुस्त हैं लेकिन अगर दीन महम्मदी में खुदा की बाज़ी सिफतों का बयान नादुरुस्त है तो वह दीन हक़ क्योंकर हो सकता है ।

दूसरा पर्ब्ब ।

पैदा करनेवाला कौन और पैदा करने का मतलब क्या है ।

ऊपर के निशानों के मुवाफिक़ ज़रूर है कि सच्चे दीन में दुनिया और आदमी की पैदाइश और उस की पैदाइस के सबब का ज़िक्र जो कुछ हो सो ऐसे तौर पर कि उस में खुदा की सिफतों का सबूत और निशान भी पाया जाय सो अब हम इस बात पर सवाल करते हैं कि सब चीज़ों का पैदा करनेवाला कौन है और किस वास्ते उस ने उन्हें पैदा किया ।

क़ुरान से मालूम होता है कि खुदा ने दुनिया को और जो कुछ उस में है अपनी क़ुदरत से छः दिन में पैदा किया और आदमी को मिट्टी और पानी से बनाया । हदीस में आदमी के डौल का बयान लिखा है कि खुदा ने उस को साठ गज़ लंबा और सात गज़ चौड़ा बनाया इस के सिवा हदीस में आदमी की पैदाइश की बाबत और भी बहुत

बातें हैं जिन का ज़िक्र करना कुछ फायदः नहीं इस लिये हम इन को छोड़के सवाल करते हैं कि इन किताबों के मुवाफ़िक़ ख़ुदा ने आदमी को ऐसा बनाया जैसा अब तक है या उस का हाल कुछ बदल गया इस में कुछ शक नहीं कि उस का जिसमानी हाल बदल गया क्योंकि आदमी इन दिनों साठ गज़ लम्बा औ सात गज़ चौड़ा नहीं है लेकिन क्या रूहानी हालत में कुछ फ़र्क़ आया।

क़ुरान से मालूम होता है कि ख़ुदा ने आदमी को जैसा बनाया वैसाही है। आदम ने गुनाह किया और बाग़ अ़दन से निकाला गया लेकिन इस से उस की रूहानी हालत में कुछ फ़र्क़ नहीं आया सिर्फ बाग़ अ़दन की ख़ुशी को खो दिया उस की अ़क़्ल औ ख़ाहिश वही रही और जो उस की क़िसमत में लिखा है सो उस वक़्त से आज तक पसंद करता है। तमाम क़ुरान में कहीं ज़िक्र नहीं कि आदम की रूहानी हालत में कुछ फ़र्क़ आया ख़ुदा ने उस को कमज़ोर कच्चे जी का जल्दबाज़ मरनेवाला पैदा किया चुनानचि लिखा है

خُلِقَ الْإِنْسَانُ ضَعِيفًا याने इनसान बना कमज़ोर إِنَّ الْإِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوعًا

याने इनसान बना है जी का कच्चा خُلِقَ الْإِنْسَانُ مِنْ عَجَلٍ ط

याने बना है इनसान जल्दबाज़

إِنَّ اللَّهَ لَهُ مُلْكُ السَّمٰوَاتِ وَالْأَرْضِ ط يُحْيِي وَيُمِيتُ * وَإِنَّا لَنَحْنُ نُحْيِي

وَنُمِيتُ * الَّذِي خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ

याने अल्लाह जो है उसी को आसमान औ ज़मीन में सलतनत है जिलाता और मारता है जिलाते और मारते हमही हैं जिस ने मरना और जीना बनाया। हदीस से भी यही

बात साबित होती है कि खुदा ने आदमी को जैसा अब है वैसा ही पैदा किया और एक ही मिट्टी से गुनहगार और दीनदार दोनों को बनाया चुनानचि हयातुलकुलूब में लिखा है कि हज़रत इमाम जअ़फर सादिक़ ने फरमाया कि जब खुदा क़ादिरे मुतलक़ ने जिबरील को ज़मीन पर भेजा कि आदम के पैदा करने के लिये एक मुट्ठी खाक ले आवे तब ज़मीन ने उस से कहा कि मैं तुझ से खुदा की पनाह मांगती और उस को दुहाई देती हूं कि मुझ मे से कुछ न लेना तब जिब्रील ने खुदा के हुज़ूर मे अ़र्ज़ किई कि ज़मीन ने मुझ से तेरी पनाह मांगी तब खुदा ने इसराफील को हुक्म दिया उस के साथ भी ज़मीन ने वही बात किई तब खुदा ने मीकाईल को रवाना किया उस से भी ज़मीन ने यही उज़्र किया उस वक़्त खुदा ने जमदूत को यह कहके भेजा कि खाहमखाह एक मुट्ठी खाक ज़रूर २ लाइयो ज़मीन ने उस से भी कहा कि मैं तुझ से खुदा की पनाह मांगती हूं तब जमदूत ने कहा मै भी खुदा की पनाह मांगता हूं कि तुझ में से एक मुट्ठी खाक लिये जाऊं सो उस ने ज़बरदस्ती ज़मीन पर से एक मुट्ठी खाक लिई तब खुदा ने एक चुल्लू मीठा पानी लेके वह मिट्टी सानी और कहा तुझ से मै नबियों और रसूलों और उन सब बंदों को जो बिहिश्त के लायक़ और आशिक़ हों पैदा करता हूं फिर एक चुल्लू खारा पानी लेकर मिट्टी सानी और फरमाया कि मैं तुझ से ज़ालिमों फरेबियों खताकारों और शैतानों के सब साथियों को पैदा करता हूं। लेकिन इन सब बातों के पढ़ने से हम को शक होता है लिखा तो साफ है कि खुदा ने आदमी को जैसा बनाया आज तक वैसा ही है लेकिन निहायत नाक़िस है तो सोचने की जगह है कि कोई कारीगर नाक़िस कारीगरी

से तअरीफ़ पावेगा कभी नहीं इस तरह से अगर वह पवित्र कामिल और महान परमेश्वर नाक़िस ख़िलक़त बनावे तो क्या उस की निपुणता में खलल न आवेगा क्योंकि अगर कारीगर निपुण हो तो नाक़िस काम न बनावेगा और अगर उस की कारीगरी नाक़िस हो तो उस को कामिल कौन कहेगा अगर मान लें कि क़ुरान औ हदीस की बातें सच हैं तो ख़ुदा कामिल नहीं और अगर ख़ुदा कामिल है और कौन इस के बरख़िलाफ़ कह सकता है तो आदमी की पैदाइश का अहवाल जैसा क़ुरान औ हदीस में लिखा है नादुरुस्त है ।

अब सवाल किया चाहिये कि किस वास्ते ख़ुदा ने आदमी को पैदा किया इस का जवाब बख़ूबी इख़लाक़ जलाली में लिखा है कि आदमी जो सब चीज़ों की असल नक़शों का नक़शा और दुनिया का ख़ुलासा है ख़ुदा का नायब है जैसा लिखा है *

اِذْ قَالَ رَبُّکَ لِلْمَلَائِکَةِ اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَةً ط

और जब कहा तेरे ख़ुदा ने फ़िरिश्तों को मुझ को बनाना है ज़मीन में एक नायब कहा और फिर लिखा है जिस ने तुम को रक्खा नायब ज़मीन में और वह मशहूर आयत †

اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَیْنَ اَنْ یَّحْمِلْنَهَا وَ
اَشْفَقْنَ مِنْهَا وَ حَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ط اِنَّهٗ کَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا

याने हम ने दिखाई अमानत आसमान और ज़मीन को और पहाड़ों को फिर सब ने क़बूल न किया कि उस को उठावें और उस से डर गये और उठा लिया उस को इनसान

* सूरे बक़र ३० आयत । † सूरे अहज़ाब ७२ आयत ।

में यह है बड़ा बेडर नादान । यहां तक तो साफ है कि आदमी खुदा का नायब हुआ मगर नायब होने से उस पर क्या फ़र्ज हुआ इस का साफ बयान नहीं है सिर्फ यह मालूम होता है कि बाज़े आदमियों को बिहिश्त और बाज़ों को दोज़ख़ के लिये पैदा किया और इस अन्त के मुवाफिक़ उन के काम भी मुक़र्रर करके क़िसमत में लिख दिया । हक़ीक़त में बिहिश्त और दोज़ख़वाले दोनों खुदा की मर्ज़ी बजा लाते हैं बिहिश्त-वाले उन कामों को जो उन के लिये मुक़र्रर है करते और जो आग में बैठनेवाले हैं वे भी उन कामों को बजा लाते जो उन के लिये मुक़र्रर हैं पस बिहिश्त की जगह और दोज़ख़ की जगह कैसी है बिहिश्त की बाबत लिखा है

مَثَلُ الجَنَّةِ الَّتِي وُعِدَ المُتَّقُونَ ط تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الأَنْهَارُ ط أُكُلُهَا دَائِمٌ وَظِلُّهَا ط *
وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ سَنُدْخِلُهُمْ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الأَنْهَارُ
خَالِدِينَ فِيهَا أَبَدًا ط لَهُمْ فِيهَا أَزْوَاجٌ مُطَهَّرَةٌ وَنُدْخِلُهُمْ ظِلًّا ظَلِيلًا * إِنَّ المُتَّقِينَ
فِي مَقَامٍ أَمِينٍ لا فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ لا يَلْبَسُونَ مِن سُنْدُسٍ وَإِسْتَبْرَقٍ
مُتَقَابِلِينَ ج كَذَالِكَ ط وَزَوَّجْنَاهُم بِحُورٍ عِينٍ ط إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ المُخْلَصِينَ ط
أُولَٰئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَعْلُومٌ فَوَاكِهُ ج وَهُم مُكْرَمُونَ لا فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ لا عَلَىٰ
سُرُرٍ مُتَقَابِلِينَ يُطَافُ عَلَيْهِم بِكَأْسٍ مِن مَعِينٍ لا بَيْضَاءَ لَذَّةٍ لِلشَّارِبِينَ ج لَا
فِيهَا غَوْلٌ وَلَا هُمْ عَنْهَا يُنزَفُونَ وَعِندَهُمْ قَاصِرَاتُ الطَّرْفِ عِينٌ كَأَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَكْنُونٌ

याने अहवाल बिहिश्त का जो वादा मिला है डरवालों को बहती हैं उन के नीचे नहरें मेवा उस का हमेशा है और

साया और जो लोग यक़ीन लाये और करें नेकियां उन को हम दाख़िल करेंगे बाग़ों में जिन के नीचे बहतीं नहरें रह पड़े वहां हमेशा उन को वहां औरतें हैं सुथरी और उन को हम दाख़िल करेंगे घनी छांहों में डरवाले बेशक हैं घर में चैन के बाग़ों मे और चश्मों में पहिनते हैं पोशाक रेशमी पतली और गाढ़ी एक दूसरे के साम्हने इसी तरह और ब्याह दीं हम ने उन को गोरियां बड़ी आंखवालियां मगर जो बंदे अल्लाह के हैं चुने हुए जो हैं उन को रोज़ी है मुक़र्रर मेवे और उन की इज्ज़त है बाग़ों में निअमत के तख़्तों पर एक दूसरे के साम्हने लोग लिये फिरते हैं उन के पास प्याला निथरी शराब का सुफ़ेद रंग मज़ा देती पीनेवालों को न उस मे सिर फिरता है और न उस से बहकते हैं और उन के पास हैं औरतें नीचे निगाह रखतियां बड़ी आंखोंवालियां गोया वे अंडे हैं छिपे धरे। फिर क़ुरान की एक आयत में लिखा है

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ يَهْدِيهِمْ رَبُّهُمْ بِإِيمَانِهِمْ ع تَجْرِي مِنْ تَحْتِهِمُ
الْأَنْهَارُ فِي جَنَّاتِ النَّعِيمِ دَعْوِيهُمْ فِيهَا سُبْحَانَكَ اللَّهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ فِيهَا سَلَامٌ
وَآخِرُ دَعْوِيهُمْ أَنِ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ع

याने जो लोग ईमान लाये और किया उन्हों ने नेक काम राह देगा उन को ख़ुदा उन का उन के ईमान से बहती हैं उन के नीचे नहरें बाग़ों में आराम के उन की दुआ उस जगह यह कि पाक ज़ात है तेरी या अल्लाह और मुलाक़ात उस को सलाम और तमाम उन की दुआ इस पर कि सब ख़ूबी अल्लाह को जो साहिब सारे जहान का । इस के मुता-

बिक हदीस में भी लिखा है कि लोग खुदा को देखेंगे जैसा कि ज़ैद इब्न मज़हब ने कहा मैं ने अबूहुरैरः से मुलाक़ात किई उस ने कहा कि मै खुदा से मिन्नत करता हूं कि वह मुझे और तुझे दोनों को बिहिश्त के बाज़ार में रक्खे मैं ने कहा क्या वहां कोई बाज़ार होगा उस ने जवाब दिया कि हां नबी ने फ़रमाया कि जब बिहिश्तवाले उस में दाख़िल होंगे तब हर एक अपने २ कामों के मुवाफ़िक़ दर्जः पावेगा याने जिस का काम सब से अच्छा है वे दर्जे में सब से बड़े होंगे इस के बअद उन को इजाज़त है कि जुमअ के दिन निकलें और खुदा से मुलाक़ात करे और खुदा उन को अपना तख़्त दिखावेगा और आप को बिहिश्त में भी दिखावेगा और अच्छे २ तख़्त उन के वास्ते रक्खे जायेंगे जो उन के दर्जे के मुवाफ़िक़ मोती और लअल ओ जमुर्रद और सोने चांदी से बने हैं। इन आयतों से मअलूम होता है कि लोग हर जुमअ खुदा को देखेंगे याने उस की शान ओ शौकत पर नज़र करके निहायत खुश होवेंगे पर बिहिश्त की यह ख़ास खुशी नहीं है क्योंकि खुदा का देखना सिर्फ़ आंखों से इलाक़ः रखता है और बिहिश्त सारे जिस्म से चुनानचि हदीस में लिखा है कि बिहिश्त को सोने और चांदी की ईंटों से बनाया और वहां का गारा मुश्क का और कंकड़ मोती और लअल हैं वहां के पेड़ सोने के और ख़ास एक बड़ा दरख़्त जिस को तूबा कहते हैं उस का हाल यह कहते हैं कि अगर कोई घोड़े पर सवार होके सौ बरस तक दौड़ावे तौभी शाखों की आख़िर तक न पहुंचे इस के सिवा उस दरख़्त में और बहुत खूबियां हैं और वहां नदियां भी बहुत हैं बअज़ी शहद की और बअज़ी बअज़ी दूध और शराब की हैं उन में से एक का नाम कौसर है उस के मुक़द्दमे में

महम्मद साहिब ने फरमाया कि एक नदी है जिस को खुदा ने मुझे बिहिश्त में दिई उस का पानी दूध से ज़ियादः सुफेद और शहद से ज़ियादः मीठा है और उस पर परिन्दे ऊंट की सी गरदन किये हैं और वहां की ज़मीन बहुत अच्छी है चुनानचि एक अरब ने महम्मद साहिब से पूछा कि बिहिश्त में खेती करने का हुक्म है क्योंकि मुझे यह काम बहुत पसंद आता है उस ने जवाब दिया कि अलबत्ता हुक्म मिलेगा और तुम जब कुछ बोओगे तो पल भर में उगेगा और पक जायगा और कट जायगा और खलिहान पहाड़ के बराबर ऊंचे होंगे। और वहां जानवर भी बहुत अच्छे होंगे चुनानचि एक अरब ने कहा ऐ नबी मै घोड़ों को प्यार करता हूं बिहिश्त में भी मिलेंगे हज़रत ने फरमाया अगर तुम बिहिश्त में दाखिल होगे तो तुम को लअल का घोड़ा मिलेगा और उस के दो पर होंगे और जहां तुम चाहोगे वहां पहुंचावेगा इसी तरह ऊंट के मुक़द्दमे में भी हज़रत ने किसी से फरमाया है ग़रज़ कि जो जो ख़ाहिश लोग वहां करेंगे सब मौजूद है वहां के लोगों का डील आदम की तरह साठ गज़ ऊंचा और हमेशः जवान रहेगा।

और वहां एक मुसलमान का डेरा एक मोती के दाने का बना है और वह साठ कोस चौड़ा और हर एक कोने में उस की जोरुआं हैं कि एक दूसरे को न देखें और वहां हर एक शख्स को बहत्तर जोरुआं मिलेंगी और अस्सी हज़ार नौकर अगर मुसलमानों को वहां औलाद की ख़ाहिश हो तो वे गर्भिणी होंगी और उसी घड़ी जनेंगी और उसी दम लड़के उन के डील डौल के मुवाफिक़ जवान होंगे और उन के खाने के सब बरतन और असबाब सोने और

चांदी के हैं और लोगों की ख़ोराक भी बहुत होगी और
लोगों के जिस्म की ताक़त भी बहुत ज़ियादः होगी कि हर
एक शख़्स अपनी सब औरतों से एक ही वक़्त में प्रसंग कर
सकेगा चुनानचि लिखा है ऐ रसूल अल्लाह क्या एक आदमी
बहुत औरतों से प्रसंग कर सकेगा हज़रत ने फ़रमाया कि
एक आदमी की ताक़त सौ आदमी के बराबर होगी ग़रज़
कि हज़रत महम्मद साहिब ने फ़रमाया कि बिहिश्त में सब
कुछ तुम्हारे वास्ते मौजूद है जो कुछ इनसान की इंद्री
चाहती हैं ।

बिहिश्त की हक़ीक़त तो मअ़लूम हुई अब आग में बैठने-
वालों का अंजाम देखा चाहिये क्या है उन को खाने के
वास्ते अलज़क़ूम का फल जो शैतान के सिर की मानिन्द है
और आग मिलेगी और पीने को उबलता पानी मिलेगा
और सुहबत में शैतान लेकिन इस बात को ज़ियादः बयान
करना कुछ ज़रूर नहीं ।

इन बातों से भी मअ़लूम हुआ कि ख़ुदा ने आदमी
को किस वास्ते पैदा किया यअ़ने कि वह ख़ुदा का नायब
होवे और उस का अंजाम इस दुनिया में या तो इसलाम
में आना या काफ़िर होना और उस दुनिया मे या तो बि-
हिश्त में जाना या दोज़ख़ में पड़ना मुक़र्रर किया । बिहिश्त-
वालों को अच्छा ख़ूब सूरत बाग़ मिलेगा अच्छे घर हूरें नौकर
चाकर शराब और हर तरह की ऐश ओ इशरत व ख़ुदा
की शान ओ शौकत और उस का तख़्त भी देखेंगे और आग
में बैठनेवालों को हर तरह की मुसीबत रंज ओ दुःख वग़ैरः
मिलेंगे ।

अब ग़ौर किया चाहिये कि इन बातों के बयान से ख़ुदा
की सिफ़तें बुज़ुर्गी पाती हैं या नहीं दुनिया की पैदाइश का

बयान तो दुरुस्ती से है लेकिन क्या आदमी की पैदाइश और उस के पैदा होने का सबब औ अंजाम का बयान भी ऐसा है कि जिस से दिलजमई होवे।

इन किताबों से साबित हुआ कि खुदा ने आदमी को जैसा बनाया वैसाही आज तक है। कोई इनकार नहीं कर सकता कि आदमी गुनहगार और नाक़िस अक़्ल का है। अब सोचने की जगह है कि कोई कारीगर नाक़िस कारीगरी से कहीं बुज़ुर्गी पावेगा। इसी तरह अगर यह पवित्र निपुण और अनंत महान परमेश्वर नाक़िस और गुनहगार ख़िलक़त बनावे तो क्या उस के पवित्र अति महान और सर्वशक्तिमान होने में खलल न आवेगा। अक़्ल कहती है कि खुदा ने आदमी को बेशक पवित्र और निपुण औ बेगुनाह बनाया लेकिन आदमी गुनाह करने से ऐसा बिगड़ गया कि उस की अक़्ल औ दानाई औ समझ बूझ में फ़र्क़ आया और रंज औ दुःख मुसीबत बीमारी और मौत गुनाह का फल है न यह कि खुदा ने शुरू में इन सब को आदमी के साथ पैदा किया।

पस खुदा ने आदमी को अपना नायब बनाया लेकिन किस वास्ते इन किताबों से ज़ाहिर होता है कि खुदा ने इस लिये आदमी को अपना नायब बनाया कि वह खुदा की रज़ा पर चले इस दुनिया में क़िसमत के लिखे को पूरा करे और उस दुनिया में अपने कामों का बदला लेवे। फिर क्या आदमी को दोज़ख़ के लिये बनाना और दोज़ख़ के काम याने गुनाह उस से कराना और आख़िर को दोज़ख़ में डालना इस से खुदा की पवित्रता या न्याय या दया की बुज़ुर्गी औ महिमा होती है।

फिर बिहिश्त का बयान जैसा क़ुरान औ हदीस में है

खुदा और आदमी के लायक है या नहीं खुदा ने आदमी को दुनिया में सर्वोत्तम कृति बनाया और उस को ऐसी रूह बख़शी जो इल्म और निपुणता की अभिलाष में मरती है और ख़ालिक़ की ज़ात के दरयाफ़ करने की अभिलाष रखती और हर धातु वृक्ष और जीवधारियों को छोटे से ले बड़े लों बलिक जो कुछ ज़मीन में है उस पर नज़र करके उसी गुणाकर के गुणों की खोज में लगी रहती और अपने ख्यालों के परों पर बैठके बुलंदियों पर पहुंचने का इरादः रखती और इन सब बातों में खुदा की हिकमत और निपुणता के पाने से खुश होती है। अब आदमी को जिस में ये सिफतें हैं उस को रूहानी ख़्वाहिश के पूरा करने के लिये वहां क्या मिलेगा हूरें शराब बग़ीचे घोड़े ऊंट ज़मीन जिस्म के वास्ते हैं रूह के लिये क्या है।

बिहिश्त के बयान से जैसा मुसलमानों के यहां है खुदा की कौन सी सिफत बुज़ुर्गी पाती है क्या खुदा की पवित्रता या सर्वज्ञता या कौन सी सिफत। और अगर हम बअ़ज़े बिदअ़तियों का बयान इख़्तियार करें और बिहिश्त की सब बातें रूहानी तौर पर समझें तौभी इस से आदमी की रूहानी ख़्वाहिशें किस तरह पूरी हो सकती हैं। कोई नहीं हक़ीक़त हाल यह है कि महम्मद साहिब ने आक़िबत का अहवाल न जाना तो क्या किया कि उन्हों ने दरयाफ़ किया कि अरब के लोगों को कौन सी बातें ज़ियादः पसंद आती हैं जब देखा कि औरतें बग़ीचे शराब ऊंट घोड़े नौकर चाकर वग़ैरः ये लोग ज़ियादः चाहते हैं तो उन्हीं चीज़ों का वअ़दः किया। पस सारी बिहिश्त जिस्मानी है रूह के वास्ते उस में कुछ नहीं। अब दाना शख़्स इनसाफ करे कि ऐसी जिस्मानी बिहिश्त इनसान की रूह को सेर औ खुश

कर सकती है और बिहिश्त के ऐसे बयान से खुदा की कौन सी सिफत की बुज़ुर्गी होती है।

तीसरा पर्व्व।

खुदा और आदमी के दरमियान क्या इलाक़ः है।

सवाल है कि खुदा और आदमी के दरमियान क्या इलाक़ः है याने खुदा को आदमी से क्या इलाक़ः और आदमी को खुदा से कौन संबंध है।

पहिले यह कि खुदा आदमी से क्या इलाक़ः रखता है। क़ुरान ओ हदीस ओ मुसलमानों के ईमान के मुवाफ़िक़ खुदा एक है और वही सब का पैदा करनेवाला परवरदिगार और खुदावंद है और उसी ने दुनिया के शुरू में अपनी सनातन इच्छा के मुवाफ़िक़ आदमी की पैदाइश और कर्म ज़िन्दगी मौत और आक़िबत का अंजाम मुक़र्रर करके हर एक की क़िसमत मे लिखा ऐसा कि आदमी उस से इधर उधर जा नहीं सकता तौभी उस ने आदमी को आईन ओ शरीअ़त दिई जिस में लिखा है कि उस को क्या २ मानना और करना चाहिये। और खुदा दुनिया का हाकिम भी है और वह न सिर्फ दुनिया की सब चीज़ों बलिक खासकर आदमियों पर हुकूमत करता है और क़ियामत के दिन सभों का इनसाफ करेगा और आदमी को उस के ख्याल ओ बात ओ काम का जवाब देने पड़ेगा और जिस तरह दुनिया का हाकिम आईन के मुवाफ़िक़ इनसाफ करता है वैसेही खुदा हर एक मुक़द्दमः अपने कलाम के मुताबिक़ फैसल करेगा। उस के और दुनिया के हाकिम की अ़दालत ओ

इनसाफ़ में सिर्फ़ यह फ़र्क़ है कि आदमी फ़रेब खाता और बअ़ज़े वक़्त तरफ़दारी करता है लेकिन ख़ुदा अंतर्यामी न्याई और सच्चा है इस लिये न वह फ़रेब खायेगा न तरफ़दारी करेगा बल्कि हर एक का वाजबी इनसाफ़ करेगा ।

दूसरे यह कि आदमी ख़ुदा से क्या संबंध रखता है क्या उस को अपनी सब बातों का जवाब देना है या नहीं अगर देना है और वह गुनहगार ठहरे तो उस के मुक्ति पाने की उम्मेद है या नहीं अगर उम्मेद है तो किस तरह बख़्शा जायगा ।

यह बात बहुत भारी और इनसान के जानने के लिये बहुत ज़रूर है इस लिये बहुत ग़ौर करने के लायक़ है क्योंकि आदमी गुनहगार है ख़ुदा ने एक नजात की राह मुक़र्रर किई तो अगर इनसान इस राह को भूले या उस राह को जो आदमियों ने मुक़र्रर किई ख़ुदा की राह समझे और योंहीं सच्ची राह को भूलकर इनसान की राह को पकड़े तो क्या वह राह उसे बिहिश्त को पहुंचा सकेगी कभी नहीं इस लिये निहायत ज़रूर है कि हम निहायत ग़ौर के साथ नजात की राह जैसी क़ुरान ओ हदीस में है जांचें और दरयाफ़्त करें कि क्या उस में कोई ऐसी तदबीर है कि जिस से ख़ुदा की पाकीज़गी अदालत और सचाई जलाल पावें और इनसान को बख़्शने के लिये रहम के हाथ खुलें ।

इस के दरयाफ़्त करने के लिये दो सवाल ज़रूर है । पहिले गुनाह क्या और दूसरे कि गुनाह मुआफ़ करने के लिये ख़ुदा ने कौन सी तदबीर मुक़र्रर किई है । पस हम सवाल करते हैं कि क़ुरान ओ हदीस के मुवाफ़िक़ गुनाह क्या है क्या वह सिर्फ़ बदन का ज़ाहिरी दाग़ है कि जिस को मैल की तरह धो सकते हैं या गुनाह दिल से वास्तः रखता है और

कि इनसान का दिल बिगड़ गया और कि दिल के बिगड़ने से आदमी सब तरह ऐसा बिगड़ गया कि उस को न सिर्फ गुनाहों की मुआफी बल्कि खुदा के हुज़ूर जाने की लियाक़त निहायत ज़रूर है। इन बातों का ठीक २ जवाब क़ुरान न हदीस देती है पर हर रोज़ के तजरुबे से मअ़लूम होता है कि तमाम आदमी खुदा के दुशमन हो गये और उन की अक़्ल यहां तक बिगड़ गई कि पानी पत्थर क़बर वग़ैरः की परस्तिश करने लगे और आप को गुनाह में डुबाके बरबाद किया और उन का दिल भी ऐसा बिगड़ गया कि ख़ालिक़ के आईन से गरदनकशी करने लगे। दिल ही से सब गुनाह याने ज़िना क़तल लालच कपट मसती बदनज़री शेख़ी और कुफ़्र निकलते हैं। ग़रज़ कि आदमी सिर से पांव तक गुनहगार है और इस लिये उस को न सिर्फ गुनाह की मुआफी बल्कि ऐसी लियाक़त भी जिस से वह अपने ख़ालिक़ के हुज़ूर जाने के क़ाबिल होवे ज़रूर है। पस हम पूछते हैं कि क़ुरान ओ हदीस के मुवाफिक़ नजात की राह कि जिस से इनसान इस दरजे ओ लियाक़त को हासिल करे कौन है।

क़ुरान ओ हदीस में गुनाह बख़्शे जाने की कई राहें हैं चुनानचि खुदा को अल्लाह कहना लिखा है

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ

मुक़र्रर जिन्हों ने कहा खुदा हमारा अल्लाह है फिर साबित रहे तू न डर है उन पर न वे ग़म खावेंगे ऐसा खुशहाल उन का भी है जो कलमा पढ़ते हैं। फिर अबूहुरैरा का क़ौल है कि नबी ने एक दफः औरतों से कहा कि अगर तुम्हारे लड़कों में से तीन मरें और तुम उन पर सब्र करो तो

बिहिश्त में जाओगी तब एक औरत ने कहा कि ऐ नबी अगर दो मर जायें तब उस ने जवाब दिया कि अगर दो मर जायें तो उन के मा बाप बिहिश्त में जायेंगे । और जो एक तीर बनाता और जो उस तीर को खुदा की राह पर छोड़ता और जो उस तीर को उसी शख्स के हाथ में देता है वे तीनों नजात पावेंगे । और औरतों के वास्ते एक और खास नजात की राह है याने अमसल्लू की दरखास्त के मुवाफिक हज़रत महम्मद साहिब ने फरमाया कि हर एक जो मरती है और उस का शौहर उस से राज़ी है तो वह बिहिश्त में जायेगी । फिर मिशकातुलमसाबीह की दूसरी जिल्द के ८१७ सफहः में लिखा है कि खुदा मेरी क़ौम की गफ़लत औ भूल से दरगुज़र करता है और जो कुछ वे दूसरों के दबाव से करते सो उन्हें बख्श देता है । फिर हयातुलकुलूब की दूसरी जिल्द के ३८० सफहः में लिखा है कि कलीनी से यह मुअतबिर कहावत है कि एक तेली जो महम्मद साहिब से निहायत मुहब्बत रखता था और रोज़ हज़रत का मुंह देखे बग़ैर अपने काम को न जाता जब कई रोज़ गुज़रे कि वह न आया तब महम्मद साहिब अपने बअ़ज़े साथियों को लेकर उस का हाल पूछने गये वहां सुना कि कई रोज़ हुए कि वह मर गया और उस के परोसियों ने कहा ऐ नबी अल्लाह के वह हम लोगों में बड़ा नेक मर्द था मगर उस की एक ख़ो बद थी । हज़रत ने पूछा कौन सी उन्हों ने कहा कि वह व्यभिचारी था पैग़म्बर ने कहा वल्लाह वह मुझे ऐसा प्यार करता था कि अगरचि वह ग़ुलामज़ादों को बेच डाला करता तौभी खुदा उसे बख्श देता । फिर ऐनुलहयात के ६०८ और ६११ सफहः मे लिखा है कि जो कोई सूरे बनीइसराईल अकसर पढ़ेगा उस के गुनाहों का हिसाब सर्वशक्तिमान न लेगा और उसे

अल्लाह के नबी के पास बिहिश्त में रखेगा। फिर लिखा है कि जो कोई हर बिहफ़े को सूरे सिजदा पढ़ा करेगा सर्वशक्तिमान उस का कर्मपत्र अदालत के दिन उस के दहिने हाथ में देगा और वह अगरचि गुनहगार होगा खुदा उस का हिसाब न लेगा। फिर उसी किताब के १४ सफ़हः में लिखा है कि इमाम बाक़र से यों बयान हुआ है कि जो कोई दो रकअत नमाज़ पढ़ता और जो कुछ पढ़ता जाता सब के मअने समझता और ग़ौर करता तो उस का एक गुनाह भी बाक़ी नहीं रहता। फिर उसी किताब के ६१५ सफ़हः मे लिखा है कि जो कोई सूरे इख़लास एक बार पढ़ेगा तो सर्वसामर्थी उस पर बरकत उतारेगा और जो कोई दो बार पढ़ेगा तो सर्वसामर्थी उस के घर पर बरकत भेजेगा और जो कोई सौ दफ़ः पढ़ेगा सब जहानों का पैदा करनेवाला उस के पचीस बरस के गुनाह मुआफ़ करेगा और जो कोई हज़ार दफ़े पढ़ेगा तो अल्लाह उस को चार सौ शहीद का सवाब देगा और उसी किताब के २६१ सफ़हः में इमाम जअफ़र सादिक़ से एक हदीस सच्ची यों बयान हुई है कि जो मोमिन एक रात दिन में चालीस बड़े गुनाह करे और फिर तौबः के साथ

أَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِي لَا إِلٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ

पढ़ेगा तो अल्लाह ताला उसे बेशक बख़्शेगा और उसी किताब के १६५ सफ़हः में लिखा है कि इमाम जअफ़र सादिक़ से सच्ची हदीस यों बयान किई गई है कि जो कोई शाम की नमाज़ के बअद सौ बार इस्तिग़फ़ार पढ़ेगा तो अल्लाह उस के सात सौ गुनाह मुआफ़ करेगा और अगर उस के गुनाह सात सौ नहीं तो उस के बाप के गुनाहों में से मुजरे होगा

और अगर उस के गुनाह भी इतने न हों तो उस की मा के गुनाहों में से और उस के गुनाह भी इतने न हों तो उस के बेटे के गुनाहों में से योंहों उस के और नज़दीकियों में से जब तक कि हिसाब पूरा न हो उसी तरह मिशकातुलमसाबीह के ५४२ सफहः में लिखा है कि जो कोई सुबहानअल्लाह वा हम्दहू एक दिन सौ बार पढ़ेगा उस के गुनाह अगरचि समुद्र की लहरों की मानिन्द होंगे धो जायेंगे। फिर उसी किताब के ९४८ सफहः मे है कि हज़रत ने कहा कि अगर सुबहानअल्लाह सौ मर्तबः पढ़ोगे तुम्हारे वास्ते हज़ार सवाब गिने जायेंगे या तुम्हारे हज़ार गुनाह मिट जायेंगे। फिर उसी किताब के ५७४ सफहः में लिखा है कि जो कोई सोते वक़्त

أَسْتَغْفِرُ اللهَ الَّذِي لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّومُ

तीन मर्तबः पढ़ेगा तो अल्लाह उस के गुनाह बख़्श देगा अगरचि समुद्र की लहरों या जंगल की रेत या दरख़्तों के पत्तों या ज़माने के दिनों की बराबर हों। फिर उसी किताब के ५५० सफहः में लिखा है कि जो कोई बीमार हो और मरते वक़्त

لَا إِلَٰهَ إِلَّا اللهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ إِلَّا بِاللهِ

पढ़ेगा तो जहन्नम की आग उसे न खायगी। फिर हयातुलक़ुलूब के १०५ सफहः में लिखा है कि हज़रत ने फरमाया कि बीबी फातमान सब औरतों से अच्छी हैं और जब सर्व्वसामर्थी तमाम ख़िलक़त को उठावेगा तब आसमान का मुनादी करनेवाला ऊंचे आसमान से यह पुकारके कहेगा ऐ

सब लोगो अपनी आंखें ढांप लो जब तक महम्मद की बेटी जहान की औरतों की रानी पुलसरात से गुज़र जाये तब सब लोग महम्मद और अली और इमामों के सिवा अपनी २ आंखें मूंद लेंगे और वह उस पुल पर से गुज़रकर अपना घूंघट यों फैलावेगी कि उस का एक पल्ला उन के हाथ में और दूसरा क़ियामत के मैदान में होगा तब ख़ुदा का मनादी करनेवाला पुकारेगा कि ऐ बीबी फ़ातमान के प्यारो बीबी फ़ातमान जो सब औरतों से उत्तम है उस के घूंघट का एक तार पकड़े रहो उस वक़्त जो कोई उस सत्यव्रता बीबी का प्यारा होगा सो उस के घूंघट का एक तार पकड़ेगा और तार के पकड़नेवाले दस फ़ाम याने करोड़ आदमी से ज़ियादः होंगे और ये सब के सब उस पाक बीबी के घूंघट की बदौलत जहन्नम की आग से बचेंगे ।

अब ग़ौर करने की जगह है कि नजात की इन राहों के बयान से इनसान गुनाह की मुआफ़ी और ऐसी लियाक़त कि पाक आदिल और अत्यन्त महान ख़ुदा के हुज़ूर जा सके हासिल करेगा ।

क्या अल्लाह को वाहिद कहने या कलमा पढ़ने से आदमी का दिल पाक होगा क्या किसी के दो लड़कों के मरने से अल्लाह का रहम बुज़ुर्गी पाता या आदमी के दिल से गुनाह दूर होता है या एक तीर बनाने से ख़ुदा का अदल इज़्ज़त पाता और आदमी आसमान में दाख़िल होने की लियाक़त पैदा कर सकता है क्या जोरू अपने शौहर के प्यार के सबब गुनाह की मुआफ़ी पा सकती है या ख़ुदा यहां तक तरफ़-दारी करेगा कि बज़्ज़ों को ख़ामख़ाह बिहिश्त में पहुंचावे क्या ख़ुदा अपनी पवित्रताई औ इनसाफ़ और सच्चाई को रद करेगा कि वह ज़िनाकार को महम्मद साहिब के सबब

बख़शे । या ज़िनाकार को अपने काम से बाज़ आना पड़ेगा ताकि नजात मिले । फिर एक सूरे के पढ़ने या फुलानी बात कहने से नजात हासिल हो सकती है क्या ख़ुदा अपनी सचाई और अदालत को छोड़ेगा कि गुनाहों का हिसाब न ले दो रकअत के पढने और सुबहानअल्लाह कहने से गुनाह मुआफ हो सकते हैं या मरते वक़्त लाइलाह इललिल्लाह के पढ़ने से ख़ुदा की सिफते बुज़ुर्गी पाती हैं या उस की शरीअत जिस को उदूली तमाम उमर आदमी ने किई पूरी होती है क्या बीबी फातमान की ओढनी के सबब ख़ुदा अपनी पवित्रता औ न्याय और सचाई को रुसवा करेगा ताकि उस के पकड़नेवालों को अपने पास जगह दे या गुनह-गार को उस ओढ़नी के पकड़ने के सबब आसमान में दाख़िल होने की लियाक़त हासिल होगी क्या उन सब बातों से ख़ुदा की कोई सिफत बूज़ुर्गी पाती है या ऐसी बातें कभी नजात के वसीले हो सकती है क्या इन से उस अत्यन्त महान की पवित्रता औ उस अनादि अनन्त का न्याय उस सच्चिदानन्द की सचाई उस दयाल की दया या उस अनूप की व्यवस्था बुज़ुर्गी पाती है क्या वे आदमी को उस के गुनाहों से छुड़ा सकती हैं या उस का दिल पाक औ साफ करके आसमान में पहुंचाने के लायक़ कर सकती हैं अगर नहीं तो फिर नजात किस तरह मिलेगी गुनाह क्योंकर दूर होगा और दिल किस तरह से पाक बनेगा ।

ऊपर की इन राहों के सिवा और तीन राहें हैं जिन को सब मुसलमान मानते हैं याने मुसलमानों के ईमान पर चलना गुनाहों से तौबः करना और दीन की बाबत लड़ना ।

पहिली राह ईमान लाना और धर्म्म पूरा करना हर एक मुसलमान को उन की किताबों के मुवाफिक़ ज़रूर है कि

खुदा श्रो फिरिश्तों पर किताब श्रो नबियों पर क़ियामत श्रो क़िसमत पर ईमान लावें । मान लिया कि आदमी इन सब बातों को दिल से माने और ज़बान से इक़रार भी करे तो क्या इस से उस के गुनाह मुआफ हो सकते हैं मसलन अगर कोई मुसलमान खून या ज़िना करे तो क्या इन बातों के मान्ने श्रो इक़रार करने से उस के गुनाह मुआफ होंगे या उस को और कुछ करना ज़रूर पड़ेगा क्या कोई बादशाह किसी कुसूरवार को इस लिये मुआफ करेगा कि वह मानता और इक़रार करता है कि यहां एक बादशाह है और उस के वज़ीर श्रो आईन श्रो नौकर चाकर वग़ैरः मौजूद हैं अगर नहीं तो गुनाह किस तरह मुआफ होंगे। इस का जवाब क़ुरान श्रो हदीस में इस तरह पर है कि नजात के लिये न सिर्फ इन बातों को मान्ना चाहिये बल्कि धर्म्म पूरा करना ज़रूर है। सब मुसलमानों के दीन के मुवाफिक़ पांच बातें धर्म्म और मुसलमानी मत की जड़ हैं याने नमाज़ पढ़ना रोज़ा रखना खैरात देना हज्ज को जाना कलमए तैयब पढ़ना याने लाइलाह इललिल्लाह ।

पहिले नमाज़ पढ़ना । नमाज़ पढ़ने से पेश्तर कई तरह की तहारत याने पवित्रताई ज़रूर है और बदन के लिये क़ियाम याने खड़ा होना रुकू याने झुकना दोज़ानू बैठना सिजदः करना और हर रोज़ पांच दफे करके अठतालीस रकअत नमाज़ पढ़ना हुक्म है। अब मान लिया कि आदमी इन सब रकअतों को पढ़े ऐसा कि न तहारत न नमाज़ में कुछ भी क़ुसूर करे । यह बहुत मुशकिल है क्योंकि हर एक मुसलमान अपने तईं आज़मावे श्रो ग़ौर से सोचे तो उसे मअलूम होगा कि नमाज़ पढ़ते वक़्त बहुतेरे और खियाल भी उस के दिल में आते हैं या नहीं, हम ने मान लिया कि

नहीं तौभी क्या खुदा उस की नमाज़ के सबब उस के सारे गुनाहों को बख़शेगा क्या कोई हाकिम किसी खूनी या ज़िनाकार को छोड़ देगा कि वह अपने छूटने के लिये मिन्नत करता है। नमाज़ नजात के लिये ज़रूर तो है पर नजात पाने का सबब नहीं।

नमाज़ के सिवा रोज़ा रखना भी हुक्म है यह बहुत खूब और अक़्ल के मुवाफिक़ बात और आदमी के लायक़ है क्योंकि रोज़ा रखने से आदमी इक़रार करता है कि वह ऐसा गुनहगार है कि न सिर्फ़ बिहिश्त बल्कि दुनिया की खूबियों के लायक़ भी नहीं और उस का दिल जिस्मानी ख़ाहिशों से ऐसा भरा है कि उसे दुआ मांगने के लिये फाक़ः करना भी ज़रूर है पर क्या यह नजात का सबब हो सकता है क्या कोई हाकिम किसी शख्स को जिस ने चोरी किई फाक़ः करने से मुआफ करेगा या फाक़ः करने से खुदा की पाकी या अदालत या रहमत औ मिहरबानी की बुज़ुर्गी होगी क्या दिन भर फाक़ः रहने और रात भर खाने पीने से किसी का दिल पाक औ साफ हो सकता है।

फिर यह कि ख़ैरात देने से गुनाह मुआफ होता है चुनानचि सूरे निसा की २४ आयत में लिखा है कि ख़ैरात देना भी अच्छा है पर क्या कोई ख़ैरात देने से आसमान को मोल ले सकता है हजारों बुतपरस्त बड़े देनेवाले हैं और बहुतेरे ज़िनाकार झूठे और शराबी भी ख़ैरात करते हैं लेकिन क्या यह ख़ैरात करना उन के गुनाहों को मिटा सकता है या उन का दिल पाक औ साफ बना सकता है।

शायद हज्ज को जाने से नजात मिलेगी मान लिया कि सब लोग हज्ज को जावें जो मुमकिन नहीं पर क्या इस से खुदा का सर्बज्ञ होना या उस की पाकी या रहमत बुजर्गी

पावेंगी। ऊपर की सब बातें अच्छी हैं और मुसलमान होने के लिये ज़रूर लेकिन क्या उन से गुनाह दूर और दिल पाक हो सकता है। पस मेरा दिल अब तक सवाल करता है कि मुझे क्या करना मुनासिब है जिस से गुनाह की मुआफी हासिल होवे हर एक मुसलमान जवाब देता है कि तौबः करो तो अल्लाह तआला जो क़ादिरे मुतलक़ है मुआफ करेगा।

कुरान ओ हदीस से साफ ज़ाहिर है कि तौबः के आंसू गुनाहों को मिटावेंगे। ग़ौर करने की जगह है कि क्या यह हो सकता है खुदा बेहद बुज़ुर्ग है और उस की शरीअत भी वैसीही है इस लिये अगर आदमी उस की बेहद बुज़ुर्ग शरीअत की उदूली करे तो उस का गुनाह भी निहायत बड़ा होगा और उस की सज़ा गुनाह के मुवाफिक़। फिर खुदा आदिल है और वह हर एक को उस के काम के मुवाफिक़ ठीक २ बदला देगा और अगर गुनहगार खुदा की बेहद बुज़ुर्गी अदालत को राज़ी न करे तो उस के गुनाह की सज़ा मिलेगी और अगर खुदा अपनी अदालत और पाकी को रद करके गुनहगार को बे सज़ा दिये छोड़ दे तो क्या उस की और सिफतों में खलल न आवेगा। अब ग़ौर करना चाहिये कि आदमी तौबः से खुदा के अदल को राज़ी कर सकता है क्या उस की तौबः बेहद बड़ी है अगर नहीं तो क्योंकर गुनाह की मुआफी का वसीला हो सकता है तौबः गुनाहों की मुआफी के लिये ज़रूर है लेकिन गुनाह की मुआफी का वसीला नहीं क्योंकि अगर एक शख्स का हज़ार रुपया किसी पर आता हो और वह हाकिम के पास ले जाके उसे क़ैद करवावे तो क्या हाकिम क़रज़दार के तौबः करने से उसे छोड़ देगा क़रज़ अदा करने से अदा होता है तौबः करने से नहीं। और जब कि आदमी अपने आंसुओं से

दुनियावी क़रज़ नहीं मिटा सकता तो फिर क्योंकर हो सकता है कि उस से अपने गुनाहों को धो सके। ख़ुदा पाक और न्यायी है इस लिये चाहिये कि उस की पाकीज़गी बुज़ुर्गी पावे और अ़दल में भी ख़लल न आवे तब रहम अलबत्तः मुआ़फ कर सकता है और योंहीं रहम सच्चा रहम है लेकिन ख़ुदा सर्वसामर्थी है जो चाहता कर सकता है अगर वह चाहे कि किसी को बिना तौबः मुआ़फ करे तो कौन रोक सकता है और अगर वह चाहे कि तौबः पर मुआ़फ करे तो कौन उसे मना करनेवाला है। इस बात से लोग आप को बड़े फरेब में डालते हैं वे कहते हैं कि ख़ुदा सामर्थी है जिस को चाहता मुआ़फ करता और जिस को चाहता सज़ा देता है जैसे कोई हाकिम जब कचहरी करे और उस के आगे कोई असामी लाया जावे जिस ने किसी ग़ैर का दस रुपया चुराया या उस का देनदार हो तो उस को मुआ़फ नहीं कर सकता क्योंकि हाकिम को आईन के मुवाफिक़ अ़दालत करना ज़रूर है लेकिन अगर उसी हाकिम का ख़ास रुपया चुराया या क़रज़दार हो तो उस को बख़्श देने से कौन रोक सकता है वह अपने घर में बे अ़दालत किये जो चाहे कर सकता है। वैसेही ख़ुदावन्द अपना मालिक है जिस को चाहे सज़ा दे जिस को चाहे मुआ़फ करे न्याय से कुछ वास्ता नहीं। प्यारो यह ख़ियाल झूठा है अगर कोई नौकर ख़ास हाकिम का दस रुपया कचहरी का चुराये या धारे अगर हाकिम मुआ़फ करने मांगे तो क्या ज़रूर होगा यह कि दस रुपया को अपने पास से अदा करे तब मुआ़फ करने सकता है बिना अदा के मुआ़फ नहीं हो सकता क्योंकि पहिले अ़दल पूरा करना चाहिये लेकिन अगर कोई कहे कि वह रुपया कचहरी का नहीं बल्कि ख़ास उसी के मालिक

का हो तो बिना ग्रदा के मुआफ कर सकता है तो यह भी उस को कम समझ है क्योंकि अगर रुपया मालिक ही का हो तौभी मुआफ करने से पेश्तर ज़रूर है कि मालिक नुक़सान अपने ऊपर ले बग्रद उस के उस को मुआफ कर सकता है। हक़ीक़त में बे अदल को पूरा किये कोई मुआफ नहीं कर सकता है क्योंकि ज़रूर है कि या तो आप नुक़सान उठावे या नौकर से लेवे जब नौकर से लेवे तो मालिक का अदल पूरा होता है अगर नुक़सान आप उठावे तो उस के अदल और रहम दोनों की बुज़ुर्गी होती है वैसाही खुदा सब कुदरतवाला तो है लेकिन उस की दया न्याय और पाकी को रद न करे कि गुनहगार को खामखाह बख्शे हां अगर खुदा ने ऐसी कोई तदबीर किई हो कि वह खुद अपनी शरीअत का नुक़सान और खलल की रुसवाई आप उठावे या सहे या अगर कोई दरमियानी हो जो अदल को पूरा करे और कुद्दूसी को जलाल बख्शे तो गुनहगार को मुआफ करना मुमकिन है लेकिन न कुरान न हदीस न मुसलमानों के अक़ीदः में ऐसी कोई तदबीर नज़र आती है तौभी ज़रूर है कि पहिले खुदा की कुद्दूसी और अदालत बुज़ुर्गी पावे बग्रद उस के गुनाह की मुआफी हो सकेगी। सोचो क्या खुदा ने आदमी को शरीअत दिई ताकि वह उसे माने या इस लिये कि गुनाह से शरीअत को मिटा दे अगर इनसान सर्वसामर्थी की शरीअत को रुसवा करे और वह उसे सज़ा न दे तो वह खुद अपनी शरीअत को रद करता और अपनी कुद्दूसियत और अदल ओ सचाई को खलल पहुंचाता है पर क्या मुमकिन है कि अल्लाह खुद अपनी शरीअत को रद करे या एक सिफत से दूसरी को मिटावे पस अगर किसी बात के बयान से खुदा की सिफतों

में खलल आवे तो क्या वह कलाम औ बयान खुदा की तरफ से हो सकता है।

फिर नजात की और एक राह मुसलमानों के मज़हब से मअलूम होती है यअने दीन की बाबत लड़ाई करना चुनान्चि महम्मद साहिब ने फरमाया कि बिहिश्त की कुंजी तलवार है और लिखा भी है कि जो लोग दीन के वास्ते लड़ाई करें और उस लड़ाई में या तो मारे जायें या ग़ालिब आवें बिहिश्त उन्हीं की है।

अब क्या मैं जो गुनहगार और नापाक हूं लड़ाई करने से नजात पा सकता हूं और जब कि आदमी ने खुदा की कुद्दूसियत की इज्ज़त और उस के अदल को नाराज़ और रहम को उलट दिया तो फिर लड़ाई करने से खुदा की कुद्दूसियत की बुज़ुर्गी होगी और उस का अदल जलाल औ रहम बड़ाई पावेगा।

फिर आदमी नापाक है इस लिये खुदा के हुज़ूर जाने के लिये चाहिये कि पवित्र बने सो क्या दीन के वास्ते लड़ने से गुनाह दिल से निकल जावेगा रहमानुर्रहीम खुदा का दीन तलवार के वसीले फैलाने से खुदा की कुद्दूसी या उस का अदल बुज़ुर्गी पाता है क्या अपने भाई की क़तल करने से खुदा के रहम की बड़ाई होती है आदमी हज़ारों भाइयों के लोहू से अपने गुनाहों को धो सकता है हज़ार बेवाओं औ यतीमों की बददुआयें आदमी के दिल में आराम पैदा करेंगी या उस के दिल में खुदा के हुज़ूर में जाने की लियाक़त बख़शेंगी अगर नहीं तो खुदा अपनी कुद्दूसी औ अदल और सचाई को छोड़ देगा ताकि गुनहगारों को उन के गुनाहों समेत बचावे। पस फिर सवाल करता हूं कि मैं किस तरह गुनाह की रिहाई औ मुआफी पा सकता हूं और मुझे किस

तरह से लियाक़त हासिल होगी कि ख़ुदा क़ुद्दूस के हुज़ूर जा सकूं।

अब यह एक उम्मेद बाक़ी है कि अगर हम ऊपर की सब हदीसों को बजा लावें और नजात की उन तीन राहों को भी इख़्तियार करें तो नजात हासिल होगी हम ने क़बूल किया कि गुनहगार अल्लाह को वाहिद कहे कलमः पढ़े सुभहानअल्लाह पुकारे बीबी फातमान की ओढ़नी पकड़े और दिल से मान ले कि ख़ुदा मौजूद औ उस के फिरिश्ते किताब क़ियामत औ तक़दीरें और नबी हैं और नमाज़ पढ़े रोज़ा रक्खे ख़ैरात दे हज्ज को जाये और दीन की बाबत लड़ाई करे तो क्या इन बातों से गुनाह की मुआफी हासिल हो सकती है। जब कि आदमी ने अपने गुनाहों से ख़ुदा की क़ुद्दूसी को रुसवा अदल को बेइज़्ज़त और सचाई को नाचीज़ किया तो अब कहिये ऊपर की किस बात से हम लाचार गुनहगार उस अति महान ख़ुदा की क़ुद्दूसी को फिर जलाल बख़्शें और उस अनूप ख़ुदा को जो निहायत बुज़ुर्ग औ आदिल है राज़ी और उस की शरीअत को पूरा करें क्या अल्लाहतआला उन दो बुज़ुर्ग सिफतों को किनारे करेगा और गुनहगार को बे सज़ा दिये छोड़ेगा तौबः के आंसू ख़ुदा की पाकी अदल औ सचाई को मिटा सकेंगे ऐसा कि रहम के सिवा उस की कोई और सिफत बाक़ी न रहे या अपने हमसाये के लोहू से जो दीन की बाबत बहाया गया ख़ुदा की क़ुद्दूसी अदल औ रहम बुज़ुर्गी पावेगा और अज़बसकि ख़ुदा पवित्र और आदमी गुनहगार है इस लिये उस को न सिर्फ़ गुनाहों की मुआफी बल्कि ख़ुदा के हुज़ूर जाने की लियाक़त और दिल की पाकीज़गी हासिल करना ज़रूर है और ख़ुदा के बराबर पवित्र बना और गुनाह की

बुरी ख़्वाहिश को दूर करना चाहिये ऐसा कि आदमी का दिल औ मिज़ाज औ ख़्वाहिश खुदा से मुताबिक़त रक्खे । अब खियाल किया चाहिये कि ऊपर की बातों में से कौन ऐसी है जिस से गुनाह की ख़्वाहिश दूर होगी दिल पाक औ साफ बने और आसमान में दाखिल होने की लियाक़त मिलेगी इस सवाल के जवाब से जैसा कुरान औ हदीस और अहले इसलाम के अक़ीदे में मुन्दर्ज है आदमी की खातिरजमई नहीं होती ।

पस इन बातों से क्या हासिल होता है यह कि खुदा सब का खालिक़ परवरदिगार खुदावन्द और हाकिम है और यह कि आदमी उस का मखलूक़ और जवाबदिह है लेकिन इस बात का बयान कहीं साफ नहीं नज़र आता कि गुनाह क्या है और आदमी गुनहगार होकर किस तरह गुनाह की मुआफी पावेगा नजात पाने की कई राहें मुक़र्रर हैं पर न तो उन में से एक के मानने से दिल की तसल्ली होती और न सब की सब राहों को इख़्तियार करने से दिल राज़ी होता । फिर उन किताबों से यह भी साबित होता है कि हर एक को नजात उस के आमाल पर मौकूफ है लेकिन आमाल ही से तो हम गुनहगार हुए और न सिर्फ आमाल बल्कि खियाल और बातों से दिनबदिन गुनाह ज़ियादः होता जाता है तो अब इस हालत में खुदा के हुज़ूर कौन सी नज़र लावें कि वह हमारे गुनाह मुआफ करे और बुरी ख़्वाहिशों को बदल डाले और हमें नया मखलूक़ बनाकर आसमान में दाखिल होने की लियाक़त बख्शे वह अलबत्तः रहीम है मगर जब तक कि हम उस की कुद्दूसी को जलाल न दें और अदल औ सदाक़त को राज़ी औ कामिल न करें तब तक वह हमें किस तरह मुआफ करेगा खुदा

गुनहगार के लिये अपनी ज़ात में खलल न डालेगा और न अपनी सदाक़त को रद करेगा इस लिये हम इस बात से भी दर गुज़रकर चौथी बात की तहक़ीक़ करते हैं ।

चौथा पर्व्व ।

मुअजिज़े और नबूवतें सच्चे मज़हब पर खुदा की तरफ से मुहर हैं ।

सच्चा दीन खुदा की तरफ से है इस लिये चाहिये कि खुदा ने उस पर ऐसी मुहर किई हो जैसी कोई आदमी न कर सके और हर एक शख्स उस मुहर के सबब उसे कलामुल्लाह जाने । चुनानचि दुनिया का भी यही दस्तूर है कि जब कोई बादशाह अपना एलची किसी मुक़द्दमा में कहीं भेजता तो उसे ज़रूर ऐसी सनद मए दस्तखत ओ मुहर के देता है कि हर एक उस सनद की सचाई को मानता है और अगर उस के पास सच्ची किई हुई सनद न हो तो कोई उसे सच्चा एलची या दूत नहीं जानता ।

इन बातों के मुताबिक़ खुदा भी जब किसी नबी को दूत मुक़र्रर करके भेजता है तो ऐसी सनद देता है कि हर एक उसे सच्चा नबी जाने और जब खुदा किसी नबी को एक क़ौम के लिये भेजता है तो उस को ऐसी सनद इनायत करता जो उस क़ौम के लोग समझ सकें या अगर तमाम दुनिया के लिये भेजे तो उसे ऐसी सनद मए मुहर ओ दस्तखत के देगा कि उस को सच्चा नबी जानें और दिल ओ जान से मानें ।

अब खुदा की सनद मुहर ओ दस्तखत क्या है आश्चर्य्य कर्म्म ओ भविष्यवाणी है । पस अगर मुहम्मद साहिब सच्चे नबी हैं तो ज़रूर ऐसी सनद मए मुहर ओ दस्तखत उन के

पास होगी यअ़ने ऐसे आश्चर्य्य कर्म्म दिखाये और भविष्यवाणी कही होंगी जिस से हर एक उन को और उन की किताब को सच्चा जाने ।

कुरान के पढ़ने से मअ़लूम होता है कि जब लोगों ने महम्मद साहिब से कहा कि आश्चर्य्य कर्म्मों के वसीले अपना नबी होना साबित कीजिये तो आप ने फरमाया कि आश्चर्य्य कर्म्म दिखाना मेरा इख़तियार नहीं मगर यह कि कुरान का ज़ाहिर होना आप एक आश्चर्य्य कर्म्म है क्योंकि ऐसी फसाहत औ बलाग़त यअ़ने अच्छी बोली के साथ आज तक अ़रबी ज़बान में कोई किताब नहीं लिखी गई । पस मअ़लूम हुआ कि महम्मद साहिब के नबी अल्लाह होने की सनद मुहर औ दस्तख़त जो अल्लाह की तरफ से मिली उन किताबों की अच्छी बोली है और मुसलमान इस पर एक मत हैं कि कुरान की बोली के बराबर फसीह लिखना या कोई सूरे या आयत बनाना मुमकिन नहीं इस लिये वह एक मुअ़जिज़ा है ।

हम ने मान लिया कि कुरान की बोली अनूप है तो क्या इस से ऊपर के निशानों के मुताबिक़ आश्चर्य्य कर्म्म ठहर सकता है । ऊपर के निशानों के साथ मुक़ाबिला करने से साबित होता है कि सच्चे आश्चर्य्य का पहिला निशान उस में दुरुस्ती के साथ मौजूद है क्योंकि हज़रत ने फरमाया कि कुरान की अच्छी बोली दीन महम्मदी साबित करने के लिये है और दूसरा निशान भी उस में है क्योंकि कुरान आज तक मौजूद और हर एक उस की फसाहत को देख सकता है । लेकिन तीसरा निशान उस में नहीं क्योंकि उस की बोली अगरचि अच्छी है पर उस के हर एक प्रसंग से ख़ुदा की बुज़ुर्गी जैसी चाहिये नहीं होती चुनानचि ऊपर साफ़ साबित हो चुका है । चौथे निशान का तो नाम भी

निशान भी उस में कहीं नज़र नहीं आता क्योंकि आलिमों के सिवा कोई उसे समझ नहीं सकता। अगर महम्मद साहिब किसी मुर्दे को जो तीन चार दिन क़बर में रहा हो जिलाते तो अलबत्तः आलिम ओ जाहिल इस करामात को समझ सकते और उस पर ईमान लाते। लेकिन उस के आश्चर्य्य तो उस को किताब की अच्छी बोली पर मौक़ूफ हैं और वह फसाहत उन के गुमान पर क्योंकि वे गुमान करते हैं इस सबब से वे उसे कलामुल्लाह कहते हैं पस क़ुरान के ऊपर के निशानों के मुताबिक़ अच्छी बोली के सबब आश्चर्य्य नहीं हो सकता क्योंकि सच्चे आश्चर्य्य के सब निशान मौजूद नहीं वह एक अशरफी की मानिन्द है जिस पर सूरत ओ सिक्का तो अनूप और जारी अशरफी की तरह हो लेकिन परखने से उस की क़लई खुल जाय कि उस का सोना खोटा निकले उस मुल्क में तो चल सकती है पर औरों के नज़दीक जो सिक्का ओ सूरत से कुछ वास्तः ओ ग़रज़ नहीं रखते बल्कि सोने से यअ़ने जो किताब की फसाहत पर नहीं बल्कि उस के मतलब पर नज़र करते हैं काम की नहीं।

फिर किसी किताब की अच्छी बोली से कभी साबित हो नहीं होता कि वह ख़ुदा की तरफ से और तमाम जहान के वास्ते है क्योंकि सब आदमियों के नज़दीक ठीक नहीं ठहर सकती। ख़ुदा सारी दुनिया का ख़ुदावन्द है इस लिये जब वह कोई नबी तमाम जहान के लिये भेजे तो ज़रूर उस को ऐसी सनद देगा जो सारी दुनिया के लोग समझ सकें क्योंकि आदमी को जवाब देना है यअ़ने उस को अपने ईमान का जवाब देना पड़ेगा इस लिये ज़रूर है कि ख़ुदा के कलाम पर ऐसी साफ मुहर होवे कि हर एक आदमी किसी क़ौम का क्यों न हो उसे यक़ीन करे कि यह ख़ुदा की तरफ

से है। लेकिन कुरान की आश्चर्य्य बोली अच्छी है सब के वास्ते नहीं बलिक अरब के बअ़ज़े आलिमों के लिये है दूसरी क़ौम इस आश्चर्य्य को बिलकुल दरयाफ़ नहीं कर सकती है क्योंकि इस के दरयाफ़ करने के लिये न सिर्फ़ ज़रूर है कि वे ज़बान अरबी में कमाल महारत पैदा करे औ बखूबी दख़ल पावें बलिक चाहिये कि ख़ुदा अरबी हो जावे यअ़ने उन का सा मिज़ाज औ ख़ियाल हासिल करे ताकि वे भी उसे पसंद करें जिसे अरब के लोग प्यारी कहते हैं नहीं ती यह आश्चर्य्य सिवा अरब के किसी और के वास्ते नहीं।

फिर जिस हाल में कि यह दीन सिर्फ़ अरब के लोगों के लिये ठहराया तो वह दीन हक़ और ख़ुदा की तरफ़ से नहीं हो सकता क्योंकि ख़ुदा तो सारे जहान का ख़ुदावन्द है सिर्फ़ अरब का नहीं। इसी तरह दीन हक़ भी सारे जगत के लिये है। और जब ख़ुदा किसी नबी को तमाम दुनिया के लिये भेजे तो अवश्य उसे ऐसी सनद मए मुहर औ दस्तख़त के देगा कि हर एक क़ौम के लोग उसे आज़माकर यक़ीन करें।

फिर कुरान अच्छी बोली के सबब कलामुल्लाह नहीं हो सकता क्योंकि उस की अच्छी बोली कुछ हक़ीक़त मतलब पर नहीं बलिक सिर्फ़ बअ़ज़ों के गुमान पर मौकूफ़ है। अरब के अकसर लोग उस को अनूप समझते हैं क्योंकि ऐसी किताब उन के नज़दीक अच्छी बोली है लेकिन यह नहीं क्योंकि आदमी का मिज़ाज तरह २ का है इस लिये बअ़ज़े यह बात औ बअ़ज़े वह बात पसन्द करते हैं। चुनानचि अरबवालों ने कुरान की बाबत कहा कि सनातन और अल्लाह से पाया है और सूरे अहक़ाफ़ में लिखा है कि महम्मद साहिब ने फ़रमाया यअ़ने जो कहते हैं कि कुरान बनाया

हुआ है सो काफिर हैं। फिर और आलिमों ने कहा कि काफिर हैं वह जो कहें कि कुरान प्राचीन है। फिर और आलिमों का क़ौल है कि वह ग़ैर मख़लूक़ नहीं ग़ैर मख़लूक़ तो एक यअ़ने ख़ुदा है चुनानचि अ़ब्बास उल मामून ने कहा है और उस के तख़्तनशीन मुताजिमुल इशाक़ ने भी वही बात क़ायम रक्खी। फिर उस के बअ़द अलमुतूकुल ने जो वाशिक का तख़्तनशीन था इस को रद किया और उसी पहिली बात को क़ायम रक्खा कि कुरान सनातन से ख़ुदा की ज़ात से है और जिस तरह कि कुरान के सनातन पर एक मत नहीं वैसेही उस की मीठी बोली में गड़बड़ है चुनानचि अकसर आलिमों ने कहा और आज तक कहते और कुरान में लिखा भी है कि कुरान की मीठी बोली अनूप और यह कि कोई आदमी उस के बराबर एक सूरे या आयत नहीं बना सकता। फिर बअ़ज़ों ने कहा और आज तक कहते हैं कि कुरान की मीठी बोली कुछ आश्चर्य्य नहीं बलिक आलिम कुरान के बराबर मीठी बोली की किताब बना सकते औ बनाई हैं चुनानचि ईसा इब्न सबीह अबू मूसा का क़ौल है कि अलन्नास क़ादिरून अलामसल हज़ा उलकुरान फ़साहतः व नज़मा व बलाग़तः यअ़ने आदमी क़ादिर है कि एक किताब मिसल कुरान के अच्छी और कबिताई की बनावे। फिर और आलिमों ने भी यही कहा चुनानचि सूरे अहकाफ में लिखा है कि आलिम कुरान के बराबर बलिक उस से बिहतर लिख सकते हैं। इसी के मुताबिक़ इलशहरस्तानी में लिखा है। यअ़ने बातिल है कुरान को अच्छी बोली के लिये आश्चर्य्य जान्ना। फिर और आलिमों ख़ास करके अलिनज़ाम ने कहा कि कुरान की मीठी बोली आश्चर्य्य नहीं और अगर मुनासिब होता तो उलमा लगाने क़ादिरीन

अली इस्म या तो अलबसूरतः मिन मसल बलागतः व फ़सा-
हतः व नज़मा सचमुच बना सकते एक सूरे अच्छी बोली
औ कबिताई में नादिर सूरे क़ुरान के।
और दूसरे मुल्कों के बअ़जे आलिम जो ज़बान अ़रबी में
खूब दख़ल रखते हैं आज तक कहते हैं कि मक़ामात हुरैरी
औ मक़ामात हमादानो बोली में क़ुरान के बराबर है पस
बअ़जे कहते हैं कि क़ुरान अनूप है और बअ़जे कहते कि ज़बान
अ़रबी में उस के बराबर और किताबें मौजूद हैं। अब फ़ैसला
कौन करेगा पस अच्छी बोली आदमियों के ख़ियाल पर मौक़ूफ़
है लेकिन सब आदमियों का ख़ियाल एक सा नहीं इस लिये
बअ़ज़े सच्चे और बेतरफ़दार कहते हैं कि क़ुरान अ़रबी की
किताबों में अनूप नहीं और बअ़ज़े कहते हैं कि अनूप है दोनों
सच कहते हैं क्योंकि एक की तबीअ़त में एक बात पसन्द
आती है और दूसरे को वह नापसन्द होती है। पर क्या
ख़ुदा अपने नबी को ऐसी सनद देगा जिस की सचाई की
बाबत सच्चे लोग शुबहः में रहें। अगर महम्मद साहिब किसी
मुर्दे को जिलाते या अंधे को अपनी बात से दृष्टि देते तो
दुशमन भी उस का इनकार न कर सकते। आश्चर्य्य चाहिये
कि ऐसा हो कि वह हर एक मुल्क के आलिम औ जाहिल
के नज़दीक आश्चर्य्य ठहरे न ऐसा कि बअ़ज़ों के नज़दीक
तो आश्चर्य्य ठहरे और बअ़ज़ों के नज़दीक उस के बरख़िलाफ़
ठहरे अगर दुशमन इसे इनकार भी करे तो कुछ मुज़ायका
नहीं लेकिन उसे मक़दूर न हो कि वह सचाई से कह सके
कि महम्मद साहिब ने तो फलाने काम किये लेकिन वह
काम आश्चर्य्य नहीं।
ग़ौर किया चाहिये कि कोई बादशाह अपने वकील को
बे दस्तख़त औ बे मुहर की सनद देकर इस शर्त पर कहीं

रवानः करेगा कि उस सनद की इबारत ऐसी फसीह है कि कोई शख़स उस के बराबर नहीं लिख सकता। या कोई वकील बिना बादशाही मुहर औ दस्तख़त के इस भरोसे से कहा जायगा कि इस परवाने की बोली उस को और उस के दोस्तों को दानिस्त में ऐसी अच्छी है कि वैसी कोई नहीं लिख सकता इस लिये मुझ को लोग सच्चा वकील जानेंगे हरगिज़ नहीं क्योंकि कोई दस्तावेज़ बग़ैर बादशाही मुहर औ दस्तख़त के सच नहीं ठहरती इस लिये कि दाना औ अक़लमन्द इबारत पर नहीं बल्कि उस के मतलब पर नज़र करते हैं। और जब कि आज़माइश से कुरान का मतलब ख़ुदा की तरफ से नहीं ठहरा तो क्या ख़ुदा अपनी मुहर औ दस्तख़त यअ़ने आश्चर्य्य औ भविष्यवाणी पर ज़ाहिर करेगा इस लिये महम्मद साहिब ने कई बार साफ २ फरमाया है आश्चर्य्य मेरे इख़तियार में नहीं। इस के बरख़िलाफ हदीस में अलबत्तः लिखा है कि महम्मद साहिब ने हज़ारहा आश्चर्य्य दिखाये जैसे शक़्कुल-क़मर यअ़ने चांद को दो हिस्सा किया और एक दफः किसी शख़स को भेजा कि फलाने यहूदी को क़तल करे और उस ने वैसाही किया जब घर से निकला तो गिर पड़ा और उस का पैर टूट गया तब नबी के पास गया और उस ने उस को चंगा किया। फिर एक दफः किसी शख़स के खाने में थूका और वह खाना हज़ारों आदमी के बराबर हो गया। जादूगरों से आप को बचाया। और एक बार एक ख़ुरमा के दरख़्त का खंभा उस के वास्ते चिल्ला २ रोया लेकिन यह कैसे आश्चर्य्य हैं और किस वक़्त लिखे गये। मुसलमानों के आश्चर्य्यों से मअ़लूम होता है कि महम्मद साहिब के दो सौ बरस पीछे हिमार इब्न बुख़ारी और काबूनी ने उन को लिखा है और किस लिये शायद उन्हों ने मअ़लूम किया कि सनद पर मुहर

ओ दस्तख़त जरूर है और कुरान की अच्छी बोली को सच्चा आश्चर्य्य न समझ सकेंगे इस लिये उन्हों ने लिखा कि महम्मद साहिब ने आश्चर्य्य दिखाये लेकिन ये बातें कुरान से महज़ खिलाफ हैं क्योंकि महम्मद साहिब ने खुद इक़रार किया है कि आश्चर्य्य मेरे इख़तियार में नहीं चुनानचि लिखा है

اَلَّذِينَ قَالُوْا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ اِلَيْنَا اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُولٍ حَتّٰى يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاكُلُهُ
النَّارُ ط قُلْ قَدْ جَاءَكُمْ رُسُلٌ مِنْ قَبْلِيْ بِالْبَيِّنَاتِ وَ بِالَّذِي قُلْتُمْ فَلِمَ قَتَلْتُمُوهُمْ
اِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ * وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ
نَفَقًا فِي الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِي السَّمَاءِ فَتَاْتِيَهُمْ بِاٰيَةٍ ط وَلَوْ شَاءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ عَلَى
الْهُدٰى ط * فَلَا تَكُونَنَّ مِنَ الْجَاهِلِينَ وَ اَقْسَمُوا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ جَاءَ
تْهُمْ اٰيَةٌ لَيُؤْمِنُنَّ بِهَا ط قُلْ اِنَّمَا الْاٰيَاتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا يُشْعِرُكُمْ اَنَّهَا اِذَا جَاءَتْ
لَا يُؤْمِنُونَ * وَ يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِنْ رَبِّهِ ط قُلْ اِنَّ اللّٰهَ
يُضِلُّ مَنْ يَشَاءُ يَهْدِي اِلَيْهِ مَنْ اَنَابَ * وَ يَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا اُنْزِلَ عَلَيْهِ
اٰيَةٌ ط اِنَّمَا اَنْتَ مُنْذِرٌ وَ لِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ * وَ قَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى
تَفْجُرَ لَنَا مِنَ الْاَرْضِ يَنْبُوعًا اَوْ تَكُونَ لَكَ جَنَّةٌ مِنْ نَخِيلٍ وَعِنَبٍ فَتُفَجِّرَ الْاَنْهَارَ
خِلَالَهَا تَفْجِيرًا * اَوْ تُسْقِطَ السَّمَاءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَيْنَا كِسَفًا اَوْ تَاْتِيَ بِاللّٰهِ
وَالْمَلَائِكَةِ قَبِيلًا * اَوْ يَكُونَ لَكَ بَيْتٌ مِنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى فِي السَّمَاءِ ط وَلَنْ نُؤْمِنَ
لِرُقِيِّكَ حَتّٰى تُنَزِّلَ عَلَيْنَا كِتَابًا نَقْرَؤُهُ ط قُلْ سُبْحَانَ رَبِّي هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا
رَسُولًا * وَقَالُوا لَوْلَا اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَاتٌ مِنْ رَبِّهِ ط قُلْ اِنَّمَا الْاٰيَاتُ عِنْدَ اللّٰهِ ط

وَ اِنَّمَا اَنَا نَذِيرٌ مُبِينٌ *

यअ़ने वे जो कहते हैं कि अल्लाह ने हम को कह रक्खा है कि हम यक़ीन करें किसी रसूल का जब तक न लावे हम पास एक नज़र खा जावे जिस को आग तू कह तुम्में आ चुके कितने रसूल मुझ से पहिले निशानियां लेकर और यह भी जो तुम ने कहा फिर क्यों क़तल किया तुम ने उन को अगर तुम सच्चे हो। और अगर तुझ पर भारी है उन का ग़फलत करना तो अगर तू सके कि ढूंढ़ निकाले कोई सुरंग ज़मीन में या कोई सीढ़ी आसमान मे जमअ़ कर लाता सब को राह पर। और क़स्में खाते हैं अल्लाह को ताकीद से कि अगर उन को ये निशान पहुंचें अलबत्ते उस को मानें तू कह निशानियां तो अल्लाह के पास हैं। और कहते हैं मुनकिर क्यों न उतरी उस पर कोई निशानी उस के ख़ुदा से तू कह अल्लाह बिचलाता है जिस को चाहे और राह देता है अपनी तरफ उस को जो रुजूअ़ हुआ। और क्यों न उतरी उस पर कोई निशानी उस के ख़ुदा से तो तू डर सुनानेवाला है और हर क़ौम को हुआ है राह बतलानेवाला और बोले हम न मानेंगे तेरा कहा जब तू बाहर निकाले हमारे वास्ते ज़मीन से एक सोता या होवे तेरे वास्ते एक बाग़ खजूर और अंगूर का फेर बहा ले तू उस के बीच नहरें चलाकर या गिरावे आसमान हम पर जैसा कहा करता है टुकड़े २ या ले आ अल्लाह को और फिरिश्तों को ज़ामिन या हो जावे तुझ को एक सुन्दर या चढ़ जावे तू आसमान में और यक़ीन न करेंगे तेरा चढ़ना जब तक न उतार लावे हम पर एक लिखा जो हम पढ़ लें तू कह सुबहानअल्लाह मैं कौन हूं मगर एक आदमी भेजा हुआ। और कहते हैं क्यों न उतरी उस पर निशानी उस के ख़ुदा से तू कह निशानियां तो इख़तियार में हैं अल्लाह के और मैं तो यही सुनानेवाला हूं खोलकर।

इन आयतों से साफ साबित है कि महम्मद की सामर्थ्य न थी और जो लोगों ने बयान किया कि उस ने आश्चर्य्य किये यह कुरान की रू से खिलाफ है क्योंकि उस ने न सिर्फ कहा कि मैं ने आश्चर्य्य नहीं किया बल्कि सबब भी बयान किया कि क्यों आश्चर्य्य नहीं दिखाये यानेे इस सबब कि पेशतर रसूल और नबियों ने आश्चर्य्य दिखाये और लोग ईमान न लाये इस लिये लिखा है कि और आश्चर्य्य न करूंगा

وَمَا مَنَعَنَا اَنْ نُرْسِلَ بِالْاٰیَاتِ اِلَّا اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ

यानेे हम ने इसी से मौकूफ किईं निशानियां भेजनी कि उन को अगलों ने झुठलाया। अब समझने की जगह है कि कौन सच कहता है कुरान या हदीस। कुरान में है कि खुदा ने दुनिया की पैदाइश के पेशतर लौहे महफूज़ पर लिखा कि महम्मद साहिब आश्चर्य्य न करेंगे क्योंकि कुछ फायदः नहीं और हदीस कहती है कि हज़रत ने आश्चर्य्य किये अब मुनसिफ इस मे इनसाफ करे कि सच क्या है।

नबूवत यानेे भविष्यबाणी तो एक लिखी है कि

غُلِبَتِ الرُّوْمُ ۙ فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ سَيَغْلِبُوْنَ

यानेे दब गये हैं रूम लगते मुल्क में और वे उस दबने पीछे अब गालिब होंगे। इस के मुताबिक हदीस में भी पेशीनगोईं बयान है और वह बेशक पूरी हुई और न सिर्फ एक दफः बल्कि कई दफः क्योंकि रूमी ईरानियों पर गालिब आये और ईरानवाले रूमियों पर। भला और कौन सी लड़ाई है जिस में ऐसी पेशीनगोई पूरी न होगी उस के वास्ते अंतर्यामी होना ज़रूर नहीं अगर ज़रूर होता तो क्या महम्मद साहिब बयान करते चुनांनचि आप ने फरमाया कि ग़ैब की बात खुदा अकेला जानता है मैं नहीं जानता।

وَيَقُولُونَ لَوْلَا أُنزِلَ عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۖ فَقُلْ إِنَّمَا الْغَيْبُ لِلَّهِ فَانتَظِرُوا

إِنِّي مَعَكُم مِّنَ الْمُنتَظِرِينَ *

यअ़ने कहते हैं क्यों उस के ख़ुदा से उस पर एक निशानी न उतरी सो तू कह छिपी बात अल्लाह ही जाने सो राह देखो मैं तुम्हारे साथ हूं राह देखता ।

पस ख़ुदा की मुहर यअ़ने आश्चर्य्य और भविष्यवाणी कोई महम्मद की पैग़म्बरी पर नहीं और वह क्योंकर हो सकता है क़ुरान में तो ख़ुदा की तरफ़ से नहीं ठहरा तो किस तरह ख़ुदा अपनी मुहर ऐसी बात पर करेगा जो उस की तरफ़ से नहीं है ।

जमीमः ।

ऊपर के बयान से साबित हुआ कि दीन महम्मदी ख़ुदा की तरफ़ से नहीं क्योंकि सच्चे दीन के निशान उस में पाये नहीं जाते लेकिन अगरचि क़ुरान ख़ुदा का कलाम नहीं है तौभी उस में बहुत सी बातें अच्छी हैं ।

क़ुरान पर ग़ौर करने से मअ़लूम होता है कि उस में दो तरह की बाते लिखी हैं जिन बातों की बाबत लिखा है कि मदीने में उतरीं उन को ख़ास दीन की बाते और जिन की बाबत लिखा है मक्के में उतरीं उन को दीन ओ दुनयादारी की बातें कह सकते हैं । जब तक महम्मद साहिब मक्के में रहे तब तक फ़रमाया कि मैं एक सुनानेवाला रसूल हूं दीन की बाबत ज़बरदस्ती न करो मेरा काम सबर करना है मगर जब मदीने में आकर ज़ोर पकड़ा तो रूहानी हथियार को किनारे करके जिस्मानी हथियार इख़तियार किया यअ़ने

फ़रमाया कि लड़ाई करो तलवार चलाओ एक जोरू से राज़ी नहीं और न चार बल्कि बहुत जरूर हुईं और न सिर्फ़ दीन की बाबत बल्कि क़ौमों को लूटा और कई फ़िरक़ों को नष्ट किया।

और जैसे क़ुरान की बातें दो तरह की हैं वैसे ही उन का मतलब भी दो तरह पर है।

यअ़ने बअ़ज़ी बातें सच्ची और ख़ुदा के लायक़ और बअ़ज़ी नारास्त और क़िस्सः कहानी हैं बअ़ज़ी कलाम इलाही से निकाली गईं और बअ़ज़ी क़ौमों के क़िस्सः कहानी से निकाली हैं जैसे कई एक सचाई महम्मद साहिब ने तौरेत और ज़बूर औ नबियों की किताब और इनजील से निकाली हैं चुनानचि यह कि

१ ख़ुदा एक है।

तौरेत—सुन ले ऐ इसराएल ख़ुदावन्द हमारा ख़ुदा अकेला ख़ुदावन्द है। इसतिसना ६ बाब ४ आयत।

ज़बूर—कि तू बुज़ुर्ग है और तेरे काम तअ़ज्जुब के हैं और तू ही अकेला ख़ुदा है। ८६ ज़बूर १० आयत।

नबियों की किताब—ख़ुदावन्द इसराएल का बादशाह और उस का नजात देनेवाला सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि मैं शुरू और मैं आख़िर हूं मेरे सिवाय कोई ख़ुदा नहीं। यशअियाह ४४ बाब ६ आयत।

इनजील—कोई ख़ुदा नहीं मगर एक। १ क़ुरिन्तियों ८ बाब ४ आयत।

२ फ़िरिश्ते मौजूद हैं।

तौरेत—और वे दो फ़िरिश्ते शाम को सदूम में आये। पैदाइश १९ बाब १ आयत।

ज़बूर—ख़ुदा तेरे लिये अपने फ़िरिश्तों को हुक्म करेगा

कि वे तेरी सब राहों में तेरी निगहबानी करें । ९१ जबूर ११ आयत ।

नबियों की किताब—मेरे खुदा ने अपने फिरिश्ते को भेजा है और शेरों के मुंह को बन्द कर रक्खा है । दानिएल ६ बाब २२ आयत ।

इनजील—और उस ने फिरिश्तों में से किस को कहा कि तू मेरे दहिने हाथ बैठ जब तक मैं तेरे दुशमनों को तेरे पांव रखने की चौकी बनाऊं क्या वे सब खिदमत करनेवाली रूहें नहीं जो नजात के वारिसों की सेवा के लिये भेजी गई । इबरानियों का १ बाब १३ श्रो १४ आयत ।

३ तौरेत जबूर नबियों की किताब और इनजील खुदा का कलाम है ।

इनजील—सारी किताब इलहाम से है और तअलीम के और इलजाम के और सुधारने के और रास्तबाजी में तरबियत करने के वास्ते फाइदामन्द है । २ तिमताऊस ३ बाब १६ आयत ।

४ खुदा ने नबी भेजे ।

इनजील—खुदा ने जो कुछ अपने नबियों के मुंह से आगे फरमाया कि मसीह को दुःख उठाना पड़ेगा इसी तरह से पूरा भया ।

५ क़ियामत और अदालत ।

तौरेत—क्या तमाम दुनिया का इनसाफ करनेवाला इनसाफ न करेगा । पैदाइश १८ बाब २५ आयत ।

जबूर—वह जमीन की अदालत करने आता है वह सचाई से जहान की और धर्म्म से लोगों की अदालत करेगा । ९६ जबूर १३ आयत ।

नबियों की किताब—और उन में से बहुतेरे जो जमीन पर खाक में सो रहे हैं जाग उठेंगे बअजे हयातेअबदी

के लिये और बअ़ज़े रुसवाई और ज़िल्लतेअबदी के लिये। दानिएल १२ बाब २ आयत ।

इनजील—फिर मैं ने देखा कि मुर्दे क्या छोटे क्या बड़े खुदा के हुज़ूर खड़े हैं और किताबें खोली गईं और एक दूसरी किताब जो ज़िन्दगी की है खोली गई और मुर्दों की अ़दालत जैसा उन किताबों में लिखा था उन के आमाल के मुवाफ़िक़ किई गई । मुकाशफात २० बाब १२ आयत ।

और बहुत आयतें हैं जिन से ऊपर की बाते साफ २ साबित होती हैं मगर हम ने यह चन्द बाते निकालीं। सचाई के खोजी को मअ़लूम होवे कि महम्मद साहिब ने इन सब बातों को कहां से पाया है जो २ अच्छी बाते क़ुरान में लिखी हैं सब की सब अगली किताबों से निकाली गई हैं। इसे छोड़ बहुत सी बातें तवारीख़ की भी हैं जिन को महम्मद साहिब ने न तौरेत और न ज़बूर और न नबियों की किताब और न इनजील से लिया बल्कि यहूदियों औ नासरियों के क़िस्सः कहानी से लिया है क्योंकि अगरचि उन बातों को तौरेत ज़बूर नबियों की किताब से जो इनजील की बनिसबत क़ुरान मे हैं अगली किताबों से लिया होता तो इतना विरोध न पड़ता—जैसा पैदाइश का बयान ख़ासकर आदमी की पैदाइश का सच्चा हाल तौरेत में लिखा है लेकिन यहूदियों ने अपने हाल के मुताबिक़ तालमुद यअ़ने हदीस में आदमी की पैदाइश की बाबत बहुत से क़िस्से कहानी लिखे कि किस तरह खुदा ने उसे मट्टी से बनाया और कितना लंबा चौड़ा उस ने पैदा किया ये सब बातें क़ुरान और उस की तफ़सीर में लिखी हैं और महम्मदियों के दरमियान जारी हैं।

२ नूह और तूफान का अहवाल भी हक़ीक़त के साथ तौरेत में लिखा है लेकिन यहूदी मुफ़स्सरीन ने बहुत सी

बेहूदा बातें क़िस्सः कहानी के तौर पर उस की बाबत लिखी हैं जैसे तूफ़ान के वक़्त पानी तनूर से निकला और भी क़िस्से क़ुरान ओ हदीस में लिखे हैं।

३ यूसफ़ का अहवाल और उस का ख़ास बयान तो तौरेत में मशहूर है पर महम्मद साहिब उस बयान को छोड़कर यहूदियों के क़िस्सः कहानी को काम में लाये लेकिन क्या वह एतबार के लायक़ हो सकता है क्या कोई औरत अपनी बदकारी महफ़िलों में ज़ाहिर करेगी जैसा लिखा है कि फ़ूतिफ़ार की जोरू ने किया और ऐसी बदकार औरत के पास कब भले आदमी की औरतें आवेंगी और जब यूसफ़ ऐसे क़ुसूर के वास्ते क़ैद हुआ था तो फिर वह महफ़िल में किस तरह आने पाया।

४ मूसा का अहवाल भी धर्म्मपुस्तक में दुरुस्ती के साथ मौजूद है उसी के मुताबिक़ यूसीफ़स नाम यहूदियों के एक तवारीख़ लिखनेवाले ने लिखा है लेकिन महम्मद साहिब ने उन दोनों के बरख़िलाफ़ उन क़िस्सों को जो क़ुरान में हैं तौरेत से नहीं लिया बल्कि यहूदियों के तालमूद और हदीसों से निकाला है ख़ास करके अलख़िज़र का क़िस्सः जिस के अहवाल का बयान सूरे कहफ़ मे है वह तो लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ यहूदियों की हदीस मे से लिया गया है लेकिन हर एक जानता है कि वह निरा क़िस्सः है हक़ीक़त में वाक़े नहीं हुआ।

५ सुलेमान की बाबत भी अच्छी तरह १ सलातीन की किताब में लिखा है उस में उस की हुकूमत और उस का काम यअ़ने यह कि उस ने मन्दिर को किस के वसीले और किस तरह का बनाय और उस की दुआ भी जो उस ने मन्दिर के तैयार होने के बअ़द मांगी थी १ सलातीन के ८ बाब में लिखी है। इस के

मुताबिक़ यूसिफस तवारीख़ लिखनेवाले ने भी अपनी तवारीख़ में लिखा है लेकिन महम्मद साहिब ने सुलेमान का अहवाल सलातीन की किताब से जो सच्ची और ईश्वर का बचन है नहीं चुना लेकिन यहूदियों के क़िस्सः कहानी से निकालकर उन के मुताबिक़ बयान किया कि चूंटी ने सुलेमान से बातचीत किई और यह कि जिन्नात उस के इख़्तियार मे थे। सबा की रानी की बाबत भी ऐसा बयान किया है कि जिस से पढने-वालों को शरम आती है। फिर सुलेमान के मरने की बाबत कि वह मन्दिर तैयार होने के एक बरस पहिले मरा और यह कि उस से जिन्नात ने फरेब खाया देखो सूरे सबा १४ आयत। यह सब बाते यहूदियों की किताब तालमूद से निकाली गईं और बिलकुल क़िस्सः कहानी हैं।

६ खुदावन्द ईसा मसीह की बाबत साफ इनजील में लिखा है लेकिन महम्मद साहिब ने उन किताबों को छोडकर क़िस्सः कहानी उस की बाबत बयान किये चुनानचि मरियम का क़िस्सः और ईसा मसीह का अहवाल कि वह किस तरह हिंडोले में बोला मट्टी की चिड़ियां बनाईं और यहूदियों को बंदर बनाया और यह कि वह नहीं मारा गया लेकिन दूसरा उस के बदले क्रूस पर टंगा। ये बाते उस ने नासरियों के क़िस्से से निकालीं जिन को दो तीन शख़सों ने मसीह के पांच चार सौ बरस बअ़द बनाया और आज तक हर एक ईसाई उस को सिवाय क़िस्से के कुछ और नहीं समझता।

७ और बहुत बातें हैं जैसे फिरिश्तों के परों की बाबत मुर्दों के क़बर में सज़ा पाने और क़ियामत और पुलसरात की बाबत ये सब बातें तालमूद के क़िस्से हैं।

८ बअ़ज़े सूरे और बअ़ज़ी बातों को महम्मद साहिब ने अपने ख़ियाल से निकाला चुनानचि सूरे ततफीफ में ---

सी बातें बिहिश्त और दोज़ख़ की बाबत लिखीं क्योंकि बिहिश्त का सच्चा बयान जैसा इनजील में मौजूद है शायद अ़रब के लोगों को पसंद न आता ।

९ फिर सिकंदर का क़िस्सः कि उस ने सूरज को दलदल की नदी में डूबते पाया और उस ने पीतल और लोहे की बड़ी २ दीवारें बनाईं ताकि याजूज ओ माजूज न चढ़ आवें वह सिर्फ़ क़िस्सः कहानी है क्योंकि यूनानी तवारीख़ लिखने-वालों ने जो सिकंदर के साथ थे कहीं अपनी किताबों में ऐसा माजरा नहीं लिखा है ।

उन किताबों से साबित है कि सिकंदर अपने मुल्क को छोड़कर फ़ारस पर चढ आया और दारा को हराया और जब वह मुल्क उस के क़बज़े में आया तो वह और पूर्व की तरफ़ चलकर काबुल की राह से लाहौर मे आया और उस के लोग इन्दस नदी की राह से समुद्र तक पहुंचे। फिर वहां से अपनी फ़ौज समेत बाबुल को फिरा और वहां आकर शहवत में डूबकर बत्तीस बरस का जवान मर गया । और यह भी मशहूर है कि वह बड़ा बहादुर और महाराजा और मग़रूर बुतपरस्त था चुनानचि जब यूनानियों ने उस को तमाम लशकर का सरदार बनाया तो उस ने मिनरवा को जो यूनानियों की लड़ाई की देवी थी कुरबानी चढ़ाई । और सिकंदर ने न सिर्फ़ देवतों को कुरबानी चढ़ाई बल्कि उस ने अपने तईं देवता समझा । जब मिसर के मुल्क पर ग़ालिब आया तो लिबिया के जंगल में जुपिटर वहां के एक बड़े देवता से सलाह पूछने और उसे कुरबानी चढ़ाने के लिये गया जब पुजेरी ने उसे देखा तो पुकारके कहने लगा कि तू जुपिटरअमोन का बेटा है तू महाराजा और मरने के बअ़द ख़ुद देवता होगा उसी वक़्त से सिकंदर ने अपने को देवता समझकर

अपना परवाना इस तरह लिखने लगा कि सिकंदर बादशाह बेटा जुपिटर का हुक्म करता है वग़ैरः और इस बात का सबूत तवारीख़ जान्नेवाले बख़ूबी जानते हैं तौभी महम्मद साहिब उस को नबी कहते है ।

क़ुरान के पढनेवालों पर महम्मद साहिब का इरादः छिप नहीं सकता यअ़्ने यह कि हज़रत ने चाहा कि यहूदी औ नासरियों और अ़रब के लोगों को एक मज़्हब पर लावे इस लिये उन सब किताबों के क़िस्से कहानी को जो उन्हें पसन्द आये चुन लिया । सच्चा दीन इसे नहीं कहते सच्चा दीन वह है जो आदमियों को ईश्वर का बचन सुनावे चाहे किसी को पसन्द आवे या नहीं । पस अगर हम को दीन महम्मदी और सच्चे दीन के वास्ते कोई तमसील देनी होती तो हम कहते कि एक तो उस बावर्ची की मानिन्द है जो अपने स्वामी की तन्दुरुस्ती और बिहतरी की फ़िक्र न करके वही खाना तैयार करता जो उस के मालिक औ उन के काम औ ज़ुबान को पसन्द आता और सच्चा दीन वैद्य की मानिन्द है जो बीमारों को कड़वी दवा देकर चंगा करता और उन को जान औ जिस्म के लिये फ़ायदः होता ।

फिर अगर कोई कहे कि दीन महम्मदी जो ख़ुदा की तरफ़ से नहीं है तो किस तरह से ऐसा जारी हुआ । कोई इनकार नहीं करता कि बुतपरस्तों के मज़्हब सब से ज़ियादः फैल गये । इस से साफ़ मअ़्लूम होता है कि कोई दीन बहुत फैलने और ज़ियादः जारी होने से सच्चा दीन नहीं हो जाता ।

मुसलमानों का मज़्हब जो दुनिया में फैल गया है इस के कई सबब हैं ।

१सबब जिस से दीन महम्मदी दुनिया में फैल गया तलवार है ।

छः सौ बरस के अरसे में मुसलमानों ने एशिया आफ्रिका और यूरप के मुल्कों में कई बादशाहतें मुक़र्रर किईं और हुकूमत के साथ अपना मज़हब भी सब मुल्कों में जारी किया मगर हर एक मुल्क में दीन ने जड़ नहीं पकड़ी बल्कि हुकूमत के साथ नेस्त हुआ था लेकिन जैसे स्पेन और पोर्तुगाल में हुआ लेकिन बुतपरस्तों के दरमियान या ऐसे लोगों में जिन का मज़हब मुसलमानों के बराबर न था मज़हब क़ायम रहा अगरचि हुकूमत जाती रही ।

२ यह कि दीन महम्मदी की सब बातों का बयान आदमी की ख़ाहिश के मुवाफ़िक़ है जैसे बिहिश्त वग़ैरः का बयान ।

पस इन ऊपर की बातों से क्या हासिल होता है यह कि दीन महम्मदी में ख़ुदा की सब सिफतों का बयान है लेकिन दुरुस्ती के साथ नहीं ।

पैदाइश का अहवाल आदमी की पैदाइश और उस के अंजाम का हाल भी उस में मौजूद है पर उस से ख़ुदा की बुज़ुर्गी नहीं होता ।

नजात की राह का बयान तो बहुत ही लम्बा चौड़ा है लेकिन उस का आख़िर आसान नहीं जिस को ख़ुदा ने आदमियों की नजात के लिये मुक़र्रर किई ।

ग़रज़ कि दीन महम्मदी दीन हक़ीक़ी नहीं इसी सबब से ख़ुदा की मुहर भी उस पर नहीं है ।

अब मैं हर एक की मिन्नत करता हूं कि वह ऊपर की बातों पर ग़ौर करके दरयाफ़्त करे कि वह सच है या नहीं । इस किताब के लिखनेवाले ने जान बूझकर एक बात भी ग़लती से दीन महम्मदी के बरख़िलाफ़ नहीं लिखी बल्कि जो सच मअ़लूम हुआ सो ही लिखा और इस किताब के लिखनेवाले का इरादः यह न था कि पढ़नेवालों का दिल

रंजीदः करे बल्कि यह कि उस से सचाई ज़ाहिर होवे। पस इस हालत में नहीं हो सकता था कि सच का खोजी अंधियारे को उजाला या झूठ को सच कहे और न सिर्फ़ ग़ौर करके तहक़ीक़ करे बल्कि ख़ुदा से दुआ भी मांगना ज़रूर है कि वह हर एक दिल को रोशन करे ताकि सच्चे दीन की सचाई उसे नज़र आवे और जब सचाई का नूर चमका या यक़ीन हुआ तो दुआ मांगना चाहिये कि ख़ुदा उस झूठे मज़हब को रद करने और सच्चे दीन पर चलने की ताक़त औ क़ुदरत इनायत करे। उमर जल्द तमाम होगी मौत जल्दी दौड़ी आती है इस लिये चाहिये कि हम आज दीन महम्मदी को रद करें और सच्चे दीन को ढूंढ़कर उस पर चलें क्योंकि आज फ़ुरसत है आज नजात का दिन है।

समाप्त।